नागार्जुन के उपन्यासों में ग्राम

(हैदराबाद विश्वविद्यालय, पी एच-डी. उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध)

१९८३

प्रस्तुतकर्त्री :

शोभा शास्त्री, एम. ए.

निर्देशिका :

डॉ. शशि मुदिराज

एम. ए., पी. एच-डी.

लेक्चरर, हिन्दी विभाग

हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद

अध्यक्ष :

डॉ. चन्द्रभान रावत

एम. ए., पी. एच-डी., डी. लिट्.

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद

CERTIFICATE

This is to certify that the thesis "Nagarjun Ke Upanyason men gram" by Shobha Shastry, a research scholar in Hindi, for the award of Ph.D. degree, is an entirely original work written under my guidance and supervision. This thesis has not formed in whole or part, the basis for the award of any Degree, Diploma or any other similar Degree or Distinction.

HYDERABAD:

Date: 7.4.1983

Shashi Mudiraj

(DR. SHASHI MUDIRAJ)

Dr. Shashi Mudiraj,
M.A., Ph.D.,
Lecturer, Dept. of Hindi
University of Hyderabad
HYDERABAD - 500 001.

जनकवि बाबा नागार्जुन

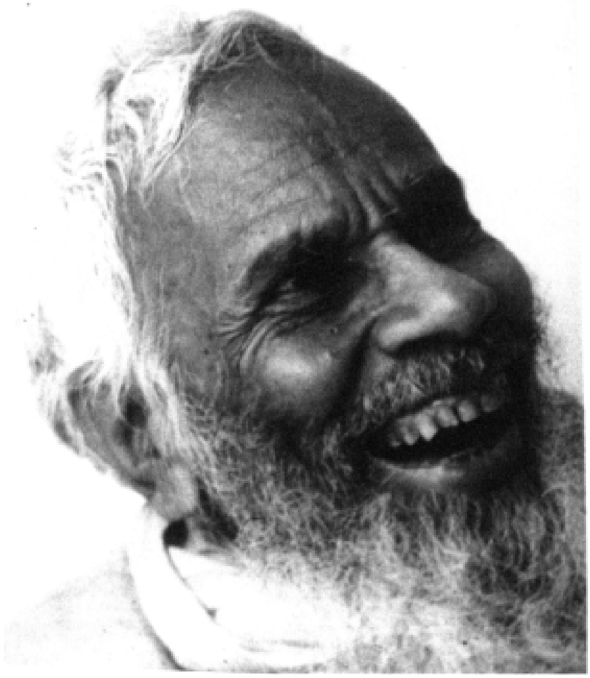

बाबा नागार्जुन
उपन्यासकार

शोभा शास्त्री
शोधकर्त्री

विषय-सूची

	पृष्ठ संख्या
भूमिका	१-६
संकेत सूची	१
विषयानुक्रमणिका	१-२३
प्रथम अध्याय - विषय प्रवेश	१-८
द्वितीय अध्याय - नागार्जुन जीवन और साहित्य	९-३६
तृतीय अध्याय - ग्राम: सामाजिक संदर्भ	३७-१८९
चतुर्थ अध्याय - ग्राम: सांस्कृतिक संदर्भ	१९०-२४०
पंचम अध्याय - ग्राम: धार्मिक संदर्भ	२४१-३०१
षष्ठ अध्याय - ग्राम: राजनीतिक संदर्भ	३०२-३८८
सप्तम अध्याय - ग्राम: आर्थिक संदर्भ	३८९-४३२
अष्टम अध्याय - ग्राम: भाषा संदर्भ	४३३-४५९
उपसंहार -	४६०-४६२
सहायक ग्रंथ सूची	४६३-४८०
परिशिष्ट	४८०-४८२

भूमिका

नागार्जुन हिन्दी तथा मैथिली साहित्य के सुप्रसिद्ध रचनाकार हैं। "जनकवि" नामकरण की उपलब्धि इसी उपरोक्त तथ्य के आधार पर उन्हें प्राप्त हुई है, विविध, शोध प्रबन्धों [1] में, ग्रामों से सम्बन्धित कुछ विवेचना हो पायी है, अतः प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में ग्राम तथा ग्राम से सम्बन्धित विविध तथ्यों पर पूर्ण रूप से विचार किया गया है।

बाबा नागार्जुन के उपन्यासों की विशेषता - समकालीन प्रचलित अन्य उपन्यासकारों द्वारा प्रतिपादित सामाजिक- सांस्कृतिक ,धार्मिक, राजनीतिक ,आर्थिक तथा भाषा से कुछ विभिन्न है। जहाँ अन्य समकालीन उपन्यासकारों ने समस्याओं को खड़ा किया ,- समाधान नहीं दिया, वहाँ नागार्जुन ने उनका सुझाव, अपनी अन्तश्चेतना के आधार पर दिया है। उपरोक्त सभी तथ्यों का सम्बन्ध ग्राम-जीवन से है।

प्रस्तुत प्रबन्ध आठ अध्यायों में विभाजित है -

<u>प्रथम अध्याय</u>:-

हिन्दी उपन्यास परम्परा, उपन्यास व्युत्पत्ति, स्वरूप, उपन्यास महाकाव्य और नाटक, उपन्यास और सामाजिक यथार्थ तथा ग्रामीण उपन्यास परम्परा की विवेचना प्रस्तुत अध्याय में निबद्ध है।

<u>द्वितीय अध्याय</u>:-

उपन्यासकार की जीवनी तथा साहित्यिक रूपरेखा है। जन्म,नामकरण पूर्वज तथा माता-पिता, अध्ययन, अध्यापन, विवाह-संतान,उपन्यासकार के विविध रूप तथा १. अनूदित साहित्य २. मौलिक साहित्य - मैथिली

---

१. नागार्जुनः जीवन और साहित्य - डा.प्रकाशचन्द्र भट्ट

२. यात्री : व्यक्तित्व एवं कृतित्व- डा.यशोदानाथ झा

हिन्दी तथा संस्कृत साहित्य का उल्लेख इस अध्याय में उपलब्ध है ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, नागार्जुन के उपन्यास साहित्य तक ही सीमित है । उपन्यासों का ग्रामीण दृष्टिकोण से वर्गीकरण करते हुए ग्राम की संरचना, टोला, पट्टी, बस्ती, मौजा, कस्बा, चौर तथा ग्राम की व्यापक परिभाषा इसी अध्याय में है ।

तृतीय अध्याय :-

उपन्यासों में चित्रित, ग्रामीण जन-जीवन का विस्तृत विवेचन चार भागों में निबद्ध है । १. सामाजिक संरचना २. सामाजिक जीवन ३. सामाजिक सम्बन्ध तथा ४. सामाजिक व्यवस्था ।

१. सामाजिक संरचना - जाति, उपजाति के अतिरिक्त उपन्यासकार द्वारा निर्मित श्रमजाति का उल्लेख इसी में है । अर्थ के आधार पर वर्ग का निर्माण, उच्च वर्ग का मध्य वर्ग तथा निम्न वर्ग की ओर अग्रसर होने के कारणों की विवेचना तथा -

२. सामाजिक जीवन - के अन्तर्गत उच्च-मध्य तथा निम्नवर्गीय आवास, खान-पान, नशा, वेशभूषा, श्रृंगार- प्रसाधन, व्यवहार की सामान्य वस्तुएं यातायात के साधनों का अध्ययन यहां किया गया है ।

३. सामाजिक सम्बन्ध- की विवेचना दो उपशीर्षकों - १. पारिवारिक तथा २. वर्ग सम्बन्ध के अन्तर्गत हुई है । पारिवारिक सम्बन्ध के अन्तर्गत - परिवार, परिवार के प्रकार, पारिवारिक सम्बन्ध तथा " यौन सम्बन्ध" पर भी विचार किया गया है । भ्रष्टाचार और रूढ़िग्रस्तता का सजीव रूप, बाल-विवाह, विकौआ विवाह, बहुविवाह, अन्तर्जातीय विवाह, दहेज प्रथा का उल्लेख भी इसी अध्याय का अंश है । २. वर्ग सम्बन्ध के अन्तर्गत उच्च-मध्य तथा निम्न वर्ग की विवेचना हुई है ।

४. सामाजिक व्यवस्था - में शिक्षा, स्वास्थ्य एवं चिकित्सालय, डाक-व्यवस्था, न्याय एवं दंड व्यवस्था -पुलिस, जेल तथा सामाजिक भ्रष्टाचार का

उग्र रूप "आश्रम" की विवेचना की गयी है ।

चतुर्थ अध्याय :-

ग्रामीण संस्कृति सन्दर्भ के रूप में दस उपशीर्षकों में विभक्त है - १. संस्कृति अर्थ २. ग्रामीण कलाएँ ३. पर्व ४. त्यौहार - वटपूजा, रक्षा बन्धन, दशहरा- यम द्वितीया, होली, राष्ट्रीय त्यौहार - पंद्रह अगस्त । ५. संस्कार - कर्णवेध-उपनयन, वैवाहिक कृत्य, तथा दाह संस्कार । ६. प्रान्तीय आचार - गौना, बरात, कन्या विलाप तथा सामूहिक रूदन, भेंट देना, मार भेजना, महफा (डोली) उठना, परछन तथा सौगात भेजना है । ७. मेला, पशु मेला ८. लोक-कथा ९. लोक गीत- प्रभाती गीत, लोढ़ा गीत, ऋतु गीत, खेती-गीत, जाति गीत, नदी के गीत । १०. खेल - कबड्डी, गेंद , गोंगड़ी, कंकड़, शतरंज, पचीसी तथा ताश इसी अध्याय में सन्निहित है ।

पंचम अध्याय :-

ग्राम धार्मिक संदर्भ है । धार्मिक संदर्भ की विवेचना पंचायतन में सम्पुष्ट है । १. मठ २. देवी-देवता- कुल देवता, इष्ट देवता तथा ग्राम देवता । ३. धार्मिक कृत्य - पंचमहायज्ञ - १. ब्रह्म यज्ञ, २. देव यज्ञ- दैनिक पूजा, विशिष्ट अवसरों पर पूजा - सत्यनारायण, छठी, देवता वृक्ष- वट, पीपल ,बरहम पूजा । ३. पितृयज्ञ ४. भूत यज्ञ ५. मनुष्य यज्ञ । जप, पारायण, पाठ, मंत्र- गायत्री, सहस्रशीर्षा पुरुषः, कर्ण पिशाची, तंत्र, यंत्र, तांत्रिक , ओझा, औघड़ बाबा, बाबा, साधु, सत्संग ,कीर्तन, भजन, व्रत-पर्व, तीर्थ-यात्रा आदि हैं । ४. ग्रामीण लोक विश्वास - १. विवाह मुहूर्त, २. विद्यारम्भ ३. कर्म एवं कर्मफल - संचित, क्रियमाण, प्रारब्ध । ५. ग्रामीण अंधविश्वास - मनौती का उल्लेख है ।

षष्ठ अध्याय :-

ग्रामीण राजनीतिक चेतना का विश्लेषण तीन काल खण्डों के अन्तर्गत

किया गया है ।

<u>प्रथम काल खण्ड</u> -

चम्पारन-नील खेती, विविध अत्याचार, गांधी जी की बिहार यात्रा, किसान कमीशन, रालेट एक्ट, रचनात्मक कार्य, आतंकवादी-आन्दोलन, विभिन्न पार्टियों की स्थापना, साइमन कमीशन, सर्वदलीय-सम्मेलन, युवा संगठन, नेहरू रिपोर्ट, नमक सत्याग्रह, द्वितीय गोलमेज-कांग्रेस, गैर कानूनी पार्टी: कांग्रेस तथा कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना ।

<u>द्वितीय कालखण्ड</u>:-(१९३५-१९४७) तक व्याप्त है । जिसकी मुख्य घटनाएं:-चुनाव के लिए कांग्रेस तथा विभिन्न पार्टियों की तैयारी, बिहार में चुनाव, कांग्रेस का रचनात्मक कार्य - आश्रम व्यवस्था, किसान आन्दोलन, किसान सभा, सत्याग्रह, चुनाव में कांग्रेस की विजय, समाजवादियों द्वारा नौजवान संघ की स्थापना, द्वितीय महायुद्ध का आरम्भ: कांग्रेसी मंत्रि-मण्डल का त्यागपत्र, समाजवादी सम्मेलन, किसान-दिवस, मई-दिवस, करो या मरो, गांधी जी की जेल रिहाई, साम्प्रदायिक दंगे, नाविक विद्रोह, देश - विभाजन तथा भारतीय स्वतंत्रता विधेयक बिल है ।

३. <u>तृतीय काल खण्ड</u>:-

स्वातंत्र्योत्तर युग= आधुनिक युग, अर्थात् - जमींदारी उन्मूलन, पंचायतराज्य तथा कार्य, चुनाव तथा विभिन्न पार्टियाँ, गुटबन्दी, व्यक्ति-पूजा, हत्या, नैसर्गिक प्रकोप: बनाम नेताओं की भ्रष्ट नीति, सहायता शिविर, संयमशील कार्यकर्ता, वर्ग संघर्ष, वर्ग साम्य तथा वर्ग-चेतना की विस्तृत विवेचना इस अध्याय में विद्यमान् है ।

<u>सप्तम अध्याय</u>:-

ग्राम आर्थिक संदर्भ है । जिसकी विवेचना आठ उपशीर्षकों के अन्तर्गत की गयी है । १. व्यवसाय- कृषि, मछली, महाजनी तथा ग्रामीण कोल्हू ।

२. श्रमिक तथा उसके पारिश्रमिक के विभिन्न रूप - अर्थ-अनाज तथा रोटी । ३. स्वतंत्रता पूर्व आर्थिक व्यवस्था ४. पंचवर्षीय योजना तथा आर्थिक संघर्ष, प्रथम पंचवर्षीय योजना, जमींदारी उन्मूलन, ५. ग्रामीण आर्थिक व्यवस्था का असंतुलित रूप - गरीबी, नैसर्गिक प्रकोप, शोषित किसान, जनसंख्या की निरन्तर वृद्धि, परिवार नियोजन । ६. अर्थ व्यवस्था को समन्वित करने के लिए जिन कार्यों का उल्लेख हुआ है - चर्खा तथा भूदान है । ७. साहित्य और उसका व्यावसायीकरण की प्रक्रिया में साहित्यकार, नेता, प्रकाशक, सम्पादक की कूटनीतिज्ञों की विवेचना है । ८. उपन्यासकार ने अर्थ के प्रति जिस दृष्टिकोण को व्यक्त किया है वह नवीनतम है ।

<u>अष्टम अध्याय</u>:-

भाषा संदर्भ से सम्बन्धित है । परिनिष्ठित हिन्दी, संस्कृतनिष्ठ हिन्दी, उर्दू मिश्रित हिन्दी, ठेठ मैथिली, बंगाली, पंजाबी, भोजपुरी, मराठी, गुजराती, विदेशी भाषा के रूप में अंग्रेज़ी तथा हिन्दी, मैथिली तथा उर्दू मुहावरे, कहावतें, गालियां तथा हास्य और व्यंग्य का अद्भुत भाषा संयोग इस अध्याय का निष्कर्ष है ।

प्रस्तुत प्रबन्ध का सम्पूर्ण कार्य, निर्देशिका डा. शशि मुदिराज के निर्देशन में सम्पन्न हुआ है । सामग्री संचयन में विविध संस्थाओं एवं विद्वान लेखकों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मुझे सहायता मिली है, उनके प्रति आभारी हूं । विशेष रूप से वयोवृद्ध जनकवि "बाबा" नागार्जुन की मैं अत्यन्त ऋणी हूं । उनकी (१०-२-१९८०) हैदराबाद यात्रा मेरे लिए अत्यधिक लाभदायक हुई है । अत्यन्त व्यस्त रहते हुए भी "बाबा" ने समय दे कर मेरी जिज्ञासाओं का समाधान ही नहीं किया बल्कि शोध कार्य की ओर दिशा संकेत भी दिये हैं ।

अन्त में आदरणीय प्रो. चन्द्रभान रावत के प्रति मैं असीम कृतज्ञता निवेदित करती हूँ, जिनकी प्रेरणा और पथ-प्रदर्शन के बिना यह कार्य सम्भव ही न था ।

–

संकेत-सूची

१. ऋग्वे.	–	ऋग्वेद
२. छांदोग्य उप.	–	छांदोग्य उपनिषद्
३. दक्ष.	–	दक्ष स्मृति
४. पा.गृ.सू.	–	पारास्कर गृह्य सूत्र
५. बृ.उप.	–	बृहदारण्यक उपनिषद्
६. मनु.	–	मनुस्मृति

–

छायाचित्र और पत्र

छायाचित्र	–	१ तथा २
पत्र	–	२७१-२७२
	–	४३४
	–	४८०

विषयानुक्रमणिका

	पृष्ठ
प्रथम अध्याय : विषय प्रवेश	१ - ८
१. हिन्दी उपन्यास -परम्परा: एक विवेचन	१
१.१ उपन्यास : व्युत्पत्ति	१
१.२ उपन्यास : स्वरूप	२-३
१.२.१ उपन्यास : महाकाव्य और नाटक	३
१.३ हिन्दी उपन्यास और सामाजिक यथार्थ	४
१.४ ग्रामीण उपन्यास : परम्परा	५-८
द्वितीय अध्याय: नागार्जुन जीवन और साहित्य	९ - ३६
२.१ जन्म	९
२.१.१ नामकरण	१०
२.१.२ पूर्वज तथा माता-पिता	१०-११
२.२ अध्ययन	११
२.२.१ प्रारम्भिक शिक्षा	११
अ. तरौनी	११
आ. गनौली	१२
२.२.२ काशी - बालवर्धिनी सभा	१२ -13
२.३ अध्यापन	१३
२.३.१ भारत	१३ -14
अ. कलकत्ता	१४
आ. काठियावाड़	१४
इ. पंजाब	१४-१५
२.३.२ विदेश : लंका	१५
२.४ विवाह	१५
२.४.१ घरेलू वातावरण	१५-१६

	पृ.संख्या
२.५ संतान	१६
२.५.१ पुत्र	१६
२.५.२ पुत्रियां	१६
२.५.३ मानस पुत्र	१६
२.६ उपन्यासकार के विविध रूप	१६
२.६.१ खद्दरधारी	१७
२.६.२ बौद्ध भिक्षु	१७
२.६.३ कामरेड	१८
२.६.४ किसान नेता	१८
२.६.५ जीवन के विविध मंच पर	१९.२०
२.७ साहित्यिक रूप-रेखा	२०
२.७.१ अनूदित साहित्य	२०.२१
अ. उपन्यास तथा कहानियां	२१
२.७.२ मौलिक साहित्य	२१
२.७.२.१ मैथिली साहित्य	२१-२२
अ. कविता	२२
आ. उपन्यास	२२
२.७.२.२ हिन्दी साहित्य	२२
अ. हिन्दी काव्य	२२.२३
आ. खण्ड काव्य	२३
२.७.२.३ संस्कृत साहित्य	२३
अ. संस्कृत काव्य	२३-२४
२.८ गद्य लेखन	२४
२.८.१ सम्पादक	२४
२.८.२ स्तम्भ लेखन	२५
२.८.३ बाल साहित्य	२५

		पृष्ठ संख्या
२.८.४	उपन्यास	२५-२६
२.८.५	उपन्यासों का वर्गीकरण	२६-२७
२.८.५.१	ग्रामीण उपन्यास	२७
२.८.५.२	अर्ध ग्रामीण उपन्यास	२७
२.८.५.३	ग्राम सम्बन्धी शहरी उपन्यास	२७
२.९	ग्राम: परिभाषा	२७-२८
२.९.१	टोला	२८
	अ. जनसंख्या	२८.२९
	आ. जाति	२९
	इ. भौगोलिक स्थिति	२९
	ई. पुरवा	२९-३०
२.९.२	पट्टी	३०
२.९.३	बस्ती	३०
	अ. जाति के आधार पर	३१
२.९.३.१	छोटी बस्ती	३१
	अ. भौगोलिक स्थिति	३१
२.९.३.२	बड़ी बस्ती	३२
	अ. भौगोलिक स्थिति	३२.३३
२.९.४	मौजा	३४
२.९.४.१	छोटा मौजा	३४
२.९.४.२	बड़ा मौजा	३४.३५
२.९.५	कस्बा	३५
२.९.६	चौर	३६

पृ.संख्या

तृतीय अध्याय: ग्राम: सामाजिक संदर्भ		३८.१८९
३.१	सामाजिक संरचना	३९
३.११	जाति -	३९-४६
	१. ब्राह्मण	३९.४०
	२. राजपूत, ३. कायस्थ	४०
	४. मारवाड़ी	४१
	५. ग्वाला	४१-४२
	६. खवास	४२-४३
	७. जुलाहा	४३
	८. दुसाध , ९. कैवट १०. मलाह ११.बनिहार	४४
	१२. मुसहर १३. डोम १४. धानुक	४५
	१५. पासी १६. चमार १७. मुंडहार	४६
३.१२	उपजाति -	४७
३.१३	वर्ग	४७-४९
३.१३१	उच्चवर्ग : जमींदार	४९-५३
३.१३२	मध्य वर्ग	५३-५४
३.१३२१	मध्यवर्ग: विभिन्न स्तर	५४-५५
	अ. मध्यवर्गीय- उच्च मध्य समाज	५५-५६
	आ. मध्यवर्गीय- मध्य-समाज	५६-५९
	इ. मध्यवर्गीय - निम्न-मध्य समाज	५९-६०
३.२	सामाजिक रहन सहन	६०
३.२१	आवास	६०
३.२११	उच्च वर्गीय घर	६०.६२
३.२१२	निम्न मध्यवर्गीय घर	६२-६३
३.२१३	निम्नवर्गीय घर	६३-६४
३.२२	खानपान	६५

		पृष्ठ संख्या
३.२२१	उच्चवर्ग	६५
३.२२२	निम्न मध्यवर्ग	६५
३.२२३	निम्नवर्गीय खान-पान	६६
	अ. महुआ	६६
	आ. मछली	६६-६७
३.२३	नाश्ता	६७-७०
३.२३१	पेय	७०
	अ. चाय	७०-७१
	आ. शरबत	७०-७१
३.२४	नशा -	७१
	१. पान २. सुरती ३. खैनी ४. नस ५.अफीम	७१
	६. गाँजा ७. चरस ८. भँग ९. माजूम	
	१०. शराब ११. ताड़ी १२. बीड़ी	
	१३. हुक्का १४. सिगरेट	
३.२४१	पुरुषों का नशा -	७१
	१. पान , ,पान: विविध प्रकार	७२-७३
	२ सुरती	७२
	३ खैनी, ४ नस,	७४
	५ अफीम	७५
	६ गाँजा	७५-७६
	७ मंजरिया	७६
	८ चरस, ९ भँग,	७७
	१० माजूम ,११ शराब ,१२ ताड़ी	७८
	ताड़ी की दुकान	७८-७९
	१२. बीड़ी	८०
	१३. हुक्का	८०-८१
	१४. सिगरेट - विविध प्रकार	८१

		पृ.संख्या
३.२४२	स्त्रियों का नशा -	८१
	१ पान	८१-८२
	२ सुर्ती	८२
	३ बीड़ी	८२-८३
	४ हुक्का	८३-८४
३.२५	वेश-भूषा	८५
३.२५१	पुरुषों की वेश-भूषा	८५-८७
	अ. मध्यवर्ग	८७-८९
	आ. तांत्रियों की वेशभूषा	८९
	इ. शाही फकीर	८९
३.२५२	स्त्रियों की वेश भूषा	९०-९१
३.२५३	बच्चों की वेश भूषा	९१
३.२५४	वस्त्रों का अन्य उपयोग	९१
	१. गमछा	९२
	२. तौलिया	९२
	३. रूमाल	९२
	४. बिछाने ओढ़ने के वस्त्र	९३
३.२६	श्रृंगार प्रसाधन	९४-९५
	१. दातौन आदि शुचि क्रियाएं	९५-९६
	(१) दातौन विविध प्रकार	९६
	२. मज्जन (स्नान करना)	९७
	३. केश-विन्यास	९७-९८
	४. मांग भरना	९८
	५. तिलकलगाना, ६. मेंहदी	९८
	७. महावर ८. गहने	९९
	अ. पुरुषों के गहने	९९-१००
	आ. स्त्री के गहने	१००

	पृष्ठ संख्या
१. गले के गहने	१००
२. नाक का गहना	१०१
३. अंगूठी ४. करधनी	१०२
९. फूलमाला , १०. मुखवास अथवा पान	१०३
११. मुखराग १२. दर्पण	१०३
३.२७ व्यावहारिक सामान्य वस्तुएं	१०४
३.२७१ दैनिक प्रयोग की वस्तुएं	१०४
१. व्यावसायिक वस्तुएं	१०४
अ. खेती के औजार	१०५
आ. मछली पकड़ने के औजार	१०५
इ. कपड़ा बुनने का औजार	१०६
ई. घर बनाने के औजार	१०६
३.२७२ पात्र	१०७
३.२७३ बैठने सोने तथा अन्य व्यवहार के उपकरण	१०८
अ. बैठने के उपकरण	१०८
आ. सोने के उपकरण	१०८
इ. अन्य उपकरण	१०९
निष्कर्ष	१०९
३.२८ यातायात के साधन	११०
३.२८१ स्थल मार्ग	११०–११२
अ. बैलगाड़ी	११२–११३
आ. इक्का इ. पालकी	११३
ई. ट्रेन	११३–११४
३.२८२ जलमार्ग	११४
३.२८३ वायु मार्ग	११४
निष्कर्ष	११५

	पृष्ठ संख्या
३.३ सामाजिक सम्बन्ध	११५
३.३१ परिवार	११५
३.३११ परिवार और प्रकार	११६-११७
अ. संयुक्त परिवार	११७
आ. भ्रातृ संयुक्त परिवार	११८-११९
इ. एकक परिवार	११९
३.३१२ पारिवारिक विघटन	१२०
अ. भोग विलासी जीवन	१२०-१२१
आ. स्वार्थ वृत्ति	१२१
इ. वासना की भूख	१२१
ई. पर्दा प्रथा उन्मूलन	१२२
३.३२ पारिवारिक सम्बन्ध	१२३
३.३२१ पति-पत्नी सम्बन्ध	१२३-१२५
३.३२२ मां-बेटे का सम्बन्ध	१२५-१२७
३.३२३ मां-बेटी सम्बन्ध	१२८-१२९
३.३२४ पिता-पुत्र सम्बन्ध	१३०-१३१
३.३२५ चाची-भतीजा	१३१-१३३
३.३२६ मामा-भांजे का सम्बन्ध	१३३-१३४
३.३२७ ननद भाभी का सम्बन्ध	१३४
३.३२८ सास बहू सम्बन्ध	१३४-१३५
३.३२९ जीजा साली सम्बन्ध	१३५-१३६
३.३३० देवर भाभी का सम्बन्ध	१३६-१३७
३.३३ विवाहेतर यौन सम्बन्ध	१३७-१३८
३.३४ विवाह के प्रकार	१३९
३.३४१ बाल विवाह	१४०-१४१
३.३४२ विक्रीता विवाह	१४१-१४२

		पृ.संख्या
३.३४३	बहु विवाह	१४३
	अ. निपूति स्त्री के कारण	१४३
	आ. पुत्र की इच्छा से	१४४
	इ. भोग लिप्सा	१४४-१४५
३.३४४	अन्तर्जातीय विवाह	१४५
३.३५	दहेज प्रथा	१४६-१४८
३.३६	वर्ग सम्बन्ध	१४९-१५१
३.४	सामाजिक व्यवस्था	१५२
३.४१	शिक्षा व्यवस्था	१५२
३.४११	प्राचीन शिक्षा	१५२-१५४
३.४१२	आधुनिक शिक्षा	१५४, १५५
३.४१३	प्रौढ़ शिक्षा	१५५
३.४१४	स्त्री शिक्षा	१५५-१५९
	अ. अशिक्षित स्त्री की दुर्दशा	१५९-१६१
३.४२	पुस्तकालय	१६१-१६२
३.४२१	समाचार पत्र	१६२-१६३
	अ. समाचार पत्रों के कार्य	१६३-१६४
३.४२२	पत्र-पत्रिकाएँ	१६४
३.४३	स्वास्थ्य एवं चिकित्सा	१६४-१६६
३.४४	डाक व्यवस्था	१६६
३.४५	न्याय एवं दंड व्यवस्था	१६७
३.४५१	सामाजिक अपराध	१६७
३.४५११	तस्कर व्यापार	१६७-१६८
३.४५१२	अपहरण	१६८
३.४५२	पुलिस व्यवस्था -	१६९
	अ. स्वातंत्र्योत्तर पुलिस व्यवस्था	१६९-१७०

	पृष्ठ संख्या
३.४५३ दण्ड विधान	१७०-१७१
३.४५४ अपराधियों के सुधार का केन्द्र : जेल	१७१
३.४५४.१ जेल के विभिन्न प्रकार	१७१-१७२
३.४५५ जेल की आंतरिक व्यवस्था	१७२-१७३
१. पुस्तकालय	१७३
२. रसोइया तथा सेवक	१७३
३. भोजन	१७४
४. मंदिर	१७४
५. संतों की आवभगत	१७४-१७६
६. स्वास्थ्य	१७६-१७८
३.४५६ जनाना वार्ड	१७८
अ. महिला बोर्डर	१७९
३.४६ सामाजिक भ्रष्टाचार	१८०
३.४७ आश्रम : सामाजिक भ्रष्टाचार का उद्गम	१८१-१८३
३.४७१ आश्रम का निर्माण	१८३
३.४७२ आश्रम का संचालन	१८३-१८५
३.४७३ आश्रमवासियों के कार्य	१८५-१८६
३.४७४ वेश्या बनने के कारण	१८६-१८८
३.४७५ स्त्री सुधार	१८८-१८९

	पृष्ठ संख्या
चतुर्थ अध्याय: ग्राम सांस्कृतिक संदर्भ	१९०-२४०
४.१ संस्कृति: अर्थ	१९०-१९२
४.२ ग्रामीण कलाएं	१९२
४.२.१ प्रतिमा निर्माण	१९२-१९३
४.२.२ नौका निर्माण	१९३-१९४
४.२.३ छप्पर तैयार करना	१९४-१९५
४.२.४ जाल बुनना	१९५
४.२.५ सींकों से घरेलू सामान बनाना	१९५
४.२.६ चटाई, डोरी, डाली, गोंदा आदि तैयार करना	१९५-१९६
४.३ ग्रामोद्योग तथा समाज कल्याण	१९६-१९७
४.४ पर्व	१९७-१९८
४.५ त्योहार	१९९
४.५.१ वृक्षपूजा (वट पूजा)	१९९-२००
४.५.२ रक्षा बंधन	२०० ~~-२०१~~
४.५.३ दशहरा	२००-२०१
अ. सम्पुट पाठ	२०१
आ. वेदी पाठ तथा हवन	२०१-२०२
४.५.४ यम द्वितीया	२०२-२०३
४.५.५ होली	२०३-२०४
४.५.६ राष्ट्रीय त्योहार	२०४
अ. ग्रामीण समारोह	२०४-२०५
४.६ संस्कार	२०६
४.६१ संस्कारों का महत्व एवं उनकी संख्या	२०६-२०७
४.६२ नागार्जुन के उपन्यासों में वर्णित संस्कार	
४.६२१ कर्णवेध	२०७

		पृष्ठ संख्या
४.६२२	उपनयन	२०७–२०८
	अ. बलि	२०८
	आ. भोज	२०८
	इ. उत्सव	२०९
	ई. वैवाहिक कृत्य	२०९–२१०
४.६२३	पंचीयन	२१०
४.६२३१	आहपत्र	२१०–२११
४.६२३२	जनेऊ	२११–२१२
४.६२३३	कन्यादान	२१२
४.६२३४	गठबंधन, लावाहोम, सप्तपदी तथा	
४.६२३५	सिन्दूरदान	२१२
४.६२३६	नाम परिवर्तन	२१३
४.६२३७	मुंह दिखाई	२१३
४.६२३८	औमन	२१४
४.६२३९	मुंह बबावन	२१४
४.६२३१०	त्रिरात्रव्रत	२१५
४.६२४	आर्य समाजी वैवाहिक पद्धति	२१५–२१६
४.६२५	दाह संस्कार	२१६–२१७
४.६२५१	अस्थि संचयन	२१७
४.६२५२	अस्थि निमंजन	२१८
४.६२५३	श्राद्ध	२१८
४.६२५३१	श्राद्ध के प्रकार	२१९
४.६२५४	दान	२१९–२२०
	अ. महादान	२२०
४.६२५५	वार्षिक श्राद्ध तथा अविधवा नवमी	२२०–२२१
४.७	प्रान्तीय आचार	२२२
४.७१	गौना	२२२.२२३

		पृष्ठ संख्या
४.७२	बारात	२२३
४.७३	कन्या विलाप तथा सामूहिक रुदन	२२४
४.७४	भेंट देना	२२४–२२५
४.७५	भात भेजना	२२५–२२६
४.७६	महफा (डोली) उठना	२२६
४.७७	वर-वधु का घर के घर आगमन: परछन	२२६–२२७
४.७८	सौगात भेजना	२२७
४.८	मेला	२२७–२२८
४.८१	पशु मेला	२२८
४.९	लोककथा	२२८ –२३०
४.१०	लोक-गीत	२३० –२३१
४.१०१	लोक गीतों का वर्गीकरण	२३१–२३२
४.१०२	प्रभाती	२३२–२३३
४.१०३	लोढा गीत	२३३
४.१०४	ऋतु गीत	२३३–२३४
४.१०५	खेती गीत	२३५
४.१०६	जाति गीत	२३५
४.१०७	नदी (देवी देवताओं) के गीत	२३५–२३६
४.११	खेल	२३६
४.१११	कबड्डी	२३७
४.११२	गेंद	२३७–२३८
४.११३	गींगणियों के खेल	२३८
४.११४	कंकड़ों के खेल	२३८
४.११५	शतरंज	२३९
४.११६	पचीसी	२३९
४.११७	ताश	२३९ –२४०

	पृ.संख्या
पंचम अध्याय: नागार्जुन के उपन्यासों में ग्राम:	२४१-३०१
धार्मिक संदर्भ	२४१-२४३
५.१ ग्राम जीवन में व्याप्त आस्तिकता	२४३-२४४
५.२ मठ	२४४-२४७
५.२.१ मठ और भ्रष्टाचार	२४७-२४९
५.२.२ मेला: आर्थिक शोषण का साधन	२४९
५.२.३ मठ परिवर्तित संदर्भ	२४९-२५०
५.३ देवी-देवता	२५०
५.३.१ देवता	२५०-२५२
५.३.१.१ शालिग्राम	२५२-२५३
५.३.१.२ कुल देवता	२५३
५.३.१.३ कुल देवी-देवता	२५३
५.३.१.४ इष्ट देवता	२५४
अ. हनुमान	२५४
५.३.२ देवी	२५४-२५५
५.३.२.१ इष्ट देवी	२५५
अ. उग्रतारा	२५५
आ. जगदम्बा	२५५
इ. कंकाली माई	२५६
५.३.२.२ ग्राम देवता	२५६-२५७
अ. बैल मंदिर	२५७-२५९
५.४ धार्मिक कृत्य	२५९
५.४.१ यज्ञ	२५९
~~५.४.१.१~~- अ. भारतीय जीवन में यज्ञ का महत्व	२५९-२६०
५.४.१.१ उपन्यासों में वर्णित पंच महायज्ञ	२६०
अ. ब्रह्मयज्ञ	२६०

पृष्ठ संख्या

आ. देवयज्ञ २६०

इ. दैनिक पूजा २६१

ई. पार्थिव पूजा २६१

२. विशिष्ट अवसरों की पूजा २६१

१. सत्यनारायण पूजा २६१-२६२

२. छठी पूजा २६२

३. वृक्ष देवता २६२

४. वट वृक्ष २६२-२६३

५. पीपल २६३

६. बरहम पूजा २६३-२६४

इ. पितृयज्ञ २६४-२६५

ई. भूत यज्ञ २६५

उ. मनुष्य यज्ञ २६५

५.४.२ जप २६६

५.४.२.१ पारायण २६६-२६७

५.४.२.२ पाठ २६७

५.४.२.३ मंत्र २६७-२६८

अ. संप्रदाय २६८

आ. देवता २६८

इ. मंत्र-पीठिका २६८

५.४.३.१ उपन्यासों में उल्लेखित मंत्र २६९

अ. गायत्री २६९

आ. सहस्रशीर्षा पुरुषः २६९-२७१

इ. कर्णपिशाची २७१-२७२

		पृ.संख्या
५.४.४	तंत्र	२७२-२७३
	अ. यंत्र	२७३
	आ. परिभाषा	२७३
	इ. सुचिता	२७३-२७४
५.४.५	तांत्रिक और ओझा	२७५
५.४.५.१	तांत्रिक	२७५
	अ. वेशभूषा	२७५-२७६
५.४.५.२	ओझा	२७६
	अ. वेशभूषा	२७६-२७७
५.४.५.३	औघड़ बाबा	२७७-२७८
५.४.६	बाबा	२७८
	अ. समाधि	२७८-२७९
	आ. बाबा: वेश	२७९-२८०
	इ. महंतिन	२८०-२८१
	ई. झंडा	२८१
	उ. आशीर्वाद	२८१-२८३
५.४.७	साधु	२८४-२८५
५.४.८	सत्संग	२८५
५.४.८.१	कीर्तन	२८५
५.४.८.२	भजन	२८६
५.४.९	व्रत पर्व -	२८६-२८७
५.४.१०	पर्व	२८७
५.५	तीर्थ यात्रा	२८७
५.५.१	ग्रामीण लोकविश्वास	२८८
	अ. विवाह मुहूर्त	२८८
	आ. विद्यारम्भ	२८८-२८९

	पृष्ठ संख्या
इ. कर्म एवं कर्म फल	२८९
इ.१. कर्म प्रकार	२८९-२९०
२. संचित कर्म	२९०
३. भैसा	२९०
४. मुक्ति	२९१
५. बंधन	२९१-२९२
६. क्रियमाण	२९२-२९३
७. प्रारब्ध कर्म	२९३-२९४
५.५.२ ग्रामीण अंधविश्वास	२९४
अ. मनौती	२९५.२९८
५.५.३ पशुबलि	२९८
अ. ब्रह्म बाबा के लिए	२९८-३००
आ. नरबलि	३००-३०१
षष्ठ अध्याय : ग्राम: राजनीतिक संदर्भ	३०२-३८८
६.१ प्रथमकाल खण्ड १९१७ से १९३४	३०३
६.१.१ चम्पारन- नील खेती	३०३-३०४
६.१.२ तीन कठिया	३०५
६.१.३ विविध प्रकार के अत्याचार	३०५
अ. पिटाई	३०५
आ. बागी करार देना	३०६
६.१.४ गांधी जी की बिहार यात्रा	३०६-३०७
६.१.५ किसान कमीशन	३०७-३०८
६.१.६ रौलेट एक्ट	३०८-
अ. रौलेट एक्ट का विरोध	३०८-३०९
६.१.७ रचनात्मक कार्य	३०९-३१०
६.१.८ आतंकवादी आन्दोलन	३१०-३१२

		पृष्ठ संख्या
६.१.९	विभिन्न पार्टियों की स्थापना	३१२
	अ. स्वराज्य दल	३१२
	आ. कांग्रेस परिवर्तनवादी वर्ग	३१२
	इ. हिन्दू महासभा	३१२
	ई. भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी	३१३-३१४
६.१.१०	साइमन कमीशन	३१४
	अ. सर्वदलीय सम्मेलन: युवा संगठन	३१४-३१५
६.१.११	नेहरू रिपोर्ट	३१५
६.१.१२	नमक सत्याग्रह	३१५-३२०
६.१.१३	द्वितीय गोलमेज कांग्रेस	३२०
६.१.१४	गैर कानूनी पार्टी : कांग्रेस	३२१
६.१.१५	कांग्रेस - सोशलिस्ट पार्टी	३२२-३२३
६.२	द्वितीय काल खण्ड (१९३५ से १९४७)	३२४
६.२.१	चुनावों के लिए कांग्रेस तथा विभिन्न पार्टियों की तैयारी	३२४
६.२.१.१	बिहार में चुनाव	३२४
	अ. कांग्रेस तथा अन्य पार्टियाँ	३२४
	आ. पिछड़ा वर्ग संघ	३२४
	इ. स्वतंत्र उम्मीदवार	३२५
	ई. त्रिवेणी संघ	३२५
६.२.२	कांग्रेस का रचनात्मक कार्य	३२६
	अ. आश्रम व्यवस्था	३२६-३२७
	आ. रसोई घर	३२७-३२८
	इ. कांग्रेसी कार्यकर्ता	३२८-३२९
	ई. आश्रम में स्त्री व्यवस्था	३२९
६.२.३	किसान आन्दोलन	३३०

		पृष्ठ संख्या
	अ. विदेशी शासन व्यवस्था तथा जमींदारी प्रथा	३३०
	आ. विश्व व्यापक मंदी	३३०-३३१
	इ. किसान सभा	३३२-३३४
	ई. ग्राम कमेटी	३३४
	उ. ग्राम कमेटी के कार्य	३३५
	ऊ. किसान कौंसिल	३३५-३३६
	ए. महिला किसान सेविका	३३६-३३७
१.२.३.१	सत्याग्रह	३३७-३३८
१.२.३.२	आन्दोलन का उग्र रूप	३३८-३४२
१.२.३.३	गवर्नमेंट और जमींदारों की साठ-गांठ	३४२
१.२.४	बिहार में चुनाव: कांग्रेस की विजय	३४३-३४५
१.२.५	प्रान्त के विभिन्न भागों में किसान सम्मेलन: सत्याग्रह का निर्णय	३४५-३४६
१.२.५.१	समाजवादियों द्वारा नौजवान संघ की स्थापना	३४६-३४७
१.२.६	द्वितीय महायुद्ध का आरम्भ एवं कांग्रेसी मंत्री-मंडल का त्यागपत्र	३४८
१.२.६.१	युद्ध विरोधी आन्दोलन	३४८
१.२.७	समाजवादी सम्मेलन	३४९
१.२.८	किसान दिवस	३५०
१.२.९	मई-दिवस	३५०-३५१
१.२.१०	करो या मरो	३५१
	अ. दिल्ली चलो	३५१-३५२

		पृष्ठ संख्या
६.२.११	गांधी जी की जेल रिहाई	१५२-१५३
	अ. साम्प्रदायिक दंगे	१५३
	आ. नाविक विद्रोह	१५३
	इ. देश विभाजन	१५३-१५४
६.२.१२	भारतीय स्वतंत्रता विधेयक बिल	१५४-१५५
६.३	आधुनिक युग	१५५
६.३.१	जमींदारी उन्मूलन	१५५-१५८
६.३.२	पंचायत राज्य	१५८-१५९
	अ. मुखिया	१५९-१६०
	आ. कार्य	१६०-१६१
	इ. सड़कों का निर्माण	१६१-१६२
६.३.३	चुनाव तथा विभिन्न पार्टियाँ	१६३
	अ. प्रथम आम चुनाव	१६३-१६६
	आ. द्वितीय आमचुनाव	१६७-१६८
६.३.४	गुटबंदी	१६८-१७०
६.३.५	व्यक्तिपूजा	१७०-१७३
६.३.६	हत्या	१७३-१७४
६.३.७	नैसर्गिक प्रकोप: अनाम नेताओं की भ्रष्टनीति	१७५-१७६
६.३.७.१	सहायता शिविर	१७६-१७९
६.३.८	संयमशील कार्यकर्ता	१७९-१८०
६.३.९	वर्गसंघर्ष	१८०-१८३
६.३.१०	वर्ग संघर्ष का उभरता रूप	१८३-१८४
६.३.११	वर्ग संघर्ष का उग्र रूप	१८४-१८५
६.३.१२	वर्ग साम्य	१८५
६.३.१३	वर्ग-चेतना	१८६-१८८

पृष्ठ संख्या

सप्तम अध्याय: ग्राम: आर्थिक संदर्भ ३८९-४३१
७. आर्थिक संदर्भ ३८९
७.१ विभिन्न व्यवसाय ३९०
७.१.१ कृषि व्यवसाय ३९०-३९२
अ. खेती के विविध प्रकार ३९२
आ. घरेलू खेती ३९२-३९४
इ. बागबानी ३९४
७.१.२ मछली व्यवसाय ३९५-३९८
७.१.३ महाजनी व्यवसाय ३९८-३९९
७.१.४ ग्रामीण कोल्हू ३९९-४०२
७.२ श्रमिक तथा उसका पारिश्रमिक ४०३-४०५
७.३ आधुनिकीकरण: स्वतंत्रतापूर्वक आर्थिक स्थिति ४०५-४०७
७.४ पंचवर्षीय योजना तथा आर्थिक संदर्भ ४०७
७.४.१ प्रथम पंचवर्षीय योजना ४०७-४०८
७.४.२ जमींदारी उन्मूलन ४०८-४१०
७.५ ग्रामीण आर्थिक व्यवस्था का असंतुलित रूप ४१०
७.५.१ गरीबी ४१०-४१५
७.५.२ नैसर्गिक प्रकोप ४१५-४१७
७.५.३ शोषित किसान ४१७-४१९
७.५.४ जनसंख्या की निरंतर वृद्धि ४१९-४२१
७.५.४.१ परिवार नियोजन ४२१-४२२
७.६ असंतुलित अर्थ और समन्वय कार्य ४२२
७.६.१ चर्खा ४२२-४२५
७.६.२ भूदान ४२६-४२८
७.७ साहित्य और उसका व्यावसायीकरण ४२८
७.७.१ नेता साहित्यकार ४२८-४२९
७.७.२ प्रकाशक और साहित्यकार ४२९-४३०
७.७.३ सम्पादक और साहित्यकार ४३०-४३१

		पृष्ठ संख्या
७.८	नागार्जुन का आर्थिक दृष्टिकोण	४३१-४३२
अष्टम अध्याय: ग्राम: भाषा संदर्भ		४३३-४५९
८.१	हिन्दी के विविध रूप	४३३
८.१.१	परिनिष्ठित हिन्दी	४३३-४३५
८.१.२	ठेठ मैथिली	४३५
८.१.३	संस्कृतनिष्ठ हिन्दी	४३५-४३७
८.१.४	उर्दू मिश्रित हिन्दी	४३७-४३८
८.२	अन्य भाषा प्रयोग	४३८
८.२.१	बंगाली	४३९
८.२.२	पंजाबी	४३९
८.२.३	भोजपुरी	४३९
८.२.४	मैथिली	४३९-४४१
८.२.५	मराठी	४४२
८.२.६	गुजराती	४४२
८.३.	विदेशी भाषा	४४३
८.३.१	अंग्रेज़ी	४४३-४४४
८.४	मुहावरे तथा कहावतें	४४४
८.४.१	हिन्दी मुहावरे	४४५-४४६
८.४.२	हिन्दी कहावतें	४४६.४४७
८.४.३	~~हिन्~~मैथिली मुहावरे	४४७
८.४.४	मैथिली कहावतें	४४७
८.४.५	उर्दू मुहावरे	४४८
८.४.६	उर्दू कहावतें	४४८
८.५	गालियों का प्रयोग	४४९
८.५.१	अश्लील गालियां प्रयोग	४४९-४५०

	पृष्ठ संख्या
८.५.२ वैकल्पीय गाली प्रयोग	४५० -४५१
अ. पशुओं से सम्बोधित गालियाँ	४५२
आ. सम्बन्ध जोड़ने वाली गालियाँ	४५२-४५३
८.६ हास्य और व्यंग्य पूर्ण भाषा	४५४
८.६.१ व्यंग्य	४५४-४५८
८.६.२ हास्य और व्यंग्य	४५८ -४५९

प्रथम अध्याय

विषय - प्रवेश

1. हिन्दी उपन्यास-परम्परा : एक विवेचन

उपन्यास मूलतः आधुनिक युग की देन है, और आधुनिक जीवन की जटिलताओं को व्यक्त करने के लिए औपन्यासिक संरचना को सशक्त माना गया है। चूंकि उपन्यास स्वयं आधुनिक औद्योगीकृत एवं वैज्ञानिक जीवन से प्रसूत कलारूप है, इसीलिए इस की संरचना को बनाने और इसे निरन्तर गतिशील व परिवर्तनमय बनाये रखने में आधुनिक जीवन प्रमुख भूमिका सम्पन्न करता है।

1.1 उपन्यास : व्युत्पत्ति

उपन्यास शब्द में "अस" धातु और "नि" उपसर्ग है। इन दोनों के योग से "न्यास" शब्द बनता है, और "उप" उपसर्ग के साथ इस शब्द का अर्थ है -- "पास रखी हुई धरोहर"।[1] किन्तु इस शब्द के कई अर्थ जुड़ते और बदलते चलते हैं, जिनके आधार पर कहा जा सकता है कि उपन्यास मानव जीवन को निकट से छूने वाली काल्पनिक कथा है। जब कि अंग्रेज़ी में इसके समानार्थी शब्द का अर्थ है - "युवा और ताजा" अर्थात् सद्यः निर्मित। नॉवेल की व्युत्पत्ति लैटिन के "नावेला" शब्द से हुई। जिसका अर्थ है, --"एक ऐसी कहानी, जिसकी यथेष्ठ लम्बाई हो और उसमें उपन्यास की विशेषताएँ हो।"[2] संक्षिप्त में अंग्रेज़ी और हिन्दी दोनों शब्द उपन्यास की कथात्मकता के साथ मानव जीवन से उसकी प्रतिबद्धता और नवीनता को प्रकट करती है।

---

1. हिन्दी शब्द सागर - द्वितीय भाग पृ- 346
2. न्यू इंग्लीश डिक्शनरी ऑन हिस्टॉरिकल प्रिन्सिपिल्स वाल-6 पृ-242

1.2 उपन्यास : स्वरूप

उपन्यास की अनेकानेक परिभाषाएँ की गयी है, जिनके विस्तार मे जाना विषयान्तर होगा, परन्तु जिनके आधार पर बनने वाले स्वरूप का विश्लेषण हम कर सकते हैं। उपन्यास एक काल्पनिक गद्य कथा होते हुए भी पूरी तरह से काल्पनिक नहीं, वह कला के अन्य रूपों की तरह यथार्थ की पुनःरचना होती है। तथा यथार्थ से प्रतिबद्ध कला रूप है। उपन्यास की कथा और उसके चरित्र वस्तु-जगत के पात्रों और घटनाओं का प्रतीकात्मक अंकन करते हैं। रचनाकार साधारण जीवन की साधारण घटनाओं को असाधारणता और शाश्वतता प्रदान करता है। उपन्यास मे प्रकट जीवन के कार्य कलाप और घटनाएँ सरल एवं सामान्य होते हुए भी उपन्यासकार के शिल्प कौशल और रचना दृष्टि के कारण असाधारण और विशिष्ट हो उठते हैं, इतना ही नहीं इस कला के बल पर किसी विशेष युग मे, किसी विशेष देश और जाति के उपन्यासकार, अपनी कृतियों में जो जीवन अंकित करते है, वह जीवन मनुष्यमात्र का अनुभव बन जाता है। अर्थात उपन्यास मे, सीमित देश-काल में अंकित मानव यथार्थ, सार्वभौमिक और सार्वकालिक यथार्थ बनने की क्षमता रखता है। यह तभी हो सकता है जब - "लेखक जीवन का फोटोग्राफिक प्रतिनिधित्व न कर,एक दृष्टि को अभिव्यक्त करता है, जो यथार्थ की अपेक्षा पूर्ण है, विस्तृत है और अधिक सत्य है।"[1] उपर्युक्त दो विशेषताओं से स्पष्ट है कि गद्य लेखन के अन्य विधा की तुलना मे उपन्यास का विकास तीव्र गति से हुआ है, और इसमें वस्तु और रूप को लेकर कई प्रयोग और परिवर्तन होते रहे है, जिसके कारण उपन्यास कभी वस्तु प्रधान, तो कभी रूप प्रधान होता रहा है। कारण कि कथा साहित्य

- -

1. Arnold Benett : "Author's Crapt " ; Page No. 71.

"ललित कला ही है, और उपन्यास को कलात्मक होना चाहिए अर्थात् वस्तु तत्व के साथ-साथ रूप की भी साधना उपन्यासकार के लिए आवश्यक है ।"[1]

1.2.1 उपन्यास, महाकाव्य और नाटक

उपन्यास एक ही साथ महाकाव्य और नाटक की सीमाओं को छूता है । प्राचीन काल में महाकाव्य का लोक-जीवन से जो सम्बन्ध था, आधुनिक काल में उपन्यास का समाज के साथ वहीं सम्बन्ध है । दोनों भी समग्र जीवन का प्रतिनिधित्व करते हुए सर्वथा विपरीत विधाएँ हैं । महाकाव्य मध्यकालीन चेतना को अभिव्यक्त करता है, जब कि उपन्यास आधुनिक औद्योगिक वर्ग विभक्त चेतना को स्वर देता है, यह पूंजीवादी व्यक्तिवादी चेतना की उपज है । इसीलिए हिगल ने इसे -"मध्य वर्ग का महाकाव्य कहा था और लुकाच ने "बुर्जुआ एपीक आर्ट फार्म" कहा है ।

उपन्यास को नाटक के साथ भी जोड़ा गया है, क्योंकि दोनों जीवन के विस्तार को लेकर चलते हैं । नाटक में अभिनय प्रमुख होता है, जब कि उपन्यास में चरित्र निर्वाह में नाटकीयता आती है । नाटक की सबसे बड़ी शक्ति है, उसका दृश्यत्व, जब कि उपन्यासकार को शब्दों के द्वारा ही दृश्यत्व क्षमता लानी पड़ती है ।

उपन्यास के स्वरूप का यह अवलोकन, अपने सार-रूप में यह निर्देशित करता है कि उपन्यास आधुनिक जीवन की विधा है और यथार्थ के साथ इसका अटूट सम्बन्ध है ।

---

1. Henry James : " The House of Fiction ", Page No. 26-27.

1.3 हिन्दी उपन्यास और सामाजिक यथार्थ

हिन्दी साहित्य में उपन्यास का उद्भव औद्योगिक सभ्यता के साथ हुआ है तथा मध्यवर्ग, इसके विकास में प्रमुख भूमिका सम्पन्न करता रहा है। प्रारम्भ में इसका उद्देश सामाजिक जीवन का चित्रण तथा मनोरंजन दोनों उद्देश्यों से हुआ - किन्तु आगे चलकर मनोरंजन ही इसका प्रमुख लक्ष्य बन गया। तिलस्मी, अय्यारी और जासूसी उपन्यास एक समय हिन्दी उपन्यास में छा चुके थे, किन्तु सामाजिक यथार्थ का स्वर भी उनमें था, तथा शिक्षात्मक एवं उपदेशात्मक रूप में वह अपना अस्तित्व भी सिद्ध कर चुके थे। इस यात्रा को एक क्रांतिकारी मोड प्रेमचंद ने दिया और उपन्यास को --"मानव चरित्र का चित्र" बताया। यह एक महत्वपूर्ण निर्णय था, जो उपन्यास और सामाजिक यथार्थ को एक दूसरे से जोड़ देता है।

प्रेमचंद के उपन्यास सामान्तवादी अर्थ व्यवस्था से पूंजीवादी अर्थ व्यवस्था में बदलते चलने की प्रक्रिया का निर्मम विश्लेषण करते है और सामान्य व्यक्ति को इस यातना से गुजरता हुआ बतलाते है। "गोदान" को "होरी" इस यातना का शिकार है। प्रेमचंद ने परिवेश सहित मनुष्य का चित्रण किया तथा समाज और व्यक्ति के यथार्थ को साथ-साथ लेकर चले। उनके बाद हिन्दी उपन्यास व्यक्ति और समाज के यथार्थ को अलग-अलग प्रयोगों में लेकर चलता है। जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी, अज्ञेय, यशपाल, रेणु, नागार्जुन, अमृतलाल नागर आदि अनेक ऐसे उपन्यासकार है, जिन्होंने हिन्दी उपन्यास का विकास यात्रा को विशिष्ट मोड़ प्रदान किया।

1.4 ग्रामीण उपन्यास : परम्परा

हिन्दी साहित्य में ग्रामीण उपन्यासों का आरम्भ प्रेमचन्द ने किया है । [redacted] ग्राम जीवन से सम्बन्धित उपन्यासों - सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, कर्मभूमि तथा गोदान कृषक के शोषण की समस्या पर लिखे गये हैं । प्रेमचन्द का समय भारतीय ग्रामों के चरम शोषण और विघटन का समय था । इसलिए भारतीय विचारकों और रचनाकारों के चिन्तन में "ग्राम" प्रमुख विषय बने । गांधी के स्वराज्य की कल्पना में "ग्राम" बहुत बड़ी भूमिका सम्पन्न करते हैं । गांधी ग्रामीण "अर्थतंत्र" की स्वाधीनता को राष्ट्रीय स्वाधीनता का केन्द्रीय प्रश्न मानते थे । जिससे स्पष्ट था कि स्वातंत्र्योत्तर भारत में "ग्राम" का सवाल भारतीय सामाजिक आर्थिक चिंतन में प्रमुख बनता है और यह बना भी ।

प्रेमचन्द के अतिरिक्त जयशंकर प्रसाद[1], वृन्दावनलाल वर्मा[2], विश्वम्भरनाथ कौशिक[3], भगवतीचरण वर्मा[4], सियारामशरण गुप्त[5], रांगेय राघव[6], अमृतलाल नागर[7], ने भी "ग्राम" को अपनी लेखनी का विषय बनाया । लेकिन इनकी प्रसिद्धि ग्रामीण उपन्यासकार के रूप में न हो सकी ।

---

1. तितली
2. लगन, प्रेम की भेंट, अमर बेल
3. भिखारिणी
4. आखरी दाव, भूले बिसरे चित्र
5. गोद, अंतिम आकांक्षा, नारी
6. घरौंदे, [redacted] कब तक पुकारूँ , उबाल, विषाद मठ
7. महाकाल

ग्राम जीवन का यथार्थ चित्रण प्रेमचंद के बाद रेणु और नागार्जुन ने किया । ग्रामीण जीवन के साथ रेणु की प्रतिबद्धता इतनी अधिक रही कि उन्हें आंचलिक उपन्यासों का प्रवर्तक माना गया और इसके साथ ही आंचलिक उपन्यास लेखन की एक धारा हिन्दी साहित्य में चली --"सामाजिक उपन्यास में नागरिक जीवन को चित्रित करते-करते उपन्यासकार थक गये और जब पाठकों का समुदाय उन घिसे-पिटे और अंशतः रूढ़ नागरिक चित्रणों से ऊब उठा तब नये अज्ञात जीवन और दूरवर्ती-प्रदेशों के अपरिचित क्षेत्रों से सम्बन्धित उपन्यास लिखे गये । इसलिए ये उपन्यास विशेष सामान्य नागरिक जीवन या नागरिक जीवन की प्रति-च्छवि नहीं बनना चाहते ।"[1] किन्तु आंचलिक उपन्यास लेखन आगे चलकर ग्रामीण यथार्थ से ही जुड़ा नहीं रहा, इसका क्षेत्र विस्तृत हो गया, किसी भी क्षेत्र विशेष को उसकी समूचि विवरणात्मकता और विशिष्टता के साथ चित्रित करना आंचलिक उपन्यास के लिए आवश्यक माना जाने लगा, इसलिए "मुरदा घर" [जगदम्बा प्रसाद दीक्षित] जैसे नगरीय जीवन के उपन्यास भी आंचलिक उपन्यास माने जाते हैं ।

प्रेमचन्द जिस सीमा, शक्ति और विशेषता के कारण ग्राम- जीवन के कथाकार है, उसी सन्दर्भ में नागार्जुन ग्राम-जीवन को अपना विषय-वस्तु बनाते है । प्रेमचन्द ग्रामीण यथार्थ पर दृष्टि केन्द्रित कर देश की सामाजिक आर्थिक व्यवस्था में, परिवर्तन के साथ गाँवों की बढ़ती यातना का साक्षात्कार करते है, इसलिए प्रेमचंद "अवध" प्रान्त का चित्रण करते हुए भी उसे ऐसे रूप में प्रस्तुत करते है, कि वह भारत-मात्र का "गाँव" बन जाता है । इसी प्रकार नागार्जुन भी "मिथिला" के विशिष्ट जीवन, रहन-सहन उसके राजनैतिक, आर्थिक कार्य-कलाप और क्षेत्रीय संस्कार और चरित्र-चित्रण के साथ उसे ऐसी

- -

1. प्रकाश वाजपेयी : हिन्दी आंचलिक उपन्यास पृ- 2

पूर्णता प्रदान करते है कि नागार्जुन के उपन्यासों का गाँव और उसका अनुभव क्षेत्र भारत-मात्र के गाँव को प्रस्तुत करता है । इसलिए नागार्जुन के उपन्यासों का गाँव एक ओर क्षेत्रीय संस्कारों के कारण विशिष्ट है, तो दूसरी ओर देश की सामाजिक,आर्थिक और राजनैतिक गतिविधियों से संपृक्ति के कारण सामान्य भी ।

उपन्यास की रचना और यथार्थ के साथ सम्बन्धों की उपर्युक्त विवेचना से यह स्पष्ट है, कि उपन्यास मानव जीवन की कथा कहता है, जो मानव जीवन के अन्तर विरोधी परिवर्तनों और प्रक्रियाओं से अभिन्न है । उपन्यास का यथार्थ, वह यथार्थ है, जो उपन्यासकार की दृष्टि से देखा गया है, और उसके द्वारा नियोजित क्रम में ढल कर आया है । उपन्यासकार अपने चतुर्दिक वातावरण से प्रभावित होता है, और जाने अनजाने उसे चित्रित अवश्य करता है । इसलिए उपन्यास में व्यक्त यथार्थ को वास्तविक जीवन से जोड़ने में बहुत कठिनाई नहीं होती।उपन्यासकार का यथार्थ से रिश्ता द्वन्द्वात्मक होता है और उसकी रचना में व्यक्त यथार्थ अपने वस्तुगत यथार्थ से द्वन्द्वात्मक सम्बन्ध रखता है, अर्थात् रचना में व्यक्त जीवन एक विशिष्ट दृष्टि से देखा गया और अनुभव किया गया जीवन है, जो कला के मानदंडो के अनुसार रूपायित होकर आया है । इसलिए चंद्रकांता संतती (देवकी नंदन खत्री) जैसे काल्पनिक रोचक कथाओं में भी उस युग का यथार्थ है, और प्रेमचंद के सामाजिक उपन्यासों में भी उस युग का यथार्थ है । अन्तर उस लेखक विशेष द्वारा, यथार्थ चित्रण में होता है ।

नागार्जुन के उपन्यासों में व्यक्त ग्रामीण यथार्थ, भारत के बदलते हुए सामाजिक, राजनैतिक जीवन का स्पष्ट अंकन है । उपन्यासों में ग्रामीण-यथार्थ के चित्र को देखने के लिए लेखक के अनुभव जगत के "ग्राम" और उपन्यासों में प्रस्तुत ग्राम, उसकी विभिन्न ईकाइयों गतिविधियों, स्थानीय संस्कारों और सार्वदेशिक परिवर्तन प्रक्रियाओं का सूक्ष्म विश्लेषण आवश्यक है, जिसके लिए "समाजशास्त्रीय" पद्धति का प्रयोग किया जा सकता है ।

द्वितीय अध्याय

नागार्जुन-जीवन और साहित्य

नागार्जुन - पंचाग कुंडली : १९११.

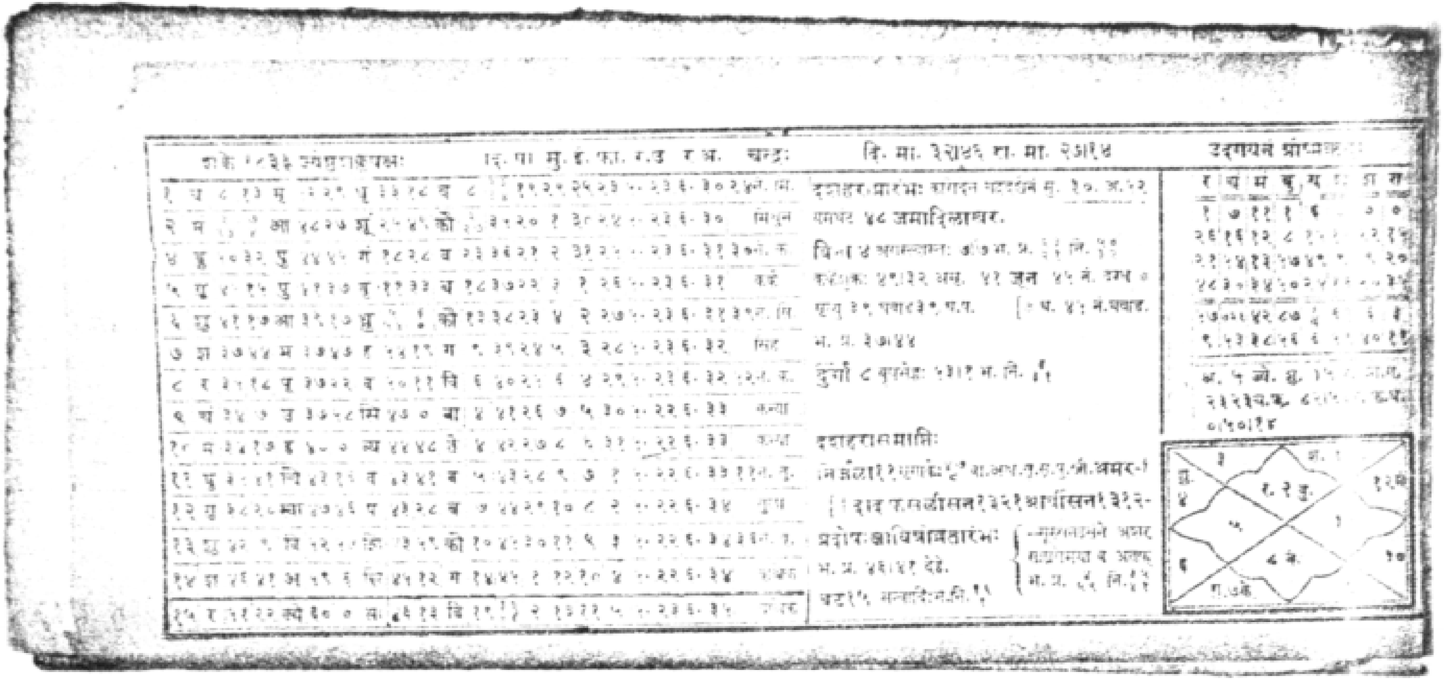

जनकवि 'बाबा' नागार्जुन

जन्मतिथि

शके १८३३ ज्येष्ठ शुक्ल १५,

ई॰ सन्॰ ११ जून १९११,

2.1 जन्म

वैद्यनाथ मिश्र उर्फ नागार्जुन का जन्म 11 जून 1911 ई० रविवार[1] को उनके ननीहाल "सतलखा"[2] ग्राम में हुआ है । "सतलखा" ग्राम पोस्ट मधुबनी जिला दरभंगा के अन्तर्गत है ।[3] वास्तव में नागार्जुन के माता-पिता तरौनी[4] के निवासी थे । जो दरभंगा से चौदह पन्द्रह मिल पूर्व की ओर स्थित है ।[5]

नागार्जुन के पूर्वज तरौनी के निवासी थे । तरौनी में पंडितों का बहुत बड़ा बसेरा था । इसी पंडिताऊ कुल में वैद्यनाथ मिश्र उर्फ नागार्जुन का जन्म हुआ था जो नागार्जुन[6], बाबा[7], यात्री[8], वृन्दावन काका[9], मधुरी चाचा[10] आदि नामों से प्रसिद्ध है ।

- -

1. विरोधिकृत नाम् संवत्सर ज्येष्ठ शुद्ध पौर्णिमा शक संवत् 1833 यही है। गणना के आधार पर तेरह जमादील आखर 1328 हीजरी भी यही है, फसली के आधार पर पाँच अमरदाद 1321 फसली भी यह है । तमिल मास के आधार पर यह वृषभमास का 29 वाँ दिन था । स्वामी कन्नु पिल्ले : इंडियन अफिमरीष

2 तथा 3 डा०प्रभाकर माचवे : नागार्जुन पृ- 3

4. डा०प्रकाशचन्द्र भट्ट : नागार्जुन जीवन और साहित्य पृ- 18

5. " " " : " " " " पृ- 18

6. डा०प्रकाशचन्द्र भट्ट : नागार्जुन जीवन और साहित्य पृ- 18

7. डा०प्रभाकर माचवे : नागार्जुन पृ- 3

8 तथा 9 : विजय बहादुर सिंह : नागार्जुन का रचना संसार पृ- 35

10. विजय बहादुर सिंह : नागार्जुन का रचना संसार पृ- 36

2.1.1. नामकरण

नागार्जुन अपने "पिता" गोकुल मिश्र की छठवीं सन्तान थी। इनके नामकरण से संबंधित गाथा सर्व प्रसिद्ध है। पिता गोकुल मिश्र और माता उमादेवी को पाँच संताने हुई और चल बसीं। निराश होकर श्रद्धावान दम्पत्ति ने दीर्घायु संतान प्राप्ति के लिए "वैद्यनाथ धाम" जाकर महीने भर का अनुष्ठान किया और जब छठवीं संतान ने जन्म लिया तो आस्थावती दम्पत्ती ने कुल दीपक की रक्षा के लिए उसे बाबा वैद्यनाथ का ही आशीर्वाद मानते हुए नामकरण वैद्यनाथ किया।"[1]

2.1.2. पूर्वज तथा माता पिता

नागार्जुन के माता पिता का नाम उमादेवी तथा गोकुल मिश्र था। इनके पितामह का नाम छत्रमणी मिश्र[2] और प्रपितामह का नाम पारसमणी मिश्र था।[3] यह तीनों ही अल्प पठित थे। पिता गोकुल मिश्र (गोकुलानन्द या गोकुलनाथ) तीनों भाइयों में सबसे छोटे थे। इनके प्रकृति में लापरवाही घुमक्कड़ी और दायित्वहीनता दिखाई देती थी। इन्होंने जमकर कभी खेती-बाड़ी की हो, इस बात का सबूत नहीं मिलता। हाँ "सफाई, लाल्स पर दुःखकातरता और मस्ती गोकुलनाथ जी के प्रमुख गुण थे।"[4]

नागार्जुन की माँ उमादेवी सीधे-साधे ढंग की ग्रामीण महीला थी - "अधेड़ उम्र में ही उनका देहान्त हो गया।"[5] नागार्जुन

---

1. विजय बहादुर सिंह : नागार्जुन का रचना संसार पृ- 13
2. [redacted] डा0 प्रकाश चन्द्र भट्ट : नागार्जुन : जीवन और साहित्य पृ- 19
3. " " " " पृ- 19
4. " " " " पृ- 19
5. " " " " पृ- 19

ने इस देहान्त का कारण पिता को ठहराया " उस रोज दोपहर की उमरन में अन्दर लेटी हुई मेरी माँ का गला कुल्हाड़ी से किसने काटना चाहा था ? समाज की दखियों औरतों से आपके लगाव थे ।----
लेकिन मेरी माँ को और मेरे पाँच भाई-बहनों को किसी उपेक्षा का शिकार होकर दम तोड़ना पड़ा था ?"[1]

पिता श्री गोकुल मिश्र को उनके नाना से मिली हुई जमीन की देख-रेख के लिए कभी-कभी धुमेड़ा नदी के किनारे बसा "महिषी"[2] ग्राम जाना पड़ता था । मातृहीन वैद्यनाथ पिता के साथ वहाँ कई वर्ष गुजारे ।

2.2 अध्ययन

2.2.1. प्रारम्भिक शिक्षा

अ. तरौनी

नागार्जुन की प्रारम्भिक शिक्षा "तरौनी"[3] गाँव के संस्कृत पाठशाला में हुई. उन दिनों वहाँ दो पाठशालाएँ थी । एक"लोअर प्राइमरी स्कूल"था और दूसरा अपर प्राइमरी स्कूल । इन दोनों के अतिरिक्त जिस पाठशाला में नागार्जुन की पढ़ाई हुई वह "संस्कृत पाठशाला" थी । वहाँ के स्थानीय धनिक इस पाठशाला के कर्णाधार थे । इस पाठशाला में, एक ओर बालक वैद्यनाथ को छात्र-वृत्ति मिलती थी, तो दूसरी ओर यजमानों के घरों में चंडी पाठ, दुर्गा पूजा, विजयदशमी त्यौहार आदि के दिनों में दक्षिणा के रूप में धन भी प्राप्त होता था । बाल्यावस्था में एक ओर अध्ययन कार्य निःशुल्क तो दूसरी ओर धन संचय जिससे घरेलू व्यय सहज रूप से चल सकता था ।

---

1. मोहन राकेश : आईने के सामने पृ- 18
2. डा० प्रकाश चन्द्र भट्ट : नागार्जुन जीवन और साहित्य पृ- 19
3. डा०प्रकाश चन्द्र भट्ट : नागार्जुन जीवन और साहित्य पृ- 20

आ. गोनौली

तदुपरान्त बाबा नागार्जुन ने पछगछिया सहरसा में स्थित गोनौली[1] से व्याकरण मध्यमा उत्तीर्ण किया । इसके पश्चात उच्च शिक्षा की प्राप्ति के लिए वे काशी चले गये ।

2.2.2 काशी

उन दिनों काशी में दरभंगा राजकुल की ओर से एक धर्मशाला महारानी "लक्ष्मीश्वरी"[2] के नाम से संचालित थी । जिसमें नीचे के कमरे, तीर्थ यात्रियों के लिए और ऊपर के कमरें छात्रों के लिए सुरक्षित है । वैद्यनाथ मिश्र ने चार वर्ष तक इसी छात्रावास में रहकर अध्ययन किया और "शास्त्री"[3] की उपाधि अर्जित की ।

उच्च शिक्षा के अतिरिक्त, साहित्य में बालकों को प्रोत्साहित करने वाला वातावरण भी वहाँ था ।

बाल विवर्धिनी सभा

दरभंगा की छोटी महारानी लक्ष्मीवती केवल श्रद्धालु ही नहीं, साहित्य प्रेमी महिला भी थी । वह ज्ञान पिपासु तरुणों को प्रोत्साहित करने के लिए, "काशी विद्यापीठ" के अध्यापक पण्डित बलदेव मिश्र से "बाल वर्धिनी सभा" का संचालन करवाती थी, जिसके द्वारा "वाद-विवाद", भाषण तथा समस्यापूर्ति की प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती थी ।[4] जिसमें बालक वैद्यनाथ ने तीन बार पुरस्कार प्राप्त किए । चौथी बार पुरस्कार

- -

1. प्रभाकर माचवे : नागार्जुन : पृ- 99
2. डा० प्रकाश चन्द्र भट्ट : नागार्जुन जीवन और साहित्य पृ- 21
3. डा० विजय बहादुर सिंह : नागार्जुन का रचना संसार - पृ-29
4. " " " : " " " पृ- 16

प्राप्त न करने की सुविधा से, मैनेजर साहब को कहना पड़ा -- तुम तीन बार पुरस्कार ले चुके हो । इसलिए वापस जाओ ।"[1] इस अनुदान से वैद्यनाथ की हिम्मत बढ़ती गयी और वे संस्कृत और मैथिली में कविता लिखने लगे ।

बालक वैद्यनाथ में कवि का कोमल हृदय, साहस और विद्रोह वृत्ति की भावना थी । छात्र जीवन की एक विशेष घटना, उनके साहस तथा विद्रोह वृत्ति को प्रकट करती है ; प्रकाशचन्द्र भट्ट[2] तथा प्रभाकर माचवे[3] ने अपनी पुस्तकों में इसका उल्लेख किया है । एक अज्ञात मृतक का दाह संस्कार करने से --"अधिकांश छात्र और एक दो बुजुर्ग अध्यापक भी इस उद्धत छात्र से नाराज हो गये ।"[4] लेकिन वैद्यनाथ ने इसकी परवाह नहीं की ।ये संस्कार वैद्यनाथ के हृदय पर ऐसे जमे रहे, जिसके कारण वे समाज में प्रचलित आडम्बरों, रूढ़ियों और विषमताओं के विरुद्ध साहित्य में आवाज उठा सकने में सफल रहे ।

2.3 अध्यापन

अध्ययन के साथ-साथ वैद्यनाथ मिश्र ने भारत तथा विदेश में अध्यापन कार्य सम्पन्न किया ।

2.3.1.भारत

भारत – कलकत्ता, काठियावाड़ा तथा पंजाब में ।

अ.कलकत्ता

बनारस से "शास्त्री" उपाधि अर्जित करने के बाद वैद्यनाथ कलकत्ता के "संस्कृत कॉलेज" से प्राकृत का विशेष अध्ययन करने की इच्छा

---

1. विजय बहादुर सिंह : नागार्जुन का रचना संसार पृ- 16
2. डा० प्रकाश चन्द्र भट्ट : नागार्जुन जीवन और साहित्य पृ- 21
3. प्रभाकर माचवे : नागार्जुन पृ- 4
4. डा० प्रकाश चन्द्र भट्ट : नागार्जुन जीवन और साहित्य पृ- 21

से कलकत्ता चले गये । वहाँ पर प्रवेश पाना आसान न था । लेकिन वैद्यनाथ ने कुशाग्र बुद्धि का परिचय[1] देकर एडमिशन ही नहीं लिया बल्कि प्रिंसिपल महोदय ने उन्हें -"पचास रुपये मासिक पर बेल्जियम निवासी एक पादरी को संस्कृत पढ़ाने का निर्देश दिया ।"[2] यहीं से उन्होंने "साहित्य शास्त्राचार्य[3] की परीक्षा पास की ।

आ. <u>काठियावाड़</u>

बाबा काठियावाड़ में कुछ समय तक जैन मुनियों को "प्राकृत" पढ़ाते रहे ।

इ. <u>पंजाब</u>

पंजाब में उनकी भेंट स्वामी केशवानंदजी से हुई, जिन्होंने वैद्यनाथ को अध्यापन तथा अनुवाद कार्य के लिए अपना सहायक नियुक्त किया ।

वैद्यनाथ का मन अभी भी स्थिर नहीं हुआ था । पढ़ने-पढ़ाने की जिज्ञासा बढ़ती ही गयी । भगवान बुद्ध तथा बौद्ध धर्म ग्रंथ नागार्जुन के लिए आदरणीय थे । किन्तु पढ़ने की सुविधा वहाँ नहीं थी । बाबा ने "कलकत्ता महाबोधि सोसाइटी" के निर्देशानुसार त्रिपिटक पढ़ने हेतु के लिए श्रीलंका जाना उचित समझा । स्वामी केशवानंद जी ने इनकी उत्कट इच्छा को देखकर उन्हें रोकना उचित नहीं समझा और -"खर्च के लिए दो हजार रुपये भी दिये, जो मद्रास पहुँचते-पहुँचते एक गिरहकट के हवाले

---

1. प्रिंसिपल : संस्कृत, अंग्रेजी और बंगला के धुरंधर विद्वान थे । इण्टरव्यू के दिन वैद्यनाथ मिश्र ने संस्कृत में दस श्लोक लिख डाले ---- चपरासी को चार आने घूस देकर अपनी कविता उधर पहुँचा दी । --"आर तोमार परीक्षा लेबे ने । एइ हलो ।" विजय बहादुर सिंह : नागार्जुन का रचना संसार पृ- 21-22 से उद्धृत ।
2. विजय बहादुर सिंह : नागार्जुन का रचना संसार पृ-22
3. प्रभाकर माचवे : नागार्जुन पृ- 99

हो गए ।"[1] रामेश्वरम् मठ के उत्तर भारतीय रसोइया की सहायता से वे "श्रीलंका मठ" पहुँचे ।

2.3.2. विदेश : लंका

श्रीलंका में "केलानिया" नामक स्थान पर, एक पुराने विद्यापीठ "विद्यालंकार परिवेण" में, बौद्ध भिक्षुओं को संस्कृत पढ़ाने का कार्य उन्हें सौंपा गया था जिसके बदले वे पाली भाषा के माध्यम से बौद्ध दर्शन का अध्ययन भी किया करते थे ।

2.4 विवाह

सन् 1932 में 21 वर्ष की अवस्था में इनका विवाह "हरिपुर"[2] की ग्रामीण कन्या अपराजिता के साथ हुआ था । विवाह के एक वर्ष बाद 1933 ई0 में गौना हुआ ।

2.4.1 घरेलू वातावरण

पिता से बाबा का मन मुटाव बना ही रहता था । इसलिए पत्नी के साथ दो-चार महीने मुश्किल से बीते । पिता को दण्डित करने के विचार से सन् 1934 में घर छोड़ा तो सन् 1941 में वापस लौटे । गृहस्थाश्रम में लौटने पर ससुराल वालों ने बड़ी धूमधाम से उनका स्वागत किया । किन्तु तरौनी के दकियानूसी पंडितों ने हो-हल्ला मचाया । उनका कहना था -- "बौद्ध तो आधा मुसलमान होता है, आधा ईसाई । x x x यह लड़का ब्राह्मणों के समाज में फिर से वापस लिया ही नहीं जा सकता ।"[3]

---

1. विजय बहादुर सिंह : नागार्जुन का रचना संसार पृ- 23
2. डॉ0 प्रकाश चन्द्र भट्ट : नागार्जुन : जीवन और साहित्य पृ- 26
3. " " " "

किन्तु इस टक्कर का समर्थन मिथिला की तरुण पीढ़ी ने किया ।

2.5 संतान

नागार्जुन की छः औरस सन्तान है ।

2.5.1 पुत्र

जिनमें चार पुत्र है ।

2.5.2 पुत्रियाँ

तथा दो पुत्रियाँ - उर्मिला तथा मंजु ।[1]

2.5.3 मानस पुत्र

औरस पुत्रों के अतिरिक्त नागार्जुन का मानस पुत्र - बलचनमा[2] है । तथा इनके सभी उपन्यास, ---- - रतिनाथ की चाची, बलचनमा, बाबा बटेसरनाथ, नई पौध, दुखमोचन, वरुण के बेटे, उग्रतारा, जमनिया का बाबा, कुंभीपाक तथा हीरक जयन्ती - भी इन्हीं के मानस पुत्र है ।

2.6 उपन्यासकार के विविध रूप

उपन्यासकार नागार्जुन, खादी धारण कर खद्दर धारी बने, बौद्ध धर्म ग्रहण कर के बौद्ध भिक्षु, वामपंथी विचारों की ओर आकर्षित होकर कॉमरेड फिर शोषित किसानों को मुक्ति दिलाने उद्देश्य से किसान नेता बने । उपन्यासकार के इन विविध रूपों का दर्शन हमें उनके उपन्यासों[3] में दिखाई देता है ।

---

1. नागार्जुन : आईने के सामने पृ- 22
2. " : " पृ- 23
3. " : बलचनमा, दुखमोचन तथा वरुण के बेटे ।

2.6.1 खद्दर धारी

वैद्यनाथ मिश्र, काशी में जिन दिनों रहा करते थे, उन्हीं दिनों मालवीय जी के प्रभाव से "खादी पहनना शुरू कर दिया था ।"[1] उनके मन में राष्ट्र प्रेम, देशदर्शन, समाज-सेवा करने की उत्कट इच्छा उठती थी । साथ ही राष्ट्रीय पार्टी कांग्रेस पर आस्था रखना इनका विशेष गुण भी हो गया था ।

2.6.2 बौद्ध भिक्षु

"वैशालिया" में भिक्षु बिरादरी वैद्यनाथ जी का अत्याधिक सम्मान करते थे, लेकिन गैरिक वस्त्रधारी संन्यासी न होने के कारण जब कभी साथ बैठने उठने का सवाल आता तो उन्हें नीचे आसन पर बिठाया जाता था । एक स्वाभिमानी पंडित को यह बात अक्सर खलती थी । उन्हें पता था, कि बौद्ध भिक्षु बुद्धिबल और पाण्डित्य में उनकी बराबरी के नहीं है । आखिर एक दिन वैद्यनाथ ने तय किया, कि जब तक "विद्यालंकार परिवेण" में रहे - संन्यास ले लेने में ही "हीनतागांठी" से मुक्ति मिल सकेगी । अतः मठाधिपतियों ने उन्हें "भिक्षुनाम" चुनने की स्वतंत्रता दे दी, और उन्होंने विख्यात दार्शनिक "नागार्जुन" का नाम चुना[2] और दीक्षा ग्रहण की ।

---

1. विजय बहादुर सिंह : नागार्जुन और उनका रचना संसार पृ- 18

2. नागार्जुन" नाम धारण करने के पीछे आपका उद्देश्य क्या था ? इस प्रश्न का समाधान देते हुए उन्होंने कहा - साधारणतः भिक्षुक वर्ग "गोत्र" को धारण करते हैं । गोत्र जिससे वे जाति का पता चलता है । मैं जाति प्रथा में विश्वास नहीं रखता, मेरी जाति का पता किसी को न चले इसलिए मैंने यह नाम धारण कर लिया ---उपन्यासकार से साक्षात्कार-14.2.82.

2.6.3 कॉमरेड

"केलानियां" के मठ में रहते हुए उनके विचारों में क्रांतिकारी परिवर्तन आया । उनका "लंका सम-समाज" के विप्लवी नेताओं से मिलना जुलना शुरू हो गया था । वामपंथी चिन्तन और विचारों के प्रति उनका आकर्षण बढ़ता गया । परदेश में रहते हुए भी नागार्जुन अपने देश की गतिविधियों से अनभिज्ञ न थे । समाचार पत्रों द्वारा उन्हें खबरें मिलती थी । उन्हीं दिनों बिहार में किसान आन्दोलन, स्वामी सहजानंद के संचालन में शुरू हुआ था । स्वामी सहजानंद को नागार्जुन की कमी अखरने लगी - उन्होंने नागार्जुन को पत्र लिखा -- "वहाँ मुर्दों के चक्कर में क्या पड़े हो ? आओ जनता के लिए काम करो ।"[1] वे स्वामी जी की आज्ञा से तथा "देश के काम" आने की इच्छा से, स्वदेश की ओर लौट आए और किसान आन्दोलन में कूद पड़े ।

2.6.4 किसान नेता

इस आन्दोलन में उन्होंने सक्रिय भाग लिया । जिसके फलस्वरूप उन्हें-"छपरा तथा हजारी बाग से, दस महीने की सजा हुई ।"[2] जेल के साथियों में श्यामनंदन मिश्र और किसान सभा के प्रसिद्ध नेता पण्डित आर्यानन्द शर्मा भी थे । इन्हीं दिनों दो-एक बार नागार्जुन का पत्र-व्यवहार सुभाष चन्द्र बोस जैसे क्रांतिकारी नेताओं से भी हुआ था ।

---

1. विजय बहादुर सिंह : नागार्जुन रचना संसार पृ- 23
2. " " " " पृ- 24

2.6.5 जीवन के विविध मंच पर

जेल से छूटते ही "द्वितीय विश्व युद्ध" सामने था । कांग्रेस के भीतर फूट पड गयी थी । दूसरी ओर समाजवादी और साम्यवादी दल थे । जो हिन्दुस्तानी जनता को युद्ध से बचाना चाहती थी । उन्होंने जगह-जगह युद्ध विरोधी आन्दोलन छेड़ रखा था । बिहार में इसका संचालन पटना स्थित "फार्वर्ड ब्लाक" कार्यालय से हो रहा था । उन दिनों नागार्जुन वहीं थे । उन्होंने एक पैम्फ्लेट --'न एक पाई न एक भाई', छपाकर बाँटा। बिहार कांग्रेस की अध्यक्षता भी नागार्जुन कर चुके थे । देहातों में जाकर किसानों से चावल वगैरह वसूल करके कार्यकर्ताओं को लाकर खिलाते थे ।[1] रतिनाथ की चाची उपन्यास में ताराचरण, वरूण के बेटे उपन्यास का मोहन माँझी तथा दुखमोचन उपन्यास का दुखमोचन के माध्यम से उपन्यासकार का व्यक्तित्व इसी तरह झलक पड़ता है । अंग्रेज सरकार की निगाहों से बचने के लिए वे भूमिगत हुए, किन्तु पकड़े गये और "भागलपुर जेल में आठ महीने रहना पड़ा ।"[2] जेल जीवन उन्हें मार्क्सवादी विचारधारा से परिचित कराने में सहायक हुआ । उनके अन्दर -"बुद्ध" बैठे ही थे, अब मार्क्स भी आ गये ।"[3] जिसके फलस्वरूप नागार्जुन व्यक्तिगत सम्बन्धों के संकीर्ण विचारों से छुटकारा पाकर सामाजिकता के व्यापक घेरे में पहुँच गये । उनके मन में पिता के प्रति जो क्रोध था, वह भी समाप्त प्रायः हो गया था ।

उन्हीं दिनों उन्हें, जेल में वृद्ध पिता से भेंट हुई । लौटते हुए जेलर से रो-रोकर कहते गए --" यह लड़का तो बरसों से भागा हुआ है । ---बछिया की पीठ में छुरा घोंप कर बाबाजी बना घूमता है । इस कसाई को जब आप जेल से रिहा करनेवाले हो तब तार देकर मुझे बुलवा

- -

1. विजय बहादुर सिंह : नागार्जुन का रचना संसार पृ- 24
2. " " " : " पृ-24
3. डा0प्रकाश चन्द्र भट्ट : नागार्जुन : जीवन और साहित्य पृ- 26

लेंगे । हम चार जने मिलकर आयेंगे और इसे पकड़कर ले जायेंगे ।"[1]
दुबारा जेल के फाटक पर हाजिर होकर पिता ने नागार्जुन को अपनी हिरासत में ले लिया । जेल से छूटकर नागार्जुन ने चीवर और कमण्डल सीताराम आश्रम के हवाले किया, जो आज भी वहाँ सुरक्षित रखा है ।"[2]
मिश्र जी पुत्र के प्रत्यावर्तन पर प्रसन्न भी थे और साथ ही रूष्ट भी, इसलिए की --"दो बार जेल की सजा भुगत आया है तो शायद अब नौकरी भी मुश्किल से ही मिलेगी । यह क्या बहु को खिलायेगा और क्या मेरी सेवा करेगा ।"[3]

इस चिंता का मुँहतोड़ जवाब नागार्जुन ने आठ-आठ पेज की मैथली भाषी कितबिया "बुढ़वर विलाप" लिखकर छपवाली । इन पुस्तकों को झोले में भरकर शहर और रेल गाड़ियों के मुसाफिरों में बेच आते । पुत्र के इस कार्य से पिता असंतुष्ट ही रहे -- "यह काम तो मैं भी कर सकता हूँ, हाट-बाजार में जाकर दस-बीस कितबिया जरूर बेच आऊँगा । -- तुम बाहर चले जाओ और अच्छी भली नौकरी ढूंढ लो ।"[4] पिता की इच्छानुसार नागार्जुन नौकरी की तलाश में पंजाब के [हैदराबाद] सिंध शहर गये ।

2.7 साहित्यिक रूपरेखा

नागार्जुन हिन्दी, मैथिली तथा संस्कृत साहित्य के प्रतिभाशाली साहित्यकार हैं । साहित्य के विविध विधाओं, लेख, कविता उपन्यास तथा बाल साहित्य का निर्माण इन्होंने कुशाग्र बुद्धि से किया है ।

- -

1. डॉ० प्रकाश चन्द्र भट्ट : नागार्जुन : जीवन और साहित्य पृ- 25
2. विजय बहादुर सिंह : नागार्जुन और उनका रचना संसार पृ- 25
3. डॉ प्रकाश चन्द्र भट्ट : नागार्जुन जीवन और साहित्य पृ- 26
4. " " " : " पृ- 27

अध्ययन की सुविधा के लिए, इनके साहित्य का विभाजन दो भागों में किया जाता है । 1. अनूदित साहित्य तथा 2. मौलिक साहित्य ।

2.7.1 अनूदित साहित्य

पंजाब में जैनमुनि उपाध्याय आत्मारामजी महाराज के निर्देशन में सौ रुपये मासिक पर प्राकृत भाषा के ग्रन्थों का संस्कृत में अनुवाद करने लगे । इसके अतिरिक्त कालिदास के मेघदूत का सन् 1979, जयदेव के गीतगोविन्द सन् 1979 तथा विद्यापति के गीतों का सन् 1979 में अनुवाद हिन्दी में किया ।

अ. उपन्यास तथा कहानियाँ

गुजराती तथा बंगाली उपन्यासों का अनुवाद भी नागार्जुन ने किया है । सन् 1954 में कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी का उपन्यास, 'पृथ्वीवल्लभ' तथा शरत के उपन्यास "ब्राह्मण की बेटी", "देहाती दुनिया" तथा कहानियों का अनुवाद भी इन्होंने ही किया है । यात्री जी ने मैथिली के उपन्यास पारो, नवतुरिया तथा बलचनमा का क्रमशः पारो, नई-पौध, तथा बलचनमा – नाम से स्वयं उपन्यासकार ने (नागार्जुन) उपनाम से, हिन्दी ~~भाषा~~ में अनुवाद किया है ।

2.7.2 मौलिक साहित्य

नागार्जुन का मौलिक साहित्य मैथिली, हिन्दी तथा संस्कृत में उपलब्ध होता है ।

2.7.2.1 मैथिली साहित्य

नागार्जुन की मातृभाषा मैथिली है । काशी में ही मैथिली के प्रतिष्ठित कवि पं० सीताराम झा ने वैद्यनाथ को मैथिली लेखन की ओर प्रेरित

साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत

पत्रहीन नग्न गाछ

आयुष्मती
शोभा शास्त्री के लिए
— नागार्जुन यात्री
16.2.82.
हैदराबाद

किया । साथ ही मैथिली छंदों का गुर भी समझाया । बाजी के प्रोत्साहन से मैथिली काव्य की मधुरिमा और देशीपन की ओर आकृष्ट हुए और मैथिली में रचनाएँ शुरू कर दी और-"अपना उपनाम "वैदेह" रख लिया ।"[1] वैद्यनाथ मिश्र की पहली प्रकाशित रचना सन् 1930 में पंडित मुरलीधर झा की मृत्यु पर शोकगीत के रूप में "लहरिया सराय से "मिथिला" में प्रकाशित हुई ।"[2] मैथिली भाषा में उनके तीन उपन्यास और दो कविता संग्रह है ।

अ. कविता

"चित्रा" और "पत्रहीन नग्न गाछ" । सन् 1957 में उन्हें "पत्रहीन-नग्न गाछ" पर साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ ।

आ. उपन्यास

"यात्री" नाम से नागार्जुन ने पारो, नवतुरिया और बलचनमा उपन्यास लिखे है ।

2.7.2.2 हिंदी साहित्य

अ. हिंदी काव्य

मैथिली की अपेक्षा, हिन्दी पाठकों की संख्या अधिक होने के फलस्वरूप उन्होंने हिन्दी में लेखन कार्य करना आरम्भ किया।— इस विचार से - "मैथिली माँ है, मगर उससे पेट नहीं भरता । हिन्दी से पेट भरता है, इसलिए उसे अपना कलेजा नोंचकर चढ़ा देता हूँ ।"[3]

---

1. विजय बहादुर सिंह : नागार्जुन का रचना संसार पृ- 17
2. विजय बहादुर सिंह : नागार्जुन का रचना संसार पृ- 17
3. विजय बहादुर सिंह : नागार्जुन का रचना संसार पृ- 33

हिंदी में सर्वप्रथम प्रकाशित कविता "राम के प्रति" थी, जो सन् 1935 में - "विश्व बन्धु साप्ताहिक [लाहौर] में छपी ।"[1] "यात्री" नाम से सन् 1940 की सरस्वती में प्रसिद्ध कविता "बादल को घिरते देखा है" प्रकाशित हुई । इस बीच -"रामवृक्ष बेनीपुरी के सुझाव से इन्होंने "यात्री" नाम मैथिली के लिए रिजर्व कर दिया और हिन्दी में अकेले नागार्जुन बने रहे ।"[2] "युगधारा" सन् 1952, "सतरंगे पंखोंवाली" 1959 तथा "प्यासी पथराई आँखें" 1962 में प्रकाशित हुई । सन् 1956 में "खून और शोले" बुकलेट छपा । सन् 1970 में इंदिरा गाँधी की कूटनीति से तंग आकर चुनाव के समय -'अब तो बंद करो हे देवी चुनाव का चक्कर" प्रकाशित किया । सन् 1971 में रूस की यात्रा की । जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में, बिहार का विराट जन आन्दोलन में भाग लिया और जेल यात्रा की । स्वाभिमानी साहित्यकार ने बिहार सरकार से मिलनेवाली, तीन सौ रुपयों की मासिक वृत्ति भी ठुकरा दी । सन् 1980 में "खिचड़ी विप्लव देखा हमने" तथा "तुमने कहा था" कविता संग्रह प्रकाशित हुए ।

आ. खण्डकाव्य

कविताओं के अतिरिक्त खंडकाव्य,भस्मांकुर , (ख.खंड 1978) भी प्रकाशित हुआ है।

2.7.2.3 संस्कृत साहित्य

संस्कृत काव्य

नागार्जुन ने हिन्दी और मैथिली के साथ ही संस्कृत कविताएँ भी लिखी है । इनकी संस्कृत कविताएँ हैदराबाद [सिंध] से प्रकाशित

1. डॉ० प्रकाश चन्द्र भट्ट : नागार्जुन : जीवन और साहित्य पृ- 27
2. विजय बहादुर सिंह : नागार्जुन का रचना संसार पृ- 35

"कौमुदी पत्रिका" में सन् 1942 ई० में प्रकाशित हुई। "चाणक्य"[1] उपनाम से भी इनकी कुछ संस्कृत कविताएँ प्रकाशित हुई है। लंका निवास के समय सिंहली लिपि में "धर्मालोक शतकं" एक खण्ड-काव्य भिक्षु नागार्जुन ने लिखा। "महामानव लेनिन" पर भी बीस श्लोक नागार्जुन ने संस्कृत में लिखे हैं।

2.8 गद्य-लेखन

नागार्जुन ने पद्य के साथ-साथ गद्य भी लिखना आरम्भ किया। हिन्दी पत्रिकाओं की नीति से परिचित होकर कुशाग्र बुद्धिवाले जागृक साहित्यकार ने "अपनी प्रधान अभिव्यक्ति को स्वतंत्र रूप से बचाये रखने के लिए लेख, यात्रा वृत्तांत, परिचयात्मक निबन्ध, शोध-लेख लिखते थे।"[2] अतिरिक्त इसके सन् 1978 में निराला पर "लघु प्रबन्ध-एक व्यक्ति एक युग" लिखा।

2.8.1 सम्पादक

काशी में पंडित बलदेव मिश्र की छत्रछाया में, प्रबुद्ध युवक, नागार्जुन, गद्य लेखन, भाषण कला का अभ्यास और प्रशिक्षण लेकर तत्कालीन हलचलों के प्रति आकृष्ट हुए थे। पंडित बलदेव मिश्र के संरक्षण में वे "राष्ट्रीय जीवन" और गद्य की ओर मुड़े। उन्हीं दिनों --"भारती (हिंदी) और वैदेही (मैथिली) नाम से दो हस्त लिखित पत्रिकाएँ भी शुरू की गई। जिसके सम्पादक "वैदेह" जी थे।"[3] अतिरिक्त इसके इन्होंने साहित्य सदन, अबोहर (पंजाब) से निकलनेवाले पत्र "दीपक" (हिंदी मासिक) का सम्पादन सन् 1935 में किया। लाहौर से निकलने वाली "विश्व बन्धु" (साप्ताहिक) का सन् 1942-43 में तथा "कौमी बोली" मासिक हैदराबाद (सिंध) से निकलने वाले पत्र का भी संपादन किया।

---

1. डॉ० प्रकाश चन्द्र भट्ट : नागार्जुन जीवन और साहित्य पृ- 285
2. विजय बहादुर सिंह : नागार्जुन रचना संसार पृ- 35
3. विजय बहादुर सिंह : नागार्जुन का रचना संसार पृ- 17

2.7.2 स्तंभ लेखन

इन्हीं दिनों पटना से प्रकाशित जोगी में "बुझावनकाका" नाम से "होनहारों की दुनिया" स्तंभ लिखे। बच्चों में, काव्य लेखन, कविता की प्रेरणा देने के विचार से "बुझावन काका" नाम से "तुकों का खेल" शुरू किया।

नागार्जुन के लेख ग्रामीणों के लिए "चतुरी चाचा की चिट्ठी" नाम से लहेरिया सराय से प्रकाशित "पंचायती राज" में प्रकाशित हुये। ज्योत्सना [पटना] में "मुखड़ा क्या देखे दर्पण" और जनयुग [दिल्ली] में "अख्यानिका" स्तंभ नागार्जुन नाम से है।

2.7.3 बाल साहित्य

इन्हीं दिनों नागार्जुन ने 1954-55 के बीच योगी, बालसखा, बालक, चुन्नू-मुन्नू आदि पत्रिकाओं में सैकड़ों की संख्या में बाल-साहित्य की रचना की। इसके अतिरिक्त गरीब दास [बाल उपन्यास] लिखे जाने की तैयारी में है।

2.7.4 उपन्यास

कुल मिलाकर नागार्जुन के 10 उपन्यास है। इनका सम्बन्ध खड़ी बोली के साथ है। जिन उपन्यासों की रचना नागार्जुन ने मैथली भाषा में की है, उनकी संख्या तीन है। [पारो, बलचनमा, नई पौध] प्रस्तुत प्रबन्ध में बलचनमा तथा नई पौध को इसलिए लिया गया है कि स्वयं नागार्जुन ने इसका अनुवाद हिन्दी में किया है। अतः नागार्जुन के 10उपन्यासों में जिनका सम्बन्ध ग्राम अथवा ग्राम जन जीवन से है, वह निम्न लिखित है :—

1. रतिनाथ की चाची सन् 1949
2. बलचनमा " 1952
3. बाबा बटेसरनाथ " 1954
4. नई पौध " 1957
5. दुखमोचन " 1957
6. हीरक जयन्ती " 1962
6.अ. अभिनंदन " 1979
7. जमनिया का बाबा " 1968
7.अ. इमरतिया " 1968
8. वरुण के बेटे " 1975
9. उग्रतारा " 1977
10. कुंभीपाक " 1978

इसके अतिरिक्त "अग्निपुत्र" लिखे जाने की तैयारी में है।

"हीरक जयन्ती" तथा "अभिनंदन" एक ही उपन्यास है, अलग-अलग प्रकाशकों [आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, तथा वाणी प्रकाशन दिल्ली] के यास भिन्न-भिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत प्रकाशित हुए है। इसी प्रकार "जमनिया का बाबा" तथा इमरतिया भी अलग-अलग शीर्षकों के अन्तर्गत एक ही उपन्यास है।[1]

2.7.5. उपन्यासों का वर्गीकरण

अध्ययन की सुविधा के लिए नागार्जुन के उपन्यासों को निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत विभाजित किया जाता है।

---

1. उपन्यासकार से प्रत्यक्ष साक्षात्कार 14-2-1982

1.ग्रामीण उपन्यास 2. अर्द्ध ग्रामीण उपन्यास 3.ग्राम संबंधित शहरी उपन्यास ।

2.7.5.1 ग्रामीण उपन्यास

उपरोक्त वर्गीकरण के आधार पर ग्रामीण उपन्यास वे है, जिनमें कथावस्तु, पात्र, कथोपकथन, परिवेश आदि औपन्यासिक तत्व शुद्ध रूप से ग्राम से सम्बन्धित है । रतिनाथ की चाची, बलचनमा, बाबा बटेसरनाथ, नई पौध, वरुण के बेटे तथा दुखमोचन इसके अन्तर्गत आते हैं ।

2.7.5.2 अर्द्ध ग्रामीण उपन्यास

नागार्जुन के वे उपन्यास हैं, जिनमें [redacted] समस्त उपन्यास ग्राम परक हैं, लेकिन कुछ पात्र गाँव से शहर और शहर से [redacted] गाँव की यात्रा करते रहते हैं । उग्रतारा तथा जमनिया का बाबा उपन्यास इसी के अन्तर्गत आते हैं ।

2.7.5.3 ग्राम संबंधित शहरी उपन्यास

नागार्जुन के वे उपन्यास आते हैं, जिनमें पात्र ग्रामीण है और समस्त उपन्यास शहर परक है । कुंभीपाक तथा हीरक जयन्ती उपन्यास इसी श्रेणी में आते हैं ।

2.8 ग्राम : परिभाषा

कोशकार के अनुसार ग्राम शब्द का अर्थ - गाँव, बस्ती, आबादी, समूह, शिव, संगीत में [redacted] स्वरों का समूह बताया है ।[1] यूं तो आप्टे ने [redacted] (ग्रस + मन् आदन्तादेश:) से ग्राम की व्युत्पत्ति स्वीकार की है ।

1. विशाल शब्द सागर पृ- 339

नागार्जुन का ग्राम शब्द, गांव का स-मानांतर रूप है। कोशकार अभिमत ग्राम तथा वि .यस.आप्टे* अभिमत ग्राम शब्द जितना विशाल है, उतना ही नागार्जुन का ग्राम शब्द भी। टोला, पट्टी, बस्ती, मौजा, कस्बा, चौर तथा अंचल आदि शब्द केवल ग्राम के समानांतर ही नहीं, विविध परिभाषाओं के आधार पर नागार्जुन ने विविध उद्धरणों द्वारा स्वीकार किया है, कि उपरोक्त सभी शब्द टोला, पट्टी, बस्ती, आदि ग्राम के समानांतर शब्द ही है।

कोशकार - अभिमत ग्राम शब्द तथा नागार्जुन - अभिमत ग्राम दोनों भी अपनी समानांतर रेखा पर स्थित है। ग्राम सम्बन्धी जिन शब्दों का व्यवहार नागार्जुन के उपन्यास साहित्य में हुआ है, वह निम्न है -- टोला, पट्टी, बस्ती, मौजा, कस्बा, चौर तथा अंचल। वन तथा जवार शब्द भी ग्राम के लिए प्रयोग में आये हैं।

2.7.1 टोला

कोशकार के अनुसार टोला - "छोटी बस्ती, महल्ला, एक पेशे या जातिवाले जहाँ बसते हैं।"[1] टोले के रूप में स्वीकार करता है।

उपन्यासकार नागार्जुन ने "रतिनाथ की चाची" उपन्यास में टोला की परिभाषा "पाँच घरों का समूह टोला कहलाता है"[2] दी है।

आ. जनसंख्या

टोला - की जनसंख्या का उल्लेख उपन्यासकार ने रतिनाथ की चाची उपन्यास में किया है.- शुभंकरपुर के उस टोले में चौदह औरतें

---

* वामन शिवराम आप्टे : संस्कृत हिंदी कोश पृ- 359
1. बृहत हिन्दी कोश पृ- 448
2. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 67

थी ----------- दस मर्द थे ।"[1] इससे स्पष्ट है, जहाँ तीस या चालीस लोग बसे हों, उसे टोला कहा जाता है। टोला से तात्पर्य गाँव में, विभिन्न जाति के लोग अलग-अलग जहाँ बसे हों यह भी है ।

ङ. जाति

दुखमोचन उपन्यास में, एक विशेष संदर्भ का संकेत, हमें टोले की परिभाषा के रूप में प्राप्त होता है --"दुसाधों, ग्वालों, धानुकों और जुलाहों के टोल तो आग की लपेट में आ ही चुके थे ।"[2]

भौगोलिक स्थिति

टोले के भौगोलिक स्थिति का उल्लेख उपन्यासकार ने दुखमोचन उपन्यास में किया है । --"राजपूतों का टोला गाँव के पश्चिम-दक्षिण कोने में आबाद था ।"[3]

टोला-अर्थात छोटी बस्ती जहाँ विभिन्न सम्प्रदायों के लोग अपनी-अपनी जगह रहकर जीवन यापन करते हैं ।

पुरवा

नागार्जुन ने "पुरवा" शब्द भी "टोला" के रूप में प्रयोग किया है - "राजपूतों का पुरवा गाँव के दक्षिण-पश्चिम छोर पर कुछ अलग हटकर आबाद था ।"[4]

उपरोक्त पुरवा शब्द "टोला" का ही रूप है ।

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 130
2. " : दुखमोचन पृ- 128
3. " : दुखमोचन पृ- 89
4. " : दुखमोचन पृ- 135

अतिरिक्त इसके नागार्जुन ने टोला[1] शब्द का प्रयोग-रतिनाथ की चाची, बलचनमा, दुखमोचन, नई पौध उपन्यासों में किया है ।

2.9.2 पट्टी

पट्टी शब्द से नागार्जुन का तात्पर्य बस्ती ही है । गाँव के समीपस्थ किसी छोटे से भू-भाग पर जहाँ जनसंख्या आबाद हो उस स्थान विशेष को पट्टी के रूप में स्वीकार करते हुए नागार्जुन ने बाबा-बटेसरनाथ उपन्यास में उल्लेख किया है - "धमियापट्टी के नजदीक मुसहरों की एक बस्ती थी ।"[2]

2.9.3 बस्ती

अ. कोशकार[1क] के अनुसार - आबाद घरों के समूह को बस्ती कहा जाता है । तथा स्थान विशेष में बसने वाले लोगों द्वारा बस्ती[2क] का निर्माण होता है । कोशकार ने जिस तरह बस्ती की परिभाषा की है, उसी तरह उपन्यासकार ने बाबा बटेसरनाथ उपन्यास के प्रारम्भिक पृष्ठों में की है - "तेरी बस्ती की आबादी इतनी ज्यादा नहीं थी । कुल मिलाकर सत्तर परिवार थे । बच्चे-बूढ़े - जवान-अधेड़ सभी औरत-मर्दों की तादाद तीन सौ से ऊपर नहीं थी ।"[3]

- -

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 33,67,89, 98,130
   बलचनमा पृ- 49,50, 51, 144,88, 163
   नई पौध पृ- 44, 88,107
   दुखमोचन पृ- 128, 133

2. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 27

1क ~~नागार्जुन~~ : अमर कोश पृ- 145

2 क : अमर कोश पृ- 145

3. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 36

आ. जाति के आधार पर

बलचनमा उपन्यास में एक विशेष संदर्भ या संकेत में बस्ती की परिभाषा के रूप में प्राप्त होता है। यह संदर्भ है, जाति के आधार पर वर्गीकृत । सितल पट्टी बस्ती, "कोई बड़ी नहीं, निहायत मामूली । चार, छै घर राजपूत, पच्चीस-तीस घर ग्वाले और पचास एक घर जुलाहे थे ।"

2.9.3.1 छोटी बस्ती

उपरोक्त परिभाषा "छोटी बस्ती" के लिए है । छोटी बस्ती का उल्लेख नागार्जुन ने बलचनमा तथा जमनिया का बाबा उपन्यास में किया है ।

अ. भौगोलिक स्थिति

बस्ती की भौगोलिक स्थिति का उल्लेख नागार्जुन ने बलचनमा उपन्यास में किया है -- "बेढ़ी से दो कोस और दच्छिन-पच्छिम गाँव का नाम सितल पट्टी था । बस्ती कोई बड़ी नहीं निहायत मामूली ।[1]

बस्ती गाँव तथा तहसील के समीप होने का उल्लेख भी बलचनमा तथा "जमनिया का बाबा" उपन्यास में हुआ है । बलचनमा उपन्यास में "रामपुर के पड़ोस में दो छोटी-छोटी बस्तियाँ मुसहरों की थी ।"[2] तथा जमनिया के बाबा उपन्यास में "तहसील पडरौना के अन्दर, मौजा डिग्घी एक छोटी बस्ती है ।[3]

उपरोक्त परिभाषा छोटी बस्ती के लिए है ।

---

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 144
2. " " पृ- 26
3. " जमनिया का बाबा पृ- 104

2.9.3.2 बड़ी बस्ती

उपन्यासकार ने "बड़ी बस्ती" की परिभाषा दुखमोचन उपन्यास में की है, -- "टमका कोइली छोटा गाँव नहीं था, पाँच हजार से ऊपर की जन संख्या वाली यह एक भारी बस्ती भी दर असल यह छोटी-छोटी कई बस्तियों का एक समूह था ।"[1]

दुखमोचन उपन्यास में एक विशेष संदर्भ का संकेत हमें बस्ती की परिभाषा के रूप में प्राप्त होता है । टमका कोइली बस्ती में "दस घर ब्राह्मण के, सात-आठ जुलाहों के, चार कायस्थों के, दो ग्वालों के तीन-चार भूमिहारों के "[2] --- अच्छी हैसियत के थोड़े ही परिवार थे इनमें । भूमिहीनों की तादाद ज्यादा थी ।[3]

अ. भौगोलिक स्थिति

बस्ती की भौगोलिक स्थिति का उल्लेख नागार्जुन ने दुखमोचन उपन्यास में किया है । बस्तियों के -"बीच-बीच में खेत और बाग फैले हुए थे । उत्तर पूरब तरफ से कन्नी काटकर एक नदी निकल गयी थी । उधर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की पक्की सड़क, उधर मीटर गेज की रेलवे लाइन ।"[4]

उपरोक्त उद्धरणों से पता चलता है, कि बस्तियाँ "छोटी" और "बड़ी" होती है । छोटी बस्ती में ज्यादा से ज्यादा 70 से 80 परिवार होते हैं, और बड़ी बस्ती में ज्यादा से ज्यादा 5000 से

---

1. नागार्जुन : दुखमोचन पृ- 10
2. " : " पृ- 135
3. " : " पृ- 38
4. " " पृ- 10

ऊपर परिवार । बस्ती विशेष की ओर संकेत करते हुए नागार्जुन ने रामगंज[1], नौगछिया[2], टमका कोइली[3] को बस्ती के रूप में स्वीकार किया है ।

नागार्जुन ने "बस्ती" शब्द का प्रयोग - रतिनाथ की चाची[4], बलचनामा[5], नई पौध[6], दुखमोचन[7], उग्रतारा[8] उपन्यासों में किया है ।

---

1. वैधनाथ को विरासत में आठ बीघा खेत मिले थे । --- चार बीघा कोसी के किनारे [उत्तर भागलपुर में] बस्ती का नाम था रामगंज । रतिनाथ की चाची पृ- 26

2. नौगछिया भी कोई बस्ती थी । छिछड़ों का रैन बसेरा ।। नई पौध पृ- 74

3. टमका कोइली कोई छोटा गाँव नहीं था — यह एक भारी बस्ती थी । दुखमोचन पृ- 10

4. रतिनाथ की चाची पृ- 26, 30, 39, 43, 93, 109, 113

5. बलचनमा पृ- 49, 53, 69, 99, 133, 141, 143, 144, 162, 163, 172, 177, 182, 184, 194, 209

6. नई पौध पृ- 51, 56, 59, 74, 88, 112, 114, 115, 123, 134, 144

7. दुखमोचन पृ- 10, 61, 123, 128, 131, 156, 163, 170

8. उग्रतारा पृ- 95, 109

2. 9.4 <u>मौजा</u>

कोशकार[1] के अनुसार मौजा, -- गाँव है । उपन्यासकार नागार्जुन ने रतिनाथ की चाची उपन्यास में मौजे की परिभाषा -- शुभंकरपुर में ढाई सौ परिवारों की आबादी, खानेवाले मुँह ग्यारह सौ "[2] दी है ।

जनसंख्या के दृष्टिकोण से नागार्जुन के उपन्यासों में मौजा - दो प्रकार के हैं । [1] छोटा तथा [2] बड़ा ।

2.9.4.1. <u>छोटा मौजा</u>

छोटे मौजे का उल्लेख रतिनाथ की चाची[3] उपन्यास में हुआ है ।

2.9.4.2. <u>बड़ा मौजा</u>

बड़े मौजे का उल्लेख बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में नागार्जुन ने किया है । रूपउली में - तीन सौ परिवार थे, खाने वाले मुँहों की तादाद भी ढाई हजार ।"[4] उपन्यासकार का यह संकेत बड़े मौजे की ओर है ।

अ. मौजे में विविध प्रकार की जातियों का निवास होता है, जिसका उल्लेख नागार्जुन ने बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में दिया है - "ब्राह्मण थे, राजपूत थे, भूमिहार थे, बाकी आबादी ग्वालों - अहिरों, धानुकों और मोमिनों की थी । दो घर चमारों के थे, एक परिवार था पारसियों का ।[5]

- -

1. बृहत् हिन्दी कोश पृ- 921
2. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 92
3. " : रतिनाथ की चाची पृ- 92
4. " : बाबा बटेसरनाथ पृ- 15
5. " : बाबा बटेसरनाथ पृ- 15

इसी उपन्यास में एक विशेष संदर्भ का संकेत हमें "मौजे" की परिभाषा के रूप में प्राप्त होता है -- एक मिडिल स्कूल था, संस्कृत की एक पाठशाला थी - मौजे रूपउली सीमा के अन्दर ही ।"[1]

उद्धृत उदरणों से पता चलता है, कि मौजा - जनसंख्या तथा परिवेश के आधार पर दो प्रकार के होते हैं छोटा तथा बड़ा । छोटा मौजा- में ढाई सौ, तीन सौ परिवार होते हैं, तथा बड़े मौजे में साढ़े तीन सौ चार सौ परिवार । अतिरिक्त इसके पाठशाला तथा मिडिल स्कूल भी होता है ।

रतिनाथ की चाची,[2] बलचनमा,[3] नई पौध,[4] हीरक जयन्ती[5] उपन्यासों में "मौजे" शब्द का उल्लेख मिलता है ।

2.9.5 क़स्बा

कोशकार के अनुसार क़स्बा अर्थात छोटा शहर[1क] । मधुबनी क़स्बा है । नागार्जुन ने अपने उपन्यास बाबा बटेसरनाथ में मधुबनी को "क़स्बा" जैसे कहा है । रूपउली से "छह कोस पर मधुबनी जैसा क़स्बा था" ।[2क]

तात्पर्य यह है कि जितने छोटे शहर है, वे सब नागार्जुन के दृष्टिकोण से क़स्बे ही है ।

- -

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 15
2. " रतिनाथ की चाची पृ- 93, 109
3. " बलचनमा पृ- 81, 172
4. " नई पौध पृ- 107
5. " हीरक जयन्ती पृ- 19

1क. अमरकोश पृ- 232
2क. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 15

2.9.6 चौर

कोशकार[1] के अनुसार चँवर, झालर और चौंर समानांतर शब्द है। नागार्जुन ने अँचल के लिए "चौंर" शब्द का प्रयोग वरुण के बेटे उपन्यास में किया है।

चौंर की परिभाषा "वरुण के बेटे" उपन्यास में उपन्यासकार ने की है — "मलाही गोंढियारी से मील भर पूरब, यह एक भारी चौंर था। उत्तर-दक्षिण लम्बाई में कुछ ज्यादा पूरब पश्चिम चौड़ाई में कुछ कम। लोग देह का यह अँचल "गढ़ा चौंर" कहलाता था।"[2]

उपरोक्त विविध तथ्यों तथा उद्धरणों द्वारा, नागार्जुन ने जिस ग्राम की परिभाषा तथा उससे सम्बन्धित जितने वाचक शब्द हैं, उन्हीं के आधार पर प्रस्तुत प्रबन्ध में समस्याओं का समाधान दिया गया है।

- -

1. बृहत हिंदी कोश पृ- 387
2. नागार्जुन : वरुण के बेटे पृ- 20

तृतीय अध्याय

ग्राम : सामाजिक संदर्भ

ग्राम : सामाजिक सन्दर्भ

समाज का सामान्य अर्थ मनुष्य के समूह से लिया जाता है। परन्तु समाजशास्त्र में वह अर्थ मान्य नहीं है। प्रसिद्ध समाजशास्त्री रयूटर के अनुसार --- " समाज एक अमूर्त शब्द है, जो कि एक समूह के सदस्यों में तथा उन सदस्यों के बीच जो पारस्परिक जटिल सम्बन्ध पाये जाते हैं, उनका बोध कराता है।[1] अत: मनुष्यों के सामाजिक सम्बन्धों को समाज कह सकते हैं।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। अरस्तु के अनुसार ---"समाज का "आविष्कार" मनुष्य की आदिम आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया गया था।[2] मनुष्य जिस रूप में था, है और होगा ------ सब सामाजिक परिस्थितियों के कारण ही है। समाज में मनुष्य की रक्षा ही नहीं, बल्कि उसकी सर्वतोमुखी उन्नति की भी समस्त सुविधाये प्राप्त होती हैं। पशुओं से मनुष्य को अलग करनेवाले गुणों का विकास समाज में ही होता है।

---

1. श्री शम्भुरत्न त्रिपाठी कृत "समाजशास्त्रीय विश्लेषण" पृ-3 पर उद्धृत।

2. Aristotle expressed a profound truth when he said that, "man is by nature a social animal', and further that 'society originated in the bare needs of life, and continued for the sake of good life". ~~and cx~~

R.P. Patwardhan, Elements of Civics p. 6~~8~~ 7

नागार्जुन के उपन्यासों में ग्रामीण समाज के चित्र को विश्लेषित करने के लिए उसे चार उपशीर्षकों में विभक्त किया गया है :- सामाजिक संरचना जिसके अन्तर्गत समाज के विधायक घटकों पर विचार किया गया है, सामाजिक सम्बन्ध इस संरचना के मानवीय तत्व को प्रकट करते हैं, सामाजिक रहन-सहन जिसके अन्तर्गत ग्रामीण आचार-विचार के सूक्ष्म से सूक्ष्म विवरणों पर उपन्यासकार की दृष्टि रही है और सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत शिक्षा, न्याय एवं दंड प्रणाली के साथ-साथ सामाजिक भ्रष्टाचार और उसके लिए उत्तरदायी तत्वों पर भी विचार करना उचित है ।

3·1 सामाजिक संरचना

उपन्यासों में जिस समाज की रचना हुई है, वह समाज जाति तथा उपजातियों से निर्मित है । उपन्यासकार ने उन जातियों का उल्लेखमात्र करके, कहीं-कहीं जाति विशेष के मनुष्य की रूप-रेखा तथा उनके व्यवसाय की विवेचना भी उपन्यासों में की है ।

3·11 जाति

1. ब्राह्मण :- दुखमोचन[1] रतिनाथ की चाची[2], बाबा बटेश्वरनाथ[3], हीरक जयंती[4] उपन्यासों में ब्राह्मण जाति का उल्लेख हुआ है ।

---

1. नागार्जुन : पृ- 101, 120, 128, 135, 156
2. नागार्जुन : पृ- 95, 110
3. नागार्जुन : पृ- 12, 45, 48
4. नागार्जुन : पृ- 55, 56

ब्राह्मणोचित संस्कारों में यज्ञोपवित धारण किये ब्राह्मण रूद्रधर पाठक के -- "गले में स्फटिक की माला थी । पीली और बारीक यज्ञोपवीत बाएँ कंधे से वक्षस्थल के बीच और वहाँ से दाहिनी ओर पेट और कमर की तरफ लटक रहा था ।"[1] ब्राह्मणों में -- "विद्या का खूब प्रचार था।"[2] विद्या का सहारा शुभंकरपुर गाँव के ब्राह्मण के लिए ऐसा था कि --"खेती के अभाव में भरपेट खानेवालों में से थे ।"[3]

2. राजपूत

राजपूत जाति का उल्लेख - रतिनाथ की चाची[1क] बलचनामा[2क], बाबा बटेश्वरनाथ[3क], दुखमोचन[4], हीरक जयंती[5], उग्रतारा[6] उपन्यासों में हुआ है ।

3. कायस्थ

कायस्थ जाति का उल्लेख दुखमोचन[7] उपन्यास में हुआ है ।

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 148
2. " रतिनाथ की चाची पृ- 92
3. " रतिनाथ की चाची पृ- 92
1क." पृ- 113
2क." पृ- 144
3क." पृ-15, 42, 48, 49, 56
4. " पृ-82, 89, 103, 135
5. " पृ-55
6. " पृ-6
7. " पृ-135, 156

4. मारवाड़ी

मारवाड़ी जाति का उल्लेख, रतिनाथ की चाची[1], नई पौध[2], तथा बाबा बटेस्वरनाथ[3] उपन्यासों में हुआ है ।

5. ग्वाला

ग्वाला जाति का उल्लेख, रतिनाथ की चाची,[1क] बलचनमा[2क], बाबा-टेस्वरनाथ[3क], नई पौध,[4] दुखमोचन[5], उग्रतारा[6], उपन्यासों में हुआ है ।

ग्वाले के व्यवसाय का वर्णन नागार्जुन ने बलचनमा उपन्यास में किया है ---" यों खास काम मेरा भैंस चराना था, फिर भी और कई काम थे-जैसे कि बच्चे को खेलाना, पानी भरना, बाहर बैठक में झाड़ू लगाना, दुकान से नून, तेल, मसाला लाना और मालिकाइन के पैर चाँपना"[7]

---

1. नागार्जुन पृ- 80, 125
2. " पृ- 9, 85
3. " पृ- 104

1 क. रतिनाथ की चाची पृ- 59, 90, 92, 95, 113
2क. बलचनमा पृ- 103, 109, 144, 149, 175, 197
3क. बाबा बटेस्वरनाथ पृ- 15, 45
4. नई पौध - पृ- 10, 32, 34
5. दुखमोचन पृ- 128, 135
6. उग्रतारा पृ- 85
7. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 6

बलचनमा ग्वाला वर्ग का ही प्रतिनिधित्व करता है, फिर भी बहुव्यापी धंधों के कारण वह सेवक की कोटि में ही रखा जा सकता है। रात को सोते समय --"मझले मालिक को "मुक्कियाँ" भी लगाना पड़ता था। पहर भर मुक्कियाँ लगा-लगा कर बलचनमा थक जाता, लेकिन मालिक बस कहने का नाम न लेते।"[2] चाहे वह ग्वाले का रूप हो, चाहे चरवाहे का, वे सब अपने मालिकों के आधीन नौकर ही है। उपन्यासकार की मान्यता भी इसी द्वारा प्रदत्त है। गाँव में उच्चवर्ग के ही नहीं, मध्यवर्ग के चरवाहे इसी कोटि में आते हैं। इसी उपन्यास में एक अन्य मध्यवर्गीय पात्र जयकिशोर है। इनका चरवाहा भैंसे चराने के अतिरिक्त --"तालाब से मछलियाँ पकड़ना, बाग से आम तोड़ लाना, हाट से साग-भाजी ले आना"[3] -- सब काम करने पड़ते है।

6 खवास

खवास जाति का उल्लेख रतिनाथ की चाची[4], बलचनमा[5] तथा नई पौध[6] उपन्यासों में हुआ है। खवास के कार्य का वर्णन भी उपन्यासकार ने किया है।

- -

2. नागार्जुन बलचनमा पृ-31

3. " रतिनाथ की चाची पृ-114

4. " पृ-54, 58, 76, 118, 138, 143

5. " पृ-27, 29, 38, 72, 102, 121, 130

6. " पृ- 43

खवास का सबसे बड़ा कार्य मालिश करना है --"हाथ में जरा-सी चिकनाई [तेल] मलाकर वह आपके पैरों से शुरू करेगा, एक-एक नस को मानो दुहता चला जायेगा । पैर-गोड़-टाँग,घुटने, जाँघ, कमर, पीठ, पसलियाँ, गर्दन, कंधे, सिर, माथा, कपार, कनपटी, बाँह, केहुनी, कलाई, हाथ, पंजे - अंग-अंग की नसों को दुह लेगा" ।[1] मेहमान के आवभगत में वह --"उनके पैर और जाँघ में "मुक्कियाँ लगाना शुरू कर देता हैं, मुक्कियाँ लगवाते-लगवाते उन्हें नींद आ जाती" तब वह लौट जाता था ।[2] एक अन्य उपन्यास बलचनमा में भी खवास के कार्यों का उल्लेख मिलता है । बलचनमा का दादा इस कार्य में कुशल था - "मालिस वह इस तरह करता था कि पगल से पागल आदमी की आँखों पर नींद सवार हो जाती ।"[3] इस प्रकार खवास के कार्यों का उल्लेख रतिनाथ की चाची तथा बलचनमा उपन्यास में हुआ है ।

7 <u>जुलाह</u>

जुलाह जाति का उल्लेख बलचनमा[4] तथा दुखमोचन[5] उपन्यास में है ।

- -

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 143
2. " रतिनाथ की चाची पृ- 122
3. " बलचनमा पृ- 72
4. " बलचनमा पृ- 144
5. " दुखमोचन पृ- 135,156

8 दुसाध

दुसाध[1] जाति का उल्लेख रतिनाथ की चाची[2], बलचनमा[3], नई पौध[4] तथा दुखमोचन[5] उपन्यासों में है । यह जाति कुलीगिरी तथा दैनिक श्रम द्वारा अपनी जीविका चलाती है ।

9 केवट

केवट जाति का उल्लेख रतिनाथ की चाची[1क], बलचनमा[2क], नई पौध[3क] तथा बाबा बटेश्वरनाथ[4क] उपन्यासों में हुआ है । उपन्यासकार ने केवट और मल्लाह शब्द का प्रयोग समानान्तर रूप में किया है । केवट के बाह्याकृति का संकेत — "साँवली सूरत, डील-डौल का अच्छा, कद औसत ।"[3क] भी हुआ है ।

10 मलाह, बनिहार

मलाह[6] नाव बनिहार[7] जाति का उल्लेख बलचनमा उपन्यास में हुआ है ।

---

1. बिहार में चौकीदारों के रूप में, इस जाति का वर्णन किया गया है । प्राचीन काल में सैनिकों की परम्परा रही है, और इस समय इनका झुकाव संपत्तिविषय अपराध है - चोरी, लूटपाट आदि है । सबके सब इस कार्य से अपना जीवन निर्वाह नहीं कर सकते, इसलिए इनका अधिकांश भाग कुलीगिरी तथा दैनिक श्रम में लगा हुआ है ।
2. रतिनाथ की चाची - नागार्जुन - पृ - 40, 113
3. बलचनमा " पृ- 39, 53
4. नई पौध " पृ- 128
5. दुखमोचन " पृ- 128, 139, 156

1क, 2क, 3क, 4क, 5क नागार्जुन . पृ- 169 - पृ-109, 126, 197
पृ- 32 - पृ-55 - नई पौध पृ-34

6, 7 नागार्जुन : बलचनमा पृ- 109, 123, पृ-26, 112, 137, 139

12 <u>मुसहर</u>

मुसहर जाति का उल्लेख बलचनमा[1] तथा नई पौध[2] उपन्यास में है। इस जाति का - " साँवला रंग, ठिगना कद, गोल माथा, छोटी-छोटी आँख, दिया जैसी नाक"[3] होती है। तथा ये - "मजबूत (ऊपर) कौटि के मेहनती और ईमानदार[4] है।

13 <u>डोम</u>

डोम जाति का उल्लेख दुखमोचन[5] तथा बाबा बटेसरनाथ[6] उपन्यासों में हुआ है। इस जाति की-"मूँछ दाढ़ी बड़ी-बड़ी -- माथे पर मामूली जटाएँ। बदन का रंग गेहुँआ। आँख बड़ी-बड़ी, पुतलियाँ भूरी। क्पार चौड़ा और नाक नोकदार व बड़ी[7] होती है।

14 <u>धानुक</u>

धानुक जाति का उल्लेख बलचनमा[8] उपन्यास में हुआ है। इस जाति में --"क्पार छोटा। आँखे चमकदार मगर धँसी हुई।"[9] होती है।

- -

1. नागार्जुन पृ- 26, 53, 118
2. " पृ- 128
3 तथा 4 " पृ- 26
5. नागार्जुन पृ- 143
6. " पृ- 62,63
7. " बाबा बटेश्वरनाथ पृ- 62
8. " बलचनमा पृ- 103, 109
9. " " पृ-10

15 पासी

पासी जाति का उल्लेख बलचनमा[1] तथा बाबा बटेसरनाथ[2] उपन्यासों में हुआ है। जिनका परम्परागत व्यवसाय "ताड़ी"[3] बनाना है।

16 चमार

चमार जाति का उल्लेख बलचनमा[4] तथा दुखमोचन[5] उपन्यासों में हुआ है। जूते बनाने के परम्परागत व्यवसाय के अतिरिक्त प्रसव करनेवाली दाई के रूप में चमाइन का वर्णन भी उपन्यासकार ने किया है -- "चमाइन इन कामों में उस्ताद थी। गाय, भैंस, औरत, घोड़ी, बकरी वह सब के काम आती। आसपास के दस बारह गाँवों में उसकी शोहरत थी"।[6]

17. भुँइहार

भुँइहार जाति का उल्लेख वरुण[7] के उपन्यास में हुआ है।

---

1. नागार्जुन - 13, 109, 172
2. " - 15
3. डॉ गोविंद सदाशिव धुर्ये : जाति, वर्ग और समाज पृ- 204
4. नागार्जुन बलचनमा पृ- 163
5. " दुखमोचन - पृ- 38, 40, 136
6. " रतिनाथ की चाची - पृ-22
7. " वरुण के बेटे - पृ- 95

3.12 उप-जाति

उप-जाति के अन्तर्गत - सहनी, मांझी, कुर्मेत, तीअर, जनुआ का उल्लेख वरूण के बेटे उपन्यास में हुआ है ।[1]

उपन्यासकार नागार्जुन इन जातियों के अतिरिक्त और एक जाति का निर्माण अपने समक्ष देख रहे थे ; वह है —"श्रमिक जाति" । श्रम के आधार पर जीने वाले सभी लोगों की वह जाति थी, जिसकी उपज नागार्जुन की अपनी है, और उसका आधार कम्युनिजम ही है । हीरक जयन्ती उपन्यास के बाबू ब्रज बिहारी घोष, अपनी जाति का उल्लेख इस तरह करते हैं — " मैं उस जाति का हूँ, श्रम सेवक जिसका मूल मन्त्र रहा । हमारे घरवाले भरपूर मेहनत करते हैं और हुमचकर खाते भी हैं । झूठ-मूठ किसी की हाँ में हाँ मिलाना हमारे इतिहास ने हमें कभी नहीं सिखाया ।"[2] नागार्जुन इसी श्रम जाति में विश्वास रखते हैं ।

3.13 वर्ग

समाज में विभिन्न वर्गों का जन्म उसके सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के परिणाम स्वरूप होते हैं । सामाजिक वर्ग से तात्पर्य एक ऐसा वर्ग, जो अपने विशिष्ट गुणों के कारण समाज के अन्य व्यक्तियों से पृथकता प्राप्त करता है । "किसी वर्ग विशेष के व्यक्तियों का स्तर उसकी आय, सम्पत्ति, जीविका, रहन-सहन का स्तर, शिक्षा, उसकी

---

1. नागार्जुन - वरूण के बेटे पृ- 84
2. " - हीरक जयन्ती पृ- 56

व्यक्तिगत शक्ति, जिसके आधार पर वह समाज के अन्य व्यक्तियों के बीच अपनी विशिष्ट स्थिति का निर्माण करता है ।"[1] व्यक्ति के सामाजिक स्तर का निर्णय करनेवाले आवश्यक तत्वों में -"सम्पत्ति, आय, वंश; परम्परा और वैयक्तिक विशेषताएँ ।"[2] अर्थात् वर्ग समाज का आवश्यक अंग है, जिसका निर्माण उस समाज के श्रम उत्पादन एवं वितरण के साधनों द्वारा होता है । अर्थ जीवन का महत्त्वपूर्ण विधायक तत्व है । प्रत्येक युग का सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन अर्थ से प्रभावित रहा है । वर्तमान अर्थ प्रधान समाज व्यवस्था में, विभिन्न वर्णों के स्थान पर वर्गों का जन्म हुआ । आर्थिक परिप्रेक्ष्य में वर्ग से अभिप्राय मानव के उस समूह से है, जिनके आर्थिक हित समान है । इसके अतिरिक्त व्यक्ति का जन्म और वंश परम्परा भी उनके वर्ग भावना को जन्म देती है । प्राचीन काल में वर्ण-निर्धारण कर्म के आधार पर होता था, किन्तु कालान्तर में यह वर्ण व्यवस्था जटिल हो गयी । जन्म से ही मनुष्य का भाग्य और वर्ण निर्धारित होने लगा । इस प्रकार जन्म और वंश परम्परा व्यक्तियों को विशिष्ट वर्गों से सम्बद्ध करती रही । जन्म के अतिरिक्त मानवीय स्तर भी व्यक्तियों को एक समूह में बांध देते है । उच्च स्तर के व्यक्ति स्वयं ही उच्च वर्ग में सम्मिलित हो जाते हैं, और निम्न वर्ग के व्यक्ति के हितों समान होने से वे पृथक वर्ग बनाते है । वर्ग का निर्धारण धन के आधार पर होता है, अतः निम्न वर्ग का व्यक्ति धनी बनकर उच्च वर्ग तक पहुँच सकता है । धन की प्राप्ति के लिए समाज में संघर्ष भी चलता है । वर्तमान अर्थ व्यवस्था में उच्च, मध्य एवं निम्न वर्ग का अस्तित्व समाज में है । उच्च वर्ग ऐश्वर्य सम्पन्न है, किन्तु निम्न वर्ग अपने जीवन की

- -

1. इन्सैक्लोपिडाया ऑफ ब्रिटानिया - भाग-5 पृ-765

2. ल्यूक एवर सोल : अमेरिकन सोसाइटी, हिंदी उपन्यासों में [illegible] सामन्तवाद पृ-235 से उद्धृत

मूल भूत आवश्यकताओं को भी पूरा करने में असमर्थ है, और मध्य वर्ग - मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक सभी दृष्टियों से बीच की स्थिति बनाता है । यह ऐसा वर्ग है, जो अपने तो उच्च वर्ग के देखता है, किन्तु जिसकी नियति बहुत कुछ निम्न वर्ग के समान है । अर्थ प्रधान व्यवस्था ने समाज में वर्ण व्यवस्था के स्थान पर वर्ग व्यवस्था को जन्म दिया ।

अर्थ के आधार पर उच्च, मध्य और निम्न वर्गीय समाज का निर्माण हुआ । जिसकी विवेचना उपन्यासकार ने सभी उपन्यासों में की है ।

3.1.2.1 उच्च वर्ग : जमींदार

उच्च वर्गीय समाज के अन्तर्गत जमींदार की विस्तृत विवेचना - बाबा बटेसरनाथ, जमनिया का बाबा, हीरक जयन्ती, बलचनमा, रतिनाथ की चाची उपन्यासों में उपन्यास-कार ने की है । जमींदार अपने इलाकों का सर्वेसर्वा हुआ करता था - "रिआया से बेठ - बेगार लेना उसका सहज अधिकार था ।"[1] वे वहाँ के अधिपति हुआ करते थे, ग्रामीण जनता पर पूर्ण रूप से उन्हें अधिकार प्राप्त था । छोटी औकात के और नीच जाति के लोगों को तो खैर वह कीड़े-मकोड़े समझता ही था, "--अच्छी-अच्छी हैसियत के भले-खासे व्यक्तियों से वक्त-बेवक्त नाक रगँवाता था जमींदार ।"[2] रूपउली गाँव के जमींदार, राजाबहादुर के क्रूर स्वभाव का वर्णन बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में मिलता है ।

---

1. बाबा बटेसरनाथ - नागार्जुन - पृ- 38
2. बाबा बटेसरनाथ - " - पृ- 38

शत्रुमर्दन राय को सूद पर दिए चालीस रुपये न लौटाने के फलस्वरूप उस पर बर्बर हिंसा की जाती है, उसे-"बीच आँगन में खड़ा कर दिया गया । लट्ठ लिये हुए चार सिपाही सामने मुस्तैद थे । बाहों को माथे के ऊपर खड़ा करके एक सिपाही ने बाँध दिया । दो गज के फासले पर दो ईंटें डाल दी गयी । एक ईंट पर एक पैर, दूसरी पर दूसरा पैर ।"[1] इस तरह रायजी खड़े किये गये । जमींदार का इशारा पाकर वह शत्रुमर्दन के बिलकुल करीब पहुँचा "हाँडी का मुँह खोल कर लाल चींटों का लत्ता निकाल लिया ।-------- वह घोंसला रायजी के माथे पर टिका दिया -- चींटे हजारों की तादाद में शत्रुमर्दन राय की देह पर फैल गये । बँधे हाथों को ऊपर-ऊपर झटकने की कोशिश की, कि पीठ पर कोड़े पड़े -- सपाक् - सपाक् ।"[2] शत्रुमर्दन काफी देर तक छटपटाता रहा । आखिर वह बेहोश होकर गिर पड़ा । लेकिन राय साहब को दया नहीं आयी ।

बलचनमा उपन्यास में छोटे मालिक भी इसी श्रेणी के है । जमनियाँ गाँव का जमींदार बाबू भगौती प्रसाद "साधुओं को इन्सान थोड़े ही समझता रहा -- रबड़ और प्लास्टिक के--------।"[3] मठ की आमदनी तथा प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए मठ के भीतर दुर्गापूजा के दिन -----"देवी की प्रतिमा के सामने छै"[4] महीने के शिशु की बली दी गयी"। जमींदार के क्रूरतम रूप का वर्णन नागार्जुन ने किया है । हीरक जयंती उपन्यास के राजा रेवती रंजन प्रसाद सिंह मालगढ़ स्टेट के मालिक है । चीनी मिलों के मजदूर नेता को, जो उनके खिलाफ मजदूरों को भड़का रहे थे --- "हमेशा के लिए लापता कर दिया ।"[5]

---

1. नागार्जुन - बाबा बटेसरनाथ पृ- 41
2. " " " पृ- 42
3. जमनिया का बाबा पृ- 135
4. " " " पृ- 84
5. नागार्जुन : हीरक जयंती - पृ- 16

इस तरह उच्च वर्ग का क्रूर, स्वार्थी तथा अमानवीय रूप ही उपन्यासकार ने चित्रित किया है । बिहार के विभिन्न प्रान्तों में जमींदारी उत्तराधिकारी के रूप में प्राप्त हुआ करती थी, बाप की तरह बेटा भी इन्हीं काले करतूतों से अपनी जीविका बिताया करता था । उदा०---- "रूपउली और आस-पास की बीसियों बस्तियों का जमींदार बाबू कृष्ण दत्त सिंह राजा-बहादुर देवी दत्त का इकलौता उत्तराधिकारी था ।"[1] उसने जिन अत्याचारों को ढोया, वह साधारण जनता के लिए अश्लील है । जमींदारों का अपना होता है गाँव - "लुच्चे होते हैं ये लोग । अमूल तहसील का काम गुमस्ता - बराहिल के हवाले, घर-गिरस्थी की देख-रेख कुटभाइयों के हवाले, लेना टहल का काम खजिया खवास के हवाले, बाकी बचे बेटा-नाती, भाई-भतीजा, सार-सर बेटा ।"[2] इस तरह जीवन बिताने में जमींदार हर समय मस्त रहा है । जमींदारों का आतंक सारे गाँव में व्याप्त था ---"उन दिनों इन मालिक लोगों का ही राज था । उनके खिलाफ तुम अपनी कानी-उंगली तक न हिला सकते थे । किसी की इज्जत आबरू को बेदाग रहने देना उन्हें बर्दाश्त नहीं था ।"[3] इनकी निगाह हमेशा पाप में डूबी रहती थी । गौना लेकर कोई नई-नवेली किसी के घर आती तो इन की आँखें उसके घूँघट के इर्द-गिर्द मंडराया करती । जब तक वे उसकी एक झलक देख न पाते उन्हें चैन नहीं पड़ता था ; कई बार ऐसा होता कि "जिसे देखने को बाप बेताब हो उठता उसी पर बेटा भी फिदा ।"[4] इस तरह जमींदार केवल मालिक ही नहीं वह, राजा भी है -- "मालिक राजा होते हैं और राज ठहरे भगवान के अवतार । कौन उनके खिलाफ कुछ भी बोल सकता था ।"[5]

---

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 99
2. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 68
3. " " "
4. नागार्जुन बलचनमा पृ - 68
5. " " पृ- 70

जमींदार - राजा, मालिक और भगवान सब कुछ ग्रामीण जनता के लिए वही थे। उपन्यासों में हर जगह, जमींदारों की चर्चा हो पाई है। इस तरह एक और उदाहरण बलचनमा उपन्यास में दिखाई देता है -- "बड़ राधा बाबू के ससुर लखपती जमीनदार थे। दो पट्टियों में इस्टेट बंटा हुआ था।"[1] समाज में जमींदारों की संख्या बहुत कम हुआ करती थी फिर भी रोब-दाब उनकी कभी कम न हो पायी। इस तरह बस्ती में ऐसे गृहस्त दार ही पांच थे, जिनकी उपज हजार मन से जास्ती थी -- "बड़े मालिक, मझले मालिक, छोटे मालिक और बस्ती बाबू।"[2] उपज जिनकी अधिक हो वे बड़े जमींदार अथवा राजा के रूप में उपन्यासों में चित्रित है। अतिरिक्त इनके कुछ ऐसे भी जमींदार है जो साधारण व्यवस्था में सर्व साधारण जनता से अधिक माने जाते थे। जमींदारी, रूप, कुलीनता - इन जमींदारों के लिए अपनी जगह बिठाने के लिए उपयुक्त थी, उपन्यास में कुछ पात्र ऐसा है जमींदारी के साथ उनमें कुलीनता भी विद्यमान थी - " जयनारायण के पास तो कुलीनता भी थी धन भी था। एक मौजे में दो आने की जमींदारी पड़ती थी।"[3] इस तरह जमींदारों का वर्णन प्राय: सभी उपन्यासों में हुआ है, कुछ जमींदार तथा उनकी जमींदारी नाममात्र ही की थी; फिर भी वे जमींदार ही माने जाते थे -- "जमींदार महाशय जिला गोरखपुर के कोई दूबे। मोतिहारी शहर से डेढ मील उत्तर उनका मौजा था।"[4] इस तरह का मौजा, डेढ मौजे के जमींदार भी उपन्यासों में चित्रित है। जमींदार स्वार्थ साधक ही अक्सर होता है, विशाल धन राशि के रहने पर भी किसी मांगलिक कार्य में वह हाथ बंटाने के लिए भी तैयार नहीं है --"हिन्दुओं के पास करोड़ों,

- -

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 125
2. " " पृ- 141
3. " रतिनाथ की चाची पृ- 109
4. " " " " पृ- 125

अरबों की सम्पदा एक-एक सेठ के पास है, लेकिन गरीब और पिछड़े हुए हिन्दू, जंगलों और पहाड़ी इलाकों में मुट्ठी भर अनाज के लिए तड़-तड़प कर मर जायेंगे।"[1]------धनिकों को इसकी चिंता नहीं, जमींदार इसकी परवाह नहीं करते, और राजा लोग साधारण जनता को अपना सेवक ही मानती है। इस तरह जमींदारी का बोलबाला बाबा बटेश्वरनाथ, जमनिया का बाबा, हीरक जयन्ती, बलचनमा, रतिनाथ की चाची उपन्यासों में चारों ओर दिखाई देता है।

किन्तु ये जमींदार वर्ग, अपने पतन के कारण भी, अपने भीतर लिये था। ये कारण थे -- अहंकार, शाह-खर्ची और स्वार्थवृत्ति। इन तीनों ने मिलकर जमींदार को एक "जोंक" के रूप में परिवर्तित कर दिया था। किन्तु धीरे-धीरे अंग्रेज़ों की शोषण नीति और स्वयं अपनी विलासिता के कारण ये जमींदार अपनी ज़मीन खोते गये और पतन की प्रक्रिया में मध्य वर्ग की ओर बढ़ते गये। दुखमोचन उपन्यास में "कपिलदेव के पिता को लेकर यही पतनशीलता नागार्जुन ने बतलाई है।"[2]

3.132 मध्य वर्ग

मध्य वर्ग का निर्माण अंग्रेज़ी शिक्षा के प्रचार के कारण हुआ। विदेशी शिक्षा के कारण नये पेशों का जन्म हुआ, जिसके फलस्वरूप ऐसे वर्गों का निर्माण हुआ जो न शारीरिक परिश्रम करते थे, और न जिनके हाथों में उत्पादन के साधन ही थे। यह वर्ग शिक्षा के आधार पर ही जीवन व्यापन करने में समर्थ था। अंग्रेज़ी शिक्षा का प्रभाव शहरों में ही

---

1. नागार्जुन : [illegible] जमनिया का बाबा - पृ- 55
2. नागार्जुन : दुखमोचन - पृ - 89

नहीं गाँवों में भी फैला, जिसका संकेत बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में हुआ है। रूपउली गाँव के --"बड़ी जातवालों के लड़के काफी तादाद में पढ़ रहे थे। मैट्रिक पास करके दर्जनों तक वर्ग क्षेत्र में प्रवेश कर गये थे। दो वकील, दो प्रोफेसर एक डिप्टी मजिस्ट्रेट, एक फारेस्ट आफिसर, एक लोको इंजीनियर और इन्कमटैक्स का जिला अफसर।"[1]

3.13.2। मध्य वर्ग - विभिन्न स्तर

मध्य वर्ग केवल एक स्तरीय लोगों का वर्ग नहीं है। इस वर्ग के लोग आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से भिन्न-भिन्न स्तरों पर रहते हैं। मध्यवर्ग का उद्‌भव विकास और वर्तमान स्थिति वहाँ के सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक परिस्थितियों पर ही निर्भर करती है। जिसके कारण किसी एक देश का मध्यवर्ग दूसरे देश के मध्यवर्ग से समानता नहीं रखता। मध्यवर्ग अपनी सीमाओं में --"उद्योग और व्यापार के मँझली स्थिति के श्रमकर्ता, जैसे शिल्पी और किसान अर्थात् वस्तुओं के छोटे उत्पादक, छोटे दुकानदार और व्यापारी तथा दफ्तरों के कर्मचारियों एवं वेतन भोगी लोगों को समाविष्ट करता है।"[2] इस परिभाषा में केवल उन व्यवसायों की गणनामात्र कर दी गई है। एक अन्य कोशकार के अनुसार मध्यवर्ग की परिभाषा इस प्रकार से है -- "इस वर्ग में नौकरी पेशा, शिक्षक, क्लर्क और अन्य साधारण लोग आते हैं। मध्यवर्ग विशेषतः बुद्धि प्रधान वर्ग माना गया है और सामाजिक क्रांति के प्रायः समस्त विचारों का सर्जन मध्यवर्ग में ही होता है।"[3] हिंदी के प्रसिद्ध आलोचक ने मध्यवर्ग की परिभाषा इस तरह की है --" यह मूल रूप से मध्यवर्ग [redacted] इस लिए कहा गया है कि यह सामन्ती समाज में उच्च और निम्नवर्ग के बीच में उठा है। निम्न वर्ग और अभिजात मध्यवर्ग के बीच एक नया वर्ग और उठ खड़ा हुआ है। यह वर्ग है वकील, डाक्टर

- -

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 15
2. द इनसैक्लोपीडिया आफ सोशल साइन्सेस पृ- 407 भाग -9 और 10
3. हिंदी साहित्य कोश - पृ- 564

प्रोफेसरों तथा अच्छे पदों पर नियुक्त सरकारी अफसरों का ।"[1]

उपरोक्त परिभाषाएँ स्वयं में अपूर्ण है । मध्यवर्ग को लेकर कोई एक परिभाषा बनाना सरल नहीं है । कारण कि मध्यवर्ग के कुछ सदस्य एक ओर उच्च वर्ग से कठिनाई से पृथक किए जा सकते हैं, तो दूसरी ओर निम्न वर्ग से । परिणाम स्वरूप मध्यवर्ग को उच्च-मध्यवर्ग, मध्य-मध्य वर्ग, निम्न मध्यवर्ग के अन्तर्गत विभक्त किया जाता है ।

नागार्जुन के उपन्यासों में, मध्यवर्गीय, उच्च समाज, {2} मध्य मध्य वर्ग तथा {3} मध्य वर्गीय-निम्न-मध्य समाज का चित्रण हुआ है ।

{अ} <u>मध्य वर्गीय - उच्च मध्य समाज</u>

उच्च मध्य वर्गीय समाज का चित्रण रतिनाथ की चाची उपन्यास में हुआ है । यह वर्ग जीवन को वैभव पूर्ण ढंग से व्यतीत करने में सफल रहता है ।

जमींदारी उन्मूलन से, जमींदारों की स्थिति न तो अभिजात हुई, न जमींदारी ही । ग्रामीण "जमींदारी उन्मूलन प्रथा" से जिस वर्ग का निर्माण हुआ है, वह - "उच्च मध्य वर्ग है । रतिनाथ की चाची उपन्यास में जुम्मन झा इस वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं -- जुम्मन झा के पच्चीस बीघा जमीन थी, उपजाऊ । चार सौ मन धान साल-साल होता था । एक बड़ा सा आम बाग था, जिसमें कलमी आमों के पचासों पेड थे ।"[2] ये जमींदार अथवा राजा नहीं, उच्च मध्य वर्गीय व्यक्ति के रूप में नागार्जुन ने इस पात्र का अंकन किया है । जुम्मन झा पाँच पेड छोड़कर बाकी खटिकों के हाथ बेच लिया करते थे --- "चार सौ, पाँच सौ और कभी छः सौ तक मिल जाता । इस तरह आम भी इन के लिए एक अच्छी फसल थी ।"[3]

---

1. डा० इन्द्रनाथ मदान : प्रेमचंद एक विवेचन परिशिष्ट पृ- 170
2. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 2।
3. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 2।

चारों ओर से सम्पत्ति का स्त्रोत इन्हें प्राप्त था, फिर भी वे अभिजात वर्ग के जमींदार नहीं माने जाते है ।

इसी तरह का एक और पात्र उग्रतारा उपन्यास का भभिखन सिंह है ; वह उच्च मध्य वर्गीय समाज का प्रतिनिधि है । बाप-दादाओं की पुश्तैनी जायदाद आज भी है और नौकरी भी -- "बाप-दादा के खेत हैं, डेढ़ सौ बीघे । आमों के बाग हैं । साखू, महुआ, शीशम, जामुन, कटहल, तून के जंगल है ।[1] फिर भी वह जमींदार नहीं, उच्च-मध्य वर्गीय श्रेणी का प्रतीक है ।

[आ] मध्यवर्गीय मध्य-मध्य समाज

यह समाज अपने जीवन की परम आवश्यकताओं को केवल पूरा कर पाता है । इस वर्ग में खेतिहर व्यावसायिक तथा दुकानदार आते हैं । उपन्यासकार ने नई पौध, बलचनमा तथा रतिनाथ की चाची उपन्यासों में जायदाद के बटवाड़े से तथा विभिन्न नौकरी पेशों से जिन मध्य-मध्य वर्गीय समाज का निर्माण उपन्यासों में हुआ है, वह देखने योग्य है ।

रतिनाथ की चाची उपन्यास में कमलनाथ, जैनाथ तथा जयनाथ तीनों भाइयों के बीच में --"सौ बीघा खेत था -- पुरखों की लगाई हुई अमराई थी, छठवाँ भाग उसमें भी होता था । दस कट्ठा जमीन ऐसी थी जिसमें ऊख होता था ।"[2] इस तरह उच्च मध्यवर्गीय समाज से मध्य-मध्य वर्गीय समाज के व्यक्तियों का भी निर्माण होता था । ये स्वयं खेती नहीं करते थे, उनके सारे खेत "बटाई पर लगे हुए थे । पूरी उपज घर में नहीं आती थी । साल-साल कुछ खेत बेचना या रेहन रखना पड़ता था ।"[3]

---

1. नागार्जुन : उग्रतारा पृ- 3।
2. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 3।
3. " " " पृ-3।

यह दशा, मध्य-मध्य वर्गीय समाज की उन दिनों की दशा थी । वे न तो अभिजात जमींदार ही हो पाए थे और न निम्न श्रेणी के ग्रामीण ही ।

बलचनमा उपन्यास में, कुन्नी का परिवार मध्य-मध्य वर्गीय श्रेणी का प्रतिनिधित्व करता है । कुन्नी का बाप मनियार मंडल खेतिहर है जो ढाका के किसी चटकल में काम कर परिवार को पैसे भेजता है । कुन्नी की माँ बन्नी चाची ने इस कमाई से, धीरे-धीरे - "तीन बीघा खेत ले लिये थे । अब ये लोग छोटी जात वालों में हैसियत वाले माने जाते थे ।"[1]

नई पौध उपन्यास में, खुआईन भी इसी वर्ग की है, जिसके पास-चार बीघा उपजाऊ जमीन थी, मजबूत कोल्हू और मुठिया सींगो वाले दो नाटे सिलेबिया बैल थे, भीतवाले दो मकान थे और दुकानवाली बैठक थी ।"[2] इस तरह मध्य-मध्य वर्गीय समाज खेती, नौकरी तथा दुकानदारी कर अपना जीवन बिताते हैं । उपन्यासों में जिस मध्य मध्य वर्गीय समाज का चित्रण हुआ है, उनमें कहीं अन्तराल नहीं था जीविकोपार्जन में वे लोग डूबे रहते थे, परन्तु उच्च मध्यवर्गीय समाज में ईर्षा, द्वेष, वैमनस्य सब कुछ था --"बड़े किसान एक दूसरे की पोल जानते हैं, इसी से वे एक दूसरे के लोभ-लाभ के प्रति काफी हद तक सहनशीलता को पकड़े रहते हैं ।"[3]

मध्य-मध्य वर्गीय समाज निर्माण के कई कारण है ; जमीनों का बंटवारा, शहरो में नौकरी पेशे का आकर्षण, पढ़-लिखकर नौकरी के प्रति सम्बन्ध, मध्यस्तरोय [redacted]"विधा" आदि । ग्रामीण मध्य-मध्यवर्गीय समाज में उन लोगों की गणना होती है, जो काम चलाऊ ढंग से जीवन बिताते हैं । टमका-कोइली गाँव में राजपूतों के आठ दस परिवार

---

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 85
2. नागार्जुन : नई पौध पृ- 80
3. " : बाबा बटेसरनाथ पृ- 27

ही थे उनके पास -- "काम चलाऊ ज़मीन - जायदाद थी और साधारण तौर पर वे सुखी थे ।"[1] मध्य-मध्य वर्गीय समाज का यह रूप दुखमोचन उपन्यास से हमें प्राप्त होता है । इस गाँव के राजपूत -- "मझोले ढंग के काश्तकार थे, बाकी छोटे-छोटे खेतिहर ।"[2] मध्यवर्गीय समाज में उन किसानों की भी अवधारणा होती है, जो सम्पन्न तो नहीं सुखी अवश्य है ।

उपन्यासकार के समक्ष मध्य-मध्य वर्गीय समाज के निर्माण का दूसरा कारण "विद्या" भी है । नौकरी पेशे के सभी लोग पुरोहित अध्यापक, सिपाही, मुलाजिम, हेड पंडित इसी के अन्तर्गत आते हैं । ओझा पंडित को -- "विद्या से ही उनकी असल आमदनी थी । भागलपुर, मुंगेर, संथाल परगना और पूर्णिया - इन चारों जिलों में ओझा पंडित का नाम था ।"[3] ओझा पंडित मध्यवर्गीय समाज का प्रतिनिधि पात्र है, जिसने उच्च-मध्यवर्गीय तथा मध्य-मध्यवर्गीय समाज को सन्तुलित रखा है और सन्तुलन का आधार है -- "विद्या" (पंडिताऊपन) "पूस में साल भर का खेवा खर्चा जुटाकर पंडित घर में भर देते और खुद निकल जाते जजमनिका में, पूरब या दच्छिन की ओर ।"[4] इस तरह ओझा पंडित मध्य-मध्य वर्गीय समाज निर्माण में "विद्या" द्वारा प्रतिपादित है । एक अन्य मध्य-मध्य वर्गीय चरित्र रतिनाथ की चाची उपन्यास में, भोला पंडित का है -- " जिनकी दौड़-धूप का क्षेत्र चार जिलों तक विस्तृत था । दरभंगा, मुंगेर, भागलपुर और पूर्णिया । साल में एक बार तीन दिन

- -

1. नागार्जुन : दुखमोचन पृ- 89
2. " : बलचनमा पृ- 144
3. " : नई पौध पृ- 4
4. " : रतिनाथ की चाची पृ- 71

के लिए वह बेतिया भी जाते है ।"[1] ऐसे ही पात्रों के चरित्र से उनके पुत्र-पुत्रियों के चरित्र का भी निर्माण उपन्यासकार ने किया है । यह चरित्र मध्यवर्गीय समाज की स्थापना में विशेष महत्व को स्थापित करता है । नई पौध उपन्यास के खोखा पंडित के पुत्रों में - "एक था पितृभक्त संस्कृत अध्यापक, दूसरा मधुबनी अदालत में किसी वकील का मुहर्रिर था और तीसरा मैट्रिक तक पढ़ा था ।[2] इस तरह मध्य वर्गीय समाज का निर्माण उपन्यासकार ने इस तरह स्पष्ट किया है ।

इसी तरह का एक और पात्र, रतिनाथ की चाची उपन्यास में मध्यवर्गीय समाज का है, जो शिक्षा प्राप्त कर पंडित बना है, चुम्मन झा का लड़का जयकिशोर - "किसी जिला स्कूल में हेड पंडित है ।"[3] इसके अतिरिक्त दुखमोचन उपन्यास में दुखमोचन का भाई नारायण - "हजारी बाग में महकमा जंगलात का मुलाजिम है ।"[4]

इस प्रकार नागार्जुन ने मध्यवर्गीय समाज की इन [illegible] अन्तर्कथाओं का चित्रण दुखमोचन, बलचनमा, नई पौध, रतिनाथ की चाची, उग्रतारा, उपन्यासों में किया है ।

(इ) मध्य वर्गीय निम्न-मध्य समाज

यह समाज बड़ी कठिनाई से जीवन-यापन कर पाता है । उच्च मध्य वर्ग और निम्न-मध्य वर्ग में स्पष्ट अन्तर दिखाई देता है । पर मध्य

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 71
2. " नई पौध पृ - 18
3. " उग्रतारा पृ- 100 रतिनाथ की चाची पृ- 21
4. " दुखमोचन पृ- 18

- मध्य वर्ग को जो एक ओर उच्च-मध्य वर्ग से तथा दूसरी ओर निम्न-मध्य-वर्ग से मिलता है - अलग करना कठिन है। निम्न-मध्य वर्ग और निम्न वर्ग में बहुत कम अन्तर है, उपन्यासकार ने निम्न मध्य वर्ग का चित्रण बलचनमा उपन्यास में किया है। बलचनमा के पास-"माल-जाल के नाम पर - दो कठरियाँ थीं। आम, लताम [अमरूद], जामुन, बड़हर, खीरा, कुसियार [गन्ना], ककड़ी, तरबूजा और खरबूजा -- हमारा पेट भरने में इनसे काफी मदद मिलती।"[1] वास्तव में यह निम्न मध्यवर्गीय समाज की आर्थिक स्थिति ही है, फिर भी बलचनमा निम्न वर्ग का होते हुए भी निम्न मध्यवर्ग में आता है। इसी निम्न-मध्य वर्ग का अन्य पात्र दुखमोचन उपन्यास में है -- "रामनगर भूमिहर खानदान का गरीब किसान है - जिसका खींच - खाँचकर किसी तरह गुजारा होता था।[2]

3.2 सामाजिक रहन सहन

ग्रामीण समाज का निकट परिचय पाने के लिए वहाँ के रहन सहन अर्थात् आवास, खान-पान, वेशभूषा, व्यवहार की सामान्य वस्तुएं, यातायात के साधन इत्यादि का अध्ययन आवश्यक है।

3.21 आवास

3.211 उच्च वर्गीय घर

अभिजात वर्गीय घरों का फैलाव तथा उनकी बनावट और अन्य विशेषताओं के बारे में बलचनमा तथा दुखमोचन उपन्यासों में वर्णन नागार्जुन ने किया।

---

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 13
2. " दुखमोचन पृ- 58

इस वर्ग के घर, बड़े भूखण्ड को चारों ओर से घेरे रहते हैं। जिसके फलस्वरूप बीचों बीच खुली जगह होती है। "और इस खाली जगह को आँगन कहते हैं।"[1] ये आँगन इतने बड़े होते हैं, कि आपस में सटे घरों में होनेवाली दुर्घटनाओं का पता किसी को लगता नहीं। स्थिति यह है कि "इस ओसारे पर छः महीने का बच्चा गला फाड़-फाड़कर मर जायगा तो उस ओसारे पर बैठी माँ को पता न चलेगा।[2]

बलचनमा के छोटे मालिक ने दो बीघे जगह को घेरकर हवेली बनवाई। "बीच में आँगन, चारों ओर घर था।[3] घर के बनावट की विवेचना करते हुए उपन्यासकार कहते हैं कि :-

"कच्ची ईंटों की दीवारें खड़ी कर उन पर दो-दो धरने डाल दी गयी थीं। धरनों पर छोटे-छोटे खम्भे थे, खम्भों के सहारे मुँडेरे पर लम्बी बड़ेरी पड़ी थी।"[4] तथा "कीलों ठुकी साखों की कड़ियों पर-धार टिके हुए थे। चौखटे शीसम की। किवाड़ थे कटहल के लकड़ी के बने।"[5] हवेली हवादार तथा लम्बाई चौड़ाई में विशाल और शीशम, कटहल आदि बहुमूल्य लकड़ियों द्वारा बनाया जाता है। तब वह अभिजात वर्ग के "हवेली" के रूप को ग्रहण करता है। जहाँ धन का अधिक उपयोग किया गया तो वही अभिजातिय घर है। इन घरों के बैठक में "एक ओर

- -

1. नागार्जुन : बलचनमा 77 2. नागार्जुन : बलचनमा - पृ- 77
3. नागार्जुन : बलचनमा 21 4. नागार्जुन : बलचनमा - पृ- 21
5. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 22

बार-बार पल्लियोंवाली बड़ी-बड़ी संदूके पड़ी थी; - -
दूसरी ओर दो तख्तपोश थे, उनमें से एक पर बीचोबीच
शतरंज का घर खुदा हुआ था । अन्दर कमरों में छोटे-
छोटे दो खपसूरत [खूबसूरत] पलंग खड़े थे ।"[1] राधा बाबू
के ससुर का "पक्का बैठक-खाना था । कुरसी, आराम
कुरसी, कोच, बेंच, टेबुल सब कुछ था ।"[2]

3.212 निम्न-मध्य वर्गीय घर

निम्न-मध्य वर्गीय समाज में घरों के बनावट की विवेचना रतिनाथ की चाची तथा बाबा बटेश्वरनाथ उपन्यासों में हुई है । इन घरों की दीवारें अर्थाभाव के कारण मिट्टी से बनी होती है, तथा उसके "भीत और बाँस के छप्पर, खर [खढ़] के छाए हुए हैं ।"[3] इन छप्परों के खढ़ दूसरे या तीसरे वर्ष बदलना आवश्यक होता, नहीं तो घर बैठ जाने की सम्भावना रहती है । जयनाथ का "दच्छिन वाला घर खढ़ के अभाव में चूने की सूचना पहली बारिश में ही दे चुका था । ------- इस बार यदि नया खढ़ छप्पर पर नहीं पड़ेगा तो बरसात में समूचा मकान बैठ जायेगा ।"[4] यह दुर्दशा निम्न-मध्य वर्गीय घरों की थी ।

निम्न-मध्य वर्गीय कवि का घर, फूस के छप्परों से ढका पुराना था । जिसमें जीविका चलाने की आवश्यक वस्तुएँ - "पीतल-काँसे के चार-छः मामूली बर्तन, मिट्टी के दो-तीन मटके, फटे कम्बलों

- -

1. नागार्जुन : बलचनमा - पृ- 22
2. " " पृ- 52
3. " रतिनाथ की चाची पृ- 30
4. " " पृ-160

और पुरानी रजाइयों का छोटा-सा ढेर, टूटी तख्तपोश -- ऊपर से फूस के छप्परोंवाला पुराना मकान ।"[1]

निम्न मध्यवर्गीय घर में सामान का विवरण एक अन्य उपन्यास दुखमोचन में भी मिलता है । दुखमोचन के घर में - "लकड़ी की दो अलमारियाँ, दो तीन ट्रंक, एक पलंग, एक फोल्डिंग चारपाई और मामूली सा एक मेज़ - अन्दर यही सामान था । आलमारियों के पीछे टूटी कुरसियों के कंकाल झाँक रहे थे । मेज़ के नीचे सही - सालिम एक छोटा और खूबसूरत स्टूल पड़ा था । अतिरिक्त इसके "पलंग पर गद्दा । गद्दे पर लाल पीली किनारियोंवाली नीली चादर । सफेद खोलवाला तकिया । सिरहाने की तरफ सामने सुराही जंगला । ऊपर दीवार में पाँच-सात फोटो टँगे थे - गाँधी, नेहरू, लेनिन, सन्यात सेन, भगतसिंह, सुभाष--- ।"[2]

3.3.2 निम्न वर्गीय घर

निम्नवर्गीय समाज में घरों को बनावट, उनका फैलाव तथा उनके सामान की विवेचना - बलचनमा, वरुण के बेटे उपन्यासों में हुई है । इन परिवारों के अधिकांश घर झोपड़ी के शक्ल के छोटे-छोटे तथा घास-फूस के बने है । बलचनमा का "नौ हाथ लम्बा, सात हाथ चौड़ा"[3] घर था । तथा खुरखुन का समूचा संसार ही -- "तेरह फुट लम्बे और नौ फुट चौडे घर में अटा पड़ा था ।"[4] इन घरों की छत

---

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 75
2. " दुखमोचन पृ- 20
3. " बलचनमा पृ- 3
4. " वरुण के बेटे पृ- 12

"दो छप्परों[1] से ढकी है। ये छप्पर "भीतों पर नहीं, सरकण्डों के टट्टरों पर थे। दोनों तरफ जीमड़ के पतले, खम्भे उन्हें संभाले हुए थे।"[2] जिससे छप्पर झुके हुए दिखाई देते थे। एक अन्य उपन्यास वरुण के बेटे में भी इसका संकेत मिलता है। गोंढियारी की संयुक्त आबादियों में किसान, खेत-मजदूर के अतिरिक्त माँझियो की तादाद अधिक है, जिनमें अधिकांश की - छान फूस की कुटीरें थी।"[3]

निम्न वर्ग के सामान की ओर संकेत करते हुए उपन्यासकार कहते हैं कि, इस वर्ग के पास जीवनोपयोगी अतिआवश्यक वस्तुएं ही बस रहती है। कमरे के एक कोने में - "पुआल बिछे है - उस पर फटी पुरानी चौटी बिछी थी। xxx दूसरे कोने में चूल्हे - चौका। तीसरे में अनाज रखने के कूंड और कुठले। xxx मछलियाँ पकड़ने और फँसाने के औजार भीत के खूंटियों से टंगे थे।"[4]

बलचनमा, रतिनाथ की चाची, बाबा बटेस्वरनाथ, दुखमोचन, वरुण के बेटे उपन्यासों में उच्च, मध्य तथा निम्नवर्ग के घरों की बनावट तथा सामान की ओर संकेत करते हुए, उपन्यासकार नागार्जुन ने यह बताया है कि उच्च वर्ग के घर हवेली के समान बड़े-बड़े सुन्दर तथा आकर्षक थे, मध्य वर्ग के घर भीत और बाँस के छाये हुए थे तथा निम्न वर्ग के - छान-फूस की कुटिया।

- -

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 3
2. " दुखमोचन पृ- 127
3. " वरुण के बेटे पृ- 84
4. " " " पृ- 12

3.22 **खानपान** – खानपान की विस्तृत विवेचना 'वर्ग' के आधारपर उपन्यासकारने की है।

3.221 **उच्च वर्ग**

उच्चवर्ग खान-पान के विषय में सतर्क है। यह वर्ग नियमित रूप से उन पदार्थों का सेवन करता है, जिनसे उन्हें स्वास्थ्यलाभ हो। बलचनमा उपन्यास में राधाबाबू की पत्नी बहुत बड़े घर की बेटी है। प्रतिदिन के भोजन को बिना दूध-दही का खाना उनके कहने के मुताबिक – "बालू गोबर निगलना था।"[1] आश्रम में रहने पर भी उनके खान-पान में परिवर्तन नहीं हुआ उन्होंने – " दो सौ रुपये लगाकर गुजराती नसल की भैंस मालिक से खरिदवाई।"[2] इसी उपन्यास में एक और अन्य पात्र फूलबाबू भी है, जिनके घर – "महीने में एकाध दिन अंडे का हलुआ जरूर बनता।"[3]

3.222 निम्न-मध्य वर्ग

निम्न-मध्य वर्गीय समाज का खान-पान निम्न वर्ग से कुछ अच्छा है। ऐसे परिवार रोटी के साथ – नमक, कडुआ-तेल हरी मिर्ची न खाकर, तरकारी खाने के स्थिति में रहता है। बलचनमा उपन्यास का चुन्नी निम्न-मध्य वर्गीय परिवार का प्रतिनिधित्व करता है, जिसके भोजन में —"रोटी जौ की — तथा भिंडी की तरकारी"[4] रहती है।

---

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 7
2. " " पृ- 7
3. " " पृ- 52
4. " " पृ- 38

3.22.1 निम्न वर्गीय: खान-पान

निम्नवर्गीय खान-पान की चर्चा बलचनमा तथा वरुण के बेटे उपन्यासों में नागार्जुन ने की है। निम्न वर्गीय समाज - "कादो, महुआ, मकई, साँवा, कोदन[1] -- चाहे जिसकी भी रोटी हो रूखी-सूखी खाकर दो चुल्लू पानी पीकर संतोष से जीवन बिताते हैं।

3.1) महुआ

मजदूर बनिहार लोगों का आम खाना मडुआ की रोटी है। मडुआ रोटी की विशेषता बताते हुए उपन्यासकार कहते हैं - "मडुआ की रोटी देखने में अच्छी लगती है तथा खाने में भी --- रंग बैंगनी होता है मगर स्वाद सोंधी और मीठी होती है।"[2] इसे --"नमक, कडुआ तेल और सूखी मिरचाई के सहारे खाते हैं।"[3] बलचनमा तथा रेवनी की तरह कोई - "रात का रखा हुआ खाना सुबह अँधेरे हाथ मुँह धोकर खा लेते[4] और मालिकों के खेतों में जाकर धान काटते।

3.ग) मछली

महुआ की तरह मछलियाँ भी निम्नवर्गीय समाज का मुख्य आहार है। वरुण के बेटे उपन्यास में कई परिवार ऐसे है, जिनकी मछलियाँ ही मुख्य आहार है -- " खुरखुन, बिसुनी, नीरस, रंगलाल टुन्नी और भोकर जैसे मछुए इन्हीं परिवारों के मुखिया है।"[5]

---

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 117
2. " " पृ- 117
3. " " पृ- 117
4. " " पृ- 139
5. " वरुण के बेटे पृ- 75

मछली खाने के विविध प्रकार की विवेचना भी नागार्जुन ने की है — "आग में भूनकर बिना नमक की मछली खाओ तो बुरी नहीं लगेगी ।"[1] तेल के अभाव में भूनी हुई मछली का भुर्ता बनाकर, रोटी के साथ खाने की प्रथा निम्न-वर्ग समाज में प्रचलित है । मधुरी ने जल्दी-जल्दी आठ दस टिकवह छौंक सेंक लिए बूंद भर भी तेल नहीं था, टाटी में --- " यों ही सूखे-सूखे भून ली मछलियां । पीछे नमक और लाल मिर्च पीस-मासकर उसका भुर्ता बना लिया ।"[2] मछली यह निम्न वर्ग का मुख्य आहार है, सामान्य दिनों में विशेष कर --"मँहगी अकाल के जमाने में महीनो मछली पर गुजार देते हैं ।"[3]

३.२२ नाश्ता

"चूड़ा" को नाश्ते के रूप में ग्रहण करने की चर्चा दुखमोचन, नई पौध, रतिनाथ की चाची, वरुण के बेटे उपन्यासों में हुई है । इसे खाने के विविध प्रकार का उल्लेख भी उपन्यासकार ने किया है । इसे भूनकर फाँका भी जाता है, या उसे और स्वादिष्ट बनाने के लिए तला भी जाता है । तले हुए चिउड़े को परवल के आचार के साथ नाश्ते के रूप में देने का उल्लेख दुखमोचन उपन्यास में हुआ है । माया के घर कपिल के लिए बाँस की छिपिया में नाश्ता आया - "घी में तले हुए चिउड़े और --- परवल का आचार "।[4]

भुने हुए चिउड़े को मछली के साथ खाने का उल्लेख भी उपन्यास में प्राप्त होता है । चाची, जयकिशोर को --"भुना हुआ चूड़ा और रोहू के तले टुकड़े— तथा अँड़ा के बड़े का नाश्ता कराती है ।"[5]

---

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 118
2. नागार्जुन : वरुण के बेटे पृ- 77
3. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 118
4. " दुखमोचन पृ- 89
5. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 143

दुनाई ओसारे पर बैठकर - "भुना हुआ चिउडा तली हुई टेंगरा मछली के सहारे फांक रहा था ।"[1] वेणी माधव के घर दुखमोचन को - "कांसे की थालियों में भुने हुए चिउडे और मछली के तले टुकडे"[2] नाश्ते में आये ।

भुना हुआ चुडा तथा तली हुई मछली का नाश्ता केवल घरों में ही नहीं, सभाओं की समाप्ति पर जलपान के रूप में देने की प्रथा का भी उल्लेख उपन्यासकार ने किया है । मलाही गोंढियारी की जनता, मोहन मांझी के भाषण के पश्चात जो जलपान दिया था, उसमें - "चिउडे भुने थे, उनमें अचार का मसालेदार तेल मिलाया हुआ था । नमक और हरी-मिर्च अलग भी थी । कुआरी मछली के तले हुए आठ - दस खंड दूसरी छिपिया में थे ।"[3]

भुने हुए चुडे के साथ मछली के तले हुए खंड खाना दुखमोचन, नई पौध, रतिनाथ की चाची, वरुण के बेटे उपन्यासों के पात्रों की रुचि को प्रकट करता है, तथा यह भी ज्ञात होता है कि उस क्षेत्र विशेष में धान तथा मछली प्रचुर मात्रा से मिलती है । टेंगरा, रोहू, कुआरी मछलियों का सेवन विशिष्ट अवसरों तथा धार्मिक,पर तथा अपर कृत्यों पर भी किया जाता है । रतिनाथ की चाची उपन्यास में जयकिशोर के ससुर की — "तेरही के दिन रोहू मछली का पर्याप्त प्रबन्ध किया गया था ।"[4]

---

1. नागार्जुन : नई पौध पृ- 85 - 86
2. " : दुखमोचन पृ- 75
3. " : वरुण के बेटे पृ- 37
4. " : रतिनाथ की चाची पृ- 143

उपन्यासों के अधिकांश पात्र "जलसीम"[1] भोगी है। जलसीम अर्थात मछली/मछली के विभिन्न नामो, रोहू,[2] भाकुर[3], पोठी[4], सिंगी,[5] टेंगरा[6], कुआरी,[7] मोदनी,[8] ब्यारी,[9] इंच्या[10], धींगा[11], भुनवट्टी[13], नैन[12], मांगुर[14], राघव[15], सौरा[16], गरई[17] का उल्लेख भी उपन्यासकार ने किया है।

- -

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 117
2. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 31, 128, 142, 143, 145
   बलचनमा पृ- 20, 105
   उग्रतारा पृ- 90
3. रतिनाथ की चाची - पृ- 31, 142
   बलचनमा पृ- 105
   वरुण के बेटे पृ- 65
4. रतिनाथ की चाची पृ- 31, 114, 115, 143
   बलचनमा पृ-33
5. रतिनाथ की चाची पृ- 31
   बलचनमा पृ- 33
6. बलचनमा पृ- 33, 34 नई पौध पृ- 85
7. वरुण के बेटे - पृ- 65
8. वरुण के बेटे - पृ- 65
9. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 31, 142
10. " " पृ- 31, 143
11. " " पृ- 115, 143
12. " " पृ- 142
13. " " पृ- 142, बलचनमा पृ-33
14. " " पृ- 31
15. " " पृ- 144
16. " " पृ- 142
17. " बलचनमा पृ- 33

इन मछलियों का उपयोग विभिन्न प्रकार से किया गया है, जिसका उल्लेख दुखमोचन, नई पौध, रतिनाथ की चाची, वरुण के बेटे उपन्यासों में हुआ है ।

3.23। पेय

पेय के रूप में "चाय" तथा "शरबत" की चर्चा उपन्यासों में हुई है ।

30) चाय

अभिजात वर्ग चाय से परिचित तो है ही, निम्नवर्ग भी । बलचनमा - "चाह से अनजान नहीं था ।"[1] केवल इतना ही नहीं "मिठाई" के आगे गुड़ की गरम शर्बत पीना परम आवश्यक भी मानता है । बुरखुन का — "पंकोर मिठाई से जी नहीं भरा । अब गुड़ की इस गरम शरबत पर मन आके अटका है ।"[2] केवल पुरुष ही नहीं मंगला जैसी वृद्धि स्त्रियों का, चाय शौक अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुका है । चाय पी-पीकर इसका तो जीभ का स्वाद ही चौपट हो गया है —"नमक डालकर लाल चाय पीती है ।"[2क] चाय का उपयोग पेय के अतिरिक्त ग्रामीण औषधी के रूप में बाबा ने बलचनमा उपन्यास में किया है । बलचनमा जब कभी सर्दी तथा खांसी से ग्रस्त होता तो — "चाह बनवा के पीता था । चीनी न हुआ तो गुड़ ही सही ।"[3]

राधाबाबू की पत्नी, बच्चों को सर्दी-जुखाम होने पर - "चाय जरूर बनती ।"[4] इसी उपन्यास में लेखक स्वयं चाय के असली पियक्कड़ की विधि बताते हुए यह स्पष्ट करते है कि बड़े-बड़े दिमाग वाले

---

1. नागार्जुन - बलचनमा पृ- 43 2. नागार्जुन : वरुण के बेटे पृ- 16
2 क. वरुण के बेटे - नागार्जुन पृ- 10 3. नागार्जुन : बलचनमा पृ-43
4. नागार्जुन - बलचनमा पृ- 133

बाबू लोग - " इसी किसिम की चाय पसन्द करते हैं ।"[1]

3.23 **शरबत**

ग्रीष्मकालीन, इस पेय का उल्लेख उग्रतारा तथा दुखमोचन उपन्यास में नागार्जुन ने किया है । "शरबत" - ठण्डे जल में चीन के घोल[2] को भी कहा जाता है । यही शरबत बनाने की सामान्य विधि है । विशेष प्रकार का शरबत — " ताजे पानी में - चीनी, सौंफ और पुदीना"[3] से बनाये जाने का उल्लेख भी उपन्यासों में हुआ है ।

3.24 **नशा**

ग्रामीण नशा के अन्तर्गत 1 पान, 2 सुरती, 3 खैनी, 4 नस, 5 अफीम, 6 गाँजा, 7 चरस, 8 भंग, 9 माजूम, 10 शराब, 11 ताड़ी, 12 बीड़ी, 13 हुक्का तथा 14 सिगरेट की चर्चा उपन्यासकार ने की है । यह नशा पुरुषों के समानंतर स्त्रियों में भी प्रचलित है । अध्ययन की सुविधा के लिए इसे दो शीर्षकों के अन्तर्गत विभक्त किया जाता है - पुरुषों का नशा, स्त्रियों का नशा ।

3.241 **पुरुषों का नशा**

पुरुषों में प्रचलित नशा, - पान, सुरती, खैनी, नस, अफीम, गाँजा, चरस, भंग, माजूम, शराब, ताड़ी, बीड़ी, हुक्का तथा सिगरेट है।

---

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 133
2. नागार्जुन : उग्रतारा पृ- 108
3. " " दुखमोचन पृ-146

1 पान

पान और पान के साथ जर्दा खाना एक प्रकार का ग्रामीण नशा है । नई पौध, रतिनाथ की चाची, दुखमोचन उपन्यासों में नागार्जुन ने इस नशे की विवेचना की है ।

पान का एक बिड़ा खाकर किसी पात्र का मन संतुष्ट नहीं हुआ, चार-चार बीडे,खाना, चूना चाटना और ऊपर से जर्दा फाँकना यही इस नशा की विशेषता है । कोर्ट के समीप पान के दूकान के पास भौंहे और दिगम्बर दोनों खड़े है । "पान के चार बीडे मुंह में खोंसकर ऊपर से जर्दा डालके दिगम्बर ने निचली जेब से चमचमाती अठन्नी निकाली ।"[1] इसके अतिरिक्त रतिनाथ की चाची उपन्यास में वैदिक अच्युतानन्द को चार या पाँच बीडे खाने से संतोष नहीं मिलता थे -- "दिन भर घास की तरह पान चबाते रहो ।"[2] पान खाने की यह प्रथा निश्चित ही भारतीय है । सुरती साथ लेना उन धनिकों के लिए है, जो अभिजात वर्ग के होते है, परन्तु उपन्यासकार ने नई पौध उपन्यास द्वारा उस पुरानी परम्परा को तोड डाला जो "सूर्ती" अभिजात वर्ग के लिए सुरक्षित थी ।

पान : विविध प्रकार

साधारण पान के अतिरिक्त बँगाली, उड़िया,मगही पान का उल्लेख भी उपन्यासकार ने दुखमोचन उपन्यास में किया है । दुखमोचन का चरित्र जिस तरह उपन्यास के चरम सीमा पर स्थित है, उसी तरह उनका पान खाने का शौक भी विचित्र है । बँगाली या उड़िया पान

1. नागार्जुन : नई पौध पृ- 99
2. " : रतिनाथ की चाची पृ- 102

से उन्हें विरक्ति थी — "हाँ मगही पान का बनारसी विन्यास अच्छा लगता था।"[1] पान मगही है लेकिन उसकी भीतरी चीजें बनारसी है, यह दुखमोचन की अपनी रुची है। सम्भवत: नागार्जुन की [redacted] यह अपनी रुची है।

पान खाना, जर्दा फाँकना और ऊपर से चूना चाटना उस वर्ग के लोगों की आदत थी, जो निम्न-मध्यवर्गीय समाज में जन्म लेकर अभिजात वर्ग को चुनौती देने में साहस रखते है। कुंभीपाक उपन्यास के पत्रकार दिवाकर शास्त्री भी इस नशे से ग्रस्त है - "पान के बीड़े गालों के अन्दर ठूंसकर चुटकी-भर जर्दा फाँक गए। दुकान से बाहर निकलते-निकलते उंगली से चूना चाट लिया।"[2] इस नशे को चुनौती के रूप में उपन्यासकार ने अंकित किया है।

२. <u>सुरती</u>

जर्दा और चूने को घोंट-घोंटकर बनाया जानेवाला नशा सुर्ती कहलाता है। सुखदेव - "हथेली पर तम्बाकू चूना मसल मसलकर सुरती तैयार कर रहे थे।"[3] इस नेशे का उल्लेख बलचनमा[4], दुखमोचन तथा वरुण के बेटे[5] उपन्यास में नागार्जुन ने किया है। यह [redacted] नशा अधिकतर निम्नमध्यवर्ग तथा निम्न वर्ग में प्रचलित नशा है।

- -

1. नागार्जुन : दुखमोचन - पृ- 19
2. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 23
3. नागार्जुन : दुखमोचन पृ- 25
4. " बलचनमा पृ- 149
5. " वरुण के बेटे पृ- 90

3. खैनी

सुरती के लिए खैनी शब्द का उल्लेख वरुण के बेटे तथा बलचनमा[1] उपन्यास में हुआ है। खैनी बनाने की विधि वही है जो सुरती की। वरुण के बेटे उपन्यास में इसका उल्लेख हुआ है -- "भोला की तलहथी पर अब तम्बाकू और चूना था। उन्हें मसल-मसल कर वह खैनी तैयार कर रहा था।"[2] चुना के अतिरिक्त सीपियों का चूना भी खैनी बनाने के उपयोग में आता है। वरुण के बेटे उपन्यास में - मोसम्मात चिरिया कहती - "मुझे अपनी खैनी के लिए सीपियों का चूना बना-बनाकर अब कौन दिया करेगी गे-नू-नू-ऊँ-ऊँ-ऊँ-ऊँ।"[3]

खैनी का प्रचलन निम्नमध्य वर्ग तथा निम्नवर्गीय समाज में प्रचलित नशा है। इसके अतिरिक्त नई पौध, दुखमोचन तथा उग्रतारा उपन्यासों में भी खैनी शब्द का उल्लेख हुआ है।

4. नस

अभिजात वर्ग में प्रचलित नशे का उल्लेख रतिनाथ की चाची[1क], नई पौध[2क] तथा दुखमोचन[3क] उपन्यासों में हुआ है। एस.डी.ओ साहब ऊँचे खानदान के ब्राह्मण थे, पैण्ट के पाकेट से उन्होंने - "चाँदी की नफीस डिबिया निकाली और चुटकी भर नस नाक के पूडों में सुडक ली।"[4] नस के लिए "सुंघनी[5]" शब्द का प्रयोग भी उपन्यासकार ने किया है।

- -

1. नागार्जुन : वरुण के बेटे - पृ- 90 2. नागार्जुन : बलचनमा पृ-147
3. नागार्जुन : वरुण के बेटे पृ- 8, 1क. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ-5
2क. नागार्जुन : नई पौध पृ-16, 17, 18, 73, 75
3क. नागार्जुन : दुखमोचन पृ- 120
4. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 120
5. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 126, बाबा बटेसरनाथ पृ- 24

5. अफीम

अन्तरराष्ट्रीय नशा है। इस नशे का – "सिंगापुर के चीनी सौदागर – तस्कर व्यापार करते हैं। हांगकांग के राजबैंकार रसायनाचार्यों की खास हिदायतों के मुताबिक ही यह माल तैयार होता है। रूस को छोड़कर बाकी सारी दुनिया में इन गोलियों की खपत।"[1] अन्तरराष्ट्रीय नशा, "अफीम" को रूस ने छोड दिया है। सम्भवत: उपन्यासकार की आस्था श्रमिक वर्ग के प्रति है और आज यह अफीम कई रूपों को ग्रहण करके संसार भर में फैला हुआ है। भारत में इसे "अफीम" के गोलियों को चाँदी के डब्बे में बंद करके अभिजात लोग इसका स्वागत करते है – "आज चाँदी की दो डिबिया खाली नहीं है। अफीम की दस गोलियाँ नेपाली सेठ ने जाते वक्त दी थी।"[2] भगौती के पिता – "इन गोलियों के नियमित ग्राहक थे। चाचा को भी शौक था इनका।"[3] एक अन्य उपन्यास दुखमोचन में भी इस नशा का उल्लेख हुआ है, वैपी माधव के नाना पंडित ललित नारायण, रात को, गाढ़ी नींद आने के लिए रोज शाम को – "जरा-सा अफीम लेते थे।"[4] इसी उपन्यास में नित्याबाबू भी इस नशे से ग्रस्त है।

अफीम यह उच्चवर्गीय समाज का नशा, जिसका उल्लेख उपन्यास जमनिया का बाबा तथा दुखमोचन उपन्यास में मिलता है।

6. गाँजा

इस नशे का उल्लेख नागार्जुन ने बाबा बटेसरनाथ, दुखमोचन तथा जमनिया का बाबा, हीरक जयन्ती उपन्यास में किया है। सरकार

---

1. नागार्जुन : जमनिया का बाबा पृ. 98
2. " " पृ. 124
3. " " पृ. 96
4. " दुखमोचन पृ. 102

ने इस नशे पर पाबंदी लगा दी है, फिर भी ग्रामीण जनता चोरी छिपे इसे उगाती है - "परसादीपुर का बाभन इसीलिए फँस गया था कि उसके घर के पीछे गाँजे के पौधे देखे गये ।"[1] जिसके फलस्वरूप उसे - "दो महीने की कड़ी कैद की सजा ठोक दी ।"[2] फिर भी उपन्यास के पात्र इस नशे के दिवाने है, और विभिन्न स्थानों से चोरी-छिपे गाँजा ले आते हैं । दुखमोचन उपन्यास में इसका उल्लेख हुआ है - कमल, रामनाथ और रामसागर - "जनकपुर धाम से तीनों जने लौटे तो नाव-भर नेपाली गाँजा साथ था ।"[3]

गाँजे के ताजा पत्तों का नशा इतना तीखा होता है, कि - "एक बार दम लगाने पर दिमाग काफी देर तक आसमान में चक्कर लगाता था, ऐसी मस्ती उमड़ती थी कि दिवाल में धक्का मारने की तबीयत होती थी ।"[4]

6। मंजरियाँ

गाँजे की पत्तियाँ ही नहीं, उसकी मंजरियाँ भी कम नशीली नहीं होती । बाबा बटेसरनाथ में इसका उल्लेख उपन्यासकार ने किया है । जानुराउत - "मंजरियाँ सुखा-सुखाकर रख लो — बरसात के दिनों में चिलम सुलगा-सुलगा कर उसका मजा लूटता ।"[5] इस नशे की प्रशंसा करते हुए उपन्यासकार का कथन है - "गाँजे की लपट जितनी ऊँची उठेगी, ज्ञान का ज्योतिर्बिंब होगा उतना ही लाल होगा"।[6] अलौकिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए गौड़ी गाँव के बाहर नदी के किनारे या दुर्गाजी के मंदिर के नजदीक शिवजी के मठिया में इनके "अनहदनाद गूँजा करते ।"[7]

- -

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 74
2. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ 7
3. नागार्जुन : दुखमोचन पृ-55
4. नागार्जुन : जमनिया का बाबा पृ-33
5. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ 75
6. नागार्जुन : जमनिया का बाबा पृ-77
7. नागार्जुन : दुखमोचन पृ-55

7. चरस

इस नशे का उल्लेख बाबा बटेसरनाथ[1] उपन्यास में हुआ है ।

8. भंग

यह एक साधारण नशा है, जिसे औरत और मर्द दोनों स्वीकार करते हैं । यह नशा ग्रामीण तथा शहरी है । मिठाई के साथ यह तीव्रतर होकर नशा को चरम सीमा में पहुँचा देता है, जिसके कारण समाज में अत्याचारों का बखेड़ा उठ खड़ा हो उठता है और वह एक समस्या का रूप धारण कर लेता है । इस नशे का उल्लेख जमनिया का बाबा, उग्रतारा उपन्यास में उपन्यासकार ने किया है । जमनिया का बाबा उपन्यास में माई इमरतिया - इस नशे को दीवानों से उसे ताकता है - "बिना भंग के माथा नहीं फट जायेगा ।"[2] एक अन्य उपन्यास उग्रतारा में भी इस नशे का उल्लेख नारी को भ्रष्ट करने के लिए किया है । उगनी कहती है - "सिपाही जी को मेरे मन ने कभी कबूल नहीं किया । भंग की बर्फी धोखे में खिला दी गई थी । कामेश्वर ।"[3] इसके अतिरिक्त रतिनाथ की चाची, बलचनमा, नई पौध, उग्रतारा, बाबाबटेसरनाथ, दुखमोचन उपन्यासों में भी भंग का उल्लेख हुआ है ।

8.1 भंग प्रकार

दुधिया भंग , बादाम और जीरा के बीज डालकर तैयार की गई भंग, दुधिया भंग है ।[4] जिसका उल्लेख रतिनाथ की चाची उपन्यास में हुआ है ।

---

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 63
2. " जमनिया का बाबा पृ-77
3. " उग्रतारा पृ- 92
4. " रतिनाथ की चाची पृ- 99

9. <u>भाजूम</u>

इस नशे का उल्लेख भी जमनिया के बाबा उपन्यास में उपन्यासकार ने किया है। भाजूम नशा का प्रयोग अभिजात वर्ग के लोगों का है। परन्तु वह उतना ठलव नहीं देता जितना की गाँजा। मनुष्य जब तीखी नशाओं का शिकार हो जाता है, उसे भाजूम पसंद नहीं आता, उस पर यह नशा लागू भी नहीं होता। नशेखोर भगौती के लिए - "भाजूम भी अच्छा मजा देता है -- मगर नींद के लिए बेकार है भाजूम।"[1]

उपन्यासकार की दृष्टि में भाजूम चंद घंटों के मजे लूटने का नशा है।

10. <u>शराब</u>

शराब के लिए - दारू,[2] विस्की,[3] तथा ब्रांडी[4] का प्रयोग उपन्यासकार ने किया।

11. <u>ताड़ी</u>

यह निम्नवर्ग में प्रचलित नशा है। जिसका विस्तारपूर्वक विवेचन उपन्यासकार ने वरुण के बेटे[5] उपन्यास में किया है।

11.1. <u>ताड़ी की दुकान</u>

गढ़पोखर तथा उतपरा के बीच स्थित ताड़ी के दुकान के भौगोलिक स्थिति उसकी [illegible] बनावट का वर्णन, नागार्जुन ने वरुण के

---

1. नागार्जुन : जमनिया का बाबा पृ-99
2. " बलचनमा पृ-79,87,171 बाबा बटेसरनाथ पृ-63
3. " हीरक जयन्ती पृ- 62
4. " " पृ-88
5. " वरुण के बेटे प- 43,53,54,57

बेटे उपन्यास में किया है । यह दुकान – " गढ़पोखर से मील एक उत्तर, लखधरा के इधरवाली छोर पर थी ।"[1] दुकान पर छत की जगह "ताड़ के पत्तों से छाए हुए दो छप्पर । सामने खूब चालू सड़क ।"[2] दुकान के भीतर – "सीधी कतार में रखे हुए पांच-सात घड़े । अलग-अलग नाप की कई घड़ियां । जरा-हटकर बैगिरियों में झिल्ली, कचरी, भूजा, फरही जैसे खाने की चीजें ।"[3] दुकान के भीतर ग्राहकों के लिए –"ताल-पत्र की आसनुमा चटाइयां इधर-उधर बिखरी पड़ी थी । उन पर छः सात बंदे डटे हुए थे"।[4] उनमें से दो एक जगह आमने-सामने[5] है । दूसरी जगह– "सम्मुख त्रिकोण-बैठक में तीन विराजमान थे । बाकी एक-एक जुदा-जुदा ।"[6] पीनेवाले सभी अपनी-अपनी मस्ती में थे । "उन्हें आए-गए की परवाह नहीं थे । वे तो आपस की ही गाली गलौच में विभोर थे । त्रिन मूर्तिवाली गुट अभी चट्टान पर थी ।"[7]

ताड़ी को नापने का माप "लबनी"[8] का भी उल्लेख इसी उपन्यास में हुआ है । खुरखुन जैसे नशेखोर के लिए — "होते-होते पीते रहने के लिए काफी माल था ।"[9] खुरखुन तथा नीरस निश्चिंत होकर ताड़ी पीने में मग्न थे – "अब यह उनके मधु-पान की दूसरी और मुकम्मिल दौर थी ।"[10] ताड़ी पीकर धुत रहनेवाले पुरुषों से समाज चित्रित है ।

- -

1. 2. 3. नागार्जुन : वरुण के बेटे पृ- 53

4. " : " पृ-54

5. 6 " : " पृ-54

7. " : " पृ- 54

8.9.10 " " पृ-57

12. बीड़ी

इस नशे का उल्लेख बलचनमा, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे उपन्यास में हुआ है । इस नशे के प्रेमी अधिकांशतः निम्नवर्ग के लोग हैं । बीड़ी पीने के विविध प्रकार का वर्णन भी उपन्यासकार ने किया है । कोई इसे एक कश में समाप्त करता है तो कोई धीरे-धीरे पीकर थकावट मिटाने का प्रयत्न करता है । बलचनमा को थकावट मालूम पड़ती तब - "बीड़ी टान लेता -- तथा तीन बार में खतम करता था बीड़ी को ।"[1] बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में जीवनाथ बीड़ी को -- "सीधे होठों में न लेकर मुट्ठी के माध्यम से ओठों को दो कश खींची और ढेर-सा धुंआ मुंह से निकाल दिया ।"[2] एक ही कश में बीड़ी को समाप्त करने का उल्लेख भी बलचनमा उपन्यास में प्राप्त होता है । बलचनमा बीड़ी को चिलम की तरह लम्बी कश खींचकर एक ही बार में - "तीन- चौथाई साफ"[3] करता है ।

नागार्जुन ने बलचनमा तथा बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में "बीड़ी" नशा के सेवन करने की विधी का वर्णन किया है ।

13. हुक्का

इस नशे का उल्लेख बलचनमा उपन्यास में हुआ है । यह नशा निम्नवर्गीय समाज में प्रचलित है । जो घर तथा बाहर जहाँ कहीं भी नशाखोर जाता है, अपने साथ ले जाता है । बलचनमा का मामा इसे बरात में भी - "साथ ले लिया था ।"[4]

- -

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 71
2. " : बाबा बटेसरनाथ पृ- 98
3. " : बलचनमा पृ- 148 - 149
4. " : बलचनमा ५ '

अतिरिक्त इसके दुखमोचन तथा उग्रतारा उपन्यास में भी इसका उल्लेख हुआ है ।

14 सिगरेट

यह नशा अभिजात वर्ग के समाज में प्रचलित है । इसका उल्लेख रतिनाथ की चाची[1], बलचनमा[2], बाबा बटेसरनाथ[3], हीरक जयन्ती[4], उपन्यासों में नागार्जुन ने किया है । सिगरेट के अतिरिक्त सिगार[5], का भी उल्लेख भी हुआ है ।

14.1 विविध प्रकार

विविध प्रकार के सिगरेटों का उल्लेख - गिनी गोल्ड[6], गोल्ड फ्लेक[7], अब्दुल्ला सिगरेट[8], भी उपन्यासकार ने किया है ।

3.2.42 स्त्रियों का नशा

स्त्रियों के नशे के अन्तर्गत पान, सुर्ती, बीडी तथा हुक्का की चर्चा दुखमोचन, बलचनमा, वरुण के बेटे, बाबा बटेसरनाथ उपन्यासों में नागार्जुन ने की है ।

1. पान

यह नशा केवल पुरुषों तक सीमित न होकर, स्त्रियों में भी अपनी चरम सीमा को पहुंच गया है । नागार्जुन ने इसका उल्लेख दुखमोचन

- -

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ-121
2. " : बलचनमा पृ- 120
3. " : बाबा बटेसरनाथ पृ- 102
4. " : हीरक जयन्ती पृ-32, 33, 35, 38, 40, 58, 68, 72, 74, 75, 107, 109, 111, 137
5.6.7.8. :हीरक जयन्ती : पृ- 40, पृ-118, पृ-107 और पृ-68

तथा बलचनमा उपन्यास में किया है। भाभी के मायके में -"पान और जर्दा रोजाना खुराक में शामिल थीं।"[1] यह प्रथा प्रवरों द्वारा अवरों को प्राप्त हुई है। दुखमोचन के परिवार में भाभी ने - "पान खाने के कई बेले तैयार कर लिए।"[2] एक अन्य उपन्यास बलचनमा में- "पान के शौकिन मलिकाइन का उल्लेख हुआ है। वह "एक" पान खाने से संतुष्ट नहीं होती - "पाल-थी मारकर बैठ जाना और पान का डब्बा खोलना और फिर कायदे से बीड़े लगाना, दो बीड़े मलिकाइन पहले अपने मुंह में डालती।"[3]

पान खाने की प्रथा, उच्च तथा मध्यवर्ग के स्त्रियों तथा पुरुषों में व्याप्त है।

2. सुर्ती

सुर्ती खाने की प्रथा उच्चवर्गीय परिवारों में है। जिसका उल्लेख बलचनमा उपन्यास में हुआ है। मलिकाइन पान खाने के उपरान्त ----चांदी की डिबिया से बनारसी सुर्ती निकालती और मुंह में चुटकी भर डाल लेती"।[4]

3. बीड़ी

बीड़ी यह पुरुषों का ही नशा न होकर निम्नवर्ग की स्त्रियों का भी है। जिसका उल्लेख वरुण के बेटे उपन्यास में नागार्जुन ने किया है। ये स्त्रियां पुरुषों की तरह कश खींचकर बीड़ी को [redacted] समाप्त करने की कला से परिचित हैं। मधुरी ने "सांस ली और कश खींची तो इतनी

- -

1. नागार्जुन : दुखमोचन पृ- 19
2. " " दुखमोचन पृ- 19
3. " : बलचनमा पृ- 128
4. " : " पृ-131

लम्बी कि समूची बीड़ी खाता ।"[1] इतना ही नहीं दो परिचित व्यक्ति मिलने पर बीड़ी के आदान-प्रदान से ही अपने स्नेह का परिचय भी देते है । मंगल तथा मधुरी का प्रेम इसी बीड़ी के आदान-प्रदान से आरम्भ होता है -- "पहले मिलन के अवसरों पर अक्सर मंगल बीड़ी सुलगाता, दो कश खींचकर मधुरी को थमा देता । दो कश खींचकर वह फिर मंगल को थमा देती ।"[2]

बीड़ी, बूढ़ो जवानों के लिए केवल नशा न होकर मिलन के प्रकरण में रस निष्पत्ति लाने में भी सहयोगी है । मधुरी और मंगल का बीड़ी का आदान-प्रदान "स्वलम्ब श्रृंगार" में रस निष्पत्ति का सहयोगी है । नागार्जुन के दृष्टिकोण से बीड़ी का सम्बन्ध केवल बूढ़े और बुढ़ियों के साथ न होकर उन नवजवानों के लिए भी है, जो "भावि जीवन" प्रेम का आधार मानते है ।

इसके अतिरिक्त रतिनाथ की चाची, बलचनमा, बाबा बटेसरनाथ, दुखमोचन, उग्रतारा उपन्यासों में भी उल्लेख हुआ है ।

4 हुक्का

बीड़ी की तरह हुक्का भी निम्नवर्ग के स्त्रियों का नशा है, जिसकी विवेचना वरुण के बेटे, दुखमोचन तथा बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में हुई है । "कच्ची तम्बाकू तथा छोआ इस नशे की विशेषता है ।"[3] अधिकांश यह नशा बुढ़ियों में व्याप्त है । मैंझा जैसी बुढ़ी स्त्रियों के लिए हुक्का पीना नियमित आहार की तरह है । जिलेबिया दादी के नशे से परिचित है, वह सुलगाई हुई टिकिया चढ़ाकर - मैंझा को हुक्का

- -

1. नागार्जुन : वरुण के बेटे पृ- 50
2. " " पृ- 49
3. " " पृ- 44

थमा गई तो ध्वनि और स्फोट का श्रुतिमधुर सिलसिला चला - गुड़-गुड़-गुड़-गुड़-गुड़क, गुड़-गुड़-गुड़-गुड़-गुड़--"[1] जब भी ये स्त्रियाँ बिरादरी के घरों में जाती है तब अपना हुक्का साथ ले जाती है। मंगल की माँ, मधुरी की माँ से मिलने पर जाती है तो - "अपना हुक्का साथ लाई।"[2] हुक्के का नशा बुढ़ापे में अपनी चरम सीमा पर पहुँचता है, उनकी नशाखोरी पुरुषों को भी मात कर देती है। इसका उल्लेख नागार्जुन ने बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में किया है। जैकिसुन की माँ बुढ़ी हो गई है -- "आठों पहर होठों से हुक्के की नारियल सटाये रहती है।"[3] कभी-कभी इनका नशा गाँव के लिए अनिष्ठ सिद्ध होता है। दुखमोचन उपन्यास में अग्निकांड की घटना नशेबाज स्त्री के "हुक्के" के कारण होती है। हरखू की अम्मा शाम को हुक्का पी रही थी - "कश खींचने पर तम्बाकू की टिकिया आतिशी फुलझड़ी की तरह पटपट उठती है।"[4] जिससे सम्पूर्ण टमका-कोइली गाँव ध्वंस हो जाता है।

नागार्जुन के सभी उपन्यासों में किसी न किसी नशे का उल्लेख अवश्य हुआ है। वरुण के बेटे उपन्यास में ताड़ी का महत्व है तो कुंभीपाक उपन्यास में देशी तथा विदेशी शराब का। जमनिया का बाबा उपन्यास तो नशेखोरों का अड्डा है, वहाँ सभी नशाओं का स्वागत है। पान, सुरती, बीड़ी आदि नशाओं का उल्लेख भी रतिनाथ की चाची, दुखमोचन, नई पौध आदि उपन्यासों में हुआ है।

- -

1. नागार्जुन : वरुण के बेटे पृ- 27
2. " " पृ- 44
3. " बाबा बटेसरनाथ पृ- 74
4. " दुखमोचन पृ- 127

3.25 वेश-भूषा

सांस्कृतिक जीवन का एक पहलू वेश-भूषा है, जिसका सम्बन्ध देश की सभ्यता, संस्कृति से होता है । देशगत विभिन्नता के साथ सभ्यता एवं संस्कृति बदलती है, जिसके अनुसार मनुष्य की वेश-भूषा में भी परिवर्तन आता है । उपन्यासों में प्रचलित वेश-भूषा को दो निम्न उपशीर्षकों में विभक्त किया जाता ह है - 1. पुरुषों की वेश-भूषा 2. स्त्रियों की वेश-भूषा ।

3.251 पुरुषों की वेश-भूषा

पुरुषों में प्रचलित वेश-भूषा - धोती[1] है । धोती के लम्बाई सम्बन्धी माप के लिए "गज"[2] का उल्लेख हुआ है । विविध प्रकार के धोतियों के अन्तर्गत - महीन धोती[3] के लिए पतली धोती[4] का प्रयोग किया है, गाढ़ी धोती[5], रेशमी धोती[6] के संदर्भ में पीताम्बरी[7] तथा नागपुरी[8] का उल्लेख भी उपन्यासों में हुआ है । धोती के संदर्भ में लाल[9], गुलाबी[10], मटमैल[11] रंगों का भी उल्लेख उपन्यासकार ने किया है ।

- -

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची - पृ- 9,62, 63,68,80,82,83, 84, 85,87,90,95, 96,98,101,104,111,112,120, 121, 122,127,138, 139,140,145, 148,154,166,169, 171, 172,174,176
   बलचनमा - पृ- 79, नई पौध 34,82,83,105, 137
   बाबा बटेसरनाथ पृ- 8,24,25, 46,115
   दुखमोचन पृ-19,79,141, 142 उग्रतारा पृ- 27,28,45
   हीरक जयन्ती पृ- 112,117,129,172,174, 176
2. नागार्जुन : दुखमोचन पृ- 172, 3. रतिनाथ की चाची पृ- 90
4. दुख-मोचन पृ-95, 5. बाबा बटेसरनाथ पृ-37,
6.7.8. बाबा बटेसरनाथ पृ- 25
9. रतिनाथ की चाची पृ- 139,140, दुखमोचन : पृ- 146
10. " पृ-139,140 11. बाबा बटेसरनाथ पृ-97

पुरुषों की वेश-भूषा

[illegible] कुर्ता[1], कमीज[2] के प्रकार :- हाफ कमीज,[3] हाफ अंगा,[4] पैजामा[5], चूड़ीदार[6] शेरवानी[7], बनियाइन[8], लुंगी[9] अंडी[10], के प्रकार असमिया[11] तथा भागलपुरी[12] का उल्लेख हुआ है तथा कोट[13], हाफ पैण्ट,[14] नेकर[15] का उल्लेख भी उपन्यासों में प्राप्त है ।

- -

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 41, 42 63, 111, 122, 131, 180
   रतिनाथ की चाची पृ- 57, 131, 127
   नई पौध पृ- 121
   दुखमोचन पृ- 17, 3033, 34, 61, 78, 95, 103, 125, 146
   हीरक जयन्ती पृ- 112, 129
   उग्रतारा - पृ-91
2. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 112 बलचनमा पृ- 49, 89, 102
   122, 166, 171, 176, 184, 185
   हीरक जयन्ती पृ- 185
   दुखमोचन पृ- 24 उग्रतारा पृ- 10
3. " बलचनमा पृ- 107, 175, नई पौध पृ- 131
4. " बाबा बटेसरनाथ पृ- 54
5. " दुखमोचन पृ- 63, 64
6. " हीरक जयन्ती पृ- 174 बाबा बटेसरनाथ
7. " हीरक जयन्ती पृ- 63, 124, बाबा बटेसरनाथ पृ- 37
8. " बलचनमा पृ- 86, 89, 96, 104, 122, 142, 171
   दुखमोचन पृ- 33, 61, 67, 69, 78, 103
   बाबा बटेसरनाथ पृ- 97, 102, 110
   रतिनाथ की चाची पृ- 112, 138
9. " बलचनमा पृ- 144 हीरक जयन्ती पृ- 103 उग्रतारा -45
10. " बलचनमा पृ- 122
11. " हीरक जयन्ती पृ- 124
12. " दुखमोचन पृ- 90, [13.] हीरक जयन्ती पृ- 63, 96
14. " बाबा बटेसरनाथ पृ-102, [15] बलचनमा पृ-107
   उग्रतारा पृ- 20.49

सिर के वस्त्रों के अन्तर्गत पगड़ी[1] टोपी[2] टोपी के प्रकार :- जरी गोटे-टोपी[3], सफेद टोपी[4] का उल्लेख है ।

धोती तथा कुर्ता उच्च-मध्य तथा निम्न वर्ग के पुरुषों की सर्वसामान्य वेशभूषा है । राजा- रेवती रंजन सिंह - "धोती, कुर्ता, तह की हुई चादर"[5] वेश-भूषा में रखते हैं । मध्यवर्ग के मास्टर टेकनाथ की भी इनसे मिलती जुलती वेश-भूषा है - "धुली कुर्ते पर खद्दर की चादर ओढ़ रखी है ।"[6]

अ. मध्यवर्ग

मध्यवर्ग में प्रचलित वेश-भूषा - बनियाइन, कमीज, अण्डी, धोती तथा कोट । चित्रण क्रिया नई पौध, दुखमोचन, हीरक जयन्ती, कुंभीपाक, जमनिया का बाबा उपन्यासों में हुआ है ।

बनियाइन का प्रयोग शिक्षित परिवारों में है । माहे - "अध बढ़िया बनियाइन"[7] पहने रहता है । मध्य वर्गीय समाज अपने कपड़ों का विशेष ध्यान रखता है, बाहर निकलते समय वेश-भूषा ठीक होनी चाहिए, इस पर वह हमेशा सतर्क रहता है । दुखमोचन उपन्यास में कपिल

- -

1. नागार्जुन : नई पौध पृ- 5, 14
   बाबा बटेसरनाथ पृ- 37
   उग्रतारा पृ- [illegible] 24
   बलचनमा पृ- 92
2. हीरक जयन्ती पृ- 116, 126
   बाबा बटेसरनाथ पृ- 36
3. बलचनमा पृ- 111
4. बलचनमा पृ- 107
5. हीरक जयन्ती पृ- 129
6. दुखमोचन पृ- 95
7. नई पौध पृ- 89

शिक्षित मध्यवर्गीय समाज का प्रतिनिधित्व करता है, जिसके लिए बाहर निकलते समय कोट पहनना प्रतिष्ठा का अनिवार्य अंग है। कपिल-- "खद्दर की कमीज़ पर भागलपुरी अण्डी डालकर घर से निकला था। कोट लेने की सुध ही नहीं रही।"[1] हीरक जयन्ती उपन्यास के बाबू राम प्यारे प्रसाद सिंह, विदेशी पहनावे का ठीक उपयोग करना जानते हैं। उनकी दृष्टि में "हवाई-अड्डे" पर बन्द गले का कोट और पैंट अच्छे जँचेंगे। वहाँ सेक्रेटेरियट के बड़े सहायों की भीड़ में चुस्त पायजामा विश्वमानव की गरिमा में दरार डाल सकता है।"[2]--- इस बात से वे सतर्क है।

कुंभीपाक उपन्यास का "कम्पाउंडर" मध्यवर्गीय पात्र है, जो घर आकर कपड़े बदलते है - "कमीज़ बंडी निकाल कर खूंटियों पर लटका देते थे और दो रूपये दो आने वाली मद्रासी लुंगी माथा झुकाकर माला की तरह गले में डाल लेते थे।"[3] लुंगी का पहनावा मध्यवर्ग में प्रचलित है, लेकिन कुछ लोग इस पहनावे से नफरत भी करते हैं। जमनिया का बाबा उपन्यास में महाराज को "लुंगी से सख्त नफरत है। वह लुंगी को कभी पसंद नहीं कर सका। ---महाराज उससे बिछावन की चादर का काम लेता है।"[4]

इस तरह लुंगी का प्रयोग मध्यवर्गीय परिवारों में पहनावे के रूप में होता है, तो कहीं बिछावन के चादर के रूप में।

---

1. नागार्जुन : दुख-मोचन पृ- 90
2. " हीरक जयंती पृ- 63
3. " कुंभीपाक पृ- 9
4. " जमनिया का बाबा पृ- 107

निम्न वर्ग में प्रचलित पहनावे का चित्रण बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे उपन्यासों में हुआ है । यह वर्ग साधारणतया - "मटमैली धोती[1]", को धारण करता है । उनके नेता की वेशभूषा "सात्विक बाना" अर्थात् -- "कोकटी रंग की साफ कमीज, घुटनों तक की धोती, कंधे से लटकता थैला ।"[2]

३४. तांत्रिकों की वेशभूषा

तांत्रिकों की विशेष वेशभूषा का चित्रण रतिनाथ की चाची उपन्यास में हुआ है -- "उनकी धोती लाल-सुर्ख रहती थी । गले में हाथीदांत के खरादे हुए दानों की माला थी । दाईं बांह पर दो बड़े बड़े रुद्राक्ष और एक बड़ा-सा मूंगा पहनते थे । दाढ़ी-मूंछ बाल और नाखून कभी काटते नहीं थे"।[3]

यह वेशभूषा वज्रायन सम्प्रदाय की उन तांत्रिकों की है, जो आजीवन रक्ताम्बरी रहते हैं ।

५. शाही फकीर

मलमल का पहनावा समाज में स्थित "परजीवी" लोगों का है, जिन्हें महन्त, महात्मा, साधु, संत कहलाते है । उपन्यासकार की दृष्टि में "दूध जैसी धुली हुई मलमल से समूचे देह को ढके हुए बैरागी महाराज - शाही फकीर होते हैं ।"[4] गांधी जी द्वारा संचालित आश्रम के महन्तों को यह पहनाव प्रिय था । कांग्रेसी राधाबाबू इसी पहनाव के कारण "शाही फकीर"[5] के श्रेणी में है ।

- -

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 54
2. " वरुण के बेटे पृ- 88 [3] नागार्जुन - रतिनाथ की चाची-68
4. 5 नागार्जुन : बलचनमा पृ- 144

3.252 स्त्रियों की वेशभूषा

स्त्रियों की प्रचलित वेशभूषा साड़ी[1] है । साड़ी के लिए धोती[2] शब्द का भी प्रयोग उपन्यासकार ने किया है । लम्बाई सम्बन्धी माप में "हाथ"[3], "पढ़िया"[4] का उल्लेख हुआ है । विविध प्रकार के साड़ियों के अन्तर्गत कमउआ साड़ी[5], चौड़े पाट की साड़ी, [6]शांतीपुरी धोती[7] मार्कीन की पतली धोती[8] रेशमी साड़ी[9] का उल्लेख भी प्राप्त होता है ।

- -

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 84
   बलचनमा पृ-9,136,137, नई पौध - पृ-5,25,26,140,141
   हीरक जयन्ती पृ- 8,58,110
   दुखमोचन पृ- 69, 73, 141
   उग्रतारा पृ- 13, 15,42,36,37,39
   58, 59,67,78,89,95

2." रतिनाथ की चाची पृ- 18,133

3." "दश हाथ साड़ी" : रतिनाथ की चाची पृ- 76
   "बिस हत्थी साड़ी" : रतिनाथ की चाची पृ- 76

4." "तिन पढ़िया साड़ी" : रतिनाथ की चाची पृ- 155

5." बलचनमा पृ- 136

6." रतिनाथ की चाची पृ- 18,,84

7." रतिनाथ की चाची पृ-3, 59

8." रतिनाथ की चाची पृ- 133

9." नई पौध पृ- 142

अतिरिक्त इसके चोली,[1] ब्लाउज,[2] ब्रेसरी[3] तथा पेटीकोट[4] का उल्लेख भी उपन्यासों में हुआ है ।

3.253 बच्चों की वेशभूषा

बच्चों की वेशभूषा के अन्तर्गत सलवार,[1क] कुरता,[2क] ओढ़नी[3क] का उल्लेख मिलता है ।

3.254 वस्त्रों का अन्य उपयोग

वस्त्रों के अन्य उपयोग के अन्तर्गत गमछा, अँगोछा, तौलिया, रुमाल, बिछौने ओढ़ने के वस्त्रों का उल्लेख हुआ है ।

- -

1. नागार्जुन : उग्रतारा पृ- 77, 78
2. " उग्रतारा पृ- 5, 6,59
   हीरक जयन्ती पृ- 110
3. " " " पृ- 64
4. " " " पृ- 64

1क. " दुखमोचन पृ- 68, 78
2क. " उग्रतारा पृ- 28, 75
3क. " दुखमोचन पृ- 69, 72
   नई पौध पृ -5

1) गमछा

हाथ-मुँह, नाक, आँख पोंछने के दो हाथ "गमछा"[1] का उल्लेख नागार्जुन ने रतिनाथ की चाची - बलचनमा, दुखमोचन उपन्यासों में किया है। गमछा के लिए अँगोछा[2] शब्द का प्रयोग भी उपन्यासकार ने किया है। अँगोछा के "लाल"[3] रंग का भी उल्लेख बलचनमा तथा दुखमोचन उपन्यास में हुआ है।

2) तौलिया

शरीर पोंछने के विशेष प्रकार के अंगोछे का उल्लेख रतिनाथ की चाची[4] तथा उग्रतारा[5] उपन्यास में हुआ है।

3) रूमाल

रूमाल का उल्लेख दुखमोचन तथा हीरक जयन्ती उपन्यासों में हुआ है। अधिकांशतः इसका उपयोग उच्चवर्ग तथा मध्यवर्ग के व्यक्ति हाथ, नाक, आँख पोंछने के लिए करते हैं। एस०डी०ओ० साहब चुटकी-भर नस नाक के पूड़ों से सुड़क ली, "रूमाल से नाक और हाथ पोंछा।"[6] तथा घासीराम जी : "जेब से रूमाल निकाल कर -- आँसू पोंछे।"[7]

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 73, 93 ; बलचनमा पृ- 104, 105
   दुखमोचन पृ- 61
2. " रतिनाथ की चाची पृ- 32, 45, 47, 51, 59, 148
   बलचनमा पृ- 24, 28, 91, 114, 116
   नई पौध पृ- 41
   दुखमोचन पृ- 24, 25, 26, 28, 30, 31, 32, 162
3. दामो ठाकुर ओझा थे, जिनका "लाल अँगोछा" था।
   बलचनमा पृ- 28
   लाल रंग का अँगोछा - दुखमोचन पृ- 26
4. " रतिनाथ की चाची पृ- 112
5. " उग्रतारा पृ- 27, 57 - नागार्जुन 6 दुखमोचन पृ-120
7. नागार्जुन हीरक जयन्ती पृ- 127

4) विछौने-ओढ़ने के वस्त्र

विछौने ओढ़ने के वस्त्रों के अन्तर्गत - दरी[1], कम्बल[2], गद्दा[3], तकिया[4], चादर[5], रजाई[6], शाल[7], के विविध प्रकार :- कश्मीरी शाल[8] का उल्लेख हुआ है ।

तांत्रिकों के "विछौने" वस्त्रों के अन्तर्गत मृगछाला[8क], बाघम्बर[9] का उल्लेख है ।

---

1. नागार्जुन : हीरक जयन्ती पृ-124, दुखमोचन - पृ- 163, 71
   रतिनाथ की चाची पृ- 45, 106, 122, 122, 123, 154
   बाबा बटेसरनाथ पृ- 38, 39
   हीरक जयन्ती पृ- 23
2. " रतिनाथ की चाची पृ- 95, 106, 112, 140, 154
   बलचनमा पृ-42
   बाबा बटेसरनाथ पृ- 109, 120
   दुखमोचन - पृ- 144
   उग्रतारा - पृ- 44, 86, 91, 97, 106
3. " दुखमोचन पृ- 20
4. " रतिनाथ की चाची पृ- 64, 112, बलचनमा पृ- 100
   बाबा बटेसरनाथ पृ- 39, दुखमोचन पृ-20, 71, 165, 167
   उग्रतारा पृ- 88, 111, हीरक जयन्ती पृ-90
5. " रतिनाथ की चाची पृ- 63, 64, 67, 93, 112, 125, 131, 154
   बलचनमा पृ- 122, बाबा बटेसरनाथ पृ-25, 37
   दुखमोचन पृ- 20, 95, 103, 144
   उग्रतारा पृ- 58, हीरक जयन्ती पृ- 65, 129
6. " दुखमोचन पृ- 94, उग्रतारा पृ- 70, 101
7. " हीरक जयन्ती पृ- 81, 83, उग्रतारा पृ- 101, 102
8. " दुखमोचन पृ- 94, 96
8क. जमनिया का बाबा पृ-13
9. " पृ-13

3.26 **श्रृंगार प्रसाधन**

अत्यन्त आदिम व्यवस्था से मनुष्य में अपने को सजाकर सुन्दर रखने की प्रवृत्ति पायी जाती है। नागरिक जीवन से दूर रहने पर भी प्राकृतिक वस्तुओं से वह अपने को सजाता रहा है। प्राकृतिक वस्तुओं से श्रृंगार करने के अन्तर्गत "गुदना" भी एक है। जिसका उल्लेख नागार्जुन ने बाबा बटेसरनाथ तथा बलचनमा उपन्यास में किया है। इस प्रसाधन के प्रेमी, अधिकतर निम्नवर्ग की स्त्रियाँ है। जो चेहरा, बाँह, ठोढ़ी, ललार आदि पर इसका श्रृंगार करती है। बलचनमा उपन्यास में दुखिया की -"दोनों बाहों पर बाँसुरी बजाते हुए बाँके बिहारी कृष्ण गोदे हुए थे। ठोढी पर बाईं ओर तिल गोदा हुआ था, ललार पर बिन्दी।"[1] एक अन्य उपन्यास बाबा बटेसरनाथ में जैकिसुन के परदादी का तो -"समूचा बदन गुदनों से भरा था।"[2] सभ्यता के विकास के साथ-साथ उसके श्रृंगार की वस्तुएं भी परिवर्तित होती गयी। इनमें पुरुष की अपेक्षा स्त्री के लिए प्रसाधन की सामग्री अधिक थी। श्रृंगार-प्रसाधनों का सम्बन्ध सौंदर्य वृद्धि तथा आकर्षक व्यक्तित्व से तो रहा ही, किन्तु बाद में शारीरिक विकास एवं स्वास्थ्य की दृष्टि भी सम्मिलित हो गयी।

मनुष्य सभ्यता के विकास के साथ बदलते रहने के कारण श्रृंगार प्रसाधनों की संख्या के सम्बन्ध में एक मत नहीं हो सकते। भिन्न-भिन्न ग्रंथों में श्रृंगार प्रसाधनों की भिन्न-भिन्न सूचियाँ

- -

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 18
2. " बाबा बटेसरनाथ पृ-30

प्राप्त होती है । परम्परा प्रसिद्ध श्रृंगार सोलह है ।[1] आचार्य केशवदास के अनुसार सोलह श्रृंगार[2] निम्न लिखित हैं ।

1. दतौन, उबटन आदि शुचि क्रियाएँ 2. मज्जन [स्नान करना] 3. अमलबास [निर्मल वस्त्र धारण करना] 4. केश-पाश सुधारना [केश-विन्यास] 5. मांग में सिंदूर भरना 6. मस्तक पर खौर [तिलक] देना 7. गालों पर तिल बनाना 8. अंगों पर केशर आदि गंध द्रव्यों का लेपन 9. हाथों में मेंहदी लगाना 10. पैरों में महावर लगाना 11. स्वर्णाभूषण धारण करना 12. फूलमाला धारण करना 13. मुखवास [अथवा पान खाना] 14. मुखराग [मिस्सी लगाना] 15. ओठों को रंगना तथा 16. नेत्रों में अंजन लगाना ।

नागार्जुन के उपन्यासों में वर्णित श्रृंगार प्रसाधन निम्न है ।

1. दतौन, आदि शुचि क्रियाएँ

यह क्रिया स्त्री और पुरुष दोनों से सम्बन्धित है । नई-पौध, बलचनमा, दुखमोचन, कुम्भीपाक उपन्यासों में ग्रामीण पात्र प्रातः कालीन क्रियाओं को निबटने के लिए गाँव के बाहर खुले मैदान में जाते है, समीपस्थ पोखर, नदी के जल से हाथ मुंह धोकर स्नानादी कर घर लौट आते हैं ।

---

1. सकल सिंगारत सुंदरी जदपि सिंगार अपार ।
तदपि बखानत सकल कवि सोरह ई सिंगार ॥ आचार्य केशवदास
कविप्रिया पृ- 5 -16

2. वही 4-16

नई पौध उपन्यास में खिझुरी काका - "दिसा-फराकत हो आया था, हाथ मटिया चुका था, अब सिलवर का बनारसी लोटा मिट्टी से मल रहा था ।"[1] बलचनमा उपन्यास के राधाबाबू -"पक्के घाट पर आकर हाथ मटिआये ।"[2]

दतौन :- विविध प्रकार

आम, जामुन तथा इमली की पतली टहनियों से दातुन करने का उल्लेख भी बलचनमा, रतिनाथ की चाची तथा दुखमोचन उपन्यासों में है । राधाबाबू ने - "आम का टहनी तोड़कर दतवन की, उसे चीरकर जिभिया बनायी और जीभ को साफ किया ।"[3] आम की दतुवन का प्रयोग एक अन्य उपन्यास रतिनाथ की चाची में भी हुआ है । शंकर बाबा प्रातः काल होते ही स्टेशन के बाहर निकलकर पुल के पार एक बाग में वह पहुंचे - "आम के तीन दतुवन तोड़ लाए, नदी के किनारे बैठकर दाँत साफ किया ।"[4] दुखमोचन - "दिशा फरागत से निबटकर नदी के पानी में हाथ-मुंह धोए, जामुन की टहनी से दातुन किया"।[5] तथा सुखदेव "कुंए के नजदीक सीमेण्ट के चटरे पर बैठकर - इमली की टहनी की दातुन से दाँतों को घिस रहे थे ।"[6]

नई पौध, बलचनमा, रतिनाथ की चाची, दुखमोचन, उपन्यासों में नागार्जुन ने विविध प्रकार के दातौन का उल्लेख किया है । दतौन शुचि क्रिया का एक रूप है । श्रृंगार की इस क्रिया को लेकर कोई स्त्री संबंधी उल्लेख नहीं हुआ है ।

---

1. नागार्जुन : नई पौध पृ- 10 5
2. " बलचनमा पृ- 104
3. " " पृ-104
4. " रतिनाथ की चाची पृ- 63
5. " दुखमोचन पृ- 33
6. नागार्जुन : दुखमोचन पृ-32

2. मज्जन [स्नान करना]

शुचि क्रियाओं के पश्चात् स्नान किया जाता है। यह स्त्री और पुरुष दोनों से सम्बन्धित है। नागार्जुन ने नई पौध तथा कुंभीपाक उपन्यास में इसका उल्लेख किया है। नई पौध उपन्यास के नौगछिया गाँव में पुरुषों के लिए-"गाँव का "पोखर" है।"[1] तो स्त्रियों के लिए "जनाना घाट" और नदी है। नहाने केलिए अधिकांश स्त्रियाँ इस घाट पर आती, घाट में "दाउर की जगह मोटे काठ की एक गाँठ पड़ी थी, घुटने भर पानी में ताँत के दो छोटे खूंटों के सहारे बैठकर अचल-अडिग कर दी गई थी। भीगे कपड़ों की चोट खा-खाकर उसका सीना सपाट और चिकना हो गया था।"[2] केवल स्नान ही नहीं औरतों के लिए सुख-दुख बतियाने का अनूठा मंच भी था यह। नदी में स्नान करने का उल्लेख एक अन्य उपन्यास कुंभीपाक में भी मिलता है। कम्पाउण्डर की बीबी तथा भुवन - "गंगा नदी" में स्नान कर आती है।"[2क] स्नानागृह में स्नान करने का उल्लेख भी उपन्यास, कुंभीपाक में मिलता है - शहरों के अति-सीमित स्नानगृह का उल्लेख करते हुए उपन्यासकार कहते है "नहाने का घर क्या था माचिस की डिबिया थी।"[3]

3. केश विन्यास

यह क्रिया स्त्री और पुरुष दोनों से सम्बन्धित है। पुरुषों की अपेक्षा स्त्री के लिए केश विन्यास का अधिक महत्व होता है।

- -

1. नागार्जुन - नई पौध पृ- 105
2. " नई पौध पृ- 137
2क. " कुंभीपाक पृ- 16
3. " " पृ- 48

नागार्जुन, बाबा बटेसरनाथ तथा हीरक जयन्ती उपन्यासों में विविध प्रकार के केश-विन्यास का चित्रण किया है । बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में चरवाहिनों की वेश-भूषा के सम्बन्ध में "बाबा" लिखते हैं- "सिर पर बालों के रूखे गुच्छे घोंसलों - जैसे लगते ।"[1] एक अन्य उपन्यास हीरक जयन्ती में मुँहमुखी अपने बालों का विन्यास "जूड़े"[2] के रूप में करती है । जिससे वह प्रौढ़ा होते हुए भी युवती दिखाई देती है ।

4. मांग भरना

केश संवार करके वेणी में मांग निकाली जाती है । सिंदूर से मांग भरना प्राचीन काल से प्रचलित भारतीय परम्परा है । यह क्रिया स्त्रियों से सम्बन्धित है । विवाह के समय या विवाहोपरान्त स्त्रियाँ "सेंदूर"[3] से मांग भरती हैं, जिसका उल्लेख रतिनाथ की चाची, बलचनमा, उग्रतारा, दुखमोचन उपन्यासों में किया है ।

5. तिलक लगाना

स्नान के पश्चात पुरुष और स्त्री दोनों ही तिलक लगाते हैं । रतिनाथ की चाची उपन्यास में सुनिरा प्रतिदिन - "कपार पर गंगौटी (गंगा की मिट्टी) का ठोप लगाती है"।[4]

6. मेंहदी

हाथों को मेंहदी से श्रृंगारित करने की प्राचीन प्रथा है । इसे अधिकतर त्यौहार, उत्सव, ब्याह तथा गौने के समय लगाया जाता है । नागार्जुन के बलचनमा उपन्यास में मेंहदी का उल्लेख मिलता है । गौने के समय रेवनी के हथेलियों में -"मेंहदी के निशान दिखाई पड़ रहे थे ।"[5]

---

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ-30 2. नागार्जुन: हीरक जयन्ती पृ-110
3. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ-111, बलचनमा पृ-142, उग्रतारा पृ-28
दुखमोचन पृ- 151, 172
4. " रतिनाथ की चाची पृ- 133 , 5. नागार्जुन : बलचनमा पृ. 145

7. महावर

प्राचीन काल में पैरों के प्रसाधन के रूप में "महावर अथवा यावक का उपयोग किया जाता है।"[1] विवाह आदि के अवसर पर स्त्रियाँ तो इसका प्रयोग करती ही थीं। गौने के समय रेवती के "तलवों में महावर के नाम पर आलरंग अपनी गहरी लाली खिला रहा है था।"[2]

8. गहने

श्रृंगार प्रसाधन में गहनों का महत्वपूर्ण स्थान है। गला, नाक, कान, बाहु, कलाई, उँगली, कमर तथा पैर में पहने जाने वाले, विविध प्रकार के गहनों का उल्लेख उपन्यासकार ने किया है। गहनो-सम्बन्धी उल्लेख का विवेचन "पुरुषों के गहने" और "स्त्रियों के गहने" शीर्षकों के अन्तर्गत किया जाता है।

अ. पुरुषों के गहने

पुरुषों में प्रचलित गहने - चाँदी का कंठा[1क], स्फटिक की माला[2क], अँगूठी[3], चाँदी की पवित्री[4] तथा मूँगे का दाना[5] है। हे-दुआ के गले में - "काले धागों में गुँथा हुआ चाँदी का कंठा गले में और दाहिनी भुजा पर मूँगे का एक बड़ा सा दाना-छेद के सहारे पीले धागों की तीन बारीक डोरियों से बँधा था।"[6] ऊपर पाठक के गले में -" स्फटिक की माला थी।-------- तथा दाहिने हाथ की अनामिका में चाँदी की पवित्री।"[7]

---

1. प्राचीन भारत के प्रसाधन : श्री अत्रिदेव विद्यालंकार पृ-20
2. नागार्जुन - बलचनमा पृ- 145 1क. नागार्जुन नई पौध पृ- 34
2क. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 148 3. नागार्जुन - हीरक जयन्ती पृ- 107, पृ- 118, 4. नागार्जुन - रतिनाथ की चाची पृ- 148
5. नागार्जुन नई पौध पृ- 34 6. नागार्जुन : नई पौध पृ- 34
7. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 148

तथा नरपत बाबू की दृष्टि - "दाहिने हाथ की अनामिका उँगली पर जगमगाते नग से उलझ गई ।"[1क]

इन उद्धरणों से ज्ञात होता है की कंठा, माला, अँगूठी पहनने का रिवाज पुरुष वर्ग में प्रचलित है ।

तांत्रिकों में प्रचलित श्रृंगार का वर्णन बलचनमा उपन्यास में हुआ है । तांत्रिक दामो ठाकुर - "गले में हाथी के दाँतों को तरास कर बनाये गये दानों की माला---- लाल रेशम में गुँथी हुई । -- उसमें --दाना दो मुँहे बाघ की तरह था । दाई बाँह पर काले धागे में गुँथा हुआ बड़ा सा मूँगा बंधा था । कान के छेद में रूद्राक्ष लटक रहे थे ।"[2 क]

श्रृंगार की यह प्रवृत्ति स्त्री से लेकर पुरुष तक, गृहस्थ से लेकर तांत्रिकों तक व्याप्त थी ।

आ. स्त्रीके गहने

स्त्रियों में प्रचलित गहनों को अध्ययन की सुविधा के लिए निम्नवर्गों में विभक्त किया है । 1.नाक 2. गले 3.कान 4.बाह 5.कलाई 6. उँगली तथा 7.पैर के गहने ।

1. गले के गहने

गले के गहनों के अन्तर्गत 1. हँसली मोहनमाला[2], चन्द्रहार[3], सिकड़ियाँ[4], चकतियाँ[5], चेन[6] का उल्लेख है ।

- -

1 क.नागार्जुन : हीरक जयन्ती पृ-118 2क.नागार्जुन : बलचनमा पृ- 28

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 18, 98, नई पौध पृ- 36,बाबा बटेसरनाथ - पृ- 57, उग्रतारा पृ- 53, हीरक जयन्ती पृ- 87

2. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 183

3. " नई पौध पृ- 36, [4] नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ-84 (नई पौध)

5. नागार्जुन : नई पौध पृ- 36 6.नागार्जुन - पृ- 16

2. नाक का गहन

नाक के गहनों के अन्तर्गत लौंग[1], नथ[2], छक[3] का उल्लेख है। कान के गहनों के अन्तर्गत झुमके[4] तथा बाहों का गहना बाजूबंद[5] का भी उल्लेख है। कलाई के गहनों के अन्तर्गत "चूड़ी" का उल्लेख है। चूड़ियों के विविध प्रकार - कांच[6], लाह[7], सोना, चांदी की चुड़ियों के लिए "लहठी"[8] शब्द का प्रयोग हुआ है।

सोने तथा चांदी के बने चूड़ियों के लिए कंगन[9], चांदी के चंद[10], का प्रयोग उपन्यासकार ने किया है। कंगन के विविध प्रकार के अन्तर्गत मरोड़दार कंगन[11] का उल्लेख प्राप्त है। चूड़ियों के विविध रंगों का वर्णन भी उपन्यासकार ने किया है। बागों के हाथों में - "वार-वार हरे रंग की चूड़ियां है।"[12] तथा उग्रतारा उपन्यास में उगनी का प्रेमी कामेश्वर को "गुलाबी रंग की चूड़ियां बहुत पसंद हैं।"[13]

- -

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 145
2. " बलचनमा पृ- 34 नई पौध पृ- 136
3. " बलचनमा पृ- 18
4. " नई पौध पृ- 36
5. " बलचनमा पृ- 18, 146
6. " रतिनाथ की चाची पृ- 73, 82, 86 उग्रतारा : 9, 13, 31, 39, 52, 53
7. " रतिनाथ की चाची पृ- 113, 156
बलचनमा पृ- 18, 146, नई पौध पृ- 125
8. " बलचनमा पृ- 18
9. " रतिनाथ की चाची पृ- 156 नई पौध पृ- 36
10. " उग्रतारा पृ- 38
11. " नई पौध पृ- 125 ; वरुण के बेटे पृ- 79
12. " नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 73
13. " उग्रतारा पृ- 13

3. अँगूठी

सोने चाँदी तथा पीतल के धातु से बनाये गये इस अलंकार के लिए उपन्यासों में अँगूठी[1], छल्ला[2] तथा पवित्री[3] शब्दों का प्रयोग किया है। उपन्यासों में सभी वर्ग के स्त्री और पुरुष इसे धारण करते हैं।

4. करधनी

कमर का गहना करधनी[4] का भी उल्लेख उपन्यासकार ने किया है। पैरों के गहनों के अन्तर्गत - पायल[1क], पैंजनी[2क], कड़े[3क] तथा साटन[4क] शब्दों का प्रयोग हुआ है।

निम्न वर्ग की स्त्रियाँ - सोना, चाँदी, रांगे तथा पीतल के बने गहनों से श्रृंगार करती है। हँसुली इनका प्रिय गहना है। रेबनी के गले में -"चाँदी की मोटी हँसुली थी। बाहों में बाजूबंद थे। नाक के छेद में सोने के छक (कील) थी। कलाइयों में रांगे की मोटी-मोटी चार लहठियाँ बड़ी भली लगती थी।"[5] तथा पैरों में गिलट के कड़े। "दाहिने हाथ की दो अँगुलियों में पीतल की अँगूठियाँ ---- ।"[6] मधुरी के गले में "हसली, बाहों में बाजूबंद, कलाइयों में मरोड़दार कंगन----पैरो में साटन।[7] ये गहने हमेशा पहने रहती।

- -

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 112
   " : बलचनमा पृ- 146, नई पौध पृ- 143, 142
   उग्रतारा पृ- 80 हीरक जयन्ती पृ- 107, 118
2. " उग्रतारा पृ-5, 15, 38
3. " रतिनाथ की चाची पृ- 148
4. " नई पौध पृ- 36
1क. " नई पौध पृ- 141 दुखमोचन पृ- 16, 125
2क. " रतिनाथ की चाची पृ- 162
3क. " बलचनमा पृ- 146
4क. " वरुण के बेटे पृ- 79
5. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 18
6. " बलचनमा पृ- 146
7. वरुण के बेटे पृ- 79

9. फूलमाला

फूलमाला धारण करना स्त्री और पुरुष, दोनों में प्रचलित श्रृंगार का साधन है। विवाह के अवसर पर फूलों से दूल्हे को सजाने का वर्णन बलचनमा उपन्यास में मिलता है। गौने के समय बलचनामा को --"कनेर के फूल से घोड़ा बहुत सजाकर"[1] पालकी में बैठने का वर्णन है।

10. मुखवास अथवा पान

ताम्बूल अथवा पान खाना भारत का बहुत उत्तम प्रसाधन था। वह पूजा और श्रृंगार, दोनों कर्मों में समान रूप से व्यवहृत होता था।"[2] अभिजात वर्गीय परिवारों में पान-खाना श्रृंगार प्रसाधन का साधन है। बलचनमा उपन्यास में राधा बाबू की पत्नी दो बीड़े[3] पान अवश्य खाती थी

11. मुखराग [मिस्सी लगाना] ओठों को रंगना तथा नेत्रों में अंजन लगाना

मिस्सी लगाना, ओठों को रंगना इसका उल्लेख उपन्यासों में नहीं हुआ है। नेत्र सौंदर्य के लिए अंजन का प्रयोग वरुण के बेटे उपन्यास में मिलता है। उगनी "आँखों में काजल, रंगे हुए तलवे, नीली धारियों वाली धैमई साड़ी, लाल छीटों की पीली चुनरी, में खूब खिलती।"[4]

12. श्रृंगार में सहायक दर्पण

दर्पण श्रृंगार का प्रमुख सहायक अंग था। जिसका उल्लेख हीरक जयन्ती उपन्यास में हुआ है।

---

1. बलचनाम : पृ- 111 2. डा०हजारी प्रसाद द्विवेदी, प्राचीन भारत में कलात्मक विनोद पृ- 23 3. बलचनमा पृ- 131
4. नागार्जुन : वरुण के बेटे - पृ- 43

सौंदर्य प्रसाधन के साधनों में निम्न वस्तुओं का उल्लेख उपन्यासकार ने किया है --

साबुन[1], पाउडर[2], अत्तार[3], कंघी[4], तथा हल्दी[5]

3.27 व्यावहारिक सामान्य वस्तुएं

उपन्यासों में उल्लेखित व्यवहार की सामान्य वस्तुओं को अध्ययन की सुविधा के लिए निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत विभाजित किया जाता है ।

1. दैनिक प्रयोग की वस्तुएं (2) पात्र

3. खाने सोने तथा अन्य व्यवहार के उपकरण

3.271 दैनिक प्रयोग की वस्तुएं

दैनिक प्रयोग की वस्तुओं के अन्तर्गत (1) व्यवसायिक वस्तुओं तथा (2) गृहस्थी के उपयोगी वस्तुओं का उल्लेख उपन्यासकार ने किया है ।

1. व्यवसायिक वस्तुएं

व्यवसायिक वस्तुओं के अन्तर्गत गांवों में प्रचलित विभिन्न व्यवसायों के लिए आवश्यक औजारों का उल्लेख उपन्यासों में प्राप्त है ।

---

1. नागार्जुन : जमनिया का बाबा पृ- 32,40
   बलचनमा पृ- 122
2. " दुखमोचन पृ- 27
3. " जमनियां का बाबा पृ- 40
4. " उग्रतारा पृ- 39
5. " बलचनमा पृ- 145

अ. खेती के अवजार

खेती के औजार के अन्तर्गत खुर्पी[1] गंडासा[2], हँसिया[3], कुल्हाड़ी[4], हल[5] तथा फार[6] है ।

आ. मछली पकड़ने के औजार

मछली पकड़ने के औजार के अन्तर्गत टापी[1क] तथा गाँजा[2क] का उल्लेख है ।

---

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 8
   बाबा बटेसरनाथ पृ- 30,47, 63, 92
   नई पौध : पृ- 84
   दुखमोचन : 16, 129

2. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 183, 203, 202
   बाबा बटेसरनाथ पृ- 59, 106
   दुखमोचन पृ- 60
   उग्रतारा पृ- 22

3. " बलचनमा पृ- 76, 77, 116,139, 140 146,165, 177
   नई पौध पृ- 21,22

4. " रतिनाथ की चाची पृ- 75,79,98
   बाबा बटेसरनाथ पृ- 92, 93,98, 99
   दुखमोचन पृ- 17

5. " नई पौध पृ- 62, 89, 118

6. " दुखमोचन पृ- 77
   बाबा बटेसरनाथ पृ- 117

1क. नागार्जुन बलचनमा पृ- 159

2क. " बलचनमा पृ-159

इ. कपड़ा बुनने का औजार

कपड़ा बुनने के औजार के अन्तर्गत चरखा[1], करघा[2] तथा ~~लल्की~~ तकली[3] का उल्लेख प्राप्त होता है। चरखे के विभिन्न प्रकार के अन्तर्गत अम्बर चरखा[4], पुटकेशी चरखा[5] का उल्लेख भी उपन्यासकार ने किया है।

ई. घर बनाने के औजार

घर बनाने के औजार के अन्तर्गत कमान[6], पचूला[7], आरी[8], टाँगी[9], कन्ना[10], कोडो[11], पाती[12], रांफा[13], छड़[14], भोथी[15], बेंट[16], बसूला[17], खूँटा[18], डोरी[19], कुदाल[20], हथौड़ा[21] का उल्लेख है।

- -

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 97, 98, 99, 131, 135, 157, 164
बलचनमा पृ- 88, 99, 119, 120, 121, 131, 134
बाबा बटेसरनाथ पृ- 86, हीरक जयन्ती पृ- 66
2. " बलचनमा पृ-144 हीरक जयन्ती पृ-66
3. " रतिनाथ की चाची पृ-64, नई पौध पृ-33
बाबा बटेसरनाथ पृ- 76 दुखमोचन पृ-79, 81
4. " हीरक जयन्ती पृ-66
5. " ~~बलचनाम~~ बलचनमा पृ-120
6. " दुखमोचन पृ-142, बाबा बटेसरनाथ पृ-92
7. " दुखमोचन पृ-142
8. " दुखमोचन पृ-141, 158, बाबा बटेसरनाथ पृ-66 उग्रतारा 26
9. से 13, 14" दुखमोचन पृ- 142
15, 16 " बलचनमा पृ- 8
17 " बाबा बटेसरनाथ पृ-92
18, 19 " दुखमोचन पृ- 142
20 बाबा बटेसरनाथ पृ-92, दुखमोचन पृ-125, 175
हीरक जयन्ती पृ-117
21. " बलचनमा पृ- 175, बाबा बटेसरनाथ पृ- 64

3.272 <u>पात्र</u>

रसोई में काम आने वाले पात्रों के अन्तर्गत कप[1], चम्मच[2], चायदानी[3], परात[4], थाली[5] के लिए थार[6] शब्द का प्रयोग किया है। तश्तरी[7], गिलास के लिए प्याला[8] शब्द का भी प्रयोग हुआ है। लोटा[10], घड़ा[11], हँडी[12], कड़ाही[13], तथा उखल-टेकी[14] लोढ़ा-सिल[15], चक्की[16], बाल्टी[17], बम्बा[18] का भी उल्लेख है।

- -

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 133
2. " : " पृ- 133
3. " : " पृ- 10
4. " : " पृ- 130
5. " : " पृ- 129, 130, 133 जमनिया का बाबा पृ-44, 70
6. " : हीरक जयन्ती पृ- 12
7. " : " पृ- 107
8. " : जमनिया का बाबा पृ- 44, 70
9. " : हीरक जयन्ती पृ- 8, 10, 107, 143
10. " : बलचनमा पृ- 130 बाबा बटेसरनाथ पृ-115 जमनिया का बाबा 44, 70
11. : नई पौध पृ- 40
12. : " पृ- 106
13. " हीरक जयन्ती पृ- 69
14. : ~~बलचनमा~~ उग्रतारा पृ- 118

15 व 16 : नई पौध पृ- 47

17. : जमनिया का बाबा पृ- 43, 74
18. : हीरक जयन्ती पृ- 146

3.273 बैठने, सोने तथा अन्य व्यवहार के उपकरण :-

अ. बैठने के उपकरण

बैठने के उपकरण के अन्तर्गत चौकी[1], मेज[2], कुर्सी[3] का उल्लेख उपन्यासों में किया है । अतिरिक्त इसके कुर्सियों के विविध प्रकार का— आराम कुर्सी[4], घुमौआ कुर्सी[5], ईजी चेयर[6] का भी उल्लेख प्राप्त होता है ।

आ. सोने के उपकरण

सोने के उपकरण के अन्तर्गत पलंग[1क] का उल्लेख है ।

- -

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 134
नई-पौध पृ- 40
2. " : हीरक जयन्ती पृ- 12, 107, 141, 145
3. " : जमनिया का बाबा पृ- 39
हीरक जयन्ती पृ- 12, 85, 87, 88, 107, 141
4. " : बलचनमा पृ- 125, 126,
जमनिया का बाबा पृ- 33
हीरक जयन्ती पृ- 100
5. " : हीरक जयन्ती पृ- 141
6. " : " पृ- 100
1क. : जमनिया का बाबा पृ- 36
हीरक जयन्ती पृ- 85, 93, 97

इ. अन्य उपकरण :-

बैठने-सोने के अतिरिक्त - गोलमेज[1], अलमारी[2] के विविध प्रकार "स्टील आलमारी"[3] का उल्लेख भी उपन्यासकार ने किया है। तथा घड़ियाल[4], पंखा[5], बक्सा[6], अटैची[7], का भी उल्लेख उपन्यासों में हुआ है। गृहस्थों के अतिरिक्त सैन्यासियों का पात्र - कमण्डल[8] का भी उल्लेख उपन्यासकार ने किया है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जाता है, कि व्यवहार की सामान्य वस्तुओं की सूची बलचनमा, बाबा बटेसरनाथ, नई पौध, दुखमोचन, उग्रतारा, रतिनाथ की चाची, हीरक जयन्ती, तथा जमनिया का बाबा उपन्यासों में मिलती है। जितनी वस्तुओं का उल्लेख हुआ है, उनसे यह अवश्य प्रतीत होता है, कि जीवन में सुख के साधनों को एकत्र करने में पर्याप्त महत्व दिया जाता है। दैनिक जीवन में प्रयोग की वस्तुओं, पात्रों, बैठने और सोने के उपकरणों आदि से ज्ञात होता है, की ग्रामीण जनता का जीवन सर्वसामान्य है।

---

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 126
2. " : दुखमोचन पृ- 129
   जमनिया का बाबा पृ- 94
   हीरक जयन्ती पृ- 141
4. " " हीरक जयन्ती पृ- 14
5. " : हीरक जयन्ती पृ- 83, 107
6. " : हीरक जयन्ती पृ- 146
7. " : हीरक जयन्ती पृ- 103
8. " : जमनिया का बाबा पृ- 7, 13, 146

3.28 यातायात के साधन

स्थल, जल तथा वायु मार्गों पर यातायात के साधनों का उल्लेख उपन्यासकार ने रतिनाथ की चाची, बलचनमा, बाबा बटेसरनाथ, नई पौध, दुखमोचन, हीरक जयन्ती, उग्रतारा, कुंभीपाक उपन्यासों में किया है। नीचे इन्हीं शीर्षकों के अन्तर्गत चर्चा की जाती है।

3.281 स्थल मार्ग

ग्रामों में यात्रा के साधनों का विकास इतना अधिक नहीं हो पाया है, कि सभी उनका आवश्यकतानुसार उपयोग कर सकें। छोटी यात्राओं के लिए बैलगाड़ी, इक्का का उपयोग किया जाता है और लम्बी-लम्बी यात्राएँ रेल-, स्टीमर तथा वायुयानों से होती है। दूरी सम्बन्ध मापो में कोस[1], बीघा[2], कट्ठा,[3] जरीब,[4] मील,[5] हाथ,[6] धूर[7] का उल्लेख है।

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 40, 136, नई पौध पृ- 109
   बाबा बटेसरनाथ पृ- 15, 17 बलचनमा पृ- 72, 125, 143, 144
   बलचनमा 144, 147, 148, 162, 202
   उग्रतारा पृ- 92, दुखमोचन पृ- 129
2. रतिनाथ की चाची पृ- 40, 47, बलचनमा पृ- 62, 101, 172, 177, 132, 196, 200, हीरक जयन्ती पृ- 16, 19, 58 नई पौध -46, 80, 114
3. रतिनाथ की चाची पृ- 31, बलचनमा पृ- 140, 170, 171, 177, 187, 191, 197, 198, 199
   नई पौध पृ- 89, 128
   उग्रतारा पृ- 81
4. दुखमोचन पृ- 122, 155
5. उग्रतारा पृ- 102, दुखमोचन पृ- 120, नई-पौध पृ- 109
6. हीरक जयन्ती पृ- 84
   दुखमोचन पृ- 15
7. बलचनमा पृ- 174 बाबा बटेसरनाथ पृ-72

स्थल मार्ग के वाहन में —

रथ[1], पालकी[2], डोली[3] के लिए मप्फा[4], ~~टमटम~~ टमटम[5], बग्घी[6], एक्का[7], बैलगाड़ी[8], रिक्शा[9], साइकिल[10], वायुयान[11], सगड़[12], रेल[13] के लिए रेल गाड़ी[14], गाड़ी[15] तथा ट्रेन[16] का उल्लेख हुआ है।

- -

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 64, हीरक जयन्ती पृ- 76
2. " : बलचनमा पृ- 111, 125, 146, 148, 149, 152
दुखमोचन पृ- 69, बाबा बटेसरनाथ पृ- 37
3. " : बलचनमा पृ- 149, 151, 152
4. " : " पृ- 145
5. " : " पृ- 49, 56, 81, 119, 125, 163
नई पौध पृ- 18, 19, 20, 28 दुखमोचन पृ- 49
6. " : बलचनमा पृ- 56, 125, बलचनमा पृ- 30, 56
7. " रतिनाथ की चाची पृ- 63, 87, 168,
दुखमोचन पृ- 49
8. " : रतिनाथ की चाची पृ- 59, 60, 120, 168
बलचनमा पृ- 26, 120 दुखमोचन पृ- 49
बाबा बटेसरनाथ पृ- 37
9. " : दुखमोचन पृ- 49, उग्रतारा पृ- 90, बलचनमा पृ- 49
बाबा बटेसरनाथ पृ- 107, 110 हीरक जयन्ती पृ- 24, 73
10. " : हीरक जयन्ती पृ- 145 बलचनमा पृ- 169
रतिनाथ की चाची पृ- 87
11. " : बाबा बटेसरनाथ पृ- 37
12. " : " " "
13. " : " " पृ- 81 दुखमोचन - 22
14. " : बाबा बटेसरनाथ पृ- 52
15. " : रतिनाथ की चाची पृ- 122, बलचनमा पृ- 124, 125, 187
दुखमोचन पृ- 56
16. " : नई पौध पृ- 19

आधुनिक वाहनों में -

कार[1] शब्द के लिए गाड़ी[2], मोटर[3], टैक्सी[4] जीप[5] के लिए गाड़ी[6] का भी प्रयोग हुआ है । बस[7], ट्रक[8], लारी[9] का उल्लेख उपन्यासकार ने किया है ।

(अ). बैल गाड़ी

अधिकांश ग्रामों में स्थल मार्ग का वाहन बैलगाड़ी है, जिसका उल्लेख रतिनाथ की चाची तथा वरुण के बेटे उपन्यासों में हुआ है । ग्रामीण जनता घर से स्टेशन की ओर जाने के लिए, इस वाहन का प्रयोग करती है । रतिनाथ की चाची उपन्यास में —"जेठ की पूर्णिमा को रात के समय बैलगाड़ी पर रत्ती और चाची राजनगर स्टेशन की ओर चले ।"[10] इसी उपन्यास का (एक अन्य पात्र) जयकिशोर (भी है) जिनका तरकुलवा से राजनगर जाने का काम (एक ही) —बैलगाड़ी से चल गया ।"[11]

---

1. नागार्जुन : हीरक जयन्ती पृ- 35,6052, 75,91,100,109,110
2. " पृ- 75
3. बलचनमा पृ- 120,125
   बाबा बटेसरनाथ पृ- 93
4. हीरक जयन्ती पृ- 85
5. " पृ- 26, 68
6. " पृ- 52
7. कुम्भीपाक पृ- 36
8. बाबा बटेसरनाथ पृ- 93
   हीरक जयन्ती पृ- 141
9. नई पौध पृ- 98
   बाबा बटेसरनाथ 91, 113
   बलचनमा पृ- 181, 197
10. रतिनाथ की चाची पृ- 59
11. " पृ-120

केवल मनुष्य ही नहीं, वजनी सामानों का वहन कार्य इन्हीं के द्वारा होता है। दस मन भारी ; पन्द्रह गज चौडा और पाँच सौ फीट लम्बा महाजाल -- "बैल गाड़ी पर लाद कर गंगा सहनी के यहाँ आ चुका था।"[1]

[आ] इक्का

इसे घोड़ा गाड़ी भी कहा जाता है। ये वाहन अधिकतर गाँव से बाहर स्टेशन, बस स्टैण्ड के समीप होते हैं। रतिनाथ की चाची उपन्यास में इस वाहन का उल्लेख हुआ है। जयनाथ और गौरी को मालूम था कि "दस बारह इक्के भी राजनगर स्टेशन पर मौजूद रहते हैं।"[2]

[इ] पालकी

इस का उपयोग विवाह तथा गौने के समय वर तथा वधू को लाने के लिए होता है। बलचनमा के गौने के समय उसकी माँ - "बड़े मालिक के यहाँ से पालकी माँगने गयी थी।"[3]

[ई] ट्रेन

दूर-दूर की यात्राएँ तय करने के लिए वैज्ञानिक युग के वाहन "ट्रेन" का उपयोग बलचनमा, कुंभीपाक, नई पौध उपन्यासों में हुआ है। रेल अधिकारियों तथा रेल मंत्रालय के अव्यवस्था को उपन्यासकार ने बलचनमा उपन्यास में संकेत किया है। स्वतंत्रता पूर्व रेलगाड़ी की जो दशा थी

---

1. नागार्जुन : वरुण के बेटे पृ- 58
2. " : रतिनाथ की चाची पृ- 15
3. " : बलचनमा पृ- 111
4.

वही दशा स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी है - "बीस पचीस बरिस बाद भी मल्लेपावली गाड़ी का यही हाल है। साली इतनी-इतनी देर बैठती है कि दिमाग झुंझला हो जाता है।"[1] लेकिन यात्रियों को मजबूर होकर इंतजार करना पड़ता है। ट्रेन आते ही -"मुसाफिर डिब्बों में ठुंसे --- पायदान पर खड़े----- बाहरी हैंडल पकड़े भी सैकड़ों लोग थे। सौ-पचास तो छत पर भी बैठे थे, गठरी-मोटरी समेत।"[2] ठसाठस भरी ट्रेन के भी - "दिवाकर के पिताजी ऊपरी बर्थ की मोटी चेन के सहारे खड़े-खड़े झूल रहे थे।"[3] हाल्ट पर दो पैसिंजर उतरते ही --- बेंच पर झुरखुन अकेले था। लुढ़का दिया उसने अपने को खाली सीटों पर। अगले ही क्षण नाक बजने लगी।"[4]

3.282 जलमार्ग

जलमार्ग के वाहन - नाव[5], जहाज[6] तथा स्टीमर[7] है। रेल गाड़ियों के बंद होने पर बाढ़ ग्रस्त जनता - "नाव की शरण लेते[8] हैं। तथा सामान्य अवस्था में ग्रामीण जनता को ---"सीधा घाट पहुंचने के लिए - "जहाज से गंगा पार करना पड़ता है।"[9]

3.283 वायुमार्ग

वायु मार्ग का वाहन "हवाई जहाज"[10] का उल्लेख भी उपन्यासकार ने किया है।

- -

1. नागार्जुन : बलचनमा - पृ- 47, 2. नागार्जुन : नई पौध पृ- 75
3. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 8 5. नागार्जुन : हीरक जयन्ती पृ-17
4. " वरुण के बेटे पृ-17 6. " बलचनमा पृ- 67
बाबा बटेसरनाथ पृ-82, 112
7. " उग्रतारा पृ-32, बाबा बटेसरनाथ - 107
8. " वरुण के बेटे पृ- 89 9. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ - पृ- 10 7
10. " हीरक जयन्ती पृ- 56, 79

निष्कर्ष

उपन्यासों द्वारा यह ज्ञात होता है कि अधिकांश ग्रामीण जनता बैलगाड़ी, इक्का जैसे वाहन का ही प्रयोग दैनंदनी के जीवन में करती है। बड़ी यात्रा के लिए रेल तथा जलीय यात्रा में नाव तथा स्टीमर का प्रयोग करती है।

3.3 सामाजिक सम्बन्ध

सामाजिक सम्बन्धों का मूल केन्द्र - परिवार है। पारिवारिक सम्बन्ध, सामाजिक सम्बन्धों के मौलिक एवं गहन रूप हैं। यहीं से सामाजिकता विकीर्ण होती है, अतएव परिवार के गठन से लेकर, पारिवारिक सम्बन्धों का विशद विश्लेषण आवश्यक है, इसके अतिरिक्त नागार्जुन के उपन्यासों का एक प्रमुख कथ्य - "यौन सम्बन्धों" पर भी विचार करना आवश्यक है। साथ ही मिथिलांचल के गांवों में भ्रष्टाचार और रूढ़िग्रस्तता का सजीव रूप "बाल विवाह" एवं "बिकौआ विवाह" तथा "दहेज प्रथा" का भी उल्लेख होता है और साथ ही नागार्जुन द्वारा प्रस्तुत आदर्श अन्तरजातीय विवाह पर विचार किया गया है।

3.31 परिवार

समाज संगठन का आधार संयुक्त परिवार है। विभिन्न सामाजिक संस्थाओं में परिवार का स्थान महत्वपूर्ण है। परिवार ही वह मूलभूत सामाजिक संस्था है, जिस पर सामाजिक व्यवस्था आधारित है। व्यक्ति का सम्बन्ध समाज से जोड़ने में उसका महत्वपूर्ण स्थान है।

3·3॥ परिवार और प्रकार

परिवार - संयुक्त तथा व्यक्तिवादी होते हैं। संयुक्त परिवार--"वह जन समूह" है, जो सामान्यतया एक घर में रहता है, एक रसोई में पका खाना खाता है, जिसकी सम्पत्ति मिली जुली होती है, जो मिलजुलकर पूजा करते हैं और परस्पर कुछ खास बन्धुओं के रूप से सम्बन्धित होते हैं।"[1] संयुक्त परिवार में पति-पत्नी के अतिरिक्त नाबालिग बच्चे तथा पितृकुल के चार-पाँच पीढ़ियों के बन्धु-बाँधव तथा निस्सहाय स्त्रियाँ होती है।

आधुनिक युग में औद्योगिक प्रणाली ने ग्रामीण सीमाबद्ध तथा कृषि-प्रधान आर्थिक व्यवस्था का स्थान ग्रहण कर लिया, जिसके परिणाम स्वरूप संयुक्त परिवार के सम्मुख नई आर्थिक समस्याएँ और सुविधाएँ उपस्थित हुई। इस परिवर्तन से संयुक्त परिवार, जो आर्थिक व्यवस्था का सामाजिक संगठन था अपना नया रूप धारण करता गया। आधुनिक भारत में व्यक्तिवाद को प्रमुखता मिलने से परम्परागत रीति-रिवाजों तथा रूढ़ियों का निर्वाह संस्कृति द्वारा सम्भव हो सका, क्यों कि आधुनिक शिक्षा के प्रभाव से उसकी संकीर्णता नष्ट होकर व्यापक दृष्टिकोण को अपनाने लगी। ऐसी स्थिति में उसका निर्वाह व्यक्ति ही कर सकता था, परिवार द्वारा सम्भव न था। इसके कारण कौटुम्बिक व्यवस्था में परिवर्तन होना स्वाभाविक ही था। यह परिवर्तन की क्रिया--संक्रमण स्थिति उन्नीसवीं व बीसवीं शताब्दी तक चलती रही। समाज शास्त्री इसे संयुक्त परिवार के विघटन की संज्ञा देते हैं।

---

1. इरावती कर्वे : भारत में बन्धुत्व संगठन पृ- 8

इस विघटन के फलस्वरूप आणविक या व्यक्तिवादी परिवार बने, जिसमें केवल पति-पत्नी तथा उनके नाबालिग बच्चों तक ही सीमित है। वर्तमान युग में जहाँ संयुक्त परिवार विघटित हुए हैं, वहाँ दोनों व्यवस्थाओं के अतिरिक्त एक नई व्यवस्था ने जन्म लिया, जिसे हम विशुद्ध रूप से न तो संयुक्त परिवार ही कह सकते हैं और न आणविक ही। वस्तुतः यह दोनों के बीच की स्थिति है, जिसमें प्रायः तीन पीढ़ियों के सदस्य - माता, पिता, पुत्र तथा उनके बच्चे सम्मिलित होते हैं। इसका प्रमुख कारण यह है कि देश में अभी पूर्णतः औद्योगिक आर्थिक प्रणाली लागू नहीं हो सकी है। नौकरी पेशे की वृद्धि, औद्योगिक विकास, यातायात की सुविधा, नगरों में आकर्षण, नई शिक्षा एवं सभ्यता के प्रभाव से वैयक्तिक स्वार्थों के प्राबल्य ने पारिवारिक विघटन हुए। परन्तु फिर भी परस्पर स्नेह-सूत्र अभी समाप्त नहीं हुए हैं। ग्रामीण समाज में विशेष रूप से दो प्रकार के परिवार - "भ्रातृसंयुक्त परिवार तथा विस्तृत परिवार है।"[1]

उपन्यासों में संयुक्त परिवार, भ्रातृसंयुक्त परिवार तथा एकक परिवार के चित्रण हुए हैं।

अ. <u>संयुक्त परिवार</u>

संयुक्त परिवार का चित्रण रतिनाथ की चाची, नई पौध उपन्यास में मिलता है। रतिनाथ का मातृ-कुल बहुत विशाल है, "रतिनाथ के नाना पाँच भाई थे। अपने और चचेरे कुल मिलाकर सत्रह मामा थे।-- बाल बच्चे, नौकर-चाकर मिलाकर तिरसठ प्राणियों के उस महान परिवार के वह कुलपति थे।"[2] दिगम्बर के मातृकुल में "नानी थी, नाना थे, तीन मामियाँ और सात बच्चे थे, एक नौकरानी थी, एक चरवाह था।"[3]

- -

1. वागेश्वरी सिंह परिवार : भारतीय ग्रामीण समाज पृ- 117
2. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 146
3. " नई पौध पृ- 110

आ. भ्रातृ संयुक्त परिवार

इन परिवारों में मुखिया, सामान्यतः परिवार का वयोवृद्ध सदस्य अर्थात् [पिता] होता है, जिसका परिवार में एकतंत्र अनुशासन होता है। पिता के बाद सबसे बड़ा भाई।

नागार्जुन के उपन्यासों में खोंखा पंडित का परिवार तथा गुणवंतलाल दास किशोर का परिवार, दुखमोचन उपन्यास में दुखमोचन का परिवार भ्रातृसंयुक्त परिवार के अन्तर्गत आते हैं। गुणवंतलाल दास "ललित किशोर" ऐसे वृद्ध पुरुष है, जो अब घर के किसी काम में दखल नहीं देते हैं — "स्नान-ध्यान-पूजा-पाठ-श्रीमद्भागवत-देवी भागवत-कृत्तिवासिका-बंगला रामायण-महाभारत, सूरसागर, विनय पत्रिका, ब्रज-माधुरी सार और अपनी साहित्य साधना - वह निष्काम कर्म के कायल थे।"[1] पिता के कारण पारिवारिक जिम्मेदारी, बड़े पुत्र पर आ पड़ती है। औद्योगिक उन्नता के कारण परिवार के लोग नौकरी की तलाश में गाँव छोड़कर अन्य जिलों में तथा समीपस्थ शहरों में बसने लगे। धीरे धीरे संयुक्त परिवार में पारिवारिक जिम्मेदारी घर के बड़े बेटे पर न पड़कर किसी भी बेटे पर पड़ने लगी। "ललित किशोर" के तीन मामा थे। एक जिला सदर में किसी स्कूल का हेड मास्टर था, एक मुक्तापुर की जूट-फैक्टरी में असिस्टेन्ट एकाउन्टेन्ट और तीसरा मैट्रिक पास करने पर खेती-गिरस्ती में जुटा सो अब "घर का मुखिया बन बैठा था"।[2] अपने विशाल परिवार—"तीन मामियाँ और उनके सात बच्चों की देख-रेख करने वाले बाबू चैनदलाल दास तो थे ही।"[3] नई पौध उपन्यास में उपन्यासकार ने पीढ़ियों से चली आयी मुखिया बनने की परम्परा का खंडन किया है।

- -

1. नागार्जुन : नई पौध पृ- 110
2. " " पृ- 110
3. " " पृ- 110

दुखमोचन उपन्यास में, दुखमोचन का परिवार भी भ्रातृसंयुक्त परिवार है । तीन भाइयों के इस संयुक्त परिवार में --"सुखदेव की स्त्री धनी-बाप की इकलौती थी । यहाँ आकर हमेशा के लिए जम जाने में उसे घाटा था । दुखमोचन की औरत पाँच साल पहले हैजा की शिकार हुई थी । ---- नारायण की पत्नी यहीं रहती थी ।[1] बच्चों में दो थे ।

नई-पौध तथा दुखमोचन उपन्यासों में वर्णित परिवार संयुक्त परिवार है, जिनका खान-पान सम्मिलित रूप से चलता है तथा आर्थिक हितों की दृष्टि से वे सम्मिलित रूप से व्यवहार करते हैं ।

[ख] एकल परिवार

एकल परिवार, जिसका आधार पति का सम्बन्ध होता है । जिसका चित्रण नागार्जुन ने दुखमोचन, वरुण के बेटे, रतिनाथ की चाची उपन्यासों में किया है । दुखमोचन उपन्यास के भूमिहर खानदान का रामसागर, इसी श्रेणी के अन्तर्गत आता है -- "पत्नी, दो बच्चे । बस घर में और कोई नहीं था ।[2] इसी उपन्यास में एक अन्य उदाहरण भी मिलता है, विधवा मामी का मायका । --"तीन भाई और उनके बच्चे, बीमार माँ और उनकी बाप ।"[3]

वरुण के बेटे उपन्यास में, खुरखुन का परिवार भी एकाकी है । "सात - आठ खानेवाले खुरखुन अकेला कमाने वाले ।[4] रतिनाथ की चाची उपन्यास में नंदबा के परिवार में --"चार लड़कियाँ तथा दो लड़के[5] थे । हीरक जयन्ती उपन्यास के ललनधी का परिवार "सात पुत्रियों और पुत्रों[6] का था ।

- -

1. नागार्जुन : दुखमोचन [illegible] पृ- 18
2. नागार्जुन : दुखमोचन पृ-58
3. " " पृ- 107
4. " वरुण के बेटे पृ-75
5. " रतिनाथ की चाची पृ- 161
6. " हीरक जयन्ती पृ- 28

3.3.12 पारिवारिक विघटन

पारिवारिक विघटन,प्राय: बड़े-बड़े परिवारों का छोटे-छोटे परिवारों में बंट जाने की प्रक्रिया है । किन्तु व्यापक अर्थों में पारिवारिक विघटन सदस्यों को एक सूत्र में बांधने वाली क्रियाओं का कमजोर हो जाना,टूट जाना है। इस प्रकार "पारिवारिक विघटन में केवल पति-पत्नी का ही अलगाव नहीं बल्कि पिता पुत्र तथा अन्य सदस्यों के बीच होने वाले तनाव की भी गणना की जाती है ।"[1] सम्बन्धों के इस बदलाव से पारिवारिक जीवन अशान्त एवं कलहपूर्ण हो जाता है । उसकी सामूहिकता नष्ट प्राय: हो जाती है । नागार्जुन के उपन्यासों में पारिवारिक विघटन, भोग-विलासी जीवन[2],स्वार्थ परायणता[3],वासना की भूख[4],पर्दा-प्रथा उन्मूलन[5] के कारण हुआ है ।

अ.भोग-विलासी जीवन

रतिनाथ की चाची उपन्यास में परिवार विघटन का कारण भाइयों की स्वार्थ वृत्ति तथा भोग विलासी जीवन ही है । भोग विलासी जीवन का आधार अर्थ है । जहाँ धन ही जीवन का मुख्य लक्ष्य हो वहाँ उसके साथ अनेक कुप्रथाएँ जन्म लेती है । अर्थ लोलुपता के कारण व्यक्तिगत स्वार्थो की टक्कर सामाजिक हितों से होती है, जिसके कारण पारस्परिक वैमनस्य उत्पन्न होते है । धीरे-धीरे स्वार्थों की चरम सीमा पारिवारिक विशृंखलता में बदल जाती है । इसी उपन्यास में संयुक्त परिवार की मर्यादा "मा" परिवार उस समय तक बनाये रखता है, जब तक उनकी - माँ जीती रहीं ।"[6] उसके बाद कमलनाथ,केदनाथ और जयनाथ "अलग-विलग हो गए । जमीन

1. सत्येन्द्र त्रिपाठी : सामाजिक विघटन : डॉ कमला गुप्ता : हिंदी उपन्यासों में सामंतवाद से उद्धृत - पृ- 304
2. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ 75 3. नागार्जुन : उग्रतारा पृ 80
4. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ 76 5. बलचनामा - नागार्जुन पृ 102
6. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 75

जायदाद, बर्तन-बासन सभी के तीन हिस्से हुए । चूल्हे भी तीन ।"[1]

आ. स्वार्थवृत्ति

उग्रतारा उपन्यास में भभीखन सिंह के, संयुक्त परिवार के विघटन का कारण भाई की स्वार्थ वृत्ति है । भभीखन सिंह का छोटा भाई खोटी तबीयत का है-"भाई की नीयत नहीं है कि भभीखन सिंह कभी गांव आते रहें, अपने हिस्से की जायदाद संभाले ।"[2]

भाई की स्वार्थ परायणता को जानकर, भभीखन सिंह उगनी को लेकर गांव जाने का विचार छोड़ देते हैं ।

इ. वासना की भूख

रतिनाथ की चाची उपन्यास में गौरी का परिवार कामुकता के कारण टूटता है । उमानाथ को जब माँ के अवैध सम्बन्ध का पता चलता तो-"उमानाथ फुफकारता हुआ अपने आंगन में आया और माँ का झोंटा पकड़ लिया --- उसकी पीठ पर आठ-दस लात गदागद जमा दिये । चाची ऐंठ कर रही गयी ।"[3] दाँत पीसता हुआ वह बोला --"राक्षसी कहीं की । ले, रख अपना घर । मैं जाता हूँ, तालाब में डूबने और तब तू मौज मारती रहना ।"[4] और आवेश में ही घर छोड़कर हमेशा के लिए चला गया । इतना ही नहीं चाची के मृत्यु के पश्चात "चौथे दिन उमानाथ आ धमका ।"[5]

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 76
2. " उग्रतारा पृ- 80
3. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 78
4. " रतिनाथ की चाची पृ- 78
5. " रतिनाथ की चाची पृ- 171

ई. पर्दा प्रथा उन्मूलन

परिवार में नयी चेतना और नये मूल्यों के आगमन के कारण पुरानी रूढ़ियाँ टूटती ही है। जिसके फलस्वरूप कई परिवार विघटित होते गये। नागार्जुन प्रगतिवादी चेतना के कलाकार हैं, नये विचारों को ग्रहण करने तथा पुरातन को त्यागने की प्रवृत्ति उनमें है। यही कारण है, कि नागार्जुन ने बलचनमा उपन्यास में पर्दा प्रथा का विरोध किया है। राधाबाबू के पिता पुरानी परम्परा में विश्वास रखनेवाले वृद्ध है, तथा राधाबाबू आधुनिक विचारों में विश्वास रखनेवाले है, केवल राधाबाबू ही नहीं --"जिले में दो-तीन बाबू भैया ने अपनी-अपनी जनानी को परदे से बाहर निकाला था। उन्हीं में से एक थे राधाबाबू।"[1] बूढ़े मालिक ने अपनी पतोहू की बेपर्दगी के बारे में जब सुना तो उनका दिमाग पथरा गया, आँख तुन्निया गयी। उन्होंने राधा बाबू को कहलवा दिया कि "ड्योढ़ी के अन्दर पैर न रखें। बाप ने ही असहयोग की शुरुआत की थी, बेटे ने असहयोग को बंद कर दी।"[2] इस प्रकार एक रूढ़ि के टूटने के कारण पिता-पुत्र के सम्बन्ध भी टूट गये।

संयुक्त परिवार के विघटन और उनके कार्यों के परिणाम स्वरूप आज व्यक्ति अकेला हो गया है। जिसके उदाहरण रतिनाथ की चाची, ऊग्रतारा, बलचनमा उपन्यासों में मिलते हैं। सन् 1951 की जनगणना से संयुक्त परिवार विघटन की सत्यता प्रकट होती है। "भारतीय ग्रामों में प्रत्येक तीन परिवारों में एक ऐसा परिवार मिला है, जिसके सदस्यों की संख्या तीन या इससे कम है। जनगणना के रिपोर्ट के अनुसार छोटे घरों का इतने अधिक अनुपात में होना इस बात का द्योतक है, कि अब परिवार देश की परम्परागत व्यवस्था के अनुसार संयुक्त नहीं रहे। संयुक्त परिवार से अलग होने तथा पृथक घर स्थापित करने की प्रवृत्ति प्रबल है।"[3]

---

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 102
2. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 102
3. बागेश्वरी सिंह परिहार : भारतीय ग्रामीण समाज पृ- 127

3.3.2 पारिवारिक सम्बन्ध

परिवार के सदस्यों के आपसी सम्बन्ध परिवार की संरचना के लिए उत्तरदायी है। इन सम्बन्धों पर युगीन चेतना का प्रभाव भी रहता है, और साथ ही इनमें होनेवाला परिवर्तन भी इसी प्रभाव के कारण है। परिवार सम्बन्ध के अन्तर्गत - पति,पत्नी, माँ-बेटे, -माँ-बेटी, पिता-पुत्र,चाची-भतीजा, मामा-भांजा, ननंद-भाभी, जीजा-साली तथा देवर-भाभी के सम्बन्धों की विवेचना उपन्यासों में हुई है।

3.3.2.1 पति-पत्नी संबंध

जीवन की मुख्य इकाई पति-पत्नी सम्बन्ध है। यहाँ से अन्य सम्बन्ध उत्पन्न होते हैं। जीवन के विकास का आधार इन दोनों के पारस्परिक सहयोग एवं सद्भाव पर आधारित है। पति-पत्नी के पारस्परिक सम्बन्धों में एक नई स्थिति उस समय उपस्थित होती है,जब उनके वैवाहिक जीवन में तीसरे प्रेमी अथवा प्रेमिका का आगमन होता है। प्रेम की त्रिकोणात्मक स्थिति पारस्परिक संघर्ष में परिवर्तित हो जाती है और आकर्षण विकर्षण में बदल जाता है। ग्राम जीवन में नैतिकता का यह नया प्रतिमान स्थापित नहीं हो सकता है। चोरी-छिपे चलने वाला तीसरा सम्बन्ध तो यहाँ पहले से भी रहा है। रतिनाथ की चाची उपन्यास में नागार्जुन ने ऐसे सम्बन्धों को स्पष्ट रूप से प्रकट किया है। इन्द्रमणि की दोनों लड़कियों का विवाह हुआ था। उन के पति बिकौआ थे, जिसके फलस्वरूप -"एक का अपने ममेरे भाई, और दूसरे का कुल्ली राउत के ज्वान बेटे से गुप्त स्नेह सम्बन्ध था।"[1]

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 68

पति-पत्नी के सम्बन्ध को, दूषित करने वाले परिवार के ही बुर्जुग व्यक्ति है । जो अपनी खुराफातों से बहु को टिकने नहीं देते । यह उस समय सम्भव होता है, जब पति कहलाने वाला व्यक्ति पौरुष हीन होता है । अठारह साल के मधुरी का वैवाहिक जीवन दुःखपूर्ण है, जिसका कारण उसका बौड़म पति और नशाखोर ससुर है । मधुरी को माँ को बेटी के भविष्य के प्रति चिंता है -- "ससुर है जो बुढ़वा, ताड़ी पीकर धुत बना रहता है । बछिया, फिकिर के मारे पलकों से नींद उड़ गई है ।"[1] मधुरी ससुराल से भाग आती है। नशाखोर ससुर की खुराफातों ने उसे पति के पास टिकने नहीं दिया । इस वैवाहिक जीवन से तंग आकर वह मायके आ जाती है । पति, जो पत्नी की रक्षा भी न कर सके, उसके साथ सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करना मधुरी के बस की बात नहीं है ।

वरुण के बेटे, उपन्यास में उपन्यासकार ने पौरुष हीन पति के कारण पति तथा पत्नी के टूटते सम्बन्ध को प्रकट किया है तो नई पौध, उपन्यास में पौरुषवान पति के कारण पति-पत्नि के आनंदमय जीवन को भी चित्रण किया है, रामेसरी का घर-वाला शिक्षित सभ्य गृहस्थ है, उसने तीन वर्ष के उस छोटे से दाम्पत्य जीवन में पत्नि पर कभी - "हाथ नहीं उठाया, कभी गाली नहीं दी ।"[2] पति-पत्नी के मधुर जीवन का चित्रण हीरक जयन्ती उपन्यास में भी मिलता है। ललन-जी की पत्नी, पति के लिए मित्र भी है, दासी भी है तथा प्रेयसी भी है । दिन भर के थके हारे पति के श्रम को नारी अपने प्रेम से दूर कर देती है । ललनजी को देखकर उनकी पत्नी सोच रही थी --"बैठने के लिए अवश्य कहेंगे और तब थोड़ी देर गपशप होगी । मगर ललनजी उसी तरह लेटे रह गए ।"[3] उनके मानसिकता को जानकर --"पत्नी ने स्विच ऑन कर दिया । करीब आकर झुकी, चेहरे की ओर देखा और --- बहुत थके हो, सो जाओ ---"[4]

- -

1. नागार्जुन : वरुण के बेटे पृ- 45
2. " : नई पौध पृ- 23
3. " : हीरक जयन्ती पृ- 91 4. नागार्जुन : हीरक जयन्ती पृ- 91

नागार्जुन, पत्नि के वात्सल्यमय रूप को यहाँ चित्रित करते हैं। पत्नि के मित्र-ता, रूप हीरक जयन्ती उपन्यास में ही दिखाई देता है। ललन-जी बेटियों को दहेज देकर विवाह करने में असमर्थ है। उनकी असहायता को देखकर; पत्नी उन्हें सलाह देती है कि --"क्वाँरी क्यों रहेगी। पढ़-लिख के काम करेंगी, आप अपना दूल्हा खोज लेंगी। कम पढ़ी-लिखी लड़कियाँ भी दस तरह के धंधे कर सकती हैं, वे भी बूढ़े माँ-बाप को पाल सकती हैं।"[1] - पत्नी की इस सलाह को सुनकर ललनजी "बिजली की फुर्ती से उठ बैठे और पत्नी को सीने से लगा लिया।"[2]

कुंभीपाक उपन्यास में नागार्जुन ने महीम और मामी के सम्बन्ध को विचित्र ढंग से चित्रित किया है। महीम चौबीस पचीस की उम्र का स्वस्थ सुन्दर युवक है। गाँव के रिश्ते से वह उसका सम्बन्धी है। फिर भी उन दोनों के आपसी सम्बन्ध पति-पत्नी की तरह ही है।

पति-पत्नी के सम्बन्ध के विभिन्न रूप रतिनाथ की चाची वरुण के बेटे, नई-पौध, हीरक जयन्ती तथा कुंभी-पाक उपन्यासों में दिखाई देते हैं।

३.२.२ माँ-बेटे का सम्बन्ध

इस सम्बन्ध का विकृत रूप रतिनाथ की चाची उपन्यास में है।

उमानाथ गौरी का एकमात्र पुत्र है। पिता के मृत्यु के बाद वह घर पर बहुत कम आते जाता है। अक्सर वह पिता की बरसी पर घर आया करता था। हमेशा की तरह दुर्गा-पूजा की छुट्टी में, गाँव घर पहुंचता है, तो थोड़ी ही देर में उसे, माँ के कलंक की कथा मालूम होती

---

1. नागार्जुन : हीरक जयन्ती पृ- 92
2. " " " पृ- 92

है, जिससे-"ग्लानी और क्षोभ के मारे उसका दिमाग फटने लगता लगा ।"[1] उसके क्रोध की सीमा उस चरम अवस्था में पहुंच जाती है, जहाँ पर वह माँ का झोंटा पकड़ लेता है और --"उसकी पीठ पर आठ-दस लात गदा-गद जमा दिये । चाची ऐंचकर रह गयी ।"[2] पुत्र के आकस्मिक परिवर्तन को वह तुरन्त समझ जाती है । वह उसके पैर पकड़कर क्षमा मांगने लगी । लेकिन क्रोधी उमानाथ माँ को क्षमा नहीं करता । वह अपमानित होकर जीने से अच्छा --"गले में घड़ा बाँधकर डूब मरना ।"[3] श्रेयस्कर समझता है । संतप्त माँ लड़के के पैरों पर मस्तक-डालकर गिड़गिड़ाती है, --"तुम्हारे हाथों सद्गति मिलेगी तो मेरे सारे कुकर्म धुल जाएँगे ।"[4] उपन्यासकार ने,माँ के एक दयनीय रूप का चित्रण यहाँ किया है । उमानाथ माँ को बताये बिना ही पिता की बरसी न कर नौकरी पर चला गया । उमानाथ कर्तव्य परायण पुत्र है । --"पिता कुछ जमीन गिरवी रख गये थे । पचहत्तर रुपये में पन्द्रह कट्ठा जमीन फँसी थी ।[5] उसने भोला पंडित के नाम से -"छिहत्तर रुपये आठ आना मनी आर्डर भेजा ।"[6] और अपने आप को गाँव के सम्मुख - "यह है बाप का बेटा"[7] -- कहलाया । पुत्र के इस कटु व्यवहार को देखकर चाची निश्चय करती है, [redacted] "पतोहू का मुँह देखकर अपनी जीवन लीला समाप्त[8] करें । चाची भाई द्वारा उमानाथ के सगाई की बात सुनकर सुख-स्वप्न में खो जाती है --"आज उमानाथ ने शादी की, कल बहू आयेगी । परसों चाची जल्द ही पोते का मुँह देखेगी ----। और उसे पुनः गृहस्थी का सुख प्राप्त होगा । लेकिन चाची के इस सुख स्वप्न को भंग होते देर न लगी । शादी के बाद उमानाथ पत्नी को छोड़कर वापस कलकत्ता जाने की तैयारी करने लगा । अपने प्रति लड़के की रुखाई को देखकर चाची, मन ही मन रो उठी । उसने सोचा -"समाज जैसे पुरानी

---

1 तथा 2	नागार्जुन	: रतिनाथ की चाची	पृ- 78
3 तथा 4	"	: रतिनाथ की चाची	पृ- 79
5.	"	: "	पृ- 104-105
6 तथा 7	"	: "	पृ- 105
8.	"	: "	पृ- 158

बातों को भूल गया है । वैसे ही उमानाथ भूल गया होगा ।"[1] चाची ने चर्खा कातकर दो सौ रुपये इकट्ठे किये और पुत्र के विवाह में व्यय कर दिये । लेकिन उमानाथ को माँ का प्रेम दिखाई नहीं दिया, वह समझता है की— "चर्खा चलाकर तूने दुनिया भर को बतला दिया, उमानाथ अवारा है, कलकत्ता में खुद तो मौज मारता है, और घर पर माँ भुलाहिन हुई जा रही है ।[2] वह चाची की बेबसी को समझ ही नहीं सकता और उसे धमकी देता है — "खबरदार । अब कभी चर्खा छुआ तो हाथ काट दूँगा ।"[3] गौरी अपमान के आग में जलने लगी । वह अपमानित होकर जीने से अच्छा मरना समझती है । वह स्वयं को उमानाथ की प्यारी कुतिया कुन्ती से तुलना करती है – मैं तुम्हारी माँ हूँ उमानाथ । क्या मैं कुत्ती से बदतर हूँ ।"[4] लेकिन उमानाथ माँ को किसी भी स्थिति में क्षमा करना नहीं चाहता है । पुत्र के इस व्यवहार को देखकर चाची भी यह निश्चय करने पर विवश हो जाती है, कि—"उसका अंतिम संस्कार रतिनाथ के हाथों ही हो । पुत्र का जब माँ पर इतनी घृणा है तो यह अप्रिय कार्य उसे न करना पड़े – यही एक मात्र कामना थी ।"[5]

२.३२३ माँ–बेटी सम्बन्ध

इस सम्बन्ध का चित्रण उपन्यास कार ने, रतिनाथ की चाची, नई पौध उपन्यास में किया है । माँ के वात्सल्यमय रूप का चित्रण गौरी के माँ का है, जो लड़की का—"कवच बनकर तमाम मुसीबतों को वह अपने ऊपर ले लेती है ।"[6] विधवा गौरी का अवैध गर्भ धारण करने पर समाज द्वारा तिरस्कृत तथा अपमानित बेटी को शरण ही नहीं देती, उसे उस संकट से

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 155
2. नागार्जुन : " पृ- 155
3. नागार्जुन : " पृ-155
4. नागार्जुन : " पृ-155
5. नागार्जुन : " पृ- 158
6. " : " पृ- 9

मुक्त भी करती है । गौरी को गर्भ अवस्था में देखकर वह घबरा जाती है, तथा समाज के डर से वह उसे कलंकिनी कहती है और --"गौरी की ठोडी पर एक ठुनका लगा दिया । गौरी हाउ-हाउ करके रो पड़ी आँखो से आँसू की धारा जो बहने लगी वह बंद होने का नाम ही नहीं लेती ।"[1] थी । गौरी की उस करुण दशा को देखकर माँ का हृदय द्रवित हो जाता है -- "लड़की को अपनी छाती से लगाकर आप ही आप रोने लगी ।"[2] वह पछताने लगी कि नाहक ही मैंने गौरी को मारा --"माँ हूं, तभी तो आई है । नहीं तो -"पटना न भाग जाती ।"[3] पुत्र को इस अवस्था में देखकर गौरी की माँ परिस्थिति की वास्तविकता पर विचार करती है -- "जिस समाज में क्वारों की तादाद में जवान विधवाएँ रहेंगी वहाँ यही सब होगा ।"[4] क्यों की स्त्री और पुरुष, पुरुष और स्त्री एक दूसरे के पूरक है । गौरी की माँ समाज के लिए बाधिन है, वह कोई रुई का फाहा नहीं जिसे फूंक से उड़ाया जा सके । उसके इस दृढ़ व्यक्तित्व के कारण ही गौरी स्वस्थ होकर पुन: अपने ससुराल आ जाती है ।

नई पौध उपन्यास में नागार्जुन ने माँ-बेटी के सम्बन्ध को नये ढंग से उठाया । बिसेसरी, विधवा रामेसरी की इकलौती सन्तान है --"दोनों एक दूसरे का सहारा थी, अभिभावक भी थीं और साथिन भी ।"[5] [illegible] प्रकृति के नाना के लिए, विवाह जैसा धार्मिक पवित्र कार्य भी व्यापार था, वे बिसेसरी का ब्याह पचपन वर्षीय चतुरानन चौधरी से सौराठ के मेले में तय कर आते हैं । पिता के निश्चय को जानकर रामेसरी अत्याधिक कुपित हो उठती है --"दुल्हे को आने तो दो, उस बुड्ढे के माथे पर अँगारे न डाल दूं तो रामेसरी मेरा नाम नहीं ।"[6]

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 25
2. " " पृ- 25
3. " " पृ- 29
4. " " पृ- 28
5. " नई पौध पृ- 24 6. नागार्जुन : नई पौध पृ- 7

लेकिन उसे अपने सामर्थ्य का ध्यान आता है - मैं कर क्या सकती हूँ । चीखूँगी और चिल्लाऊँगी और अपना सर पटकूँगी, पिता को अवश्य होगा तो मुझे किसी कमरे में बन्द करके बाहर से साँकल चढ़ा देंगे । शादी तो होकर रहेगी ।"[1] पिता के आश्रय में रहनेवाली असहाय नारी-"तेरह साल से विधवा थी ×× ससुराल वालों के षड्यंत्र के आगे वह टिक न सकी ।"[2] माँ-बाप की छाया में आ गई और लाचार होकर अपना जीवन बिताने लगी । उसे बेटी के सौन्दर्य पर ---अभिमान था । उसे आशा थी कि बेटी पढ़-लिख जायेगी तो अच्छा दुल्हा मिल जायेगा । इसलिए -"बड़े ही जतन से उसने लड़की को अपर-प्राइमरी तक की शिक्षा दिलवाई थी ।"[3] लेकिन पिता के दृढ़ता के कारण रामेसरी के सारे स्वप्न खंडित हो गये । वह बेटी का अनमेल विवाह कराकर उसका जीवन बर्बाद करना नहीं चाहती थी । वह अनमेल विवाह की विसंगतियों से अवगत थी । उस भयंकर जिंदगी से अच्छा मौत समझती है --"क्या करेगी जीकर बिसेसरी ? ऐसी जिन्दगी से मौत लाख गुना बेहतर ।।"[4] वह सोचती है कि ऐसे अनमेल विवाह से तो यही अच्छा है कि उसकी बेटी कुंवारी ही रहे । लेकिन उसे समाज का भी भय था, वह कितने दिनों तक बेटी को कुंवारी रख सकेगी कभी न कभी बेटी का विवाह करना ही होगा । मातृ प्रेम के आगे आवेश शान्त हो जाता है --"वह रोती हुई बिसेसरी को खींचकर अपनी छाती से सटा लेती है ।"[5]

---

1. नागार्जुन : नई पौध पृ- 7
2. " " पृ- 6
3. " " पृ- 7
4. " " पृ- 7
5. " " पृ- 7

3.3.4 पिता-पुत्र सम्बन्ध

पिता तथा पुत्र के सम्बन्धों को चित्रित नागार्जुन ने रतिनाथ की चाची तथा नई पौध उपन्यास में किया है, क्रोधी तथा हठी स्वभाव के जयनाथ, रतिनाथ के पिता है। उनके क्रोध का शिकार उनकी पत्नी हो चुकी थी, तथा अब रति। जरा-जरा सी बात पर जयनाथ "छड़ी-कलछी, चैला, लोढ़ी जो भी हाथ में पड़ जाता उसी से पीटने लगते।"[1] पिता के इस उग्र स्वभाव से चाची उसे बचाती आयी है। घर में पिता का आतंक इतना भयानक था कि रतिनाथ को—"खिलखिलाकर खूब हंसना -स्वप्न की वस्तु थी। पेड़ पर चढ़ना कल्पना मात्र था।"[2] पिता के इस कठोरता को रतिनाथ मौन रहकर सहन करता है। रति के अंग्रेजी स्कूल में शिक्षा-प्राप्त करने की इच्छा को भी जयनाथ टाल देते हैं, और अपनी इच्छा से उसे संस्कृत पढ़ने के लिए बाध्य करते है —" लो यह अमरकोश जिस दिन यह कंठस्थ हो जायगा उस दिन तीनों लोक तुम्हारे लिए हस्तामलक हो जायेंगे।"[3] फिर भी पुत्र के प्रति पिता के मन में प्रेम कहीं न कहीं छिपा हुआ था। रति जब पढ़ने के लिए मोतिहारी जाता है तो वे उसे "दरभंगा ले गये, पैर नपवा कर जूता खरीद दिया। देह नापकर दर्जी से कमीज सिलवा दी।"[4] पिता का यह प्रेम देखकर भीतर ही भीतर उस मातृहीन बालक का हृदय भर उठता है।

गाँव छोड़कर जाने के दिन वे उसे छोड़ने गाँव के बाहर आये,— "पुत्र वियोग से उनकी आँखें छलछला आई।"[5] इतना ही नहीं पिता को बेटे की याद आती ही रहती। वे उसे "तीन-चार रुपये प्रतिमास मनी-आर्डर भेजते थे।" यह जानकर को लड़का —"परदेश में है।"[6] पिता

- -

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 35 2. रतिनाथ की चाची पृ- 35
3. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ-35 4. रतिनाथ की चाची पृ- 107
5. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ-108 6. रतिनाथ की चाची पृ-34-35

के प्रेम को जानकर भी रतिनाथ सदा से ही उन्हें घृणा की दृष्टि से देखता है। वह जानता था, कि उसकी माता का हत्यारा उसी का पिता है। पिता तथा पुत्र के बनते-बिगड़ते सम्बन्धों को नागार्जुन ने रतिनाथ की चाची उपन्यास में चित्रित किया है। क्रोधी, जिद्दी तथा लालची पिता का एक और रूप नई पौध उपन्यास में मिलता है। खोंखा पंडित अपने इशारों से परिवार को नियंत्रित तथा संचालित करते हैं। जिनके लिए बच्चे विक्रय करनेवाली "फसलें" है। वे बड़ी बेटी को छोड़कर बाकी छहों बेटियों को अपनी इच्छा अनुसार बेच डाली थी - "महेसरी से उन्हें 1,100 रु० मिले थे, भुवनेसरी से 800 रु०,गुनेसरी से 700/- रु०,गौरीसरी से 1000,रु०, वागेसरी से 700/- रु० तथा धनेसरी से 900/- रु० ।"[1] केवल बेटियों के विवाह से ही उन्होंने, धन-अर्जित नहीं किया, बेटों की शादी कर जायदाद भी कमाई थी - "चार हजार का खर्चा चुकाया -- दो बेटों की शादी के बाद अपनी-अपनी विधवा सास की जायदाद हाथ लगी ।"[2] इतना ही नहीं अब उनकी नजर चौदह वर्षीय स्वस्थ तथा सुन्दर नतनी बिसेश्वरी पर थी। वे अपनी ही इच्छानुसार सौराठ के मेले में बिसेसरी का विवाह जमीन-जायदाद से सम्पन्न, साठ वर्षीय चतुरानन चौधरी से 900/- रु० लेकर तय कर आते हैं, इस आशा से कि "500 बीघा जमीन की मलिकाइन बनेगी प्यारी बिश्वेश्वरी"।[3] लेकिन पिता के इस स्वभाव से भयभीत होकर-"माँ और बहन डर के मारे कभी कुछ बोलती नहीं, जो मन में आता है बाबूजी वहीं करते हैं ।"[4] और घर सभी लोग विवश होकर उनकी आज्ञा का पालन करते हैं।

3.3.5 चाची-भतीजा

चाची-भतीजे के ममतामयि सम्बन्ध का चित्रण उपन्यासकार ने रतिनाथ की चाची उपन्यास में किया है। चाची के दो बच्चे है - उमानाथ

- -

1. नागार्जुन : नई पौध पृ- 6 2. नागार्जुन : नई पौध पृ- 15
3. " " पृ-14 4. " : " पृ- 50

और प्रतिभामा । प्रतिभामा सत्रह साल की है --"उसे ससुराल गये तीन-चार साल होने को आ रहे थे ।"[1] उमानाथ पढ़ने के लिए मामा के पास मोतीहारी रहता है । गौरी के स्नेह का आधार जयनाथ का पुत्र रतिनाथ ही था जिसे देख-देखकर वह जीवन को बिताती है । रतिनाथ के पिता, जयनाथ गृहस्थी की ओर से बिलकुल विमुख रहते हैं । घर में सदा रहनेवाले दो ही प्राणी हैं, -- चाची और भतीजा, एक दूसरे के सुख-दुःख के साथी । चाची समाज द्वारा तिरस्कृत होकर भी ~~रति~~ रतीन्द्र के नजरों से वह कभी नहीं गिरी । चाची को भूखा देखकर रतिनाथ दुःखी हो उठता है, और वह सत्याग्रह कर देता है - ऐसी क्या बात है, चाची कि तुमने खाना-पीना छोड़ रखा है ? अच्छा, नहीं खाना है न खाओ मगर कल मैं भी नहीं खाऊँगा ।"[2] इस बाल हठ के आगे चाची को झुकना पड़ता है । इस मातृहीन बालक का चाची के प्रति अत्यधिक स्नेह रहता है, स्वयं उसके पिता उसे घोर संकट में डालकर भाग जाते हैं, लेकिन रति उसका आत्मिय जन, सदैव उसके साथ रहता है --"विपत्ति के अथाह समुद्र में गोते खा रही इस चाची के लिए बिचारे ने उस रात, कितने आँसू बहाए, यह रहस्य भगवान ही जानते हैं ।"[3] चाची को दुःखी देखकर रतिनाथ का दुःख मानसिक दुःख है, जिसके कारण रतिनाथ की दशा दिनों-दिन बिगड़ती जा रही है उसकी उस हालत को देखकर, चाची उसे सांत्वना देती है --"तुझे क्या है पागल ? तू क्यों इतना दुबला हो गया है ?"[4]

रतिनाथ मातृ वियोगी है ।--"चार साल का था तभी माँ मर गयी थी ।[5] माता के अभाव की पूर्ति वह चाची से करता है । चाची जीवन भर, रति की रक्षा तथा उसके सुख के लिए संकल्पित है । रति की जिन्दगी में एक ही खतरा है, कि वह सौतेली माँ जो--"इस लड़के को जिन्दगी भर परेशान करती रहेगी ।"[6]

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 13
2. " रतिनाथ की चाची पृ- 6
3. " रतिनाथ की चाची पृ-8
4. " रतिनाथ की चाची पृ- 10
5. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ - 29
6. नागार्जुन पृ- 61

लेकिन दूसरे ही क्षण वह सोचती है —"क्या परेशान करेगी ? मैं भी तो रहूँगी ।"[1]

अकारण क्रोधी ___ पिता से चाची ही उसे बचाती रही नहीं, जब जयनाथ, रतिनाथ का ब्याज तय कर आते हैं, तो वह फटकार कर रत्ति का ब्याज होने नहीं देती, यह बात वह रत्ति को नहीं बताती क्योंकि उसकी दृष्टि से "रत्ति की घृणा को तीव्र होने देना अभीष्ट नहीं था ।"[2] पिता के व्यवहार से तंग आकर रत्ति मामा के निमंत्रण पर पढ़ने जाने का विचार व्यक्त करता है, तब चाची विशाल हृदय का परिचय देती है —"भैया के साथ रहकर तुम अपने बाप को न भूल जाना ।"[3] वह उसे पुत्र के कर्त्तव्य की याद दिलाती है — बाप के प्रति तुम्हारे हृदय में माया-ममता बहुत कम ही है, परन्तु सद्‌गति तो उनकी तुम्हारे हीतर्पण से होगी ।"[4]

इस तरह चाची एक ओर क्रोधी पिता तथा दूसरी ओर प्रेम का प्यासा बालक के प्रति ममता की मूर्ति बनी रहती है ।

3.3.26 मामा-भाँजे का सम्बन्ध

मामा - भाँजे के सम्बन्ध का चित्रण रतिनाथ की चाची उपन्यास में हुआ है । पन्द्रह वर्षीय जिद्दी, गुस्सैल तथा मंद बुद्धि वाला उमानाथ, पिता के मृत्यु के पश्चात, पढाई के लिए ++/+++ मामा के पास

---

1. नागार्जुन रतिनाथ की चाची - 61
2. " " - 106
3. " " - 97
4. " " - 97

मोतीझरी में रहता है । पढ़ाई के साथ-साथ उसे घर के छोटे-मोटे काम भी करने पड़ते हैं, जिसे वह अपने घर पर कभी नहीं करता था । एक दिन घी पिघलाते समय असावधानी के कारण सारा घी चूल्हे में गिर जाता है, जिसके कारण "मामा ने भांजे को इस अपराध के लिए दो तमाचे लगाए ।"[1] उमानाथ इसे अपना अपमान समझकर सदा के लिए घर छोड़कर भागलपुर चला जाता है । और उसके मन में मामा के प्रति घृणा हमेशा के लिए बनी रहती है ।

3.3.27 ननंद-भाभी का सम्बन्ध

ननंद-भाभी के प्रेम को उपन्यासकार ने बलचनमा तथा दुखमोचन उपन्यास में व्यक्त किया है । फूलबाबू की माँ के हृदय में सौतेले ननंद के प्रति इतना नेह-छोह था कि वह -"परब-त्योहार छठे-छमाहे, सौगात भेजा करती थी"[2] अवमाधव की पत्नी तथा माया के बीच ननंद-भाभी का व्यवहारिक सम्बन्ध न रहकर, आत्मियजनों का सा अगाध प्रेम है, -"उनके बीच कोई रहस्य छिपा नहीं रहता था ।"[3] विधवा होने पर भाभी के आग्रह से ही वह मायके में जम गई थी, - "वे एक दूसरे का नाम नहीं लेती थीं, "प्रान", "प्रान" कहकर पुकारती थीं ।"[4]

इस तरह नागार्जुन ने ननंद-भाभी के बीच अटूट स्नेह का चित्रण किया है ।

3.328 सास बहु संबंध

उपन्यासकार ने परम्परा से चले आनेवाली, सास के भयंकर रूप का चित्रण, दुखमोचन उपन्यास में किया है । सास यह परिवार की मुखिया है, जिसके भौहों के इशारों पर परिवार के अन्य लोग कठपुतली की तरह कार्य करते हैं।

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 33
2. " बलचनमा पृ- 41
3. " " पृ- 83 4. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 83

सास की सख्ती से, दुखमोचन की पत्नी—"दूब की तरह पीली हो गई थी ।"[1] केवल इतना ही नहीं दुखमोचन माँ के भय से तथा — "शील-संकोच के मारे उन दिनों पत्नी के बारे में जुबान तक नहीं खोलते थे ।"[2] बहू के स्वस्थ रहने पर सास तंग तो करती ही है, लेकिन रोगी होने पर उसे घर पर रखने के लिए तैयार नहीं रहती । उसे मायके जाने के लिए बाध्य किया जाता है । दुखमोचन की पत्नी, लगातार चार वर्षों तक टी0बी0 की मरीज़ रही । "मरने लगी तो माँ के आतंक से उसे देख भी न सके ।"[3] केवल तड़प कर रह गये । यह टीस दुखमोचन को जीवन भर तक सताती रही ।

3.321 <u>जीजा साली सम्बन्ध</u>

जीजा साली के अवैध सम्बन्ध का चित्रण नागार्जुन ने कुंभीपाक उपन्यास में किया है । चम्पा विधवा है । शादी के दो साल बाद उसके पति का देहान्त हो गया था । वह निराश्रित थी, कभी माँ और सास के साथ रहकर जिंदगी के दिन काटते रहती है । विधुर जीजा उसे बच्चों की देख-रेख के लिए ले जाते हैं । चम्पा चंचल स्वभाव की है वह "जीजा जी को मौके-बेमौके छेड़ती रहती है ।"[4] लेकिन जीजा बढ़ावा नहीं देते । लेकिन, मन ही मन दोनों एक दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं, लेकिन समाज के भय से विवाह नहीं कर सके_" तुम मेरा बदन चांपती हो, रग-रग की मालिश हो जाती है, चम्पा । बड़ा ही सुख मिलता है । काश, मैं तुम्हारी मांग में फिर से सिंदूर भर सकता ।"[5]

- -

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 73
2. " " पृ- 73
3. " दुखमोचन पृ- 71
4. " कुंभीपाक पृ- 92
5. " " पृ- 93

यहाँ चम्पा और उसके जीजा में काम-सम्बन्ध स्वाभाविक और स्थिति संगत है, किन्तु सामाजिक रूढ़ि को तोड़कर विधवा से विवाह करने का साहसिक निर्णय न ले पाने के कारण उनका संबंध अवैध ही बना रहता है। इस अवैध सम्बन्ध को सामाजिक धरातल पर मान्यता देने के लिए नागार्जुन ने विधवा विवाह[1] का समर्थन किया है।

3.2० देवर-भाभी का सम्बन्ध

देवर-भाभी के सम्बन्धों का चित्रण नागार्जुन ने रतिनाथ की चाची, नई पौध तथा उग्रतारा उपन्यासों में किया है। देवर-भाभी के अनैतिक सम्बन्धों का चित्रण रतिनाथ की चाची तथा नई पौध उपन्यासों में हुआ है। विधवा गौरी, विधुर देवर जयनाथ की गृहस्थी सम्भालती है, जो स्वभाव से कामचोर, जिद्दी तथा कामुक है। जयनाथ के लिए- "जहाँ घड़ तहाँ घर"[2] है। उनका हृदय स्त्रियों के सम्पर्क में सदा प्रसन्न रहता, तथा लोलुप नजरों की प्यास भी मिट जाती है। जयनाथ के लोलुप नजरों का शिकार चाची को भी होना पड़ा, जिससे -"चाची के लिए रात को सोना—हराम हो गया था।"[3] कभी-कभी वासना के उद्रेक से जयनाथ की जीभ लड़खड़ाने लगती तो वह स्फूर्ति से बीच आँगन आ जाती × × × उसका सारा ध्यान रुग्ण हृदयवाले अभागे जयनाथ पर केन्द्रित रहता।"[4] जयनाथ की इस उद्दण्डता पर चाची उन्हें कभी फटकारती नहीं न ही घर का त्याग ही करती है। तैंतीस साल के इस विधुर देवर के प्रति उसका वही व्यवहार रहता है - जो कि एक समझदार माँ का अपने बीमार बालक के प्रति।"[5] चाची ने जयनाथ के चंचल तथा कामुक स्वभाव को देखकर समझाया - "शादी कर लो बाबू, एक भले आदमी

- -

1. देखिये शोध प्रबंध का पृ-
2. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 132
3. " " पृ-100
4. " " पृ- 101
5. " " पृ- 101

की जिन्दगी बिताओ ।"[1] लेकिन चाची के बार-बार कहने पर जयनाथ का एक ही उत्तर रहता "संसार मुझे क्या कहेगा ? लड़का सयाना हो रहा है । शादी तो उसकी होनी चाहिए ।"[2] इस तरह जयनाथ एक ढोंगी तथा आदर्श पिता का रूप धारण करते है । जयनाथ की कामुकता का शिकार गौरी हो जाती है, लेकिन विशाल हृदय चाची किसी को पता चलने नहीं देती कि उसे भ्रष्ट करने वाला उसी का देवर जयनाथ है । चाची के सहनशीलता का परिचय उपन्यासकार ने दिया है । समाज द्वारा तिरस्कृत हो जाने पर चाची की दयनीय दशा को देखकर जयनाथ को पश्चाताप होता है और वे मन ही मन कहते है --"मेरी कृतघ्नता को देखि, कभी क्षमा मत करना ।"[3] देवर भाभी के कामुक सम्बन्ध का चित्रण नई-पौध उपन्यास में भी दिखाई देता है । नौगछिया गाँव की सहुआइन बड़ी लछमिनिया थी । गाँव के लोगों के लिए आश्चर्य की बात थी कि -- "जब से विधवा हुई तब से तो उसके भाग मानो खुल-खेलने लगे ।"[4] वे सोचते थे - "राम जाने देवर से सहुआइन का क्या संबंध था ।"[5] उपन्यासकार के दृष्टि से, केवल रक्त संबंध ही देवर-भाभी के सम्बन्धों का निर्वहण नहीं करता, बल्कि समाज में रहने-वाले -"छोटे उम्र के सिपाही उसके देवर है ।"[6]

3.33 विवाहेत्तर यौन सम्बन्ध

नागार्जुन के उपन्यासों में उभरने वाले सामाजिक सम्बन्धों का एक प्रमुख पक्ष है, विवाहेत्तर यौन सम्बन्ध । मनुष्य जीवन में, सहज भाव से प्रवेश करनेवाली यौन चेतना से लेकर, उसकी विकृत परिस्थितियों तक के क्रम को नागार्जुन ने अपने विभिन्न पात्रों के माध्यम से उभारा है । रतिनाथ

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 99
2. " रतिनाथ की चाची पृ- 100
3. नागार्जुन: रतिनाथ की चाची पृ- 45
4. " नागार्जुन - नई पौध पृ- 79
5. " नई पौध पृ- 80
6. नागार्जुन : उग्रतारा पृ- 9

की चाची तो इसी कारण चर्चा केन्द्र रही है। इसी में इन्द्रमणी की दो लड़कियां जनक किशोरी एवं शकुन्तला अपने चचेरे भाई एवं कुल्ली राउत से अवैध सम्बन्ध रखती है, और उनकी संतान भी वहन करती है। इसका कारण है "बिकौआ" विवाह। यही नहीं वरुण के बेटे उपन्यास के मधुरी और मोहन विवाहित होने के बावजूद आपस में प्रेम करते हैं। इस यौन चेतना के मूल में बालविधवा समस्या, अनमेल विवाह, बिकौआ विवाह, बाल विवाह आदि तथा अदम्य काम पीपासा को, कारण रूप में बताया गया है। बलचनमा उपन्यास का बलात्कार प्रसंग तो प्रसिद्ध है ही। किन्तु नागार्जुन के मन में सहज प्रेम का एक आदर्श भी है।[1] उस आदर्श के लिए वे हर दूरी तय कर सकते हैं। उगनी और कामेश्वर उग्रतारा के दो पात्र है, दोनों परस्पर प्रेम में बंधे है, किन्तु समाज उनके मिलन में बाधक है, पर अन्त में, कामेश्वर गर्भवती उगनी को अपनी पत्नी रूप में अंगीकार करता है।

नागार्जुन की यथार्थ चेतना इन यौन सम्बन्धों के चित्रण में प्रकट होती है। नागार्जुन स्त्री पुरुष के मध्य यौन चेतना की अदम्यता को नकारते नहीं है, और उसे किसी आदर्श से ढकने की कोशिश नहीं करते। आम और फूल के समान स्त्री-पुरुष का आदि सम्बन्ध अपनी परिणती को पहुंचता ही है, चाहे सामाजिक मर्यादाएँ कितनी भी दृढ़ हो।

- -

1. देखिए रतिनाथ की चाची में रतिनाथ और बागो का प्रेम पृ- 72
बलचनमा पृ- बलचनमा और अंजिता का प्रेम पृ 64

3.34 विवाह के प्रकार

प्राचीन हिन्दू धर्म शास्त्रकारों ने विवाहों को आठ[1] प्रकारों में वर्गीकृत किया है । पश्चिमी समाजशास्त्री, विवाहों का वर्गीकरण पति-पत्नी की संख्या को आधार बनाकर चार[2] प्रकारों में वर्गीकृत करते हैं । नागार्जुन के ग्रामीण समाज में प्रचलित विवाह को, तीन वर्गों - 1. बाल विवाह, 2. बिकौआ विवाह तथा 3. अन्तर्जातिय विवाह में वर्गीकृत किया जाता है ।

हिन्दू समाज में विवाह के समय वधू को चुनने के लिए मुख्य रूप से दो प्रकार के नियमों -- 1. गोत्र तथा 2. प्रवर का पालन किया जाता है । एक गोत्रवालों में परस्पर विवाह, धर्मशास्त्रों द्वारा वर्जित ठहराया गया है । आपस्तम्ब[3], विष्णु[4], मनु[5], याज्ञवल्क्य[6] ने समान गोत्र और समान प्रवर रखनेवाली कन्या से विवाह का निषेध किया है । उपन्यासकार इस बात से सहमत है। दुर्गानंदन हिन्दू विवाह के नियमों से परिचित है । बिसेसरी के लिए दूल्हा खोजते समय "गोत्र" पर विशेष ध्यान दिया जाता है । "वाचस्पति झा, पिता श्रीपति झा, गोत्र वत्स x x x हमारी बहन का गोत्र काश्यप पड़ता है -- इतना मुझे भी मालूम है कि वत्स और काश्यप गोत्रों में ब्याह होता है ।"[7]

---

1. ब्राह्म - दैव, आर्ष, प्रजापत्य, आसुर-गंधर्व, राक्षस और पैशाच मनु 3-21
2. एक विवाह - बहुपत्नीकता, बहुपतित्व तथा समूहविवाह - इंसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका, 14 सं पृ- 949
3. 2/11/.15
4. 24/9-10
5. 3/5 6. 1/53 7. नागार्जुन, नई पौध पृ- 123

3.3.11 बाल विवाह

इस विवाह को सामन्ती युग में खूब बल मिला, जिसके कारण नारी पूर्ण रूप से शोषित होती गयी ।--"सामन्तों की विलासिता की पूर्ति के लिए किसी भी सुन्दर स्त्री को पकड़कर मँगाने के कारण समाज में बाल-विवाह की प्रथा का प्रचार हुआ ।"[1] समाज में व्याप्त अनैतिकता से घबराकर अपनी कन्याओं का विवाह कम आयु में ही कर देते थे । छोटी आयु में विवाह होने के कारण कन्याओं को कई बार यौवन में पदार्पण होने के पूर्व ही वैधव्य के जीवन में प्रवेश करना पड़ता था । जब उन्हें इस बात का पता नहीं था, कि वैधव्य क्या होता है । माँ, बाप शादी कराकर कर्तव्य से मुक्त हो जाते थे ।

उपन्यासकार ने बलचनमा, दुखमोचन तथा हीरक जयन्ती उपन्यासों में बाल-विवाह की विवेचना की है । बलचनमा का विवाह बाल्यकाल में ही हुआ है --"छः वर्ष की उमर ही में शादी हो गई थी ।"[2] उसे इतना भी याद नहीं कि जिससे कभी शादी हुई उसकी शक्ल-सूरत कैसी है ।" "दो एक दफे दिमाग ने कोशिश की याद को सही लकीरों पर लाने की मगर कुछ फल नहीं निकला ।"[3] उसे केवल-"धूमधाम के सिवाय भोज-भात के सिवाय बाजा-गाना के और कुछ याद नहीं है ।[4] एक अन्य उपन्यास में भी इसके संकेत मिलते हैं । दुखमोचन उपन्यास में दुखमोचन की पत्नी अपर्णा का विवाह बाल काल में ही हुआ था --- "चौदह की थी तो ब्याह हुआ, चौबीस की हुई तो हमेशा के लिए आँखें मूँद लीं ।"[5]

---

1. डा० कमला गुप्ता : हिन्दी उपन्यासों में सामन्तवाद पृ- 388
2. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 110
3. " " पृ- 143
4. " " पृ- 111
5. " दुखमोचन पृ- 73

स्मृतिकार अभिमत विवाह अष्टवर्षा कन्या से प्रारम्भ होकर, उसमें यौवनावस्था में पदार्पण करने तक सीमित है। हिन्दू कोड बिल के अनुसार 18 वर्षीय कन्या का विवाह हो सकता है।[1] बलचनमा का विवाह तब हुआ जब वह छः वर्ष का था। यह प्रथा एक ग्रामीण प्रथा है। यूँ तो इस प्रथा में वह विवाह भी शामिल है जो केवल शिशु अवस्था में जब की बालक अथवा बालिका पालने में ही रहते हैं। यह आयु जन्म से 6 मास की आयु तक ही सीमित है। अधिकांश ग्रामीण विवाह जन्म से प्रारम्भ करके, आठ वर्षों के भीतर ही समाप्त हो जाते हैं। इसे ग्रामीण विवाह कहना उचित ही है।

उपन्यासकार द्वारा निर्मित कुछ पात्रों का संकेत यहाँ कर देना उचित ही है, जिन पात्रों का सम्बन्ध बाल विवाह से है। रतिनाथ की चाची उपन्यास की पात्री, प्रतिभामा इस प्रकार की है -"प्रतिभामा सत्रह साल की थी"[2] तब उसका विवाह हुआ था।

3.3.42 **विकौआ विवाह**

विकौआ विवाह की प्रथा महादरिद्र अभिजात वर्गीय रूढ़ीय श्रोत्रिय कुलीन[1क] बंगाल प्रान्त की है। जिसके मूल में यह हेतु था, कि- "कन्या का विवाह हीन कुल में न हो, किन्तु ब्राह्मणों ने इसे आजीविका

- -

1. हिन्दू मैरेज एक्ट नं0 25, 1955
2. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 13
1क. 9 वीं शताब्दि के अन्त में, बंगाली ब्राह्मणों का उपजाति भेद अधिक संगठित एवं दृढ़ हुआ। कुलीन ब्राह्मणों के भौगोलिक दृष्टि के दो मुख्य भेद किये गये - वीरेन्द्रभूम के कुलीन वीरेन्द्र कहलाए और बर्दवान तथा दूसरे स्थानों के कुलीन रूढ़ीय के नाम से प्रसिद्ध हुये। बहुभार्यता का प्रचलन रूढ़ीय श्रोत्रिय कुलीनों में ही विशेष रूप से हुआ।
1क. प्रो0 हरिदत्त वेदालंकार : हिन्दू विवाह संक्षिप्त इतिहास पृ- 397-398

के एक साधन रूप में अपनाया ।"[1] और यह कुलीन ब्राह्मणों के लिए एक साधारण सी बात थी । बिकौआ विवाह का चित्रण उपन्यासकार ने रतिनाथ की चाची उपन्यास में किया है — "एक-एक व्यक्ति बाईस-बाईस तक शादियाँ करते थे ।"[2] शकुन्तला के पति की—"आठ शादियाँ थीं और जनक किशोरी के पति की दस ।"[3] इसी उपन्यास के एक और पात्र रतिनाथ के नाना हैं,—"जिनकी दस विमाताएँ थी ।" ऐसे पुरुष समाज में घृणा के पात्र न होकर लोग उन्हें—"आदर पूर्वक आमंत्रित कर उनसे अपनी कन्या का पाणिग्रहण करवाते थे ।"[4] इसी इच्छा से कि कन्या का विवाह हीन कुल में न हो । प्रत्येक विवाह पर वर को पर्याप्त दहेज भी मिलता था । विवाहोपरान्त भी अभिभावकों को अपनी कन्याओं का भरण-पोषण आजन्म करना पड़ता था । इन्द्रमणि के—"तीन दामाद परम अभिजात, महादरिद्र और बिकौआ थे" ।[5] साल-डेढ़ साल पर बिकौआ महाशय आ ही जाते । ससुराल आने पर उनका खूब सत्कार किया जाता था, —"डेढ़-दो मास रहकर फिर चले जाते ।"[6] उनका सारा जीवन विभिन्न ससुरालों का चक्कर काटते हुए बीतता था । बहु विवाह के कारण कुलीन ब्राह्मणों का जीवन सुखमय हो जाता था, किन्तु कई स्त्रियों का जीवन बरबाद । कई स्त्रियाँ वृद्ध, असमर्थ, जीविकाहीन और दुश्चरित्र व्यक्तियों के साथ विवाह के बंधन में बंधकर कष्ट सहती हुई पिता के घर में रहती थी । ऐसे स्त्रियों के लिये पति के घर में कोई स्थान नहीं था । इस प्रथा के कारण समाज में कई प्रकार की बुराइयाँ फैल गयी थी, जिनमें-"वेश्या-वृत्ति, व्यभिचार, गर्भपात, भ्रूणहत्या तथा शिशु हत्या मुख्य है ।"[7]

- -

1. प्रो० हरिदत्त वेदालंकार : हिन्दू विवाह का संक्षिप्त इतिहास पृ- 399
2. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ-20 3. नागार्जुन: रतिनाथ की चाची 68
4. " : रतिनाथ की चाची पृ- 20 5. " " पृ- 20
6. " : " पृ- 67
7. प्रो० हरिदत्त वेदालंकार : हिन्दू विवाह का संक्षिप्त इतिहास पृ- 409

पति का साहचर्य प्राप्त न होने से इन्द्रमणि की दोनों लड़कियों में–"एक का अपने चचेरे भाई से और दूसरे का कुल्ली राउत के ज्वान बेटे से गुप्त स्नेह-सम्बन्ध था ।"[1] इस स्नेह- सम्बन्ध की चरम सीमा भी समाज के लोगों को स्पष्ट दिखाई देती थी —" शकुन्तला का तीसरा लड़का हू-ब-हू उसके चचेरे भाई की शक्ल का था और जनक किशोरी की दोनों सन्तानें आकृति में कुल्ली राउत की परम्परा में आती थी ।"[2]

उपन्यासकार ने बिकौआ विवाह का कारण तथा उससे उत्पन्न भ्रष्टाचार का भी संकेत उपन्यासों में दिया है ।

3.3.3 बहु विवाह

बहु विवाह को विवेचना उपन्यासकार ने बलचनमा, रतिनाथ की चाची तथा दुखमोचन उपन्यासों में की है । यह विवाह स्त्री के निपूती होने पर, पुत्रोत्पत्ति की इच्छा से तथा भोग विलास की दृष्टि से किये गये हैं ।

अ. निपूति स्त्री के कारण

निपूती स्त्री के कारण, विवाह करने का उल्लेख बलचनमा उपन्यास में हुआ है । मलिकाइन के बाप ने पहली स्त्री के निपूती होने पर संतान की इच्छा से "तीन शादी की ।"[3] यह शास्त्र सम्मत भी है ।[4]

- -

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 68
2. " : रतिनाथ की चाची पृ- 68
3. " बलचनमा पृ- 40
4. " मनु स्मृति 9/81

आ. पुत्र की इच्छा से

पुत्र प्राप्ति के इच्छा से विवाह करने का उल्लेख रतिनाथ की चाची में हुआ है। दमयो के पिता जी को शादियाँ हुई थी। —"पहली शादी से एकमात्र यही दमयन्ती हुई। दूसरी से दो लड़के।"[1] "भोला पंडित ने पुत्र की लालसा से पैंतालीस साल की उम्र में दूसरी शादी की थी।"[2]

स्मृतियों[2क] में यह भी कहा गया है, कि यदि पत्नी रोगग्रस्त रहने वाली हुई, वन्ध्या, कन्या पैदा करनेवाली हो तो दूसरा विवाह कर ले।

इ. भोग-लिप्सा

इसके अतिरिक्त उपन्यासों में कुछ ऐसे पात्र है, जो वंश वृद्धि अथवा संतान उत्पत्ति के लिए विवाह न करके कामिनी भोग लिप्सा में तृप्त होने के लिए, वानप्रस्थ आश्रम के समीप रहने पर भी विवाह करने की इच्छा रखते है, यह विवाह केवल भोग के लिये ही किया गया है। नेवालाल ठाकुर बड़खड़वा के बहुत बड़े काश्तकार है। —"पचास वर्ष की उमर में उन पर यह सनक सवार हुई कि किसी कुलीन कन्या का पाणिग्रहण करना चाहिए।"[3] दो शादियाँ इससे पहले की थी। वह दोनों औरतें मौजूद थीं। हीरक जयन्ती उपन्यास का दुर्गाबाबू भी उस अवस्था में विवाह करता है जब दो महीने के अन्दर ही उनकी तीन लाख की बचत होती है। वैभव की मस्ती में "गत वर्ष कहीं से पंचादी कौड़िया बहा लाया तो पट्ठे ने दूसरी शादी कर ली उसी वर्ष।"[4]

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ-58
2. " " पृ- 67
2क. याज्ञवल्क्य स्मृति 1/73 मि0 मनु : 9/80
3. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 76 4. हीरक जयन्ती पृ- 140

बहु विवाह शास्त्रानुमोदित नियमों के आधार पर हुए है, तो दूसरी ओर भोगविलास के लिए भी ।

3.2.55 **अन्तर्जातीय विवाह**

बाल विवाह, किशोरा विवाह के अतिरिक्त अन्तर्जातीय विवाह की चर्चा भी उपन्यासकार ने दुखमोचन तथा कुंभीपाक उपन्यास में की है । आधुनिक शिक्षा प्राप्त युवक और युवतियाँ परस्पर प्रेम पाश में बंध जाते हैं और अन्त में विवाह के पवित्र बंधन में परिणित हो जाते हैं । दुखमोचन उपन्यास में कपिल और माया का विवाह - "अन्तर्जातीय विवाह है । विधुर कपिल कायस्थ है और विधवा माया ब्राह्मण । -- "पिछले साल - डेढ़ साल के अन्दर दोनों का स्नेह-सम्पर्क बेहद गाढ़ा हो गया था ।"[1] यह अटूट प्रेम सम्बन्ध अन्त में विवाह में परिणित हो जाता है । एक अन्य उपन्यास कुंभीपाक में भी इसका संकेत मिलता है । कायस्थ युवक सदानंद का कमारक मिला की -"तहसील में इंटरमीडियट कालेज की प्रिंसिपलशिप स्वीकार करना वरदान ही सिद्ध हुआ : क्यों कि वहीं कुमारी रंजना ओझा से उनका प्रथम साक्षात्कार हुआ --- घनिष्ठता बढ़ी और इलाहाबाद के आर्य समाज मंदिर में शादी -- ।"[2]

उपन्यासकार ने विवाह के सम्बन्ध में पुरानी परम्पराओं का खंडन किया है ।

---

1. नागार्जुन : दुखमोचन पृ- 32
2. " : कुंभीपाक पृ- 55

3.15 दहेज प्रथा

विवाह निश्चय के समय कन्या पक्ष की ओर से वर पक्ष को दिया जानेवाला धन "दहेज" है । यह समाज में एक "प्रथा" के रूप में प्रचलित है, जिसे "वर मूल्य" भी कहा जाता है । दहेज की मात्रा कितनी होगी यह समाज में प्रचलित रीति-रिवाजों पर तथा वर के सामाजिक स्तर पर निर्भर करती है । दहेज में दी जानेवाली वस्तुओं में पशु-सवारियाँ, "मज़दूर" जमीन जायदाद, विदेश जाने का खर्च, सोने के आभूषण आदि है । जिसकी विवेचना उपन्यासकार ने दुखमोचन, बलचनमा, रतिनाथ की चाची उपन्यासों में की है । दुखमोचन को दहेज में ससुराल से और वस्तुओं के साथ-साथ गाय मिली थी ।[1] अतिरिक्त इसके बलचनमा उपन्यास में जमीदार ने बेटी की शादी में "हाथी घोड़ा, पालकी, जमीन जगात के साथ-साथ "खवास" को भी साथ दिया था ।"[2] तथा बलचनमा के परदादा को वहीं के एक जमींदार ने दहेज में -"दामाद के साथ कर दिया था ।"[3] दहेज का आधुनिक रूप रतिनाथ की चाची उपन्यास में दिखाई देता है । राय बहादुर ब्रज बिहारी ठाकुर, एम. एस.सी पास भवदेव को दहेज रूप में-"विलायत में पढ़ने का सारा खर्च देंगे या डिप्टी मजिस्ट्रेट का ओहदा"[4] दिलवा देने पर राजी हुए ।

---

1. नागार्जुन : दुखमोचन पृ- 91
2. " : बलचनमा पृ- 77
3. " : बलचनमा पृ- 73
4. " : रतिनाथ की चाची पृ- 87

बलचनमा उपन्यास के राधाबाबू को नगद पचास हजार तिलक चढ़ा था[1] तथा दुखमोचन उपन्यास में नित्याबाबू के छोटे लड़के की शादी हुई तो "बाईस हजार का तिलक चढ़ा"[2] था । इसी उपन्यास में सर्वोदयी आदर्शों पर चलनेवाले कांग्रेसी नेता प्रत्यक्ष रूप से दहेज लेने के खिलाफ है । बेटे के विवाह में उन्होंने एक पैसा भी तिलक या दहेज नहीं लिया । लेकिन कन्या पक्षवालों को उनके सामाजिक स्तर के योग्य ही बारातियों का आदर-सत्कार करना पड़ा, साथ ही साथ-"तीस लोगों को जोगियाड़ा से सहरसा आना-जाना "सेकण्ड-क्लास" का भी देना पड़ा ।"[3]

इसके अतिरिक्त बहू जब शुभंकर बाबू के हवेली के अन्दर पैर रखेगी तो-"हजारों का सोना उसके बदन पर होगा ।"[4]

कानून द्वारा दहेज निषिद्ध होने पर कांग्रेसी नेताओं द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से दहेज लेने की प्रथा पर नागार्जुन ने व्यंग्यात्मक संकेत किया है । उपन्यासकार की दृष्टि से दहेज प्रथा दोष युक्त प्रथा है । यदि किसी लड़की के माता-पिता कम दहेज देते हैं, या दहेज में कोई वस्तु नहीं दे सकते तो उस वस्तु के मिलने तक लड़कीको [redacted] ससुराल में न लायेंगे और न ही लड़के को पत्नी से मिलने देंगे । सूर्यदेव खाते-पीते घर का लड़का है । शादी हो चुकी थी । बाप ने उसे ससुराल जाना वर्जित कर रखा था । इसलिए की शादी में लड़के को-"मोहन माला" (सोने का कंठहार)[5] नहीं दी गयी ।

---

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 102
2. " : दुखमोचन पृ- 34
3. " : दुखमोचन पृ- 91
4. " : दुखमोचन पृ- 91
5. " : रतिनाथ की चाची पृ- 123

यह एक सामाजिक बुराई तो है ही साथ ही साथ अन्य बुराइयों को जड़ भी है। समाज में प्राकृतिक व्यभिचार को प्रोत्साहन देने में इसका महत्वपूर्ण हाथ होता है। विवाहोपरान्त भी पति-पत्नी के न मिलने से प्राकृतिक व्यभिचार मनुष्य के भीतर सहज रूप से उत्पन्न हो जाता है। रतिनाथ की चाची उपन्यास में शुभदेव इसी प्राकृतिक व्यभिचार से ग्रस्त है। मोतीहारी के धर्मशाला में रतिनाथ को उसके समीप सोना मुश्किल हो गया-"सोते समय उसे मालूम हुआ कि कोई धीरे-धीरे उसकी जाँघ पर हाथ फेरने लगा है।"[1]

अनैतिकता के प्रसार के साथ-साथ अनमेल विवाह, पारिवारिक कलह आदि इसी के विकसित रूप है। गरीब माँ-बाप को, दहेज देने की असमर्थता में अपनी, सामाजिक इज्जत की रक्षा हेतु लड़की को किसी न किसी के साथ ब्याहना पड़ता है। ऐसे समय विवाह, पवित्र संस्कार न होकर व्यापार बन जाता है। रतिनाथ की चाची उपन्यास में जयनाथ के पिता ने अपनी एक मात्र पुत्री, सुमित्रा का विवाह बड़हुवा के अधेड़ मेवालाल से जिसकी दो पत्नियां जीवित है, यह जानकार कि-"बड़हुवा वाले बहुत ही धनी हैं धूमधाम से शादी करेंगे।"[2] उन्होंने सुमित्रा का विवाह उनसे ही कर दिया। और बदले में "गरीब ब्राह्मण के घर को ठाकुरजी ने भर दिया।"[3] इस प्रकार से नागार्जुन ने दहेज के विकसित रूप को बताते हुए, उससे उत्पन्न सामाजिक बुराइयों को बलचनमा, दुखमोचन, रतिनाथ की चाची उपन्यासों में चित्रित किया है।

---

1. रतिनाथ की चाची - 123
2. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 76
3. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 76

3.36 वर्ग सम्बन्ध

नागार्जुन के उपन्यासों में, ग्रामीण समाज की, जाति से वर्ग तक की दीर्घ यात्रा अंकित है । एक ओर भारतीय वर्ग व्यवस्था की जर्जर-रूढ़ियाँ, जो सवर्णों के दम्भ और आतंक और शूद्रों पर अत्याचार के रूप में दिखाई देती है, तो दूसरी ओर जातिगत विद्वेष या सामंजस्य के आधार पर होने वाली गुटबंदियाँ और तीसरी ओर औद्योगिक वर्ग व्यवस्था के रूप में, उच्च वर्ग का अहंकार तथा दोहरी नैतिकता, निम्न वर्ग का उत्पीड़न दिखाई देता है । यही नहीं नागार्जुन औद्योगिक पूँजीवाद के फलस्वरूप सामने आनेवाली मध्यवर्गीय मनोवृत्ति का भी चित्रण करने में सफल हुए है ।

ग्राम-प्राचीन और नवीन सामाजिक व्यवस्था के बीच की स्थिति प्रगट करता है । ब्राह्मण, क्षत्रियों से द्वेष करते है । ब्राह्मणत्व का वह ऊँचा आदर्श भी मलिन हो गया । ब्राह्मण आपस ही में भयंकर वैमनस्य का परिचय देते हैं । रतिनाथ की चाची में ब्राह्मण समाज के स्पष्ट दो गुट जयदेव गुट और जयनारायण गुट ।[1] जयनारायण के भड़काने पर कोई ब्राह्मण जयदेव के घर भोज में सम्मिलित नहीं हुआ । यह द्वंद्व अपने चरम पर पहुँचता है । जयनारायण के छोटे भाई पर लगे ब्राह्मण-हत्या के अभियोग से ।[2] किन्तु बात जब निम्न वर्ग के प्रति व्यवहार की आती है, तब ये सारे ब्राह्मण एक जैसे दिखाई पड़ते है । निम्न वर्ग इनके लिए शोषण, उत्पीड़न और प्रतारणा की वस्तु है । निम्न वर्ग

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 111
2. " रतिनाथ की चाची पृ- 111

के प्रति ये किसी भी तरह की मानवीय भावना का परिचय नहीं देते । बेगारी लेना जमींदार अपना अधिकार समझता है, लगान वसुल करने के बहाने अनेक तरह के अत्याचार करना जमींदार को शौक है । इस बेगारी का दूसरा रूप गुलामी है । इन अत्याचारों का विस्तृत वर्णन नागार्जुन ने बलचनमा, बाबाबटेसरनाथ उपन्यासों में किया ।[1]

किन्तु नागार्जुन की प्रगतिशील विचार धारा और समर्थ दृष्टि के परिचायक स्थल वे है जहाँ निम्न वर्ग में आक्रोश, असंतोष और विद्रोह की चिंगारियाँ ले दिखाते है । नागार्जुन के किसान भाग्यवादी नहीं है । वे निष्क्रिय और मौन रहकर अत्याचार सहने वाले भारतीय पारम्परिक किसान नहीं है । मजदूर भी प्रेमचंद युग के मजदूरों से आगे निकल चुके है । निम्न वर्ग में जागरण की लहर है । वे सदियों से होने वाले अपने शोषण को समझते है और शोषण के भयंकर तंत्र को तोड़ने के लिए दृढ़ संकल्प है । एक मार्मिक उदाहरण कुंभीपाक उपन्यास में युवक रिक्शा वाले और सम्पादक दीवाकर शास्त्री के बीच हुए झगड़े में दिखाई देता है ।[2] गाँव की घरेलू नौकरानी भी हड़ताल करने की सीमा को पहुँच चुकी है । इस तरह निम्न वर्ग इस एतिहासिक निर्णय को कार्यान्वित करते दिखाई देता है, की संगठन में ही बल है । बिना संगठित हुए इस शोषण तंत्र का सामना नहीं किया जा सकता है । नई-पौध उपन्यास में एक गुट बनता है खेल कूद, मनोरंजन और विचार विमर्श के सरल उद्देश्य को लेकर । किन्तु धीरे धीरे युवकों की यह पार्टी अपने सामाजिक दायित्व को पहचान ने लगती है । और सरकारी एवं सामाजिक गतिविधियों में हस्तक्षेप करने लगती है । बिसेसरी और चतुरानन चौधरी का अनमेल विवाह को रोकने में इस "बम पार्टी" को सफलता मिलती है ।

---

1. प्रस्तुत प्रबंध में उच्चवर्ग के अन्तर्गत विस्तार से चर्चा की है । देखिए पृ- 49,50

2. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ - 35

वरुण के बेटे उपन्यास तो जमींदारों के खिलाफ मछुओं के संघर्ष की कथा है । और यह संघर्ष मछुओं के नेता मोहन मांझी के नेतृत्व में संगठित होने के कारण ही सफल होता है ।[1] इसी तरह बलचनमा में किसानों की संगठित शक्ति प्रदर्शित की गयी है । बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में जैकिसुन आदि का संगठन जमींदार के खिलाफ खड़ा होता है । नागार्जुन की इस मान्यता को पुष्ट करता है कि निम्न वर्ग यदि अपनी वर्ग स्थिति को पहचान ले और एक जुट हो जाए तो वर्ग संघर्ष में उसकी भूमिका सफल हो सकती है । औद्योगिक पूंजीवाद और नौकरशाही के फलस्वरूप अस्तित्व पानेवाले मध्यवर्ग में व्याप्त भ्रष्टाचार का सूक्ष्म चित्रण नागार्जुन ने ग्रामीण समाज के संदर्भ में किया है । भारतीय ग्रामों में सामन्ती व्यवस्था को पूंजीवादी व्यवस्था के भयंकर तंत्र में बदलनेवाले प्रमुख उपकरण है - "बनिया और बाबू" । सूद-खोर बनिया की भूमिका करते हैं, शुभंकरपुर के जमींदार ।[1क] किन्तु इससे भी बढ़कर शोषक है -"क्लर्क, दलाल, घटक, बाबा, पंडा और सरकारी अफसर ।"[2] ये लोग धर्म और सरकारी कारवाइयों के नाम पर ग्रामीण जनता का शोषण करते हैं । चाहे सड़क के पुन: निर्माण की बात हो या पुल की, सारा मामला दफ्तरी लाल फिता शाही की गिरफ्त में पड़कर कभी नहीं सुलझता ।

इस तरह नागार्जुन उच्च, मध्य और निम्न वर्ग की वर्गीय स्थितियों, सम्बन्धों और चेतना का विश्लेषण करते है । और इनमें निम्नवर्ग के प्रति उनकी पक्षधरता स्पष्ट लक्षित होती है ।

- -

1. देखिए प्रस्तुत प्रबंध, पृष्ट संख्या - 383-385

1क 2. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 93

2. देखिए इस शोध प्रबंध का पृ-

3.4 सामाजिक व्यवस्था

सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत उस समग्र तंत्र का अनुशीलन किया है, जो समाज व्यवस्था के लिए उत्तरदायी है, यथा - शिक्षा एवं चिकित्सा, न्याय एवं दण्ड व्यवस्था । गाँवों के संदर्भ में ये तीन व्यवस्थाएँ ऐसी है, जिन्हें लेकर व्यापक चिंतन हुआ है, और कई जटिलताएँ उत्पन्न हुई है । इन तीन व्यवस्थाओं में होने वाली अव्यवस्था का ही रूप है सामाजिक भ्रष्टाचार ।

3.41 शिक्षा व्यवस्था

उपन्यासकार ने ग्राम की संरचना में विभिन्न शिक्षा केन्द्रों — प्राचीन तथा आधुनिक की चर्चा की है ।

3.411 प्राचीन शिक्षा

प्राचीन शिक्षा केन्द्रों का उल्लेख रतिनाथ की चाची, वरुण के बेटे, बलचनमा, उग्रतारा उपन्यासों में हुआ है । शुभंकरपुर गाँव में छोटी बड़ी दो पाठशालाएँ थी ---"बड़ी पाठशाला का नाम श्री तारणी संस्कृत "टोल" शुभंकरपुर ।"[1] पाठशाला की स्थिति की ओर संकेत करते हुए उपन्यासकार कहते हैं, ये पाठशालाये नियमित रूप से खुलती भी नहीं, इन का खुलना और बंद होना पाठशाला के अध्यापकों की मर्जी पर निर्भर रहता है । शुभंकरपुर गाँव में स्थित "संस्कृत पाठशाला" तो हमेशा ही

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 33

बंद रहती है, -"देहात की पाठशाला और सो भी संस्कृति की । उसका बन्द रहना और न रहना बराबर है ।"[1] फिर भी इस पाठशाला में पढ़ने के लिये विद्यार्थी उत्सुक रहते हैं --"नियमित क्रम से पढ़नेवाले लड़कों की तादात तेरह थी ।"[2] उच्च शिक्षा के लिए इन विद्यार्थियों को गाँव से बाहर जाना पड़ता था, लेकिन पाठशाला में "माध्यमा" तक पढ़ने की व्यवस्था थी । उमानाथ रतिनाथ को भागलपुर ले जाकर पढ़ाना चाहता था, लेकिन रतिनाथ इस बात से सहमत न था --"मध्यमा तक तो गाँव में भी पढ़ा जा सकता है भैया फिर कहीं क्यों ?"[3] प्राइमरी स्कूल की -"भौगोलिक स्थिति की ओर भी उपन्यासकार ने दिशा संकेत दिये है । मल्लाही गोंडियारी गाँव में -"प्राइमरी स्कूल गाँव के उत्तर-पूरब, गोरखर की ऊँची भिंड के दक्खिनी ढलान पर, खड़ा अलग से ही जगमगा रहा था । स्कूल का पिछवाड़ा गाँव की तरफ और अगला हिस्सा पोखर की तरफ पड़ता था ।"[4] स्कूल में पढ़नेवाले अधिकांश विद्यार्थी लड़के ही थे, जिनकी संख्या --"तीस" - पैंतीस थी ।"[5] शुभंकरपुर गाँव में कोई हाई-स्कूल नहीं है । -"ज़िला स्कूल मोतिहारी में था ।"[6] वहीं "करीब ही हाईस्कूल था ।"[7] हाई स्कूल तो नहीं गोंडियारी गाँव में प्राथमिक स्कूल था, जिसकी मान्यता -डिस्ट्रिक्ट बोर्ड ने दी थी ।"[8] एक अन्य उपन्यास बलचनमा में भी नागार्जुन ने स्कूल का वर्णन किया है । आश्रम के बाहर बस्ती में एक स्कूल था । यह स्कूल - ऊँची जमीन पर था ।"[9]

---

1. नागार्जुन - रतिनाथ की चाची : पृ-69
2. " - " : पृ-48
3. " - " : पृ-33
4. " - वरुण के बेटे : पृ-33
5. " - रतिनाथ की चाची : पृ-48
6. " - " : पृ-135
7. " - उग्रतारा : पृ-31
8. " - वरुण के बेटे : पृ-18
9. " - बलचनमा : पृ-134

स्कूल की आर्थिक दशा की ओर संकेत करते हुए बाबा कहते हैं --- स्कूल का मकान "खपरैल का था, तीन रूम थे । भीतें मजबूत और मोटी ।"[1] उसमें - " दो बिना बाहों की कुर्सियाँ, एक स्टूल, एक चौकी"[2] भी थी । स्कूल में पढ़ने के लिए खास इस गाँव के ---"बीस एक लड़के"[3] भी थे, तथा आसपास के गाँवों से आकर "सत्तर के लगभग विद्यार्थी वहाँ पढ़ते थे ।"[4] वहाँ पढ़ने के लिए लड़कियाँ - "तीन ही चार"[5] आती थी । प्रति-दिन स्कूल आने-जाने के लिए लम्बी फुलवाड़ी के बीचोबीच, --- "मेहराबदार रास्ता"[6] था ।

3.4.12 आधुनिक शिक्षा

इस तरह शिक्षा एक ओर प्राचीनतम पद्धति पर अवलम्बित है, तो दूसरी ओर ग्रामीण शिक्षा आधुनिक पद्धति पर आश्रित है । उपन्यासकार ने संस्कृत पाठशालाओं के साथ-साथ सरकारी पाठशालाओं की ओर रतिनाथ की चाची, वरुण के बेटे, उग्रतारा, बलचनमा उपन्यासों में इंगित किया है । प्राचीन शिक्षा, पद्धति गाँव ही के उन विद्वानों के हाथों में सुरक्षित थी, जो अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली को बहिष्कृत रूप से देखा करते थे । आधुनिक शिक्षा की ओर लोगों का झुकाव इसलिए था, की उन्हें अच्छी सरकारी नौकरी मिलती थी । जिससे विद्यार्थी केवल अपना ही नहीं घर गृहस्थी के कार्य निर्माण में भी, यथा शक्ति सहयोग देता था ।

- -

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 132
2. " " पृ- 132
3. " " पृ- 132
4. " " पृ- 132
5. " " पृ- 132
6. " " पृ- 132

कृपया पृ- 155

अँग्रेजी शिक्षा केवल अभिजात वर्ग तक ही सीमित थी। गाँव के अभिजातीय युवक शहरों में जाकर इस शिक्षा को प्राप्त कर ऊँचे ओहदों पर पहुँच जाते थे। रूपउली गाँव में सबसे पहले --"जैनारायण के चाचा ने अँग्रेजी पढ़ी।------दूसरा आदमी था दुनाई का भाई जगमोहन, जिसने अँग्रेजी-पढ़ी-लिखी।"[1] अँग्रेजी के अतिरिक्त शिक्षा के अत्यन्त आधुनिक रूप से भी ग्रामीण पात्र परिचित है। गौरी नंदन इस बात से परिचित है कि --"मनी-आर्डर से फीस भेजकर घर बैठे डिप्लोमा मिल ही जायेगी।"[2] और वह ससुराल से -"हिंदी मैट्रिक मैट्रिक उठा लाया।"[3]

ग्राम अशांति का कारण,- आधुनिक शिक्षा के कुप्रभाव का चित्रण नागार्जुन ने बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में किया है। इस शिक्षा को प्राप्त कर युवक कृपण घमंडी तथा स्वार्थी बनता है। रूपउली गाँव के अभिजात वर्गीय कई युवक ऊँची शिक्षा प्राप्त कर शहरों में बड़े ऊँचे ओहदों पर विराजमान है। दुनाई पाठक का लड़का एम० ए० पास होकर - "इन्सपेक्टर या शिक्षा अधिकारी हो गया था।"[4] और जैनारायन का बेटा, सोहन इंजीनियर बन कर --"रेलवे वर्कशाप में चार सौ तनख्वाह पर लग चुका था।"[5] जब कभी ये गाँव घर आ जाते तो "मेहमानों की तरह बैठकों में विराजमान रहते।"[6] इतना ही नहीं इनका व्यवहार सभी के साथ अपरिचितों सा रहता, -"न किसी से कहा सुनी, न राम-राम, न नमस्ते।"[7] केवल इतना ही नहीं वे किसी के सामने झुककर बातें करना भी नहीं चाहते। गाँव के लोगों के साथ यहीं तक सम्बन्ध रखना चाहते है, जहाँ तक उन्हें किसी की जमीन जायदाद हड़पने का मौका प्राप्त होता है। बरगद को समाप्तकर सार्वजनिक भूमि को हड़पने

---

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 72
2. " नई-पौध पृ- 37 3. नागार्जुन : नई-पौध 76
4. " बाबा बटेसरनाथ पृ- 15
5. " " पृ- 15
6. व 7. " " पृ- 16

की बात भी इन्हीं बाबुओं की थी । बरगद बाबा के समक्ष के पेर इनका व्यवहार था --"चार दिन भी तो देहात में (तुम्हारा) जी नहीं लगता है -- फिर क्यों तुम गाँव वालों की जिन्दगी में यह उपद्रव खड़ा करना चाहते हो ?"[1] तथा -"बरगद का खात्मा करके वहाँ तुम कौन सी केमिकल फैक्टरी खड़ी करने जा रहे हो बाबू ?"[2] आधुनिक शिक्षा के प्रभाव से आतंकित हो गाँव के बुजुर्ग लोगों की यह धारणा बन गयी की --"पढ़ लिखकर लोग उद्भ्रांत हो जाते हैं, घर-बार की ओर से उन्हें वैराग्य हो जाता है और वे माँ-बाप का मखौल उड़ाने लगते हैं ।"[3]

आधुनिक शिक्षा प्राप्त युवकों का चित्रण नागार्जुन ने घमंडी स्वार्थी के रूप में किया है, जो गाँव में मेहमानों की तरह आते हैं और वहाँ के वातावरण को अशान्तमय बना जाते हैं ।

लड़कों की बात और है : लड़कियाँ अपनी चरम सीमा अर्थात विवाह के उपरान्त कुछ ऐसे मोड़ों पर आ टिकती हैं, जहाँ उनके लिए और रास्ता नहीं । वह या तो पति के हाँ में हाँ मिलाना अथवा पतिदेव से छुटकारा । उनके लिए शिक्षा का आकर्षण उसी तरह है, जिस तरह -- "पढ़ता सुग्गा--ग्राहक को अपनी ओर खींचता है, पढ़ती-लड़की काबिल दूल्हे को अपनी ओर खींचती है ।"[4]

---

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 114
2. " : " पृ- 114
3. " : हीरक जयन्ती पृ- 55
4. " : बलचनमा पृ- 134

शिक्षा प्राप्त लड़कियों के बारे में बुजुर्ग लोगों की यह धारणा है कि नारी शिक्षित होकर, बड़ों को, बाप दादों को तिरस्कृत करेगी। बुजुर्गों की इस विचारधारा का खण्डन उपन्यासकार ने किया है। स्त्री स्वभाव से नम्र है, पढ़ाई से वह और भी नम्र हो जाती है। इस अवस्था को उपन्यासकार ने वल्लभ ठाकुर की सुपुत्री नंदना उच्च शिक्षा प्राप्त कर भी स्वतंत्रनारी नहीं है, वह विवाह की जिम्मेदारी पिता पर ही डाल देती है -- जो भी आपकी मर्जी का दूल्हा होगा, मैं उसकी उपेक्षा नहीं करूँगी "[1]---।

शिक्षा, मध्यवर्ग तथा निम्न वर्ग के परिवारों के लिए "तीसरी आँख होती है।"[2] इसी के आधार पर वह उच्च वर्ग से संघर्ष करने में सफल होता है। आर्थिक रूप से पिछड़े होने के फलस्वरूप भी इस वर्ग के युवक तीक्ष्ण बुद्धि से हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने में प्रयत्नशील रहते हैं। उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए सरकार भी सहायता करती है, जिसकी ओर संकेत उपन्यासकार ने नई-पौध उपन्यास में किया है। वाचस्पति झा बाद्सन हाईस्कूल का प्रतिभाशाली और गंभीर छात्र था। उसे मैट्रिक तक लगातार -"पन्द्रह रूपये मासिक"[3] स्कॉलरशिप मिलता था।

शिक्षा, बड़ी जातवालों की "बपौती" न रखकर उपन्यासकार ने पाठशालाओं और स्कूलों के दरवाजे सभी वर्ग के लिए खोल दिये हैं। जिससे वर्ग-संघर्ष में कमी होने का अवसर प्राप्त होता है। मछुआरों में भी शिक्षा के प्रति जागृति फैलने लगी है। भोला का छोटा लड़का - "दसवीं कक्षा में इम्तिहान देकर इस वर्ष-ग्यारहवीं अर्थात् मैट्रिक फाइनल में आनेवाला था।[4]

---

1. नागार्जुन : हीरक जयन्ती पृ- 80
2. " : उग्रतारा पृ- 51 3. नागार्जुन : नई पौध पृ- 113
4. नागार्जुन : वरुण के बेटे पृ- 18

सामूहिक कुटुम्ब में सभी प्रकार के पढ़ाई की व्यवस्था होती है। बौखा पंडित के कुटुम्ब में --"गौरी मैट्रिक तक पढ़ा हुआ था अब होमियोपैथी के माथे पर अपना हाथ रखने जा रहा था। दुनाई टैंप में और बुदुर मध्यमा के द्वितीय वर्ष में था।"[1]

3.413 प्रौढ़ शिक्षा

जिस तरह बालकों के लिए संस्कृत शिक्षा का प्रचलन उपन्यासकार ने रतिनाथ की चाची उपन्यास में किया है, उसी तरह प्रौढ़ शिक्षा के लिए संस्कृत तथा हिन्दी का। पंडित बवुअन मिश्र व्याकरण और धर्मशास्त्र में निष्णात थे। लोगों का पतिया-प्रायश्चित लिखने के अतिरिक्त धार्मिक वाद विवादों का फैसला भी देने का कार्य करते। इसके अतिरिक्त मिश्रजी के पास --"बड़ी उम्र के छात्र ही पढ़ा करते।"[2] अतिरिक्त इसके निरक्षर चाची को साक्षर बनाने का उत्तरदायित्व रतिनाथ को है, जिसके कारण चाची --"बारह खड़ी सीखकर रामायण बाँचने लग गई है।"[3]

3.414 स्त्री शिक्षा

स्त्री शिक्षा के अनिवार्यता का स्पष्टीकरण उपन्यासकार नागार्जुन ने रतिनाथ की चाची तथा बलचनमा उपन्यासों में किया है। उनके विचारों से शिक्षा वह शस्त्र है, जो स्त्री के जीवन में किसी भी समय उसके काम आ सकता है। वह शिक्षा के माध्यम से अपनी भावनाओं को लिखकर आत्मीयजनों तक पहुँचा सकती है, जिससे समाज के अन्य लोगों को उसके रहस्यमय बातों का पता नहीं लग सकता। यह तभी संभव

---

1. नागार्जुन : नई पौध पृ- 86
2. " : रतिनाथ की चाची पृ- 34
3. " : " पृ- 98

होता है, जब स्त्री लिखना पढ़ना जानती है।---- ।

3) <u>अशिक्षित स्त्री की दुर्दशा</u>

अशिक्षित नारी की विवशता को नागार्जुन ने-"रतिनाथ की चाची" उपन्यास में व्यक्त किया है । चाची अनपढ़ है -- "बेचारी ने कई बार चिट्ठी लिखवाना चाहा मगर किससे लिखवाती ।"[1] ऐसी ही विवशता बलचनमा उपन्यास में रेबनी की है । बिमार माँ को देखकर बलचनमा दुखी हो जाता है । उसे इस बात पर क्रोध आता है कि रेबनी ने उसे नहीं बताया, लेकिन उसकी विवशता को जानकर बलचनमा दुःखी भी होता है -- "कसूर रेबनी का नहीं था ।--- लिखनेवाला नहीं मिला ।"[2]

किसी भी अनपढ़ स्त्री की विवशता चाची तथा रेबनी के माध्यम से प्रकट होती है । अनपढ़ नारी कितनी विवश है, की उसे अपनी भावनाओं को किसी अन्य के द्वारा लिखकर भेजना पड़ता है, या मौन रहकर तड़पना पड़ता है, और जब उस अनपढ़ स्त्री के प्रतिकूल समाज में वातावरण उत्पन्न होता है, तब उसके सामने वहीं समस्या उत्पन्न होती है, जो चाची के सामने उत्पन्न हुई । यदि चाची और किसी से लिखवाती तो उसके रहस्यों का उद्घाटन महाविस्फोट के रूप में हो गया होता, जिसे समाज कभी बर्दाश्त करने के लिए तैयार नहीं । इससे मिलती जुलती परिस्थिति बलचनमा उपन्यास में रेबनी की है । महापुरा गाँव में पढ़े-लिखे छोटे मालिक और बस्ती बाबू का छोटा भाई है । जिनके पास पत्र लिखवाने के लिए अनपढ़ लोग जाते हैं । छोटे मालिक के करतूतों से डरी हुई रेबनी पुनः उनके पास जाने की इच्छा नहीं रखती, और बस्ती बाबू के छोटे भाई अपने करतूतों के कारण बदनाम है । ऐसी परिस्थिति में रेबनी जैसी अनपढ़

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ-9, 2. नागार्जुन : बलचनमा पृ-139

लड़कियों को विवश होकर तड़पते रहना पड़ता है ।

"बाबा" के दृष्टिकोण में नारी चाहे विधवा हो या सधवा उसे जीवन के सभी क्षेत्रों में आत्मनिर्भर रहना चाहिए । आत्मनिर्भरता के लिए नागार्जुन नारी शिक्षा के महत्वता को प्रतिपादित किया है ।

नारी की दुर्दशा को देखकर उन्हें आत्मनिर्भर करने के लिए उपन्यासकार प्रयत्नशील है । उग्रतारा उपन्यास में शिक्षित नारी के द्वारा शिक्षा का प्रचार गाँवों में होता है । तथा शैक्षणिक चेतना धीरे-धीरे समग्र गाँव में फैलती है । नर्मदेश्वर की भाभी मैट्रिक तक पढ़ी लिखी है -- "यह भाभी अपनी जाति की ही नहीं बहुत सारी बहुओं-बेटियों की गुरुआइन थी ।"[1] गाँव की किशोरियों को पढ़ते देखकर रामेश्वरी जैसे अनपढ़ माँ में बेटी को शिक्षित करने की इच्छा जागृत हुई - "लड़की को अपर प्राइमरी तक शिक्षा दिलवाई ।"[2] दिगंबर जैसे भाइयों में बहनों को पढ़ाने की चेतना जागृत हुई । उसने कलन्दा को "बड़ी लगन से पढ़ा रहा था । प्राइवेट तैयारी से मिडिल करवा दी थी । आज कल साहित्य-सम्मेलन की प्रथमा का कोर्स ले लिया था, थोड़ी-बहुत अंग्रेजी भी चल रही थी ।[3] उपन्यासकार ने स्त्री स्वावलम्बन के सक्रिय प्रमाण भी कुंभीपाक उपन्यास में दिये हैं । उर्मिला की भाभी, रंजना ने तय कर लिया है कि निराश्रित इंदिरा को आत्मनिर्भर बनाने के लिए शिक्षा देनी होगी, "इन्दिरा बी.ए.करके ही पूरब की तरफ किसी शहर में पैर रखेगी ।"[4]

रतिनाथ की चाची, बलचनमा, नई-पौध उपन्यासों से ज्ञात होता है कि शैक्षणिक जागृति नारी में भी फैल गयी । नारी समाज

- -

1. नागार्जुन : नई-पौध पृ- 7 : 2. नागार्जुन : नई-पौध पृ-7
3. " : " पृ- 65 : 4. " : कुंभीपाक पृ- 112

शिक्षित होने लगा । शिक्षित होते हुए भी ग्रामीण युवतियाँ - साहित्यिक अभिरुचि में आस्था रखने के लिए विवश है, उनकी शिक्षा सीमित क्षेत्र तक बंधी हुई है । दिगम्बर के नाना नीलकंठ बाबू बहुत बड़े साहित्यिक है, उनकी पत्नी साक्षर होते हुए भी -"हनुमान चालीसा, नागलीला, दानलीला, घरेलू काज-परोजन के गीत मुसाइ ठाकुर की नाचारियाँ "[1] -- इनसे अधिक कुछ नहीं बाँचती थीं ।

ऐसे स्त्रियों के प्रति उपन्यासकार की स्वस्थ दृष्टि है । उनकी दृष्टि में स्त्रियों को केवल कौटोम्बिक संवर्धन में ही लीन नहीं होना चाहिए । उनका ज्ञान रचनात्मक [illegible] हो तथा अपनी आस्था के बलबूते पर उन्हें टिकना और डटे रहना चाहिए । स्वतंत्रता के पश्चात भी देश में ऐसे गाँव है, जहाँ शिक्षा की प्रथम किरण पहुँची ही नहीं, और देश नई तकनीक तथा वैज्ञानिक अनुसंधानों द्वारा विश्व के "प्रगतिशील राष्ट्रों" के साथ होड़ कर रहा है । जमनिया का बाबा उपन्यास का जमनिया गाँव इस प्रकार के गाँवों का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ- "आसपास कहीं पर स्कूल-कालेज नहीं थे । न किसी के हाथ में कभी कोई अखबार ही देखा और न किताब ही देखी ।"[2]

3.42 पुस्तकालय

ग्रामीण व्यवस्था को उन्नत दिशा की ओर ले जाने का एक मात्र मुख्य प्रयत्न शिक्षा है । शिक्षा एक ओर घरेलू व्यवहार से प्राप्त होती है, तो दूसरी ओर उस विद्या अथवा शिक्षा से जिसका संचयन करने लिए "पुस्तकालयों" की आवश्यकता होती है । नई पौध उपन्यास में पुस्तकालय के निर्माण का उल्लेख बाबा ने किया है । नौगछिया गाँव में

- -

1. नागार्जुन : नई-पौध पृ- 67
2. " : जमनिया का बाबा पृ- 9

पुस्तकालय का अभाव है, जिसे दूर करने के लिए "नमभारती" के युवकों ने —उगाँव में पुस्तकालय की स्थापना की थी । माँग-मूँगकर किताबें इकट्ठी की गई थी, दो-तीन अखबार भी आने लगे थे ।"[1] यह संकेत छोटे पुस्तकालय की ओर है । एक अन्य उपन्यास "उग्रतारा" में भी पुस्तकालय का उल्लेख मिलता है —"पड़ोस के गाँव में एक लायब्रेरी थी । वहाँ हजारों की संख्या में नये, पुराने उपन्यास तो थे ही पाँच-सात पत्रिकाएँ भी आती थीं ।"[2] जिनमें - "आर्यावर्त" और "आज" और "योगी" और साप्ताहिक "हिन्दुस्तान", नवनीत और सरस्वती और नई धारा "बालक", "किशोर" और "चन्दामामा" और "धर्मयुग" है ।[3]

3.4.21 समाचार पत्र

ग्रामीण जनता देश तथा विदेश में चल रही हलचलों से अनभिज्ञ नहीं है । गाँवों में विभिन्न राजनैतिक पार्टियों के समाचारपत्र आते हैं, जिन्हें पढ़कर या सुनकर वे समाज में चल रही गतिविधियों को जानते । गाँव में क्रांति, आज जैसे दैनिक समाचारपत्र पढ़नेवाले पाठक है, तो "जनशक्ति" जैसे साप्ताहिक अंक लेने वाले भी, तो कोई विभिन्न देशों के समाचार पत्र मंगानेवाले पुस्तकालय भी । बलचनमा के गाँव में कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा संचालित —"क्रांति"[4] रोज आता है । गाँव के अनपढ़ लोगों को कामरेड चन्दू पढ़-पढ़कर सुनाता है । रूपउली गाँव का वीरभद्र का भाई काशी से "आग"[5] मंगवाता था । केवल पुरुष ही नहीं स्त्रियाँ भी अखबार पढ़ने में रुचि रखती है । उग्रतारा उपन्यास में नमदेश्वर की भाभी —"आज"[6] लेकर बैठी थी । कांग्रेस पार्टी द्वारा संचालित दैनिक पत्रिका का उल्लेख वरुण के बेटे उपन्यास में हुआ है । ग्रामपंचायत के मुखिया गंगा सहनी के बैठकखाने

---

1. नईपौध - नागार्जुन - पृ- 9 2. नागार्जुन : उग्रतारा पृ-31
3. नागार्जुन : उग्रतारा पृ- 31 4. नागार्जुन: बलचनमा पृ- 194
5. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 80 6. नागार्जुन : उग्रतारा पृ- 86

में - "अंग्रेजी दैनिक राष्ट्रवाणी दिखाई पड़ने लगा ।"[1] दैनिक पत्रिकाओं के अन्तर्गत उपन्यासकार ने कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा संचालित नवराष्ट्र तथा आज पत्रिका का उल्लेख किया है, तथा कांग्रेस पार्टी द्वारा संचालित "राष्ट्रवाणी" का ।

3) समाचार पत्रों के कार्य

समाचार पत्रों के महत्वपूर्ण कार्यों की चर्चा, बाबा बटेसरनाथ, दुखमोचन तथा कुंभीपाक उपन्यासों में हुयी है । दूर-देहात में कहीं कुछ होता है तो उसकी खबर केवल देश में ही नहीं विश्व के कोने-कोने में फैल जाती है । तथा दुखमोचन जैसे कई जागरूक नागरिकों की निगाहें, मोटे-मोटे शीर्षकों पर दौड़ने लगी -- "पुलिस और छात्रों में भिड़न्त - ताप्ती नदी में अनोखी बाढ़, गोरखपुर जिले के बीसों गाँव जल मग्न - कोसी बाँध फिर संकट में -- गोआ में नरमेध - समूचे भारत में सत्याग्रहियों के जत्थे ----।"[2] केवल यहीं नहीं -- "बड़े अस्पताल में दवाओं की चोरी" --"डाक्टरों कम्पाउण्डरों-नर्सों-कर्मचारियों का भ्रष्टाचार।"[3] का भी उल्लेख समाचारपत्रों के माध्यम से होता है । रूपउली गाँव की ग्राम कमेटी के गतिविधियाँ - "अखबार के माध्यम से समूचे बिहार की वाणी पा गया है और जिले-जिले में थाने-थाने में मशहूरी हो उठा ।"[4] यही नहीं, समाज की प्रगतिशील गतिविधियाँ भी इसके माध्यम से व्यक्त हो पाती है । -"मैथिल विधवा की भूमिहार युवक से शादी"[5] की खबर ही, माया और कपिल के विचारों में परिवर्तन होता है । और जो व्यक्ति इस माध्यम का सही उपयोग जान ले उसकी शक्ति व्यर्थ नहीं जाती । टमका-कोइली गाँव में पहले मनी-आर्डर की रकमें महीना-महीना डेढ़-डेढ़

---

1. नागार्जुन : वरुण के बेटे पृ- 104
2. नागार्जुन : दुखमोचन पृ-20
3. " : दुखमोचन पृ-12
4. बाबा बटेसरनाथ पृ- 128
5. " : " पृ- 86

महीना रोक ली जाती थी, जिससे लोगों को कष्ट होता था । दुखमोचन ने "अखबारों के माध्यम से काफी हल्ला-गुल्ला मचाया, अब ठीक वक्त पर रुपये मिल जाते हैं ।"[1]

3.422 पत्र-पत्रिकाएँ

दैनिक पत्रिकाओं के अतिरिक्त गाँव में, विविध प्रकार के पत्र-पत्रिकाएँ "आर्यावर्त, अवंतिका, पुस्तकालय संदेश, सोवियत भूमि, अमेरिका रिपोर्टर, साप्ताहिक हिन्दुस्तान दैनिक आर्यवर्त के आठ-दस अंक"[2] दुखमोचन के घर आते हैं । अतिरिक्त इसके दयानाथ रूपउली गाँव जब कभी लैहेरिया सराया जाता है - जनशक्ति"[3] का अंक लाना नहीं भूलता ।

इस तरह ग्रामों फैली अज्ञानता को दूर करने का माध्यम उपन्यासकार ने शिक्षा के द्वारा बताया है ।

3.43 स्वास्थ एवं चिकित्सा

ग्रामों में चिकित्सालय का अभाव है । जिसके कारण ग्रामीण जनता को इलाज के लिए समीपस्थ शहरों में जाना पड़ता है । रूपउली गाँव की जनता लैहेरियासराय जाती है- "जहाँ पर एक अस्पताल सरकार की तरफ से खुल गया है ।"[4] मलाही-गोंढ़ियारी जनता के लिए - "देपुरा में जिला-बोर्ड की तरफ से एक अस्पताल था । एम.बी.बी.एस. डाक्टर, कम्पाउंडर, चपरासी - तीन का स्टाफ था ।"[5] तथा दूसरे डाक्टर थे - सतघरा के होमियोपैथी बिशंबर दास, उन्होंने -"एलोपैथी की भी टप्पा

- -

1. नागार्जुन : दुखमोचन पृ- 70 2. नागार्जुन : दुखमोचन पृ- 20
3. " : बाबा बटेसरनाथ पृ- 121
4. " : बाबा बटेसरनाथ पृ- 69
5. " : वरुण के बेटे पृ- 76

टॉइम चिकित्सा - आरम्भ कर दी थी ।"[1] शहरों में खुले अस्पताल के लिए ग्रामीणों की धारणा थी कि ये —"हिन्दुओं को भ्रष्ट करने के किस्तानी कारखाने है ।"[2] इसलिए ग्रामीण जनता छोटी-छोटी बीमारियों के इलाज के लिए शहरों में न जाकर घरेलू इलाज जैसे - "घाव लगने पर हल्दी"[3] का प्रयोग करना, खाँसी होने पर चाय पीना[4] संतप्त शरीर की गर्मी को दूर करने के लिए "हल्दी का चूरन तथा चावल के आटे से सैंकना[5], संग्रहणी रोग होने पर "दही और उबला हुआ बेल खाना[6], अजीर्ण होने पर -"दही और बेल खाकर शीतोपचार करना[7] करना जानती है । केवल इतना ही नहीं चींटी और बर्रे के काटने से उत्पन्न जलन को दूर करने के लिए लोहा छुने[8] के तथा बूंद भर मिट्टी के तेल[9] से मालिश करने का उल्लेख भी उपन्यासकार ने किया है ।

हल्दी का उपयोग औषधी के रूप में मनुष्य ही नहीं, वृक्षादि जड़ तत्व के लिए भी उपन्यासों में हुआ है । जानुराउत वटवृक्ष पर हुए बड़े घाव को देखकर -"चिकनी मिट्टी के चूरन में तेल-हल्दी मिलाकर - घाव पर गिली मिट्टी का मोटा पटर डेढ़ महीने तक बाँधता रहा, खोलता रहा — चार महीने के बाद घाव की जगह बिल्कुल भर गयी ।"[10] हल्दी जहाँ मनुष्य के घाव भरती है, तो दूसरी ओर तेल और हल्दी का मिश्रण पेड़ के घाव को भी कम करता है ।

---

1. नागार्जुन : वरूण के बेटे पृ- 76
2. " : बाबा बटेसरनाथ पृ- 69
3. " : दुखमोचन पृ- 104
4. " : बलचनमा पृ- 43, 133
5. " रतिनाथ की चाची पृ- 170
6. " रतिनाथ की चाची पृ- 164
7. " " पृ- 88
8. " रतिनाथ की चाची पृ- 4
9. " बलचनमा पृ- 78
10. " : बाबा बटेसरनाथ पृ-66

उपन्यासकार नागार्जुन ने मनुष्य के विविध रोगों के ग्रामीण उपचारों को रतिनाथ की चाची, बलचनमा तथा दुखमोचन उपन्यास में बताया है। उसी तरह वृक्षादी जड़ तत्वों के उपचार में भी निदान को प्रस्तुत किया है, वृक्ष के घाव का निदान तथा कड़ी धूप से वृक्ष को बचाने के उपचार से भी उपन्यासकार पूर्णरूप से परिचित है।

3.44 डाक व्यवस्था

कई गाँवों में डाक व्यवस्था का अभाव है। डाकखाने का प्रसार भी देश के सम्पूर्ण गाँवों में नहीं हुआ है, जिसके कारण पत्र डालने के लिए ग्रामीण जनता को दूसरे गाँव जाना पड़ता हैं या रेलवे स्टेशन पर स्थित "टोल"[1] में डालना पड़ता है। डाकखाना, गाँव के प्रतिष्ठित व्यक्ति के घर होता है, जिसकी ओर संकेत नागार्जुन ने किया है। टमका कोइली गाँव के पश्चिम दिशा में स्थित, मुन्शी पुलकितदास के "दालानवाले कमरे की दीवार से "डाकखाना" की तख्ती लटकी हुई थी। लाल-सुर्ख जमीन पर सफेद हर्फ। खम्भे से लेटर बाक्स लगा था।"[2] कमरे के भीतर मेज पर कागज बे-तरतीब पड़े थे। मुहरों के ठप्पे गन्दे दिखाई दे रहे थे। डाक के दो-तीन खाली थैले। लकड़ी की एक छोटी सी अलमारी। लोहे का छोटा सेफ।"[3] अतिरिक्त इसके "नेशनल - सेविंग्स के दो छोटे-छोटे पोस्टर दीवार से चिपके थे। कोने में ढिबरी और सील करने के लिए चमड़े की टिकिया पड़ी थी।"[4]

उपन्यासकार नागार्जुन डाक-व्यवस्था के बाह्य तथा आंतरिक व्यवस्था से पूर्ण रूप से परिचित है।

---

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 139
2. " दुखमोचन पृ- 67
3. " " पृ- 67
4. " " पृ- 67

3.45 न्याय एवं दंड व्यवस्था

ग्रामीण समाज में होनेवाले अपराधों उनसे सम्बन्धित मनोवृत्ति और न्याय एवं दण्ड व्यवस्था के प्रमुख उपकरण, पुलिस तथा जेल का विशद विवेचन नागार्जुन के उपन्यासों में मिलता है। विशेषकर उग्रतारा उपन्यास इसी पर केन्द्रित है। स्त्रियों द्वारा किये जानेवाले अपराधों, जेल में उनकी दुर्दशा और आश्रम तथा मठों के नाम पर पलनेवाले भ्रष्टाचार का वर्णन कुंभीपाक, तथा जमनिया का बाबा उपन्यास में हुआ है।

3.451 सामाजिक अपराध

समाज में होनेवाले अपराधों में, विशेषकर फौजदारी अपराधों तस्करव्यापार, मारहानी तथा अपहरण का विशद चित्रण जमनिया का बाबा, दुखमोचन तथा उग्रतारा उपन्यासों में हुआ है।

3.4511 तस्कर व्यापार

जमनिया का बाबा उपन्यास में "मठ" की स्थापना का शिलान्यास तस्कर व्यापार के आधार पर हुआ है। "मठ" तस्कर व्यापार का छोटा-मोटा अड्डा ही है।—"घड़ियाँ, फाउण्टेनपेन, ट्रांजिस्टर, टेपरिकार्डर, रेशमी, ऊनी माल, शुद्ध सोने की अँगूठियाँ, टार्च, लाइटर, कैमरे और जाने क्या क्या वस्तुएँ मठ की भगत-मंडली के लिए सुलभ है।"[1] इसके अतिरिक्त वहाँ के "बाबा" तथा उनके चेला मस्तराम की मानसिकता हिंसात्मक होने के नाते, उनका सम्बन्ध भी इसी फौजदारी न्याय व्यवस्था के साथ है। एक अन्य तस्कर व्यापार के घटना का उल्लेख दुखमोचन तथा

1. नागार्जुन : जमनिया का बाबा पृ- 104

हीरक जयन्ती उपन्यास में हुआ । गोपी वल्लभ ठाकुर -"गांजे के अवैध व्यापार के अन्यतम हीरो है ।"[1] यह व्यापार देश में ही नहीं विदेशों में भी होता है । भारत में "बंदोसी" तथा समीपस्त "नेपाल" में इसके केन्द्र है । सरकार द्वारा यह अवैध घोषित होने पर भी तस्कर तथा सरल रीति से "धन बनाने" वाले उच्चवर्गीय समाज द्वारा इस व्यापार को प्रोत्साहन मिलता है । उपन्यासकार ने इस व्यापार की गंदगी को केवल व्यापारियों तक ही सीमित न रखकर उसे मंत्रियों के सुपुत्रों तक पहुंचा दिया है --"पचपन मन नेपाली गांजा कोई मामूली माल नहीं था, हिन्दुस्तान में उसकी कीमत दो लाख रुपये थी --"बाबूजी के सुपुत्र श्री नगेन्द्रनारायण सिंह ने बहुत बड़ा शिकार किया था ।"[2]

तस्कर व्यापार की घटना भी इसी फौजदारी से सम्बन्धित है । उपन्यासकार ने "जमनिया" का बाबा" उपन्यास में जिस अपराध का बीज बोया है, वह बीज अपनी अंतिम अवस्था का रूप हीरक जयन्ती में, तस्कर व्यापार की घटना को प्राप्त होता है ।

3.4.5.12 अपहरण

उग्रतारा उपन्यास में उगनी को भगाने वाली घटना -"क्या तुम भीमनसिंह के रहनेवाले ... कलीमुल्ला थे" ?[3] भी फौजदारी के अन्तर्गत ही है ।

---

1. नागार्जुन : दुखमोचन पृ- 57 नागार्जुन : हीरक जयन्ती पृ- 17
2. " : हीरक जयन्ती पृ- 142
3. " : उग्रतारा पृ- 92

9.452 पुलिस व्यवस्था

शासन को सुचारू रूप से चलाने के लिए राज्य को पुलिस की आवश्यकता होती है। पुलिस व्यवस्था का विशद वर्णन नागार्जुन ने बाबा बटेसरनाथ, हीरक जयन्ती तथा वरुण के बेटे तथा कुंभीपाक उपन्यासों में किया है। अध्ययन की सुविधा के लिए इसे 1. स्वतंत्रता पूर्व पुलिस व्यवस्था तथा 2. स्वातंत्र्योत्तर पुलिस व्यवस्था के अन्तर्गत विभाजित किया जाता है।

स्वतंत्रता पूर्व देश में पुलिस दो वर्गों में विभक्त थी। देशभक्त पुलिस तथा अधिकार स्वतंत्रता संग्राम में, नौकरियाँ छोड़कर राष्ट्रीय आन्दोलन में कूद पड़े थे। लेकिन कुछ ऐसे भी पुलिस अधिकारी हैं, जो पदोन्नति की आशा से देशवासियों के खिलाफ कार्य कर रहे थे। रूपउली गाँव का स्वार्थी दरोगा भिम्मा देशभक्त दयानाथ को हथकड़ी पहनाते हुए कहता है --"अपने पेट के कारण मैं मजबूर हूँ। अपना देश किसे प्यारा नहीं होता ? सरकारी आर्डर के मुताबिक ही मैं इन्हें अरेस्ट किया है इसमें मेरा अपना कोई कसूर नहीं।"[1] भिम्मा उन सभी देशद्रोही पुलिस अफसरों का प्रतिनिधित्व करता है, जो अँग्रेजों के निष्ठावान सेवक हैं।

अ. स्वातंत्र्योत्तर पुलिस व्यवस्था

स्वातंत्र्योत्तर भ्रष्ट पुलिस व्यवस्था का वर्णन उपन्यासकार ने बाबा बटेसरनाथ तथा जमनिया का बाबा उपन्यास में किया है। पुलिस विभाग विभाग की नैतिकता तथा चरित्र से, राज्य व्यवस्था का मूल्यांकन

---

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 87

किया जाता है । जमनिया का बाबा उपन्यास में भरतपुर का थानेदार खादुल्ला खाँ उस राज्य व्यवस्था का प्रतीक है, जो न्याय के पथ को छोड़कर अनैतिकता के मार्ग को अपनाता है। मठ में हुई हत्याकांड की सच्चाई का पता लगाने के लिए उसकी नियुक्ति होती है। भगौती उनके कामुक चरित्र को जानकर तथा मठ की सच्चाई पर पर्दा डालने के लिए "खुद ही गौरी को साथ लेकर थानेदार की सेवा में पहुँच जाता है। दोनों चार दिन भरतपुर रहे, पाँचवें दिन खुशी-खुशी लौट आए।"[1] पुलिस रेकार्ड में सत्य घटना के स्थान पर असत्य घटना का अंकन होता है। जिसके फलस्वरूप लक्ष्मी को पगली ठहराया जाता है। अतिरिक्त उसके थानेदार साहब से यह भी प्रार्थना की जाती है कि-"उन गुण्डों पर कड़ी निगरानी रखें --- जो जमनिया मठ की जायदाद को नुकसान पहुँचाना चाहते हैं।"[2] उपन्यासकार ने यथार्थ स्थिति का अंकन किया है।

3.4.5.2 दण्ड विधान

विविध प्रकार के अपराधों को दण्ड देने की व्यवस्था भी उपन्यासकार ने की है। गाँजा की तस्करी करने के अपराध में रामसागर को पुलिसवालों ने-"मधुबनी जेल की हाजत में पहुँचा दिया।"[3] छोटी अदालत ने -x x x तीन हफ्ते सादी कैद की सजा का फैसला सुना दिया है।"[4] तथा लड़की को भगाने के अपराध में कामेश्वर को "साल छै महीने जेल के अन्दर भी रहना पड़ सकता है।"[5] तथा उग्रतारा को घर से भाग आने पर --"महीने भर की सादी सजा"[6] का उल्लेख भी हुआ है।

1. नागार्जुन : जमनिया का बाबा पृ- 90
2. " " पृ- 90
3. " दुखमोचन पृ- 57
4. " दुखमोचन पृ- 57
5. " जमनिया का बाबा पृ- 86
6. " उग्रतारा पृ- 24

अतिरिक्त इसके हत्या के अपराध में -"फाँसी की सजा" का विधान भी उग्रतारा उपन्यास में उल्लेखित है । स्त्री हत्यारी होने से -"फाँसी पर नहीं लटकी ।"[1] इससे ज्ञात होता है कि विविध प्रकार के दण्ड विधान से नागार्जुन पूर्ण-रूपेण परिचित है ।

3.4.5 अपराधियों के सुधार का केन्द्र : जेल

जेल - "अपराधियों को केवल सुधारे की दृष्टि से बनाये जाते है ।"[3] जिसका समाज में महत्वपूर्ण स्थान है ।

3.4.5.1 जेल के विभिन्न प्रकार

जेल के विभिन्न प्रकार के अन्तर्गत - सेण्ट्रल जेल[4], डिस्ट्रिक्ट जेल[5] तथा हवालात[6] की विवेचना उपन्यासकार ने जमनिया का बाबा तथा उग्रतारा उपन्यासों में की है । लम्बी सजाओं के अपराधियों को रखे जानेवाले सेंट्रल जेल तथा हर तरह के अपराधियों को रखे जाने वाले "डिस्ट्रिक जेल" का उल्लेख उग्रतारा उपन्यास में हुआ है । डिस्ट्रिक जेल के लिए "हवालात" शब्द का उल्लेख जमनिया का बाबा उपन्यास में हुआ है --"सत्ताइस साल पहले भी आठ-दास रोज के लिए यह शरीर हवालात के अन्दर बंद रहा था ।"[7]

- -

1. नागार्जुन : उग्रतारा पृ- 23
3. गोरखनाथ चौबे : आधुनिक भारत शासन पृ- 362
4. नागार्जुन : उग्रतारा पृ- 78
5. " " पृ- 23
6. " जमनिया का बाबा पृ- 6
7. " जमनिया का बाबा पृ- 6

जेल के नियम अत्यन्त कठोर हुआ करते है, अपराधियों को जिस तरह जेलर की आज्ञा का पालन करना पड़ता है, उसी तरह जेलर को न्याय व्यवस्था के अधिकारियों द्वारा प्राप्त सूचना को अमल में लाने के लिए तैयार रहना पड़ता है । न्यायाधीश ने आदेश दिया और बाबा के बाल घुटवा दिये गये --"अब उन जटाओं का कोई निशान बाकी नहीं है ।"[1]

न्याय व्यवस्था के सामने सभी मनुष्य समान है । नागार्जुन ने अपनी श्रद्धा तथा विश्वास न्याय तथा न्यायाधीश के प्रति उपन्यास में दी है ।

सजायाफ्ता अपराधी को सरकार किसी भी तरह का काम दे सकती है, जेल में मेहनत करना उन अपराधियों के लिए सख्त है, जिन्हें न्यायपालिका द्वारा सजा मिल चुकी । बाबा मस्तराम से कहते हैं - "सजा हो जाय तो हम लोग भी दूसरे कैदियों की तरह सरकार बहादुर का कुछ काम कर दिया करेंगे ।"[2] असन्तुलित मानसिक चिन्तन के कई प्रमाणों को उपन्यासकार ने प्रस्तुत किया है - एक प्रमाण अपराधी की अवस्था का भी संकेत नागार्जुन ने दिया है । बाबा को ज्ञात था कि वे अपराधी है और उन्हें सजा अवश्य होगी, इसी बुनियाद पर वे अपनी अंतिम सजा भोगने की आस्था को बतला रहे थे ।

3.455 जेल की आन्तरिक व्यवस्था

जेल की आन्तरिक व्यवस्था के अन्तर्गत पुस्तकालय, रसोइया तथा सेवक, भोजन, मंदिर तथा स्वास्थ्य की विवेचना जमनिया का बाबा तथा उग्रतारा उपन्यासों में हुई है ।

---

1. नागार्जुन : जमनिया का बाबा पृ- 1
2. " : जमनिया का बाबा पृ- 16

जेल के नियमित जीवन में खाना, सोना, नित्यकर्म इत्यादि कार्यों के लिए निश्चित समय निर्धारित होते हैं। कैदियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए तरह-तरह की कलाएं सिखाई जाती है, तथा ज्ञान वृद्धि के लिए पुस्तकालय की भी व्यवस्था रहती है।

1. पुस्तकालय

इसका उल्लेख नागार्जुन ने जमनिया का बाबा उपन्यास में किया है। जेल का छोटा बाबू कहता है -- "आपके लिए वह अखबार लाइब्रेरी से मँगवा लेते।"[1]

लाइब्रेरी में पुस्तकों के अतिरिक्त समाचार पत्रों की व्यवस्था भी होती है।

2. रसोइया तथा सेवक

बड़े जमादार की इच्छा से किसी भी कैदी को रसोइया, दास, सेवक आदि बनाया जाता है। उग्रतारा उपन्यास में इसकी विवेचना करते हुए उपन्यासकार कहते हैं --"यह रसोइया भी कैदी था, साथ ही सेवक भी, बड़े बाबू की सेवा में बड़े जमादार की तरफ से नियुक्त था।"[2] एक अन्य उपन्यास जमनिया के बाबा में भी सेवक का उल्लेख मिलता है। प्रतिष्ठित कैदियों के अतिरिक्त मिल मजदूर के सेवा के लिए भी पुराने कैदी की नियुक्ति की जाती है। ख्वालात में बंद चीनी मिल के हड़ताली मजदूरों की सेवा के लिए पुराना कैदी - "उनके वार्ड में तैनात रहता है।"[3]

---

1. नागार्जुन : जमनिया का बाबा पृ- 47
2. " उग्रतारा पृ- 18
3. " जमनिया का बाबा पृ- 49

3. भोजन

कैदियों को दिये जानेवाले भोजन का उल्लेख करते हुए नागार्जुन कहते हैं, कैदियों को जीवित रखने के लिए ही भोजन दिया जाता है, महँगा अनाज, महँगी सब्जी आदि का अभाव ही रहता है। जमनिया का बाबा जब से जेल में बंद है, तब से उन्हें –"जेल का खाना चला, गोभी नजर नहीं आई।"[1] कैदी अपनी सभी इच्छाओं का दमन कर --"जैसे-तैसे वक्त गुजारने"[2] के लिए मजबूर हो जाते हैं।

4. मंदिर

इसका उल्लेख सामूहिक पूजा गृह के अन्तर्गत किया गया है।[3]

5. संतों की आवभगत

जमनिया के बाबा उपन्यास में नागार्जुन ने यह स्पष्ट रूप से विवेचित किया को देश में श्रद्धालु भक्तों की कमी नहीं है। अनपढ़,पढ़े-लिखे, ग्रामीण, नागरिक सभी जन साधु-संतों, सिद्धों, बाबाओं को देखकर उनकी ओर आकर्षित होते हैं। "बाबा" [जमनिया का बाबा] जिस समय जेल के चार दीवारी में पहुँचे, श्रद्धालु भक्तों का तांता भी वहाँ उनके साथ जुड़ा रहता है, बाहर अपने मठ में जिन करामती करिश्मों का दिया, वे जला चुके थे, उसका असर उनके साथ जेल की चार दिवारी में भी पहुँच गया था —"जीजाएँ देखने के सैकड़ों उम्मीदवार यहाँ जेल के अन्दर भी

---

1. नागार्जुन : जमनिया का बाबा पृ- 46
2. " " " " पृ- 43
3. देखिये इस शोध प्रबंध का ग्राम : धार्मिक संदर्भ पृ- 257 - 259

मौजूद हैं। वे अधिकारियों में भी हैं, सिपाहियों में भी हैं, कैदियों में भी हैं।"[1] इस तरह के प्रपंच का निर्माण जेल के भीतर भी हो रहा है। श्रद्धालु भक्तों के कारण बाबाओं के लिए हर वस्तु की प्राप्ती अनायास ढंग से हो जाती थी —"जाड़े का मौसम आने पर भक्तों ने दो कम्बल चादर से भिजवा दिए हैं। ऊनी अलफी भी आ गई है। ——हिरन की खाल के जूते भी आ गये हैं। पीतल का नइ चमकदार कमण्डल भी आ गया है। हाथी-दांत के मनको की माला भी आई है। मृगछाला भी पहुँच गयी है।"[2] इस तरह जेल में मंगरा तथा जेल में हाथी-हाती बात अनिवार्य हो रही थी। केवल नौकर-चाकर ही नहीं; जेल के बड़े अधिकार भी इन सिद्धों के साथ अपनी सहानुभूति प्रकट करते हैं। बड़ा जमादार खुद आकर बताता गया है — "साहब आप पर बड़े खुश थे। कह रहे थे, किसी ने बेचारे साधु को फँसा दिया है।"[3] वास्तव में बाबा अपराधी था, बाबा के अपराध को विविध सिद्धि प्राप्त घटनाओं ने छुपाकर रख दिया था। वहाँ के सभी नौकर-चाकर बाबा से दयादृष्टि प्राप्त करने के लिए उतावले हैं, "पल्टीधार बड़े जमादार ने हमारा साथ दिया, यहाँ तक कि झुककर ठहाके भी लगाते रहे।"[4] जेल के कर्मचारियों से सहानुभूति प्राप्त होने से सिद्धों की श्रेणी का दर्जा और बढ़ जाता है और उन्हें वह सभी सहूलतें प्राप्त होती हैं जिन्हें राजनीतिक अपराधी अपनी सुरक्षा के लिए प्राप्त करते हैं। बाबा —"आप शाम तक पोलिटिकल वार्ड वाले कॉटेज में चले जायेंगे। उसमें दो बड़े-बड़े कमरे हैं, बरामदा है और छोटी-छोटी तीन कोठरियाँ अलग हैं —— पखाना है, नहाने की कोठरी है। आगे आँगन है पीछे बगीचा है।"[5] बाबा के लिए

---

1. नागार्जुन : जमनिया का बाबा पृ- 5
2. " : " " पृ- 13
3. " : " " पृ- 15
4. " : " " पृ- 20
5. " : " " पृ- 44

आराम ही आराम था। जेल जाना नहीं, यह उनके लिए मठ ही है।

घर गृहस्थी के सभी सामान बाबा को अपने साथ रखने की अनुमति मिल गयी थी, कारण उनकी अपनी एक मात्र सिद्धि है। बड़े जमादार ने कहला भेजा था कल-"पीतल की कमंडल और कंबलवाली [illegible] आसनी चाहे तो अपने पास रख सकते हैं।"[1] जेलर-जमादार सभी बाबा से सहानुभूति प्राप्त करने में एकाग्रचित्त होकर काम किया करते थे।

उपन्यासकार ने अपराधी किस तरह अपने अपराधों से बचने का प्रयत्न करते हैं - इसका उल्लेख किया है। लोगों की आँखों में धूल झोंककर बाबा कहलानेवाले सिद्ध किस तरह व्यवहार कुशल होता है, इसका प्रमाण भी उपन्यासकार ने दिया है, जमनिया के बाबा ने किस तरह अपनी आस्था को बनाये रखने का प्रयत्न किया इसकी विवेचन भी इस उपन्यास में हुई है।

5. स्वास्थ्य

जेल व्यवस्था का एक मुख्य अंग स्वास्थ्य व्यवस्था भी है, उपन्यासकार ने स्वास्थ्य व्यवस्था के लिए जिन प्रमाता तथा प्रमेयों को चुना है, यह प्रमाण के आधार पर ही है; यहाँ प्रमाता हुआ भंगी और प्रमेय हुआ -- गंदगी की सफाई। जेल में ---"दूसरी जातियों के कैदी सब कुछ करेंगे, पाखाने नहीं साफ करेंगे तो अक्सर मेहतरों के अभाव में यहाँ सफाई का काम रुक जाता होगा।"[2] उपन्यासकार ने निचली जाति के प्रति हुए उन सभी अपराधों को घोषित किया है, जिनके मिटने से

---

1. नागार्जुन : जमनिया का बाबा 146
2. " : " 30-31

समाज में अवश्य सुधार हो सकता है । भंगी, मेहतर, आदिवासियों के सुधार की कल्पना उपन्यासकार के हर दृष्टिकोण में [redacted] व्याप्त है । जेल में --"भंगी-मेहतर न हुआ तो दबाव डालकर आदिवासी से भी सेवा का यह काम लिया जाता है ।"[1] जेल की सफाई में जिस तरह भंगी तथा मेहतर का स्थान है, उसी तरह आदिवासी के स्थान को भी उपन्यासकार ने स्वीकार किया । यूं तो जेल के दफ्तर में चार्ट बना होता है -- "उसमें मेहतरों, मालियों, रसोइयों, कहारों की सजा की अवधि, छूटने की तारीख आदि के बारे में लिखा रहता है ।"[2] शहरों और थानों की छोटी-बड़ी कोतवालियों के दफ्तर भी इस बात का पता रखते हैं । गिरफ्तारी के बाद ही अपराधियों को [redacted] निकटवर्ती शहरों की जेलों में भेज दिया जाता है -- "छोटी जाति वालों और आदिवासियों पर खास निगाह रखी जाती है ।"[3] कार्य-पालिका द्वारा किये गये त्रुटियों का अंकन जमनिया का बाबा उपन्यास में हुआ है, पुलिस, न्याय तथा जेल के त्रिकोणात्मक सम्बन्ध को इस घटना में अंकित किया है । जेल के बाहर निकलते ही किसी न किसी तरह उसे फिर जेल के भीतर भिजवा दिया जाता है । यह कार्य-पालिका की महान त्रुटि है, इसका संकेत उपन्यासकार ने जमनिया का बाबा [redacted] उपन्यास में किया है । न्याय-पालिका का कार्य तथा सरकार की व्यवस्था के त्रुटियों का अंकन इस घटना में हो पाया है ।-"कोई जरूरी है कि भंगी-मेहतर हमेशा नियमित तौर पर अपराध करते चलें और गिरफ्तार होकर नियमित तौर पर पाखाने की सफाई के लिए जेल के अन्दर रहा करें ।"[4] नहीं, फिर भी प्रत्यक्ष प्रमाण इसके कुछ

- -

1. नागार्जुन : जमनिया का बाबा पृ- 3।
2. " : " पृ- 3।
3. " : " पृ-3।
4. " : " पृ- 3।

विपरीत है, किसी न किसी अपराध में भंगी तथा मेहतर को फँसाकर उसे जेल की चार-दीवारी में भेजा जाता है, यह प्रमाण सत्य है। उपन्यासकार ने जिन सामाजिक त्रुटियों को जनता के समक्ष प्रस्तुत किया है, उनमें उपरोक्त घटना भी एक है।

3.456 जनाना वार्ड

अपराध और दण्ड स्त्री और पुरुष दोनों के लिए समान है, जिस तरह अपराधी पुरुषों को जेल भिजवाने की व्यवस्था न्याय-पालिका द्वारा होती है, उसी तरह की व्यवस्था स्त्रियों के लिए प्राप्य है। उपन्यासकार ने जेल के स्त्री विभाग की विवेचना भी जमनिया का बाबा उपन्यास में की है। " जनाना वार्ड में कुल मिलाकर सात-आठ केबिन हैं।"[1] अपराधियों की श्रेणियों का भी वहाँ विभाजन है - "एक पगली है ------ उसे सेल के अन्दर बन्द रखा गया है "[2]------ पागल-खाने के अतिरिक्त अपराधी पागलों के लिए जेल के भीतर भी जगह रहती है। पागल के लिए जिस तरह जेल खाना है, उसी तरह अपराधी पगलियों के लिए भी एक और "जनाना वार्ड" का उल्लेख उग्रतारा उपन्यास में हुआ है। रतनपुर डिस्ट्रिक्ट जेल में जनरल वार्ड है --"जनाना वार्ड की तरफ जो रास्ता गया उसकी हालत अच्छी नहीं है।"[3] जनाना वार्ड में - "छोटे-छोटे तीन कमरे थे। पहला खाली था, बाकी कमरों में पाँच-छः औरतें थीं।"[4] उनमें कोई "पति की हत्या कर आयी थी और वह -"सेण्ट्रल जेल भेजी जानेवाली थी।"[5] तो कोई घर से भाग जाने के अपराध में कैद थी और उसे --"महीने भर की सादी सज़ा थी।"[6]

---

1. नागार्जुन : जमनिया का बाबा पृ- 17
2. " : " पृ- 17
3. " उग्रतारा पृ-23
4. " उग्रतारा पृ- 23
5. " उग्रतारा पृ- 23 6. नागार्जुन : उग्रतारा पृ-24

अ. महिला वार्डर

जेलों में "जनाना वार्ड" की अन्दरूनी देखभाल की जिम्मेदारी "महिला कैदी वार्डर" की है । लेकिन "रतनपुर" जैसे "डिस्ट्रिक्ट जेलों" में जहाँ महिला कैदियों का अभाव-सा रहता है, वार्डर के न होने से अथवा बीमार रहने से भभिखन सिंह जैसे प्रौढ़ भात सिपाही को,"जनाना वार्ड" के —"कैदियों की देखभाल के लिए आगे कर देते हैं " ।[1] नतिजा यह होता है कि भभिखन सिंह जैसे उदार हृदयवाले ब्रह्मचारी सिपाही वार्डर के कहने पर "उड़ाऊ माल"[2] को अपनाने के लिए तैयार हो जाते हैं । इसतरह जेल, केवल सुधार का केन्द्र न होकर नारी कल्याण का भी केन्द्र है । जनाना वार्ड के कैदियों की दुर्दशा की विवेचना जमनिया का बाबा तथा उग्रतारा उपन्यास में हुई है । जेल के अन्दर "जनाना वार्ड" में पानी की बेहद किल्लत है --"किसी तरह पीने भर को पानी मिल जाता है ।"[3] पानी के अभाव में कैदियों को कई दिनों तक नहाना असम्भव था, जिससे उन्हें कई प्रकार के रोग होते थे, तथा सिर जुओं के जंगल से ग्रस्त होता था । जुओं से छुटकारा कैदियों को "सेण्ट्रल जेल" जाने पर ही मिलता था -"सेण्ट्रल जेल का डाक्टर ---- थाली समझदारी का भी परिचय दे तो इस औरत को जुओं से छुटकारा मिल जायेगा ।"[3 क] या बालों को कटवाने से ही जुओं से मुक्ति मिल सकती है -"दस साल बाद रिहा होगी तो अपना शौक सिंगार कर लेगी, चार: छ: महीने में बाल फिर बढ़ा लेगी ।"[4] जुओं से छुटकारा पाने में उपन्यासकार की सम्मति डाक्टरी इलाज में, तेल-साबुन के इस्तमाल में न होकर बाल कटवाने में ही है ।

1. नागार्जुन : उग्रतारा पृ- 25
2. " : उग्रतारा पृ- 25
3. नागार्जुन : जमनिया का बाबा पृ-65
3क. " : उग्रतारा पृ- 78
4. नागार्जुन : उग्रतारा पृ- 79

3.46 सामाजिक भ्रष्टाचार

व्यक्तिगत स्वार्थों का टकराव सामाजिकता के तंत्र को भंग करता है । ये व्यक्तिगत स्वार्थ जातिगत विद्वेष, साम्प्रदायिक वैमनस्य आदि का रूप लेकर अनेक प्रकार की बुराइयों को जन्म देती है । आधुनिक राजनीति ने इन बुराइयों को आश्रय ही दिया है । जैसे ग्रामीण समाज में जातिगत आधार पर होने वाली गुटबंदी, चुनाव, पार्टीबंदी, ग्रामीण अनुशासन में महत्वपूर्ण पदों को लेकर चलनेवाला संघर्ष इन पदाधिकारियों को भ्रष्टरूप, धर्म के नाम पर चलनेवाला व्यभिचार, ग्रामीणों के श्रद्धा का शोषण, स्त्री का शोषण और उससे पनपते अपराध आदि का एक लम्बा ब्यौरा नागार्जुन देते हैं । जो अपराध प्रमाणित होते हैं, उनके लिए पुलिस और जेल है, किन्तु धर्म और आदर्श का मुखौटा पहनकर चलनेवाले अपराधियों का न्याय कौन करें ? यह सामाजिक रीति-नीति को खोखला करनेवाले गुप्त कीट है ।

इस भ्रष्टाचार को कई स्तरों पर नागार्जुन उठाते हैं । चाहे वह दलाल[1] हो, या घटक[2] या दफ्तर का क्लर्क[3] या बाबा[4] या पंडा[5] अथवा आश्रम[6] के नाम पर चलनेवाला भ्रष्टाचार का लम्बा सिलसिला ।

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 102
2. -"- : नई पौध पृ- 18, 31, 61, 70, 73
3. " : " पृ- 97
   : हीरक जयन्ती पृ- 109
4. धार्मिक संदर्भ -1 : विस्तार के लिए देखिए ग्राम धार्मिक संदर्भ पृ. 278-80
5. नागार्जुन रतिनाथ की चाची पृ- 80
6. " कुंभीपाक पृ-117

3.17 आश्रम : सामाजिक भ्रष्टाचार का उग्र रूप

नागार्जुन के जमनिया का बाबा तथा कुम्भीपाक उपन्यासों में मठ तथा महन्तों का आश्रम तथा आश्रमदाताओं का जितना स्पष्ट वर्णन हुआ है, हिन्दी के उपन्यास साहित्य में इस प्रकार का वर्णन निश्चित ही दुर्लभ है । आश्रम तथा आश्रमदाताओं का संबंध उच्चकुलीन अभिजात वर्ग से है । कुंभीपाक उपन्यास में इसका उल्लेख हुआ है । राय साहब-"आर्य समाजी संस्कारों के धर्मभीरु सज्जन थे । संस्थाओं को उदारता-पूर्वक दान देते रहते थे । परिवार के कई स्त्री-पुरुष शिक्षित थे । संपत्ति तो थी ही, अब आधुनिकता भी प्रवेश कर रही थी ।"[1] आधुनिकता से तात्पर्य उस वासनामय "काम" से है, जिसका सम्बन्ध अतृप्त धारणाओं से है । सम्पत्ति के आधार पर वे अपनी सभी बुराइयों को छिपाने में "सफल" सिद्ध हुए है । उनका कहना था कि —"मेरे नाम पर कौन कहाँ क्या करता है, मुझे बिल्कुल पता नहीं चलता । — मैं तो जीवन भर इसी सूत्र को मानकर चला हूँ कि आप भला तो जग भला ।"[2] भलाई से तात्पर्य स्वयं की इच्छापूर्ति और इस इच्छा पूर्ति का मूलाधार स्तम्भ "धन" ही है ।

वास्तव में "आश्रम" आश्रम में रहनेवाली स्त्रियों के दृष्टिकोण में कुछ और ही है । भुवा इस कथ्य से पूर्ण रूप से सहमत है - "इस आश्रम" शब्द से मैं बहुत घबराती हूँ । रही होगी इसके पीछे कभी कोई अच्छी भावना, अब तो ये आश्रम अनैतिकता के अड्डे हैं - स्वार्थियों के अखाड़े ।"[3] स्त्री अपने जीवन में जब इन अखाड़ों में पदार्पण करती

---

1. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 117 2. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 118
3. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 118

है, तब उसका एक विकराल रूप "आधुनिक धर्मशाला" से कम नहीं होता । स्त्री की सुरक्षा के लिए विविध प्रकार से, तथा विविध नामों की "सेवा-समिति, विधवाश्रम, अनाथाश्रम, महिलाश्रम, हितकारिणी सभा"[1] संस्थाएँ बनीं --उनमें से एक-दो संस्थाएँ जिन्दा है गुटबाज़ लोग गीधों की तरह उन्हें नोच-नोचकर खा रहे हैं ।"[2] स्वार्थी तथा "काम" के नारकिक चरित्रहीन लोगों के इन अखाड़ों में न जाने कितने स्त्रियों ने अपनी जीवन की आहुति दी है ।

आश्रमों में होता क्या है ? नारी का उद्धार, समाज का कल्याण, जन-जीवन की महत्ता कुछ भी नहीं ---"तो क्यों औरतें बिकती है - वहां ? "[3] स्वार्थी, "अतृप्त काम"- वासना से परिप्लावित मनुष्य अपनी स्वार्थ साधना के लिए, अतृप्त काम वासना की तृप्ती के लिए इन आश्रमों को जीवन प्रदान करता है । उसका बहुत बड़ा हाथ रहता है इसके सहयोग में । इन विचारों से नागार्जुन सहमत है । इतना ही नहीं ---"लड़कियों और औरतों की खरीद-बिक्री जिनका धन्धा है"[4] वे ही स्वार्थी लोग इन आश्रमों के निर्माण में सहयोगी है, एक और अपने स्वार्थ से वे "काम" की तृप्ती करते हैं, तो दूसरी ओर उन्हें जो धन राशि प्राप्त होती है, उसका भी वे दुरुपयोग करते हैं । स्वार्थी दलालों के हाथों जिन संस्थाओं का कार्य सुचारू रूप से चलता है, उनके अधिपति वे ही सम्पत्तिवान होते हैं, जिन्होंने स्वार्थ और "काम" का महान वृक्ष अपने जीवन में पाल रखा है । कुंभीपाक उपन्यास के राय साहब इस बात से सहमत है कि "बड़ी जातवालों ने महिलाओं को पंगु बना रखा है, जीवन का सारा रस निचोड़कर सिट्ठी बनाकर छोड़ दिया है ।"[5] इस तरह आश्रम अपनी दुर्व्यवस्था को प्राप्त होकर व्यभिचार का एक मात्र केन्द्र

---

1. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 120 2. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 120
3. " " पृ- 81 4. " " पृ- 59
5. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 122

बनकर रह जाता है । एक अनाथ लड़की जब उनकी शरण में जाती है, तो उसे पूरा भरोसा है कि उसका उद्धार होगा, परन्तु वहाँ जाकर वह उस अवस्था को प्राप्त करती है, जहाँ उसका जीना दुर्लभ हो जाता है ।

3.4.7.1 आश्रम का निर्माण

इस तरह के कई आश्रम भारत तथा विशेष कर बिहार के सीमाप्रान्तों में विद्यमान है, इसका उल्लेख नागार्जुन करते हुए कहते हैं - "जयनगर के नजदीक भारत-नेपाल सीमा से लगी हुई एक बस्ती थी जो शर्मा जी की बहन के अधिकार में थी । ---- बीस रुपये पर तीन कमरे ले रखे थे । भूली भटकी और शरण में आई हुई औरतों के लिए पहला विश्राम केन्द्र उन्हीं कमरों को बनाया गया ---- "अनाथ महिला सेवासदन"[1] । कुछ ही इसी प्रकार गंगा के किनारे - "बाँकीपुरवाली उस धर्मशाला से हटकर "संजीवनी आश्रम"[2] भी पड़ता था ।

इस प्रकार से विविध आश्रमों का निर्माण "कामुक लोगों" द्वारा सुचारु रूप से संचालित हो रहा था । उपन्यासकार की भी यह मान्यता है ।

3.4.7.2 आश्रम संचालक

आश्रमों के कर्णाधार रायसाहब जैसे पूंजीपति है, तो आश्रमों के संचालक शर्मा जैसे व्यक्ति । आश्रमों को देखभाल के अतिरिक्त वे तस्करों की तरह उन लड़कियों का व्यापार किया करते थे, जो आश्रम में शरण लेती हैं -- "शर्मा अभी पन्द्रह बीस रोज बाद वापस आया था । साथ एक युवती

1. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 95 2. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 60

और थी । शक्ल सूरत से नेपाल की लगती थी लेकिन मैथिली धराटे से बोलती थी ।"[1] शर्मा जी ले आये थे उसे बेचने । शारीरिक क्रिया कलाप के माध्यम से उसका क्रय विक्रय होने जा रहा था । भुवन की तरह वह भी बिकने वाली थी । शर्मा जी को देखकर भुवन कांप उठती है । "मुझे आज बेचने तो नहीं जा रहे हैं ?"[2] कितने में बेचेंगे मुझे ?" तीन हजार में ? पच्चीस सौ में ? पन्द्रह सौ में ? ---- इसीलिए शाम को दस दो नफीस साड़ियाँ आई है । चमकीले ब्लाउज ---- नकली हीरे के टाप्स --- नेलपालिश - लिपस्टिक - स्नो और पाउडर"[2] शर्मा की कमाई और उसकी "काम" की प्यास इसी तरह बुझने में समर्थ थी । उपन्यासकार ने ऐसे अनेक दलालों का उदाहरण प्रस्तुत किया जो हाड़-माँस के व्यक्तियों का व्यापार किया करते थे । जब वह बिकती थी, उसके मानसिक धरातल का रूप अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाता था उसे लगता था --"किसी ने चिमटे से पकड़कर उसे ही भट्ठी के अन्दर लटका दिया है और वह जल रही है -- चट्, चट्ट, चट्ट --आतंक की कल्पित अनुभूति तीव्रता के छोर पर आ गई तो दूसरा पापड़ भी, चिमटे से छूटकर दहकती सिगड़ी के अंदर जा पड़ा ।"[3] अनेक पापड़ इसी तरह धधकते अंगारे में गिरकर भस्मीभूत हो जाते थे और यह धधकता अंगारा है -- अर्थ, धन, पूंजी । इंदिरा को दस-दस के पांच नोट बुआ जब रखने के लिए कहती है तो, उस के मन में द्वन्द्व उठता है --"किस मद के रूपये होंगे । खरीदी जानेवाली किसी लड़की के लिए बयाने की रकम तो नहीं थमा गई है ?[4] इंदिरा की आलोचना का समाधान इस समस्या के अन्दर द्वन्द्व पर आधारित है । क्रय-विक्रय की यह घटना जिस नये मोड़ को ग्रहण करने के लिए तैयार है -- वह घटना है, भुवनेश्वरी तथा उर्मिला का मिलन । भुवनेश्वरी की कमाई पकड़कर कम्पाउण्डर की

- -

1. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 47 2. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 47
3. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 48 4. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 48
[redacted]

बीबी ने दृढ़ता पूर्वक कहा -- "अब तुझे कोई बेच नहीं सकता, न खरीद ही सकता है कोई ।"[1] कम्पाउण्डर की बीवी के आश्वासन से भुवनेश्वरी में एक दृढ़ता की स्थिति उत्पन्न हुई, जिसे भंग करने का प्रयत्न बुआ ने कई बार किया । बुआ ने जिस नयी चाल को अपनाया वह भुवनेश्वरी पर असर न कर सका --"शर्माजी आए तो कपड़े मँगाऊँगी । एक भी ढंग की साड़ी नहीं है तेरे पास । कपड़े तो निहायत जरूरी होते हैं न ?"[2] फिर भी भुवनेश्वरी टस से मस न हुई और वह उर्मिला के पक्ष में ही [illegible] हाथ बढ़ा रही थी ।

आश्रमवासियों के कार्य

स्वार्थ-साधकों की लम्बी सूची को उपन्यासकार ने प्रस्तुत किया है, सत्ताधारी राजनीतिज्ञों को फँसाने का विशाल कार्य क्षेत्र भी इन्हीं लड़कियों के हाथों से सम्पन्न हुआ करता है । "बाबा" की दृष्टि से "स्त्री" हर प्रांगण की विशेष कलाकार हुआ करती है । "सत्ता और अवसरवादी राजनीति ने जिन पर नई कलाई चढ़ा दी है, जमींदारों के वे वंशज किस किस्म का नैवेद्य किस तरह स्वीकार करते हैं और फिर भक्तजनों की कामना किस रूप से फलती है ।"[3] इसका विवेचन उपन्याकार ने रासलीला के माध्यम से कुंभीपाक उपन्यास में किया है । सुमंगल कहता है -----"दास जी के रिश्ते की दो लड़कियाँ है -- उन्हें कोठी पहुँचाना है ---कोइ-लवर में सोन के किनारे पिकनिक होगा ।"[4] और इस पिकनिक में उन सभी समस्याओं का हल होगा, जिससे अवसरवादी अपने कार्य क्षेत्र को विस्तृत कर सकते हैं । ये लड़कियाँ कभी सलवार-कुर्ती, कभी फ्राक-जैंपर, कभी साड़ी-ब्लाउज -- हर शाम को वे बदली हुई भूमिका में नजर आती ।[5] कभी दास-जी खुद और कभी उसका भाई छोकरियों को रिक्शे

---

1. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 49 2. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 24
3. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 27-28 4. " : कुंभीपाक पृ- 27
5. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 24

पर बाहर ले जाता । रात को लौटते-लौटते दस-ग्यारह का वक्त हो जाता, पड़ोसी सो चुके होते । रासलीला यहाँ पर समाप्त न होकर कुछ और आगे बढ़ जाती है । इन्हीं लड़कियों की बदौलत- "तिलकधारी दास की दो-तीन किताबें मंजूर होने जाने जा रही थी ।"[1] इन लड़कियों के रहन-सहन, बोल-चाल, व्यवहार से ऐसा लगता है - "बड़े- शरीफ खानदान की है ।"[2] सभ्य कुटुम्बों में पलनेवाली लड़कियों का चरित्र उपन्यासकार की दृष्टि से उस विशालता को प्राप्त कर चुकी है, जिसकी ऊँचाई आकाश के समान अनंत है । मामूली बुढ़िया पुराण और असली तिरिया चरित्र का फर्क समझते थे उपन्यासकार : स्त्री के विशेष चरित्र को आधारित करने में, उसकी रूप रेखा प्रस्तुत करने में, उपन्यासकार ने सभी ओर संकेत दिये हैं ।

2.474 वेश्या बनने के कारण

स्त्रियों को वेश्या बनने के, कई कारणों का उल्लेख, नागार्जुन ने कुंभीपाक उपन्यास में किया है । वास्तव में स्त्री को इस दिशा में ले जाने का बहुत बड़ा हाथ रहा है - आज तक मर्दों का । उपन्यासकार की मान्यता है कि इसमें --"स्त्रियों का नहीं, उनकी मूर्खता का----।"[1क] दोष है । स्त्रियाँ वहाँ पहुँचकर अपने-आप को --"रकम बनाने की फैक्टरी के कल-पुर्जे"[2क] समझती है । उनका स्त्रीत्व बिगड़ जाता है, वे भी स्वार्थी बन जाती है । कठपुतलियों की तरह उनका जीवन इस तरह व्यतीत होते-होते अपनी अंतिम अवस्था को प्राप्त कर लेता है । उपन्यासकार ने इसी उपन्यास में इंदिरा पात्र के प्रति अपनी सहानुभूति दिखलाते हुए समाज में विधवा किस तरह भटककर, आश्रयहीन होकर इन आश्रमों में प्रवेश करती है,

---

1. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 28 2. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 25
1क.नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 122 2क.नागार्जुन : कुंभीपाक पृ-21

इस घटना का वर्णन बहुत ही दुःखपूर्ण रीति से किया है - "उसकी पन्द्रह की उम्र में शादी हुई। दुल्हा पाइलट था, उसी वर्ष हवाई दुर्घटना में जान गवां दी।"[1] इन्दिरा का फिर वही हाल हुआ, घुटी हुई तबीयत के युवकों और आदर्श-हीन अधेड़ों के बीच एक विधवा तरुणी का होता है --"गर्भ चार महीने का हुआ"।[2] केवल इतना ही नहीं --"एक अत्याचारी रिश्तेदार डाक्टरी इलाज के बहाने इन्दिरा को आसनसोल ले गया और धर्मशाला में अकेली छोड़कर खिसक आया।"[3] और वहां से अभिजात इंदिरा के जीवन ने जिस मोड़ को अपनाया वह उपन्यासकार के शब्दों में "धर्मशाला" ही है। गुण्डों की टोली से छुटकारा पाकर वह ब्वारी बाग में उस गुण्डे की प्रेमिका के साथ इंदिरा रहती थी --"इन्दिरा को उसने छिपाकर वहीं रख दिया था।"[4] वह गुण्डा और उसकी प्रेमिका, इसका भला चाहते थे। उपन्यासकार का कथन है --"प्यार और सहानुभूति कब किसके हृदय में छलकने लगेंगे, कहा नहीं जा सकता।"[5] इंदिरा के प्रति गुंडे की सहानुभूति भी इसी प्रकार से छलक पड़ी और वह उन गुण्डों की टोली से छुटकारा दिलाकर उस आश्रम में पहुँचाया जहाँ उसके लिए कुछ न कुछ रास्ता अवश्य निकल आता था। ऐसे स्त्रियों को समाज वापस लेने के लिए तैयार नहीं होता उन लड़कियों के लिए -"दुनिया गेंद का मैदान है, सौ ठोकरों के बाद भी निश्चय नहीं कि गोल पर पहुंच ही जायेगी।"[6] उपन्यासकार की सहानुभूति उन सभी पात्रों के साथ है, जो अपने जीवन में अनेक घुमाव तथा मोड़ों को "देख चुके हैं। उपन्यासकार की दृष्टि में -"जो जहाँ हैं, गर्दन तक कीचड़ में धंसा है।"[7] कोई भी औरत खुश नहीं है --"अच्छे घर की अच्छी बहुओं से जाकर पूछो,

---

1. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 59 2. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 59
3. " " पृ- 53 4. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 114
5. " " पृ- 114 6. " : " पृ- 90
7. " " पृ- 81

वे भी कुछ नहीं है । हाँ, हमारी घुटन और किस्म की है और उनकी घुटन और ही किस्म की होगी ----"[1] इस तरह समाज में जिस प्रतिक्रिया का रूप निर्धारित हो रहा है, वह तथा श्लाघनीय है । जिस तरह मालदार "मतलब का ही सौदा करता है"[2] उसी तरह - औरतें सहारा पा जाती हैं तो उसे आसानी से छोड़ना नहीं चाहती हैं ।"[3] सौदा और सहारे ने जिन आश्रमों का निर्माण किया ये सभी आश्रम उपन्यासों में विद्यमान है । इन सभी आश्रमों का वर्णन उपन्यासकार ने किया है ।

3.4.7.5 स्त्री सुधार

औरतों की दुर्दशा पर, विशेषकर बिहार में औरतों की स्थिति पिछड़ी होने के कारण पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उपन्यासकार कहते हैं -"पिछले दो सौ वर्षों में समाज-सुधार करने वाले ऐसे महापुरुष हिंदी भाषा भाषी प्रदेशों में दो ही चार हुए जिनका सम्पर्क बाहर के देशों से रहा है ।"[4] अपने देश में सुधार तथा प्रचार करने के लिए उन्हें समय ही नहीं मिला और यहाँ के कामुक सौदागरों ने सुधारकों को बाहर भेजकर अपने काम की जांच की है । विविध घटनाओं के माध्यम से उपन्यासकार ने इस समस्या का समाधान अपने ढंग से किया है --

5. हर विवाहित पुरुष के लिए पत्नी को साथ रखना अनिवार्य होना चाहिए ।

6. पति की मृत्यु के बाद युवती का विवाह फिर से करवा देना समाज के चौधरियों का काम है ।

7. आश्रयहीन [redacted] महिलाओं का सहयोगी श्रमकेन्द्र "गृह शिल्प कुटीर" आदि हो ।

- -

1. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 81 2. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 83
3. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 89 4.5.6 " " पृ- 121
7 " " " पृ- 119

इतना ही नहीं स्त्रियों के लिए "श्रम, प्रज्ञा, सद्योग, विवेक और सुरुचि सभी आवश्यक है। जीवन में इन पाँचों का समन्वय करना होगा।"[1] उपन्यासकार ने जिन तत्वों को स्त्रियों की रक्षा के लिए अपनाने को कहा है - वे निश्चित ही अद्वितीय है। उपन्यासकार की महत्ता इस सुझाव में दृष्टिगोचर हो रही है, यह सुझाव केवल महत्वनीय ही नहीं आनंददायक भी है।

कुंभीपाक उपन्यास में उपन्यासकार ने श्रम-प्रज्ञा-सद्योग-विवेक और सुरुचि के द्वारा, भूली-भटकी हुई स्त्री इंदिरा के उद्धार का संकेत दिया है। श्रम के आधार पर जीनेवाली नारियों का जीवन -"दलालों की चूड़ियाँ चूमने की अपेक्षा कहीं बेहतर होता है।"[2] इसका प्रभाव कुआ है। कम्पाउंडर के बीबी के प्रज्ञा सद्योग तथा विवेक से ही इंदिरा कुंभीपाक से भाग निकलने में सफल हो सकी, इस तरह भुवन - "अपनी ही नहीं बल्कि औरतों की नाक रख ली।"[3] इतना ही नहीं विवेक तथा सुरुचि से अपनी आत्मा को ऊंचा उठाने के कई संदर्भ उपन्यास कुंभीपाक में विद्यमान है।

---

1. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 122
2. " " पृ- 90
3. " " पृ- 82

चतुर्थ अध्याय

ग्राम : सांस्कृतिक संदर्भ

4·1 संस्कृति : अर्थ

संस्कृति शब्द का प्रयोग प्रधानतः दो अर्थों में किया जाता है -- संकीर्ण तथा व्यापक । संकीर्ण अर्थ में संस्कृति एक वांछनीय अथवा श्लाघ्य गुण मानी जाती है । अंग्रेजी में ऐ उक्ति है कि संस्कृति वह गुण है जो एक कसाई में होता यदि वह डाक्टर होता ।[1] उक्त दृष्टिकोण के अनुसार मनुष्य के व्यक्तित्व का परिष्कार एवं विकास संस्कृति है ।

समाजशास्त्र में संस्कृति शब्द का व्यापक अर्थ ग्रहण किया जाता है । प्रशिक्षण, परिष्कार आदि के अर्थ में "संस्कृति" का प्रयोग समाजशास्त्रियों को मान्य नहीं है ।[2] उनके अनुसार जो प्रकृति नहीं है, वह सब संस्कृति है । नृतत्व-विज्ञान में संस्कृति का सम्बन्ध भू-संबंधी ज्ञान, उत्पादन की विशेषताएं, भवन-निर्माण-कौशल्य सामाजिक एवं धार्मिक मूल्य, बौद्धिक उन्नति को सूचित करनेवाले रीति-रिवाजों आदि समस्त सीखे हुए व्यवहार से माना जाता है ।[3]

- -

1. Culture is what the butcher would have if he were a sugeon __ Carvan, November, 1962
2. The word culture is a technical term in the Social Sciences used to refer not only to refinement--,but to all learned reations in common pratice by the members of social group cultural sociology P.142 Dr.John Lewis gillin and Dr.John Philip gillin
3. The cultural heritage of India Vol. I, 2nd ed. 1958 Articale : The Geographical Background of Indian culture by Nirmal Kumar Bose

पाश्चात्य विद्वानों ने संस्कृति की परिभाषाएं भिन्न-भिन्न रूप से दी है। मेकाइवर ने "व्यवहार में कला, साहित्य, धर्म मनोरंजन और आनन्द में पाये जानेवाले रहन-सहन और विचार के तरीकों में प्रकृति की अभिव्यक्ति की है।[1] बोगार्डस ने किसी समूह के कार्य और विचार करने की समस्त रीतियों को संस्कृति माना है।[2] मेलिनोवस्की के अनुसार "सामाजिक परम्परा"[3] तथा एडवर्ड बी॰ टेलर के अनुसार - वह समग्र संकुल जिसमें समाज के सदस्य के रूप में मनुष्य दवारा ग्रहण किये गये ज्ञान, विज्ञान, कला, कानून, रिवाज और अन्य योग्यताओं का समावेश होता है[4] संस्कृति है।

भारतीय विद्वानों के अनुसार प्रत्येक मनुष्य दवार की गयी अपनी परिस्थितियों की व्याख्या[5] को "जीवन के नाना विधि रूपों के समुदाय को"[6] तथा श्री रामधारी सिंह "दिनकर" ने "सदियों से जमा होकर समाज में छाये रहनेवाले जिन्दगी के तरीके[7] को संस्कृति माना है। इन सभी परिभाषाओं में "संस्कृति" का व्यापक अर्थ

- -

1· श्री शम्भुरत्न त्रिपाठी : समाजशास्त्रीय विश्वकोष - पृ· 33

2· श्री शम्भुरत्न त्रिपाठी : समाजशास्त्रीय विश्वकोष - पृ· 33

3· Man Varies in two respects; in Physical form and in Social heritage or culture.
Encyclopaedia of Social Sciences Vol. IV page 621

4· E.B.Taylor primitire culture P. I

5· Culture is a way of life, an interpretation given by each mind and soul to the enviornment --
Dr. C. P. Ramaswamy Aiyar phases of religion & culture

6· डा· वासुदेवशरण अग्रवाल : कला और संस्कृति, भूमिका- पृ· 3

7· दिनकर : संस्कृति के चार अध्याय : पृ· 653

ही प्रतिपादित किया गया है । संस्कृति ही वह आधार है -- जिसके माध्यम से व्यक्ति ज्ञान, कला, नैतिकता, प्रथाएँ एवं परम्पराएँ सीखता है ।[1] ग्रामीण कलाएँ, पर्व, त्योहार, संस्कार, रूढ़ियाँ, मेला, खेलकूद आदि विभिन्न अंगों के योग से संस्कृति का निर्माण होता है । भारतीय संस्कृति का यथार्थ रूप ग्राम जीवन में ही दिखाई देता है । नागार्जुन के ग्रामीण उपन्यासों में संस्कृति के विभिन्न उपरोक्त अंगों की विवेचना हुई है ।

4·2· ग्रामीण कलाएँ

ग्रामीण कलाओं के अन्तर्गत - प्रतिमा निर्माण, नौका निर्माण, छप्पर तैयार करना और डोंगी पुनःनिर्माण करना जाल बुनना, सींकों से घरेलू सामान बनाना आदि की विवेचना रतिनाथ की चाची, वरुण के बेटे, दुखमोचन, नई पौध, बलचनमा, हीरक जयन्ती, कुंभीपाक उपन्यासों में नागार्जुन ने की है ।

4·21 प्रतिमा निर्माण

शुभंकरपुर से उत्तर छोटा-सा एक गाँव पड़ता है परसौनी, "वहाँ के कोशी मंडल प्रतिमाएँ बनाने में बहुत ही कुशल हैं"[2] गाँव-गाँव में प्रतिमाएँ बना करती थीं आश्विन में दुर्गा की । कार्तिक में काली, चित्रगुप्त और कार्तिकेय की । माघ में सरस्वती की, चैत्र

1· डॉ० ज्ञानचंद गुप्त : स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास और ग्राम चेतना : पृ· 208

2· नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ· 42

में राम, लक्ष्मण, सीता तथा उनके स्वजन-परिजन, अनुचर, परिचर की ..... "कुल मिलाकर तेरह मूर्तियाँ । भादों में कृष्ण आदि की। "[1]

उपन्यासकार कला- कला के लिए वाद से परिचित प्रभावित हैं । इनके लिए कला जीवन के लिए नहीं, कला कला के लिए है । ग्रामीण कलाओं ने आज तक कलाकारों में यही साधना उद्घोषित हो रही है, कला के पारखी नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में जिस कला का निर्माण किया है वह भी -- "कला, कला के लिए है ।" कला के पारखी नागार्जुन ने रतिनाथ की चाची, वरुण के बेटे, दुखमोचन, नई पौध, बलचनमा आदि उपन्यासों में ग्रामीण जीवनोपयोगी कलाओं का उल्लेख किया है ।

4·2ॾ नौका निर्माण

नौका निर्माण को उपयोग कला के अन्तर्गत मानकर उसकी विवेचना रतिनाथ की चाची तथा वरुण के बेटे उपन्यासों में की है । यह कला ग्रामीण कला है । नरकुलपा के मल्लाह इस कला को जानते हैं -- "केले के थंभों पर तख्तपोश डालकर उसे मजबूती से बांध दिया गया था । वही फिर अच्छी खासी नाव हो गई ।"[2]

यह कला छोटी-छोटी नौका निर्माणार्थ है ।

- -

1· नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ· 43

2· नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ· 142

जिस समय बड़ी-बड़ी नौकाओं का निर्माण करना होता है उस समय मलही-गोंढियारी के मछुआ सात-आठकेले के मोटे-मोटे थंब छे-छे हाथ लम्बे लेकर, -- "एक दूसरे से सटाकर बांधे गए थे। अच्छी खासी नाव का काम दे रहे थे।"[1]

नौका निर्माण ग्रामीण उद्योग है, नागार्जुन ग्रामीण उद्योग की महत्ता को अत्याधिक मानते हैं, साथ ही साथ उपन्यासकार को यह भी मालूम है कि इन ग्रामीण उद्योगों द्वारा देश समृद्धशील हो सकता है।

4·2·3 छप्पर तैयार करना

नौका-उद्योग-निर्माण के साथ-साथ ग्रामीण लोग छप्पर तैयार करना भी जानते हैं। दुखमोचन उपन्यास के वेणी माधव के दालान के सहन में चार-पांच मजदूर बांस के डण्डे फैलाकर बड़ा सा छप्पर तैयार कर रहे थे "रुखान, आरी, बसुला, टांगी, खन्ता आदि औजार इधर-उधर बिखरे पड़े थे। कोड़ों, बाती, बांधन, तख्त, खूंटा, खम्भा, सकिली मोटी और पतली डोरियां .....खड़ खड़ी, सरकंडा, बांस ..... यानि घर बनाने का सारा सामान मौजूद था।"[2]

"वरुण के बेटे" उपन्यास में बढ़ाई का काम केवल लकड़ी का सामान बनाना न होकर, पुरानी डोंगी की मरम्मत करना भी

- -

1· नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ·5

2· नागार्जुन : दुखमोचन : पृ· 142

है । भोला के सहन के -- "दाहिनी तरफ बाँस के दो खूँटों के सहारे एक पुरानी डोंगी आधी खड़ी थी -- दो बढ़ई नीचे बैठे उसकी पेंदी की मरम्मत में लगे थे ।"[1]

4·2·4 जाल बुनना

इसी उपन्यास में भोला के बैठक के बरामदे पर खंभेली से पीठ टिकाकर बिसुनी बैठा था और -- "जाल बुन रहा था।"[2]

4·2·5 सींकों से घरेलू सामान बनाना

सींकों से विविध प्रकार के घरेलू सामान बनाने का उल्लेख "नई पौध" उपन्यास में प्राप्त होता है । दिगो की नानी को सींकों से -- " पंखी, बेलनी, पान, सुपारी रखने का डिब्बा-घुघरी, पकती, बिछहाडा, रिकाबी, डलिया, चंगेरी, फूलडाली बनाने का भारी शौक था ।"[3]

4·2·6 चटाई,डोरी,टापी,गांजा आदि तैयार करना

चटाई, डोरी, टापी, गांजा आदि तैयार करने का उल्लेख उपन्यासकार ने बलचनमा उपन्यास में किया है । वर्षाकाल में भादों, आसिन, कात्तिक और आधा अगहन साढ़े तीन महीने गाँव में कोई काम नहीं रहता । इन दिनों कोई पूरब की ओर निकल

---

1 नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ· 26
2· - वही -
3· नागार्जुन : नई-पौध : पृ· 112

जाता,तो कोई कलकत्ते की तरफ चला जाता, कोई घर पर ही बैठा रहता ऐसे लोग -- "गांधी की चटाई -- सन साबे या मूंग की डोरी बांटते या फिर मछली फंसाने के लिए टापी, गांजा, वगैरह तैयार करते ।"[1]

नागार्जुन ने रतिनाथ की चाची, वरुण के बेटे, दुखमोचन, नई-पौध, बलचनमा उपन्यासों में प्रतिमाएं बनाना, नौका निर्माण करना, छप्पर बनाना, विविध प्रकार के हथियारों से पुराने वस्तुओं की मरम्मत करना, जाल बुनना, सींकों से घरेलू वस्तुओं का निर्माण करना, चटाई डोरी तथा मछली फंसाने के उपकरणों का निर्माण करना नागार्जुन के पात्रों की दैनिक जीविका चलाने का साधन है ।

4·3 ग्रामोद्योग तथा समाज कल्याण

ग्रामीण कलाओं के निर्माण में जितना हाथ पुरुषों का रहा है, स्त्रियों का उससे अधिक । ग्रामोद्योग तथा समाज कल्याण के अन्तर्गत -- "देहाती महिला केन्द्रों में अब तक हजारों चर्खे पहुंचा दिये गये हैं, डेढ़-सौ अम्बर चर्खे, चालीस करघे, शहद की मक्खियां पालने के लिए लकड़ी के पचास बक्से, साबुन बनाने का सरंजाम ·· "[2] जिससे अर्थात् ग्रामोद्योग भवन की कृपा से देहातिने भी आधुनिकाएं दीखने लगी हैं·। ····· अशिक्षा या अल्प शिक्षा का पता जुबान

- -

1· नागार्जुन : बलचनमा : पृ· 159

2· नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ· 66

खुलने पर ही लग सकता था । पोशाक और चलने फिरने के लिहाज से वे कालेज की छात्राएं लगती थी ।"[1]

ग्रामोद्योग के पुनरुद्धार कार्य में जितना सहयोग महात्मा-गांधी जी का रहा है उतना किन्हीं अन्य नेताओं का नहीं । कुंभीपाक उपन्यास के बाबू वृन्दावनराम के प्रयासों से ग्राम विकास के ------ "लघु सिंचाई योजना, कृषि-विकास योजना, समाज कल्याण, निरक्षरता निवारण ग्रामोद्योग, बांस-बैंत शिल्प"[2] जन-हित के बहुत सारे काम हुए हैं । यह नारा है, उन नेताओं का जो महात्माजी के निर्देशन में अपना सब कुछ निछावर करके देश-कल्याणार्थ कार्य में संलग्न हुए । उनके सारे घर, कुटुम्ब, स्वयं तथा उनके आफिस में इसी -- "काटेज इण्डस्ट्री के महाबोधि टैम्पुलवाले माडल के भव्य पर्दे झूलते होते ।"[3] यह वातावरण है, उन दिनों के नेताओं का तथा ग्रामोद्योग के विकास का ।

4.4 पर्व

किसी विशिष्ट तिथि पर किये जानेवाले धार्मिक कार्य "पर्व" है । मनुष्य के जीवन में इनका लौकिक तथा पारलौकिक दोनों प्रकार का सम्बन्ध है । वे मनुष्य के जीवन में आनन्द लेकर आते हैं तो दूसरी ओर शास्त्र-सम्मत रूढ परम्पराओं एवं मान्यताओं को ।

---

1. नागार्जुन : कुंभीपाक : पृ. 24
2. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ. 53
3. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ. 11

नागार्जुन के बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में जिस पर्व का उल्लेख मिलता है, वह "वारुणी पर्व है -- "चैत में वारुणी का परब आया तो राउत पाँव पैदल गंगा नहा आये सिमरिया घाट जाकर । गंगाजल और गंगामाटी लाये थे साथ ।"[1]

वारुणी का पर्व चैत्र कृष्ण त्रयोदशी में शतभिषा नक्षत्र के योग से अथवा चैत्र कृष्ण चतुर्दशी को भौमवार जब पड़ता है तब वह वारुणी पर्व[2] के नाम से जाना जाता है । वारुणी पर्व में गंगा नहाने पर वही पुण्य प्राप्त है जो -- "ग्रहणादि नैमित्तिक कर्मों में गंगा नहाने से अथवा मंत्र के पुनश्चरण से जो फल प्राप्त होता है"[3]

उपन्यासकार ने वारुणी योग के संदर्भ में निश्चित तिथि, नक्षत्र, वार का संकेत न देकर केवल "वारुणी" कहकर पाठकों को अथवा गवेषणात्मक कार्य करनेवाले विद्यार्थियों को इस ओर अग्रसर कराया कि वारुणी वास्तव में कौन सा योग है और उसका फल क्या है ।

वारुणी का वास्तविक सम्बन्ध वरुण से है, वरुण जल देवता है । वारुणी पर्व में सारे महानदियाँ वरुण देवता से अभिप्रेरित रहते हैं । वारुणी पर्व इसलिए ग्राम जीवन में महत्त्वपूर्ण है ।

- -

1. नागार्जुन : बाबाबटेरसरनाथ : पृ. 37
2. नागार्जुन : धर्मसिन्धु : पृ. 86
3. नागार्जुन : धर्मसिन्धु : पृ. 86-87

4·5 त्योहार

ग्राम-जीवन में त्योहार का विशेष महत्त्व है। नागार्जुन के बाबाबटेसरनाथ, रतिनाथ की चाची, दुखमोचन उपन्यासों में त्योहारों के अन्तर्गत वृक्षपूजा, रक्षाबन्धन, दसहरा, यमद्वितीया, होली तथा पन्द्रह अगस्त [राष्ट्रीय त्योहार] का उल्लेख हुआ है।

4·51 वृक्षपूजा [वट पूजा]

ज्येष्ठ पौर्णिमा के दिन वट सावित्री की पूजा वटवृक्ष के समीप जितनी महत्त्वपूर्ण है, उतनी ही महत्त्वपूर्ण अमवस्या के दिन भी। वट सावित्री पूजन में सावित्री मृत पति को "यम" से जिस तरह से वापस ले आती है उसी तरह अमावस्या को ऐसी घटनाएँ न घटें इसीलिए वट वृक्ष की पूजा होती है। वट वृक्ष की महत्ता गीता आदि धार्मिक ग्रंथों में विद्यमान है। वेदान्तिक दृष्टिकोण से जिस तरह -- "अश्वत्थं प्राहुर व्ययम्"[1] उसी तरह सगुण साकार उपासना के लिए वटस्य पत्रस्य पुटेश्याम, बाल मुकुन्दम् वंशा महाभी-- बात चिर स्मरणीय है। मासों में जेष्ट, वृक्षों में वट, पेय में क्षीर आदि प्रचलित सिद्ध संस्कार है। उपन्यासकार नागार्जुन ने इस संस्कार का उल्लेख बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में किया है। सुहागिन औरतें प्रतिवर्ष जेष्ठ महीने की अमावस्या को "वटपूजन" का त्योहार मनाती है, "उस दिन वे हमारी पूजा करती हैं।"[2] नवीन

- -

1· गीता : अध्याय पंद्रहवाँ, पुरुषोत्तमयोग ।। 1 ।।

2· नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ· 33

वस्त्राभूषणों को धारणकर गाँव के वटवृक्ष को पूजती है और बड़े घरानों की सधवा स्त्रियाँ -- "थालों में बहुत आम के कतरे सजाकर न जाने कितना नैवेद्य प्रतिवर्ष मेरे सामने रखती आयी है ।"[1] अखंड सौभाग्य की कामना करती हुई -- "मेरे चारों ओर .... फेरे डालती है ।"[2]

4.5.2 रक्षा बन्धन

यह प्राचीनकाल से चला आ रहा त्यौहार है । स्त्रियाँ अपनी रक्षा के लिए भाइयों की कलाई में रक्षा बाँधती है और भेंट लेती देती है । यह त्योहार केवल भाई-बहन तक सीमित न रहकर अन्य वर्गों तक व्यापक हो गया है । नागार्जुन ने रतिनाथ की चाची इस उपन्यास में रक्षाबंधन के व्यापक रूप का ही उल्लेख किया है, -- "पंडित जी रक्षा बन्धन के दिन राजा बहादुर के कलाई पर राखी बाँधते हैं ।"[3]

4.5.3 दशहरा

विशेष त्योहारों के समय ग्रामीण देवियों में -- शैलपुत्री ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कंदमाता, नवदुर्गा आदि की पूजा होती है । नई पौध उपन्यास में "दशहरा" त्यौहार के लिए --"मिर्जापुर से दुर्गा आई है ..... मुद्रा प्रतिमा बड़ी अच्छी है.....

---

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 33
2. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 33
3. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 61-62

....दशभुजा सिंहवाहिनी की मूर्ति है ।[1] देवी पुराण में "सिंहवाहिनी दशभुजा" देवी का नामकरण "चन्द्रघण्टा" है । दशहरा आदि त्योहारों पर जिस देवी की पूजा की जाती है -- वह "चन्द्रघंटा नव दुर्गा" है । इस पूजा की आस्था उच्च- मध्य वर्गीय समाज में प्रचलित है । मध्यवर्गीय द्वारा पूजित 'चन्द्रघंटा' शक्ति अथवा देवी नवरात्रि में प्रचलित देवी है । नवरात्रि के नउ दिनों में देवी के समक्ष सम्पुट पाठ, परायण, हवन आदि धार्मिक कृत्य होते है जिसका उल्लेख नागार्जुन ने "रतिनाथ की चाची" तथा उग्रतारा उपन्यासों में किया है ।

अ) सम्पुट पाठ

रतिनाथ की चाची उपन्यास में कलकत्ते के मारवाड़ी सेठ ने दुर्गा पूजा के दसों दिन पोते की कामना के लिए -- "चंडीका का सम्पुट पाठ करवाया था ।"[2]

आ) चंडी पाठ तथा हवन

उग्रतारा उपन्यास में तिवारी ने, मोहन सिंह को पुत्र प्राप्ति के लिए -- "आश्विन की नवरात्रि में दसों दिन चंडी का पारायण करवाया था । हवन के अन्त में सिपाही जी और उनकी घरवाली के हाथों पूर्णाहुति दिलवाई थी अग्निकुण्ड में ।"[3]

---

1. नागार्जुन : नई पौध : पृ. 126
2. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ. 80
3. नागार्जुन : उग्रतारा : पृ. 82

यही नहीं महाष्टमी के दिन दी जानेवाली बलियों में नरबलि का उल्लेख "अमनिया का बाबा" में विस्तार से किया गया है ।[1]

इसके अतिरिक्त दशहरा के अन्य छोटे-छोटे विधिविधानों पर भी उपन्यासकार की दृष्टि जमी है जैसे "फूल बाबू दसहरा भर मल्लिकाधन के यहाँ रहे । उड़ता हुआ नीलकंठ देखकर अपने गाँव गये ।"[2]

4.54 यम द्वितीया

यह त्योहार विशेषकर भाइ तथा बहन का है । वे एक दूसरे की मंगल कामना के लिए इस त्योहार को बड़े ही आनंद और उत्साह से मनाते हैं । इस दिन भाई धन-धान्य, सुख, आयुष्य की प्राप्ति के लिए वस्त्र और आभूषण से बहन की पूजा करता है, तथा उन्हीं के हाथों भोजन करता है । बहन भी भाई के इस पूजन से अखंड सौभाग्य को प्राप्त करती है । इस त्योहार का नाम यमद्वितीया होने का कारण यह है कि -- "यमो यमुनया पूर्व भोजितः स्वगृहे स्वयम् ।"[3]

नागार्जुन ने रतिनाथ की चाची उपन्यास में इस त्योहार का उल्लेख किया है । प्रतिवर्ष कार्तिक शुक्ल की द्वितीया को यह त्योहार आता है, "यह तिथि उन व्यक्तियों के लिए एक

---

1. देखिये प्रस्तुत प्रबन्ध का पृ. 180
2. बलचनमा : पृ. 39
3. धर्म सिन्धु : पृ. 220

एक महत्वपूर्ण तिथि है, जिनकी बहन जीवित है। [1] भाई दूज का यह त्योहार उमानाथ के लिए बचपन से ही आनन्द और उत्साह का दिन रहा है। उमानाथ की बहन प्रतिभामा -- "ब्याहकर दूर चली जाने पर भी, प्रतिवर्ष अपने भाईको इस त्योहार के अवसर पर बुलाती।"[2] और उमानाथ भी आया करता।

4·5·5 होली

प्राचीन युग में चारों वर्णों के लिए चार तरह के पर्व प्रचलित थे -- "ब्राह्मणों के लिए श्रावणी क्षत्रियों के लिए विजयादशमी, वैश्यों के लिए दीपोत्सव और शूद्रों के लिए होली।"[3]

होली वसन्तागमन के उल्लासपूर्ण क्षणों की परिचायक है। वसन्त की आनन्दाभिव्यक्ति रंगीन जल, विविध रंग, अबीर, गुलाल के पारस्परिक आदान प्रदान से प्रकट होती है। नागार्जुन ने बलचनमा उपन्यास में रंगों के इस त्योहार को आनन्द, उत्साह एवं उल्लास भर चित्रित किया है, "चुन्नी की जनानी ने होली में भर लोटा अबीर मेरी (बलचनमा) के नई बनियाइन पर उड़ेल दी और देर तक हो-हो करतीरही ..... थोड़ी देर बाद, अबीर ले आया ... झपाटे से जाकर दबोच डाला और गालों पर आधा पाव अबीर मसल दिया, घड़ी भर मय्यो-बप्पे" करती रही।"[4]

- -

1· नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ· 78
2· नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ·221
3· हरिहर सिंह : हमारे पर्व और त्योहार : पृ· 202
4· नागार्जुन : बलचनमा : पृ· 143

इस तरह नागार्जुन ने होली के त्योहार को आनन्द एवं उल्लास से बलचनमा उपन्यास में वर्णित किया है ।

4·56 राष्ट्रीय त्योहार

सामाजिक त्योहारों के साथ-साथ नागार्जुन ने राष्ट्रीय त्योहार का उल्लेख बाबा बटेसरनाथ तथा दुखमोचन उपन्यास में किया है । वह त्योहार देश के महानगरों के साथ-साथ गाँवों में भी बड़े धूम-धाम से मनाया जाता है । जिसका उल्लेख बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में मिलता है । रूपउली गाँव में जीवनाथ ने इस त्योहार को बड़े आनन्द और उत्साह से मनाया, उसने प्रातःकाल ही -- "घर के सामने लम्बे बाँस की ध्वजा गाड़ी थी और तिरंगा फहराया था ।"[1] सारे लोगों को -- " दो सेर बताशे बाँटे ।"[2] जनता के मनोरंजन के लिए -- परसादीपुर के भिन्दी बाबू के यहाँ से हारमोनियम और तबला डुग्गी माँगकर ले आया था ।"[3] इस तरह वह दिन भर आजादी का त्योहार मनाता रहा ।

(अ) ग्रामीण समारोह

इस त्योहार का समारोहात्मक रूप दुखमोचन उपन्यास में दिखाई देता है । टमका कोइली गाँव -- "इस झण्डा-समारोह को

- -

1· नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ· 104

2· " " पृ 104

3· " " पृ 104

अपना खास त्योहार समझ रहा था ।"[1] एक दिन पहले ही गाँव के प्रतिष्ठित लोग -- "शंकरबाबू, चतुरी ठाकुर और चन्द्रशेखर सिंह, दारोगा, अंचलाधिकारी साहब, पिपरा बाजार के पाँच-सात नागरिक और पड़ोसी गाँवों के पंच भी आ जुटे ।"[2] प्रातःकाल ही ढोल-पिपही बजानेवाले आकर डट गये । छोकरे और छोकरियाँ गोल बाँध-बाँधकर तमाशा देखने आए । ध्वजा रोहण का कार्य, एक अर्धनग्न गँवई बुजुर्ग के द्वारा सम्पन्न कराकर नागार्जुन ने अपनी धर्मनिरपेक्ष भावना का परिचय दिया है । ढोल-पिपही के मंगलमय स्वरों के बीच बेंधू चाचा ने --"झट से डोरी खींच ली और अशोक चक्र शोभित तिरंगा आकाश में फहराने लगा ।"[3] दुखमोचन के प्रार्थना पर विधायकों ने पन्द्रह मिनट तक कुछ[4] कहा, और कपिल ने-अभ्यागतों-को धन्यवाद देकर समारोह के अन्त की घोषणा की ।"[5]

इन त्योहारों के अतिरिक्त नागार्जुन ने कउउचन[6] और तीज[7] का भी उल्लेख नई पौध उपन्यास में किया है ।

- -

1. नागार्जुन : दुखमोचन : पृ. 171
2. नागार्जुन : दुखमोचन : पृ. 171
3. नागार्जुन : दुखमोचन : पृ. 172
4. नागार्जुन : दुखमोचन : पृ. 172
5. नागार्जुन : दुखमोचन : पृ. 172
6. नागार्जुन : नई पौध : पृ. 108-9
7. नागार्जुन : नई पौध : पृ. 84

4·6 संस्कार :

4·61 संस्कारों का महत्व एवं उनकी संख्या

इस शीर्षक के अन्तर्गत "संस्कार" शब्द का प्रयोग द्विजातियों की उन विशिष्ट क्रियाओं को सूचित करने के लिए किया जाता है जिनको किसी न किसी शास्त्र-ग्रन्थ ने उनकी उन्नति के लिए किए जाने योग्य निश्चित किया हो । एक अनुशासित सुनियोजित एवं सोद्देश्य धारा में मनुष्य की शक्ति का उपयोग कराके उन्नति के पथ-निदेशक के रूप में संस्कार हमारे सामने आते हैं । "देवताओं के समक्ष शुद्ध उन्नत तथा संस्कृत जीवन की प्रतिज्ञा करना भारतीय संस्कृति की विशेषता रही है । इससे स्पष्ट होता है कि दैवी शक्तियों तथा अपनी शक्तियों के दूसरे माध्यमों का सम्यक उपयोग करने के लिए संस्कारों को किया जाता था ।[1] संस्कार वास्तव "धार्मिक अथवा प्रतीकात्मक अनुष्ठान"[2] है । संस्कार जीवन के विभिन्न अवसरों को महत्व और पवित्रता प्रदान करते हैं । वे इस बात पर जोर देते हैं कि जीवन के विकास का प्रत्येक चरण केवल शारीरिक नहीं, किन्तु उसका सम्बन्ध मनुष्य की बुद्धि, भावना और आत्मिक अभिव्यक्ति से है ।"[3]

संस्कारों को जीवन की प्रेरणा और अनुशासन के सफल माध्यम[4] के रूप में स्वीकार करने पर उनकी कोई निश्चित संख्या नहीं निर्धारित की जा सकती । परम्परा से प्रसिद्ध संस्कार सोलह

1· भारतीय सांस्कृतिकनिधि : डॉ० रामजी उपाध्याय, पृ· 20
2· हिंदू संस्कार : डॉ० राजबली पाण्डेय - पृ· 2 (प्रस्तावना)
3· हिंदू संस्कार : डॉ० राजबली पाण्डेय - पृ·5 (प्रस्तावना)
4· हिंदू संस्कार : डॉ० राजबली पाण्डेय - पृ· 3 (प्रस्तावना)

है । उनके नाम तथा वर्गीकरण इस प्रकार है[1] --

§अ§ प्राग् जन्म संस्कार : 1. गर्भाधान 2. पुंसवन 3. सीमन्तोन्नयन

§आ§ बाल्यावस्था के संस्कार : 4. जातकर्म 5. नामकरण 6. निष्क्रमण संस्कार 7. अन्नप्राशन 8. चूडाकरण 9. कर्णवेध

§इ§ शैक्षणिक संस्कार : 10. विद्यारम्भ 11. उपनयन संस्कार 12. वेदारम्भ, 13. केशान्त 14. समावर्तन

§ई§ 15. विवाह संस्कार

§उ§ अन्त्येष्टि संस्कार

4.62 नागार्जुन के उपन्यासों में वर्णित संस्कार

नागार्जुन के किसी भी उपन्यास में प्राग् जन्म संस्कार का उल्लेख नाम मात्र के लिए भी नहीं हुआ है ।

4.621 कर्णवेध

बाल्यावस्था के संस्कार के अन्तर्गत कर्णवेध का उल्लेख दुखमोचन उपन्यास में हुआ है ।

4.622 उपनयन :

यह द्विजातियों के लिए निश्चित यज्ञोपवीत संस्कार है । इसके पश्चात बालक को वेदादि के अध्ययन के लिए गुरु के यहाँ भेजा जाता था ।[2] नागार्जुन के बलचनमा उपन्यास में इसका उल्लेख हुआ है ।

- -

1. हिंदू संस्कार : डा० राजबली पाण्डेय : पृ. 3 § प्रस्तावना §

2. हिंदू संस्कार : डॉ. राजबली पाण्डेय : पृ. 180

उपन्यासकार का कहना है कि -- "तिरहुतिया बराहमन औकात रही तो, लड़के का जनेउ बड़ी धूम से करते है ।"[1] उपनयन के लिए सारे रिश्तेदारों को बुलाया जाता है तथा नाते की औरतों का निमंत्रण होता है।[2]

अ) बलि :

उपनयन के समय कुलदेवता के सामने बलि देने की प्रथा का उल्लेख भी इसी उपन्यास में हुआ है । बलचनमा कहता है -- "सोलह तो छागर (बकरा) ही बलि चढ़े थे, चार सस्सी पीटे गये थे । ...... भगवती की पिंडी के सामने देवाल (दीवार) पर खून के फव्वारों के निशान हवेली के अन्दर देखोगे ।"[3]

आ) भोज :

बलचनमा उपन्यास में छोटी मलिकाइन के लड़के के जनेउ के समय "भोज" का भी उल्लेख हुआ है । देवताओं को बलि देनेवाले बकरों से -- "चार रोज तक हवेली गमगमाती महकती रही ।"[4] केवल रिश्तेदारों को ही नहीं कभी-कभी गाँव की ओर से पड़ोसी गाँवों की बिरादरी को जिमाया जाता है ।[5] लेकिन इन मालिकों का व्यवहार नीची जातवालों के साथ भाईचारे का कभी नहीं हुआ उनका कहना है -- छोटी जातवालों की तकदीर में उनका जूठन और बचा हुआ या बासी ही पड़ता है ।[6]

---

1. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 169
2. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 169
3. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 169
4.5 तथा 6 : नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 169

3) उत्सव :

उपनयन के दिन उत्सव करने का उल्लेख इसी उपन्यास में हुआ है । ढोल-ढाक, राशन चोकी, नटुआ-रंडी का नाच, कीर्तन, थियटर, भेडों की लड़ाई जैसा पंडितों का सासतरार्थ (शास्त्रार्थ) .. सब होता है ।"[1]

4.623 वैवाहिक कृत्य

विवाह की पवित्रता और स्थायित्व के लिए संस्कार आवश्यक माना जाता है, सभी प्रकार के विवाहों की सामाजिक स्वीकृति के लिये भी संस्कार अनिवार्य बना दिये गये । वैवाहिक प्रतिबंध के लिए -- "वर और कन्या पर्याप्त थे, किन्तु धर्म की दृष्टि से विवाह में तीसरा पक्ष संस्कार था जो दो पक्षों के बीच किसी भी वैषम्य और संघर्ष का समाधान करता था ।"[2] ऋग्वेद में वर्णित विवाह पद्धतियाँ धीरे-धीरे देशाचार, ग्रामवचन और जनपद धर्म के कारण ..... संस्कार के रूप और विस्तार में परिवर्तन भी हुए ।[3]

नागार्जुन के उपन्यासों में वर्णित वैवाहिक कृत्यों का विवेचन प्रस्तुत किया जाता है ।

उपन्यासों की ग्रामीण जनता अपने पारिवारिक संस्कारों, परम्पराओं तथा रीति-रीवाजों पर, धार्मिक क्रियाकलापों पर आस्था रखती है ।

---

1. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 169
2. राजबली पाण्डेय : हिंदी साहित्य का बृहत इतिहास : पृ. 132
3. पा. गृ. सू. 1/8/11 : 1/5

ब्राह्मण समाज की दशा कुछ विचित्र अवश्य है, मैथिली ब्राह्मणों का विवाह "सौराठ सभा" द्वारा निर्धारित होता था और अब भी होता है। राजा हरिसिंह ने जिस "पंचीयन सूची" को बनाया था अब भी वह प्रचलित है।

4.6231 पंचीयन

"पंचीयन सूची" में मैथिली ब्राह्मणों के गोत्र तथा कुल का ब्योवार रहता है। विवेहच्छुक ब्राह्मण "सौराट की सभा" द्वारा अपने विवाह कार्य को सम्पन्न कराते है। आजकल भी "सौराठ की इस सभा में ब्राह्मण अपने पुत्र, पुत्रियां, पौत्र-पौत्रियां आदि का नाम दर्ज कराते हैं। विवाह के समय इसी पंजीचन सूची द्वारा गोत्र आदि का, विवाह आदि का निर्णय होता है।

उपन्यासकार ने रतिनाथ की चाची उपन्यास में उपरोक्त तथ्यों की ओर संकेत किया है।

4.6232 अरिपन

विवाह से पूर्व ग्रामीण जनता किस प्रकार से अपने घर तथा आंगन को सजाती है, इसका जीवित उदाहरण बलचनमा तथा नई पौध उपन्यासों में विद्यमान है।

औरते "पुती-लिपी घर की टाटो में हाथी-घोड़ा आंकने लगती। तेल में सिन्दुर घोला गया और उससे कइ जगह पेड पौधे आंके गये।"[1]

- -

1. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 142

साथ ही साथ आँगन को भी "अइपन"[1] से सजाया गया था । पंडिताइन का -- "आँगन सफेद "अइपन" से चक-चक कर रहा था गाड़ी का चाक। जैसी गोल और बड़ी परिधि में कुई के फूलों की माला आँकी गई थी । मध्य में षोडश दल कमल अंकित था।"[2] यह मंडपिकरण की ओर संकेत करता है ।

4·6233 जनेऊ

विवाह के समय जनेऊ का होना अत्यन्त महत्वपूर्ण है -- "विवाह-संस्कार के समय कई जनेऊओं की जरुरत थी । बच्चन जल्दी जल्दी जनेऊ गठिया रहे थे।"[3]

तन-मन की शुद्धि को बनाये रखने के लिए "आम तौर पर लोग छ: फेरों की दो जनेऊ धारण किए रहते हैं ।"[4]

ग्राम जीवन में अइपन घर श्रृंगार के लिए जनेऊ वर श्रृंगार के लिए है तो दूब और अक्षत विवाह कार्य के लिए आवश्यक है ।

जयदेव ने लोगों को बुलाया कि आकर नव-विवाहिता भवदेव पर दूब-अक्षत डाल जाय । "आशीर्वाद देने के लिए कम से कम पाँच ब्राह्मणों का होना अनिवार्य है ····· जयदेव रिरियाकर मर गये, अपने लगाकर भी चार से अधिक ब्राह्मणों का जुटाना पहाड़ हो गया ।"[5]

- -

1· भिगोये हुए चावल को पीसकर और गाढा घोलकर अंगुलियों से अंकित मांगलिक चित्रण - आलिपन - नई पौध - पृ· 47
2· नागार्जुन : नई पौध - पृ· 47
3· नागार्जुन : नई पौध - पृ· 42
4· नागार्जुन : नई पौध - पृ· 42
5· रतिनाथ की चाची : पृ· 88

उपन्यासकार ने उस प्रथा का खण्डन किया जिस प्रथा में विवाह के समय पाँचों ब्राह्मणों का होना अनिवार्य था। यह विवाह अन्तर्प्रांतीय वैवाहिक प्रथा थी। अन्तर्प्रांतीय, अन्तर्जातीय आदि विवाहों को प्रोत्साहन देने के लिए उपन्यासकार ने एक नई दिशा की ओर कदम उठाया है। यह कदम क्रांतिकारी है। कन्यादान, गठबन्धन, लाजाहोम, सप्तपदी, सिंदूरदान का उल्लेख नई पौध, दुखमोचन तथा उग्रतारा उपन्यासों में हुआ है।

4·6234 कन्यादान

विवाह क्रियाओं में कन्यादान का विशेष महत्व है। नई पौध उपन्यास में बिसेसरी के नाना स्वयं -- "कन्यादान"[1] करने के लिए नहा आये हैं।

4·6235 गठबन्धन, लाजाहोम, सप्तपदी तथा सिंदूरदान

दुखमोचन उपन्यास में माया तथा कपिल के विवाह की सभी रीतियाँ पूरी हुई -- "माँग में सिंदूर भी पड़ा, गाँठ भी बँधी, फेरे भी लगे"[2] -- आठ घंटे तक अग्नि में आहुतियाँ डाली गई -- तोला भर सिन्दूर माँग के बीचों बीच कई दिनों तक जमा रहा"[3] नागार्जुन विवाह की पूर्णता सिंदूरदान में समझते हैं भाभी सिंदूर भरी कटोरी सामने रखकर बोली -- "आज यह विधि पूरी होगी। लो, चुटकी में सिंदूर लो और उग्रतारा की माँग भर दो बाबू"[4]

- -

1· नागार्जुन : नई पौध : पृ· 37
2· नागार्जुन : दुखमोचन : पृ· 100
3· नागार्जुन : उग्रतारा : पृ·38
4· नागार्जुन : उग्रतारा : पृ· 86

4·6236 नाम परिवर्तन

विवाह उपरान्त भी घर की सभी औरतों के दो-दो नाम हुआ करते हैं -- "एक ससुराल का और दूसरा मायके का ।"[1] जिसका उल्लेख रतिनाथ की चाची तथा बलचनमा उपन्यास में हुआ है । रतिनाथ की चाची उपन्यास में जयकिशोर के मायके का नाम था शशिमुखी था, विवाह उपरान्त -- "रूपरानी यह नाम सास का रखा हुआ था ।"[2] इसी उपन्यास में उमानाथ के दुलहिन का नाम "ताराचरण की माँ, रामपुरवाली चाची, शकुन्तला और चाची सब की राय से कमलमुखी बहुरिया पड़ा ।"[3]

4·6237 मुँह दिखाई :

विवाह उपरान्त अर्थात् दूसरे दिन "मुँह देखने" की प्रथा भी मिथिला में विद्यमान है । वधू का घूँघट विवाहोपरान्त दूसरे दिन खुल जाता है । देखनेवाले को सगुन के रूप में कुछ न कुछ भेंट देना पड़ता है, जिस समय उमानाथ का विवाह सम्पन्न हुआ ।

"अगले दिन जयदेव और जयकिशोर ने वधू का मुँह देखा । चार-चार रुपये मुँह दिखाई दी ।"[4]

- -

1 तथा 2 नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ· 116

3· नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ· 162

4· नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ· 139

4.6238 शोभन

पंजीयन सूची द्वारा निर्धारित विवाह में वर-वधू को विवाह से पूर्व तीन-दिनों तक कड़े ब्रह्मचर्य का पालन करना पड़ता है। विवाहोपरान्त चौथे दिन की रात्री में इनका मिलन सम्भव है। इस प्रथा का अनुसरण नई पौध उपन्यास द्वारा प्राप्त होता है।

तिरहुतिया ब्राह्मणों के रिवाज के मुताबिक शादी के बाद की चौथी रात सुहागरात होती है। आज ही "दुल्हा-दुलहिन ने नमकीन खाना खाया था, आज ही वे साथ सोनेवाले थे।"[1]

4.6239 मुँह बजावन

प्रांतीय प्रथा के अनुसार शोभन की रात्री में, वर, वधू को बोलने पर मजबूर कर देता है -- यह प्रथा "मुँह बजावन" की प्रथा है -- बलचनमा की बहू इस बीच कई बार जमाई ले चुकी थी। मैंने कहा सो जाओ और हाँ ..... यह रहा तुम्हारा मुँह बजावन"[2]

जब वधू बिना मुँह बजावन के अड़ जाती है तब वर उसे किसी न किसी तरह बोलने पर मजबूर कर देता है दूल्हे (वाचस्पति) ने लाख कोशिश की मगर वह अपनी मुस्कान को पचा नहीं पाया उसे मुस्कुराते देखकर दुलहिन शरमा गई, तब उसे मालूम हुआ कि वह "बिना मुँह बजावन" के ही वह बोल पड़ी।"[3]

---

1. नागार्जुन : नई पौध : पृ. 139
2. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 156
3. नागार्जुन : नई पौध : पृ. 143

4·6210 तिराभक्त

विवाहोपरान्त तथा शोभन से पूर्व तीन दिनों तक यह भी प्रथा है कि वहाँ के लोग चोली अथवा अंगी नहीं पहनते है -- "चोली या अंगी भला इन तीन दिनों के अन्दर बदन पर कहीं कोई डालती है ?"[1]

इस प्रकार से विवाह, मुंह दिखावन, मुंह बजावन की प्रथा देश में प्रचलित रीति-रिवाज तथा आचार है ।

4·624 आर्य समाजी वैवाहिक पद्धति

आर्य समाज विवाह पद्धति का उल्लेख नागार्जुन ने दुखमोचन उपन्यास में किया । यह विवाह पद्धति विधवा विवाह, अर्न्तजातिय विवाह के लिए सुधारकों ने अपनाया है । जिसमें देवताओं की पूजा महत्वनीय नहीं है । विधवा माया तथा विधुर कपिल का विवाह आर्य समाजी पुरोहित द्वारा सम्पन्न होता जिसमें -- "विवाह के आरम्भ में कुलदेवता की पिंडी पर न तो मातृका पूजा हुई और न गणेश को याद ही किया गया"[2] स्वामी दयानंद सरस्वती आर्यसमाज प्रचलित विवाह पद्धति में मातृका पूजन की परिपाटी को आवश्यक इसलिए नहीं समझा कि मातृका न तो ऋग्वेदिय देवी है न सूत्रकालिक देवी । इस तरह गणपति अर्थात विनायक भी ऋग्वेद कालिन देवता नहीं । प्राचीन सूत्र ग्रंथों में गणेश की कहीं सूचना नहीं मिल पाती, केवल आधुनिक कालिन सूत्रों में दोनों की पूजा प्रचलित है ।

- -

1· नागार्जुन : नई पौध : पृ· 141

2· नागार्जुन : दुखमोचन : पृ· 100

माया तथा कपिल का विवाह धार्मिक कृत्य ही है, अधार्मिक नहीं। उपन्यासकार ने अपनी आस्था को, यहाँ स्पष्ट किया है वे रूढ़िग्रस्थ सम्प्रदायों को समाज से हटाने में तत्पर हैं। "मातृका पूजन" तथा "गणेश पूजा" आधुनिक कालिन वैवाहिक कृत्य में धार्मिक कार्य हैं। प्राचीन काल में यह परिपाटी प्रचलित न थी। उपन्यासकार इस बात में सहमत हैं। अंधविश्वास तथा धार्मिक रूढ़ियों को उन्होंने तोड़ निकाल बाहर किया। विवाहोपरान्त -----
"बस, खाली हवन ! खाली मन्त्र पाठ ! ..... मगर विवाह की बाकी विधियाँ सकुशल सम्पन्न हुई।"[1]

4·625 दाह संस्कार

मरणोपरान्त दाह संस्कार की विधि भारत में अत्यन्त प्राचीन है। उपन्यासकार नागार्जुन इस "संस्कार प्रकरण" से पूर्ण रूप से परिचित हैं। दुखमोचन तथा रतिनाथ की चाची उपन्यास में इस "प्रकरण" का विस्तार रूप से विवेचन हुआ है।

दुखमोचन उपन्यास में रामसागर की माँ का शव आँगन में लाया गया, "आँगन में तुलसी चबूतरा था, उसी के नजदीक उत्तर की तरफ सिर करके लाश रख दी गयी थी। ताजे हरे बाँस के टुकड़े से दूसरी तरफ अर्थी बनती रही एक ओर लोगों की बातें होती रही।"[2]

1· नागार्जुन : दुखमोचन : पृ· 100

2· नागार्जुन : दुखमोचन : पृ· 13

मृतक को नहलाकर[1] नया कपड़ा पहना दिया और उसे ठीक उसी जगह जहाँ थोड़ी-थोड़ी दूर के फासले पर -- "बाप-दादा, परदादा और दादी पर दादी आदि का अंतिम संस्कार हुआ था ।"[2] शव को ले आए । लम्बा पूला की तरह रुई का उक (उल्का) बनाया गया । रतिनाथ ने साथ लाई आग को फूंककर उक को धधकाया और चिता की परिक्रमा करके -- "चाची के मुंह में अग्नि स्पर्श कराया । यह विधि तीन बार की गई । अन्त में उक को चिता पर छोड़ दिया गया । आग लाश को पकड़ चुकी थी ।"[3] श्मशान से घर वापस लौट आने के पश्चात -- "मामी ने पत्थर का टुकड़ा आगे रख दिया तो दुखमोचन ने उस पर पैर रखकर पानी डाल दिया, फिर भीगे कपड़े बदले ।"[4] यह शास्त्रनुमोदित[5] कार्य है । चिता उस दिन बुझाइ गयी ।[6]

4·6251 अस्थि संचयन

अस्थि संचयन का कार्य तीसरे दिन हुआ । उस समय बची-खुची दो एक हड्डियाँ संभालकर अलग की गई, और बाकी राख समेटकर, -- "उस पर छोटा सा एक चबूतरा बना दिया गया । ऊपर से तुलसी का पौधा उस पर रोप दिया गया ।"[7]

- -

1· धर्म सिन्धु : पृ· 924
2· नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ· 170
3· नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ· 171
4· नागार्जुन : दुखमोचन : पृ· 15
5· नागार्जुन : धर्मसिन्धु : पृ· 925
6· नागार्जुन : धर्मसिन्धु : पृ· 923
7· नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ· 171

4·6252 अस्थि निमज्जन

मृत देह का अंतिम संस्कार जिसमें मृतक की हड्डियाँ तथा राख को पवित्र नदियों में विसर्जन किया जाता है। चाची की हड्डियां और राख लेकर रतिनाथ काशी पहुँचा, -- "नाव भाड़ा करके मणिकर्णिका घाट के सामने बीच में गया और चाची की अस्थि को कम्पित हाथों तथा आर्द्र आँखों से प्रवाहित कर आया।"[1]

दाह संस्कार, अस्थि संचयन अस्थि निमज्जन तथा सपिण्डीकरण मृत जड़ शरीर को सूक्ष्म शरीर में विलीन करने का प्रकरण है। इस प्रकरण में नागार्जुन पारंगत थे, अर्थात् कुलीन संस्कार उनके रग-रग में भरा हुआ था।

4·6253 श्राद्ध

पितरों की प्रसन्नता के लिए श्रद्धापूर्वक दिया जानेवाला अन्न, वस्त्र आदि दान श्राद्ध है, "पक्वान्न, आमान्न और सुवर्ण में से किसी एक द्रव्य के विधिपूर्वक दान को भी श्राद्ध कहते हैं।"[2] इसमें अग्नौकरण पिण्डदान तथा ब्राह्मण भोजन प्रधान है, "कहीं वचन से या असामर्थ्य से पिण्डदान आदि के न करने पर केवल ब्राह्मणभोजन आदि भी श्राद्ध पद का अर्थ सम्पन्न करता है।"[3]

1· नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ· 172
2· धर्म सिन्धु : पृ· 737
3· धर्म सिन्धु : पृ· 737

4·6253। श्राद्ध के प्रकार

श्राद्ध चार प्रकार का होता है :-- पार्वण, एकोद्दिष्ट, नान्दी, सपिण्डीकरण। नागार्जुन, बाबा बटेसरनाथ, उग्रतारा, रतिनाथ की चाची उपन्यासों में एकोद्दिष्ट श्राद्ध का उल्लेख हुआ है।

बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में राजा बहादुर ने -- "धूम-धाम से अपनी माँ का श्राद्ध किया था।"[1]

सभी वर्ग के लोग इस कृत्य में धन इच्छानुसार खर्च करते हैं। उग्रतारा उपन्यास के भीखन सिंह ने माँ कि श्राद्ध में -- "पन्द्रह सौ रुपये खर्च किये।"[2] एक अन्य उपन्यास रतिनाथ की चाची में बहादुर दुर्गा नंदन सिंह ने -- "माँ के श्राद्ध में सात दिनों तक पंडितों का शास्त्रार्थ चलाया। प्रत्येक पंडित को आने-जाने का सेकेंड-क्लास का खर्च, दुशाला और एक सौ एक रुपए की विदाई दी गई।"[3] और ब्राह्मणों को दान में, -- "पनबट्टा सुपारी दी गयी थी। महापात्र को हाथी मिला था।"[4]

4·6254 दान[5]

कृत, त्रेता, द्वापर और कलियुग में धार्मिक जीवन बिताने के लिए -- "तप, आध्यात्मिक ज्ञान, यज्ञ तथा दान क्रमशः बतलाया गया है।"[6] जिस तरह क्षत्रियों का धर्म क्षमा, वानप्रस्थों का धर्म साधारण भोजन का त्याग, तथा ब्रह्मचारियों का धर्म सुभिक्षा है उसी तरह गृहस्थों का धर्म - "दान ही एक मात्र है।"[7]

- -

1· नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ· 73
2· नागार्जुन : उग्रतारा, पृ·81 - 3· नागार्जुन: रतिनाथ की चाची, पृ· 93
4· नागार्जुन: रतिनाथ की चाची-पृ·94
5· इसे "मनुष्य यज्ञ" के अंतर्गत लेते हुए "दान एवं ब्राह्मणभोजन" का सविस्तार उल्लेख इस प्रबंध के पृ· 265.. पर किया गया है।
6· मनु : 1-86 7· दक्ष : 1/12-13

दानों एवं दाताओं की प्रशस्ति ऋग्वेद[क] में विद्यमान है । गाय एवं दक्षिणा के दान कर्ता को मोक्ष प्रदान करनेवाला बताया गया है ।

31) महादान

कुछ वस्तुओं के दान को महादान कहा जाता है । अग्निपुराण[1] स्वीकृत महादान -- 1. सोना, 2. अश्व, 3. तील, 4. हाथी, 5. दासियाँ. 6. रथों, 7. भूमि, 8. घर, 9. कन्या [दुलहिन] एवं 10. कलिया गाय है ।

सोलह महादान विविध पुराणों में विद्यमान हैं -- तुला पुरुष, हिरण्य गर्भ, ब्रह्माण्ड, कल्पवृक्ष, गो सहस्त्र, कामधेनु [हिरण्य कामधेनु] हिरण्याश्व, हिरण्याश्वरथ, हेमहस्तिरथ, पंचलांगल, धरादान, विश्वचक्र, कल्पलता, सप्तसागर, रत्नधेनु एवं महाभूत घट ।

इन महादानों में से एक -- "हाथी दान का उल्लेख नागार्जुन ने रतिनाथ की चाची उपन्यास[2] में किया है ।

6255 वार्षिक श्राद्ध तथा अविधवा नवमी

वार्षिक श्राद्ध तथा अविधवा नवमी के श्राद्ध प्रकरण में भोजन विधान तथा ब्राह्मण संख्या कितनी होनी चाहिए यह एक विवादग्रस्त प्रश्न है । उपन्यासकार नागार्जुन इस बात से सहमत हैं कि -- "वैश्वदेव में सम और पितृदेव में विषम संख्या में ब्राह्मण होना चाहिए ।

- -

क. ऋ0 1/125, 1/126-/1-5, 5/61, 6/47/22-27, 7/18/22-25 8/5/37-39, 8/6/46-48, 8/46/21-24, 8/68/14-19

1. अग्निपुराण - 209/23-24

2. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ. 84

कम से कम एक ब्राह्मण होना अनिवार्य है ।"[1] रतिनाथ की चाची, नई पौध, तथा दुखमोचन उपन्यास में नागार्जुन ने इसका उल्लेख किया है। उपन्यास में गौरी -- "सास-ससुर, बाप और पति की बर्षी में पांच-सात ब्राह्मणों को बराबर वह खिलाती आई थी ।"[2] प्रथा यह है कि, "पांच वर्षों तक कम से कम ग्यारह व्यक्तियों को निमंत्रण दिया जाय ।"[3] "श्राद्धोपरान्त जहाँ ब्रह्मभोज का आयोजन हो वहाँ ब्राह्मण के गले में -- "जनेऊ रहनी चाहिए, फिर उमर यदि पांच की भी हो और जन्म हुआ हो ब्राह्मण वंश में तो देवता और पितर लाख लाख मोर, आपको ब्रह्मभोज में सम्मिलित होने का पूर्ण अधिकार है ।"[4] अविधवा नवमी और मातृ नवमी दोनों एक ही है । मातृ नवमी के दिन ब्राह्मण भोजन कराने की प्रथा का उल्लेख नागार्जुन ने नई पौध उपन्यास में किया है । मातृनवमी के दिन, -- अपनी अपनी माँ, नानी, सास, दादी और परदादी के निमित्त सबको एक-एक ब्राह्मण चाहिए था ।"[5] महेश्वर को -- "नौ घरों में न्योता था । बलो को सात घर में । गौरी-नन्दन, दुनाई, बुद्धू किसी को भी पांच-पांच से कम घरों में नहीं जीमना था ।"[6]

इस तरह नागार्जुन ने श्राद्ध, वार्षिक श्राद्ध तथा अविधवा नवमी पर अपने विचार व्यक्त किये हैं ।

---

1. धर्म सिन्धु : पृ० 775
2. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ० 157
3. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ० 77
4. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : नई पौध - पृ० 102-3
5. नागार्जुन : नई पौध : पृ० 102
6. नागार्जुन : नई पौध : पृ० 102

4·7 प्रांतीय आचार

प्रान्तीय आचार के अन्तर्गत गौना का उल्लेख नागार्जुन ने बलचनमा, वरुण के बेटे, रतिनाथ की चाची, उपन्यासों में किया है ।

4·71 गौना

विवाह के बाद की गयी यह रीति जिसमें विवाह के कुछ काल बाद दुलहिन का मैके से विदा होकर ससुराल जाना होता है । यह रीति ग्रामीण समाज के सभी वर्गों में प्रचलित है ।

बाल विवाह के उपरान्त लड़की मायके में ही रहती है, यौवन में पदार्पण करते ही उसे ससुराल भेजना पड़ता है ।

गौने की उम्र का उल्लेख उपन्यासकार नागार्जुन ने बलचनमा उपन्यास में किया है । बलचनमा की बहन रेबनी -- "चौदहवां पार कर पन्द्रहवें में पैर रख चुकी थी, चेहरा-मुहरा खुल आया था । जवान हो रही थी । गौने की यही तो उमर है ।"[1]

अच्छे मुहरत पर शकुन का सामान लेकर लड़की की घर दुल्हे का कोई संबंधी जाता है और गौने की तिथि निश्चित कर आता है । यह एक किस्म की रस्म अदाई होती है । उसका उल्लेख नागार्जुन ने बलचनमा उपन्यास में किया है । बलचनमा के

- -

1· नागार्जुन : बलचनमा : पृ· 67

गौने के लिए -- "डोरा"सिंदूर और सगुन का सामान लेकर चुन्नी मेरे ससुराल गया और गौने के लिए उन लोगों को राजी कर आया।"[1]

4·72 बारात

गौने का निमंत्रण पाकर वर-पक्ष के व्यक्ति सज-धज कर आते हैं जिनको "बरात" कहा जाता है। बारात का उल्लेख नागार्जुन के बलचनमा उपन्यास में मिलता है। बलचनमा अपने पांच साथियों के साथ गौने के लिए निकल पड़ा। बारात में -- "हमारे तरफ के लोग औरतों को नहीं ले जाते।"[2] पश्चिम में ऐसा रिवाज है। बलचनमा प्रांतीय प्रथा के अनुसार अपने साथ किसी भी स्त्री को "बारात" में न ले जा सका। प्रांत-प्रांत की प्रथा भिन्न है।

उपन्यासकार नागार्जुन बलचनमा के माध्यम से निम्न वर्ग और उच्च वर्ग के रीति-रिवाजों में अन्तर स्पष्ट करते हुए इसी उपन्यास में कहते हैं कि -- "गौना से पहले ससुराल जाना हमारी बिरादरी का कायदा नहीं है और भी कई बातों में हम लोगों का शादी-ब्याह बड़ी जातवालों के शादी ब्याह से अलग किस्म का होता है। ..... बिना जोड़े हुए उनकी शादी नहीं होती, दूसरी बात यह थी कि शादी और गौना के बीच-बीच में भी वे लोग ससुराल जा जाकर रह सकते हैं।"[3] इतना ही नहीं बलचनमा को बात था कि "कभी न कभी गौना कराकर लाना ही पड़ेगा। गरीब-गुरबा का का बियाह-गौना शाखर्ची से नहीं, सादगी में ही होता आया है।"[4]

- -

1· नागार्जुन : बलचनमा : पृ· 102 2·नागार्जुन :बलचनमा: पृ· 101
3· नागार्जुन : बलचनमा : पृ· 112 4·नागार्जुन : बलचनामा : पृ· 114

4.73 कन्याविलाप तथा सामूहिक रुदन

गौने के पाँच दिन पहले से ही सामूहिक रूप से रुदन करना -- यह निम्न वर्ग में प्रचलित प्रथा है। जिसका उल्लेख नागार्जुन ने वरुण के बेटे उपन्यास में किया है। मधुरी के गौने के पाँच दिन पहले ही बधुए बिरादरी की स्त्रियाँ, जितिया बुआ, मोहनी मामी, सफुली बहन, मंगल की माँ और बुढ़िया मैहरा घर के काम-काज से फारिग होकर खुरखुन के घर आ जुटती। दस्तूर के मुताबिक, -- "प्रतिदिन सुर भरकर एक आध बार रोना भी मधुरी शुरु कर चुकी थी।"[1] रोने का यह सिलसिला -- "एक-एक के गले से लग-लगकर घंटा डेढ़ घंटा तक चला करता।"[2]

4.74 भेंट देना

बेटी के विदाई के समय माँ-बाप को गहने, गृहस्थी के उपयोगी सभी चीजें, साथ ही दुल्हे को भेंट देने की प्रथा का भी उल्लेख वरुण के बेटे उपन्यास में मिलता है।

वरुण के बेटे उपन्यास में खुरखुन ने बेटी मधुरी के गौने के समय साड़ियों के छे जोड़, चार ब्लाउज, परसन (मूंट) की मामूली शाल, चार-छे साधारण गहने, काँसे की थाल और कटोरा, पीतल का लोटा, बिछाने का मोटा खुरदरा कंबल, बचकानी संदूकची ... दुल्हे के लिए धोती कमीज और चद्दर दी थी।[3]

---

1 तथा 2 नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ॰ 42

3॰ नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ॰ 51

एक अन्य उपन्यास रतिनाथ की चाची में भी गौने का उल्लेख मिलता है । रामपुरवाली चाची ने, बेटी के गौने के समय तीन सौ रुपये खर्च कर -- "चार जोड़ा धोती, ओढ़ने का दो चादर, दो तौलिया, हाफ कुर्ता, दो जोड़ा पैताबे, बनियाइन, कमीज, तसर का कोट, रेशमी का पाग, छड़ी छाता, बारह आने भर सोने की अंगूठी कम्बल, दरी, तोसक, उलेच { बिछाने का चादर } दो तकिया, फूल की बड़ी थाल, लोटा और गिलास, दाल, कटोरा, छोटे-छोटे कटोरे, ... रसोई में काम आनेवाले तमाम बर्तन ।"[1]

4.75 भार भेजना

केवल दामाद को ही नहीं, बेटी के ससुराल में भी "भारिए" द्वारा भेंट भेजने की प्रथा का उल्लेख इसी उपन्यास में हुआ है ।

रामपुरवाली का जमाई बाबू बिदा हुए तो उनके साथ भार लेकर -- "पन्द्रह भारिए गए ।"[2] उमानाथ की ससुराल से -- "पाँच-भार आये हैं । केला, दही, चूड़ा-मिठाइयाँ, पकवान । गरी, छुहारे, मेवा-मखाने लेकर ।"[3]

एक अन्य उपन्यास बलचनमा में भी भार भेजने का उल्लेख प्राप्त होता है । बलचनमा की ससुरालवालों ने -- "दही, पकवान, केरा और समधिन के लिए साड़ी लहठी भेजी ।"[4]

- -

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ. 112
2. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ. 112
3. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ. 154
4. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 145

सामाजिक व्यवस्था में जिस तरह विवाह एक महान संस्कार तथा कर्तव्य माना जाता है उसी तरह गौना स्त्री के जीवन में मुख्य कृत्य है । उपन्यासकार ने समाज के विभिन्न वर्गों में पलनेवालों को "गौना-संस्कार" का रुपान्तर दृष्टिगोचित किया है । मध्यवर्गीय रामपुरवाली गाने में वह दे पायी जो सामंत देते हैं, वैसे ही निम्न मध्यवर्गीय उमानाथ को वही मिला जिससे वह अपना जीवन यापन कर सके । निम्न वर्गीय गौना चंद क्षण हंसी-खुशी से बिताने के लिए है ।

4.76 महफा (डोली) उठना :

गौना कार्य सम्पन्न होने के पश्चात वर तथा वधू भोजन, वस्त्र आदि देकर कन्या को कुलरीति सिखाकर अत्यन्त शोकपूर्ण हृदय से माता-पिता तथा अन्य सम्बन्धी उसे विदा करते हैं । विदाई के समय पर तथा वधू को महफे में बिठाने का उल्लेख बलचनमा उपन्यास में उपन्यासकार ने किया है -- दुल्हे को रस्म के तौर पर, "थोड़ी दूर तक महफे में रहना पड़ता है ।"[1]

4.77 वर-वधू का वर के घर आगमन : परछन

गौने के पश्चात् वर वधू का वर के घर आने पर वर की माता तथा बहिन उनकी आरती करती है । इस रस्म का उल्लेख नागार्जुन ने बलचनमा उपन्यास में किया है । वर तथा वधू के स्वागत के लिए औरतें गीत गाने लगती है तथा नव-विवाहित दम्पति के माथे

- -

1. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 145

पर -- "धान छींट कर मुंह, बाहों, छाती और घुटनों से दही छुवाकर चुमावन किया जाता है।"[1]

4.78 सौगात भेजना

दामाद को त्यौहारों पर सौगात भेजना प्रान्तीय आचार है। "गरीब से गरीब सास-ससुर भी नये दामाद को हरेक त्यौहार पर दही पकवान चूड़ा केला, मिठाई -- दो चार चीज़ें, भरिया के द्वारा जरूर भिजवाता है।"[2]

बलचनमा के मलिकाइन के मायके से कभी-कभी ऐसा ही भार आता था।[3]

4.8 मेला :

ग्राम जीवन में मेलों का सांस्कृतिक महत्त्व है। ये मेले किसी विशिष्ट त्योहार के दिन लगते हैं। ग्रामीण जनता के लिए ये मेले मनोरंजन के साधन तथा बाजार भी हैं। नागार्जुन के बाबा बटेसरनाथ तथा रतिनाथ की चाची उपन्यासों में इन मेलों का उल्लेख मिलता है।

परसादीपुर, सतगामा और बेतिया में प्रतिवर्ष -- कृष्णाष्टमी, विजयादशमी के दिन मेला लगता है। जिसे देखने के लिए विशाल जन समूह उमड़ पड़ता था। बाबा बटेसरनाथ उपन्यास

---

1. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 152
2. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ. 140
3. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 9

-- "सात आठ वर्ष का जेकिसुन प्रतिवर्ष बाप के कन्धों पर बैठकर कृष्णाष्टमी के मेले में -- "थियेटर देखने'[1] जाता था ।

4·81 पशु - मेला :

इसी उपन्यास में नागार्जुन ने एक अन्य मेले की ओर संकेत किया है, जहाँ पर पशुओं का क्रय-विक्रय होता है ।[2] विजयदशमी के रोज बेतिया में बहुत भारी मेला लगता है -- "गाय, बैल और घोड़े खूब बिकते हैं ।"[3] तथा गाँव के जमींदार बाबू प्रतिवर्ष मेला में जाते थे ।

भारतीय मेलों में धार्मिकता का स्थान भौतिक जगत की क्रियाकलाप ले रहे हैं । सामाजिक जीवन के विविध मुद्दों को भूलकर वर्ष दो वर्ष में आनन्द उत्साह से मिलते-जुलते थे ।

4·9 लोक कथा :

लोकमानस में प्रचलित कथाएं लोक-कथाएं होती हैं । इनका आधार लोक कण्ठ होता है, जिसके सहारे पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तान्तरित होती चलती है । नागार्जुन के उपन्यास बाबा बटेसरनाथ में कुसमादोना तथा सलहेस की कथा प्रचलित है । जिसमें नारी की सूझ और वीरता का वर्णन अधिक है ।

- -

1· "बिहार" - सत्यदेवनारायण सिन्हा, पृ· 72
2· नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ· 77
3· नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ· 129

लोक कथा :

सलहेस जाति का दुसाध था, और केवलगढ़ के राजा भीमसेन का चौकीदार। उसकी पत्नी मोरंग निवासी, दौना मालिन थी।

राजा भीमसेन की रानी हंसावती थी। उसके पलंग और कंठहार को चुहड़मल चोर ले भागा। सलहेस को राजा भीमसेन ने पकड़ने के लिए भेजा तो चुहड़मल और कलाल की दुकान पर मिला।

सलेहस की पत्नी 'दौना' जादू जानती थी, और उसने चुहड़मल को पकड़वाने की आज्ञा दी, और सारा माल जेवर आदि सात दिनों के अन्दर ले आने का वचन दिया। दौना मालिन चुहड़मल को पकड़ लाने में सफल हुई। राजा की सारी सम्पत्ति उसे प्राप्त हुई।

राजा की आज्ञा से चुहड़मल को पकड़ने में सलेहस बुरी तरह पछाड़ खाया। दौना उसकी सहायता में आई और चोर को पकड़ लिया। राजा ने उसे क्षमा कर दिया और उसे छोड़ दिया। इसके पश्चात् सलहेस और उसकी पत्नी आनंदपूर्वक रहने लगे। आज भी सलहेस की पूजा देवता की तरह होती है। इस लोक कथा को नागार्जुन ने बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में गीत कथा के रूप में चित्रित किया है --

"उमर बीत गयी
बाल पकने लग गये
पिछले बारह वर्षों से
इस आँचल में गाँठ बांध रखी है मैंने
आने का लेना है तो भी नहीं नाम
निठुर मेरा दुसाध
राजा सलहेस प्रीतम मेरे ।
तेरे नाम पर गाँठ बांध रखी मैंने
अपने आँचल में मैंने
ओ निठुर ! निर्मोही ! !"[1]

नागार्जुन लोक तत्वों के मर्मज्ञ कलाकार हैं, उनमें लोक कथा को अद्भुत रूप से अभिव्यक्त करने की जानकारी है ।

4.10 लोक-गीत :

लोक-गीत ग्रामीण जनता की भावना, उनके संवेगों एवं उनकी सौन्दर्य-भावना का प्रतिनिधित्व करते हैं । देश के विभिन्न भागों में प्रचलित ~~गीतों की भाषा~~ लोक-गीत "गीत काव्यों और गीतों के अविकसित एवं आरम्भिक रूप हैं, जिसमें व्यक्तिगत राग-द्वेष, आशा-निराशा, हर्ष-शोक ही व्यक्त नहीं होते हैं, बल्कि समष्टिगत भावों का भी निरूपण होता है ।"[2] ग. ना. सी. पढ़के के कथन के अनुसार

- -

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 26-29
2. तेज नारायण लाल : मैथिली लोक गीतों का अध्ययन : पृ. 221-22

'शास्त्रीय नियमों की विशेष परवाह न करके सामान्य लोक व्यवहार के उपयोग में लाने के लिए मानव अपनी आनन्द तरंग में जो छन्दोबद्ध वाणी सहज उद्भूत करता है, -- वही लोक गीत है ।'[1]

4·10। लोक गीतों का वर्गीकरण :

रामनरेश त्रिपाठी ने लोकगीत (ग्राम गीतों) का वर्गीकरण की श्रेणियों में किया है ।[2]

1· संस्कार सम्बन्धी गीत
2· चक्की और चरखे के गीत
3· धर्म गीत ।
4· ऋतु सम्बन्धी गीत
5· खेती
6· भिखमंगी
7· मेले के गीत
8· जाति के गीत
9· वीर गाथा
10· अनुभव के वचन

कृष्णदेव उपाध्याय ने लोक गीतों का वर्गीकरण --

1· संस्कारों के दृष्टि से
2· रसानुभूति की प्रणाली से

1· डॉ0कुलदीप : लोकगीतों का विकासात्मक अध्ययन : पृ· 8
2· रामनरेश त्रिपाठी : कविता कौमुदी-भाग-5 पृ· 45

3. ऋतुओं [illegible] की दृष्टि से
4. विभिन्न जातियों के प्रकार
5. क्रिया गीत की दृष्टि से ।[1]

नागार्जुन के रतिनाथ की चाची, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे, बलचनमा, उपन्यासों में प्रभाती, रोदागीत, महानुगीत, खेतीगीत, जाति गीत का उल्लेख हुआ है ।

4.102 प्रभाती

ये गीत प्रातःकाल में ईश्वर के स्मरणार्थ गाये जाते हैं । इन गीतों का उल्लेख रतिनाथ की चाची तथा बाबा बटेसरनाथ उपन्यासों में हुआ है । चुचुहिया की मधुर आवाज ने शंकर बाबा को एकदम जगा दिया और उन्होंने प्रभाती की तान छेड़ दी -- "जागहु हो बृज राज, लाल मोर : राखहु हो बृजराग"[2] एक अन्य उपन्यास बाबा बटेसरनाथ में भी प्रभाती गीत का उल्लेख मिलता है चुचुहिया की मधुर आवाज सुनकर जैकिसुन [illegible] कबीर की पंक्तियाँ गुनगुनाकर गाने लगा --

"उठ जाग मुसाफिर भोर भई
अब रैन कहाँ जो सोवत है
जो जागत है सो पावत है
जो सोवत है सो खोवत है ।"[3]

---

1. डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय-लोक साहित्य की भूमिका - पृ. 27
2. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ. 62
3. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 97

प्रभाती गीतों में ईश्वर का नामस्मरण के साथ-साथ नये दिन के महत्त्व का भी प्रतिपादन किया है ।

4·103 लोढ़ा गीत :

ग्रामीण स्त्रियाँ चक्की या, लोढ़ा चलाते समय, श्रम को भूलने तथा आसपास की निरवता को भंग करने के लिए भावनाओं को गीत के माध्यम से व्यक्त करती है । वरुण के बेटे उपन्यास में इस गीत का उल्लेख नागार्जुन ने किया है । मधुरी सिल पर लोढ़ा चलाते हुए, बिछड़े प्रियतम मोहन को ध्यान में रखकर करुण रस से ओत-प्रोत गीत गाने लगती है, जिसमें वह प्रियतम से तुरन्त आकर उसकी दशा देख जाने का निवेदन करती है --

"जिनगी भेल पहाड़, उसिर भेल भाखल ।
गेल पैरुख, नव फेकइ ओंठ मोर दिलपन,
मोंछवा पिरतिया के जंजाल ।।
आवऽ आवऽ, देखि जा हवाल ।।।
उगिर भेल का.......ल ।।।।"[1]

4·104 ऋतु गीत :

ऋतु गीत के अन्तर्गत मास तथा बारह-मासा का वर्णन नागार्जुन ने बलचनमा तथा वरुण के बेटे उपन्यास में किया गया है ।

1· नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ· 21

माघ महिने में आम के मजरैन पर उसकी खुशबू से मस्त हो, पास की मेड़ पर आदमी प्रसन्नता से गुनगुना उठा -

"सखि हे मजरल आमक बाग ।
कुहू कुहू चिकराए - कोइलिया
झींगुर गावत फाग ।
कंत हमर परदेश बसइ छवि
बिसरि राग-अनुराग ।
विधि भेल वाम, सील भेल वेरी
फाटे गेला ई भाग ।"[1]

एक अन्य उपन्यास वरुण के बेटे में बारह-मासा पद का उल्लेख हुआ है । सरकारी खलासी और पेटमैन शरणार्थियों की दुर्दशा को अनदेखा कर, बड़ी मस्ती में बारह मासा का पद गुनगुना उठा --

"सावन हे सांझ अति भयावन,
निठुर पिय नहिं पास, यो ।
चपल दामिनि, विकल भामिनि
ककर करती आस मो ।
मास भादो, बीच कादो ..."[2]

यहां ऋतुगीत का व्यंग्यात्मक प्रयोग उपन्यासकार ने किया है ।

- -

1. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 150

2. नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ. 95

4·105 खेती के गीत :

इस गीत का उल्लेख वरुण के बेटे उपन्यास में नागार्जुन ने किया है। खलिहान के आगे बाँसों के झुरमुट में पत्ते तोड़ते हुए चुन्हाई द्वारा गाये जानेवाला गीत --

"कबहुँ पकड़ में न आवै मछरिया
जुलमी मछरिया चलबल मछरिया।"[1]

खेती गीत की ओर संकेत करता है।

4·106 जाति गीत

इस गीत का उल्लेख वरुण के बेटे उपन्यास में हुआ है। गंगासहनी अपनी जाति के महान् पूर्वज सेनापति जयसिंह का चरित्र ऊँचे स्वर में गाने लगा --

"बउआ, खेइमउ ने।
बाघ ने खइच्छ बउआ जे सिंह, मोतीपुर मीठाई हवा।
बबुआ, सोआ। खाओ न।"[2]

4·107 नदी (देवी-देवताओं) के गीत

वरुण के बेटे उपन्यास में "कमला मैया" का गीत इस ओर संकेत करता है। सुरखुन तथा नीरस नशे में धुत्त कमला मैया की वंदना-गीत गाने लगते जो शृंगार रस से परिपूर्ण हैं --

---

1· नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ· 25
2· नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ· 62

"हंस पर चढ़कर आएगी कमला मैया
होकर मगर पर सवार चली जाएगी ।
तिरहुत [मिथिला] की तरफ बहाएगी धारा ।"[1]

नागार्जुन के लोक तत्वों के मर्मज्ञ कलाकार है, उनके गीतों में, संत कबीर की वाणी मिलती है । भावनाओं को अद्भुत और तरीकों से अभिव्यक्त करने के लिए मैथली भाषा का भी प्रयोग किया है । उन्हें गीतों को अभिव्यक्त करने की गहरी जानकारी है ।

4·11 खेल

मनुष्य मन बहलाने या व्यायाम करने के लिए किया जानेवाला काम खेल कहलाता है । खेल कई प्रकार के होते हैं । कुछ खेल घर से बाहर खुली जगह में खेले जाते हैं तो कुछ घर के भीतर या किसी पेड़ की छाया में बैठकर खेले जाने वाले । नागार्जुन के उपन्यासों में दोनों प्रकार के खेलों का उल्लेख मिलता है । खुली जगह पर खेले जानेवाले खेलों के अन्तर्गत कबड्डी तथा गेंद का उल्लेख नई पौध, रतिनाथ की चाची, तथा वरुण के बेटे उपन्यासों में हुआ है । घर के भीतर या बैठकर खेले जानेवाले खेलों में मीगणियों के खेल, कौड़ियों के खेल, कंकरों के खेल, ताश, शतरंज पचीसी आदि का उल्लेख हुआ है ।

- -

1· नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ· 21

4·111 कबड्डी :

इस खेल का उल्लेख नई पौध, रतिनाथ की चाची तथा वरुण के बेटे उपन्यासों में हुआ है। नई पौध में यह खेल -- "गांव के बाहर खुले मैदान में खेलते हैं।[1]

रतिनाथ की चाची उपन्यास में यह खेल पोखर के समीप की खुली जगह पर खेलने का उल्लेख मिलता है, रतिनाथ -- "बलुआहा पोखर पर कबड्डी खेलने गया था।"[2] एक अन्य उपन्यास वरुण के बेटे में भी इस खेल का उल्लेख मिलता है। शाम होते ही स्कूल के आँगनाई में -- "स्कूली लड़के कबड्डी खेलने आ धमके।"[3]

कबड्डी खेल शाम के समय खुले मैदान में खेलने का उल्लेख नई पौध, रतिनाथ की चाची तथा वरुण के बेटे उपन्यास में मिलता है।

4·112 गेंद :

इस खेल का उल्लेख नई पौध उपन्यास में नागार्जुन ने किया है। यह गांव के बाहर मैदान में खेले जानेवाला खेल है, इस खेल में -- "खिलाड़ियों की संख्या अधिक है --" तमाशबीन उतने नहीं।"[4]

1· नागार्जुन : नई पौध : पृ· 9
2· नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ· 140
3· नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ 32
4· नागार्जुन : नई पौध : पृ· 87

उपन्यासकार नागार्जुन की दृष्टि में कबड्डी खेल में खिलाड़ी कम और तमाशबीन अधिक होते हैं और गेंद में तमाशबीन कम और खिलाड़ियों की संख्या अधिक होती है ।

मींगणियों, कौड़ियों तथा कंकरों से खेल खेलने का उल्लेख बाबा बटेसरनाथ, बलचनमा, वरुण के बेटे उपन्यासों में हुआ है । यह अधिकतर निम्नवर्गीय समाज में प्रचलित खेल है ।

4·113 मींगणियों के खेल

मींगणियों के खेल के अन्तर्गत सतधरा का उल्लेख बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में हुआ है । चरवाहे, प्रतिदिन गांव के बाहर, वृक्ष की घनी छाया के नीचे खोभर में रखी मींगणियों से सतधरा[1] खेलते । काठी उछालते।[2]

4·114 कंकड़ों के खेल
---- ------------

इनके अन्तर्गत -- "कौआ ठुड्डी, मोगल पठान, बाघ गोटी"[3] खेलने का उल्लेख बलचनमा उपन्यास में मिलता है । निम्न वर्ग के लिए यह खेल दुख भूलने के साधन है, तो उच्चवर्ग के लोगों के लिए समय बीताने के । रतिनाथ की चाची उपन्यास में नरेश का अधिकांश समय रतिनाथ के साथ -- "कौआ ठुड्डी, मोगलो-पठान और बाघ-गोटी खेलने में बिताता है ।"[4]

- -

1· नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ· 57 : बलचनमा : पृ· 9
2· नागार्जुन " पृ· 9
3· नागार्जुन : " पृ· 9
4· नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ· 135

4·115 शतरंज

इस खेल का उल्लेख नागार्जुन ने रतिनाथ की चाची उपन्यास में किया है। वैद्यनाथ झा को शतरंज का इतना शौक है कि -- "एक बैठक में दस-दस घण्टे खेलते रहते।"[1]

4·116 पचीसी

इस खेल का परिचय नई पौध उपन्यास में नागार्जुन ने दिया है। यह चौपड़े की तरह का एक खेल है। जिसे सभी कामों से निवृत्त होकर रात के समय निश्चिन्तता से खेला जाता है। मातृनवमी के दिन दिगो के दालान पर -- "पचीसी खूब जमी थी ..... दिगो और गौरी दोनों गोटिया थे, दो बार हारे थे और एक बार इनकी गोटियाँ लाल हो गई थीं -- जीत गये थे।"[2]

4·117 ताश

इस खेल का उल्लेख बलचनमा तथा नई-पौध उपन्यासों में हुआ है। यह खेल मनोरंजन का ही साधन न होकर अपरिचित व्यक्तियों के साथ जान-पहचान बढ़ाने का कार्य भी करता है।

- -

1· नागार्जुन : नई पौध xxxxx रतिनाथ की चाची / पृ· 25
2· नागार्जुन : नई पौध : पृ· 104
3· नागार्जुन : नई पौध : पृ· 104

जिसका उल्लेख बलचनमा उपन्यास में हुआ है। बलचनमा राधाबाबू के ससुराल में बड़े लोगों को प्रणाम कर अपना परिचय देता है तो वह -- "छोटे बच्चे के साथ ताश खेलकर जान-पहचान बढ़ाता है।"[1]

ताश उच्चवर्गीय (सामंती) खेल है जिसे बच्चों से लेकर प्रौढ़ व्यक्ति भी खेलते हैं। इस खेल को अपराध की दृष्टि से बाभिसरी जैसे औरतें देखती हैं, क्योंकि -- "बाल विधवा ननद को ताश की पत्तियों ने ले जाकर पेशावर पहुंचा दिया था।"[2]

- -

1. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 128
2. नागार्जुन : नई पौध : पृ. 22

पंचम अध्याय

प्रथम : धार्मिक उत्कर्ष

5. नागार्जुन के उपन्यासों में ग्राम : धार्मिक संदर्भ

धर्म एक विश्वासमय पवित्र शक्ति है । इसकी धारणा अमूर्त तथा अति-प्राचीन है । हमारा अतीत काल धार्मिक दृष्टि से गौरवमय रहा है और उसके नियम शाश्वत नियामें की भांति समाज में मान्य रहे हैं । मनुष्य जन्म से लेकर जीवन के अन्त तक धार्मिक मान्यताओं को एक आवश्यकता के रूप में मानता आया है ।

धर्म का स्वरूप तथा उसकी परिभाषा करना सम्भव नहीं है । विभिन्न विद्वानों ने धर्म को अपने-अपने ढंग से विवेचित तथा विश्लेषित किया है । भारतीय चिंतक के अनुसार --"धर्म वह अनुशासन है, जो अन्तरात्मा को स्पर्श करता है और हमें बुराई और कुत्सितता से संघर्ष करने में सहायता देता है, काम-क्रोध और लोभ से हमारी रक्षा करता है, नैतिक बल को उन्मुक्त करता है, संसार को बचाने का, महान् कार्य के लिए साहस प्रदान करता है ।"[1]

मालिनोवस्की के अनुसार -"धर्म के अन्तर्गत व्यवहार के वे सभी प्रतिमान आ जाते हैं जिनमें मनुष्य दैनिक जीवन की अनिश्चितताओं को न्यूनतम करने का एवं अप्रत्याशित तथा भविष्यवाणी न किये जा सकने वाले संकटों की क्षतिपूर्ति का प्रयत्न करते हैं ।"[2] विभिन्न विद्वानों के विचारों को देखने के बाद निष्कर्ष निकलता है कि सांस्कृतिक मान्यता-प्राप्त विभिन्न पवित्र विश्वास ही धर्म है जो मानव-समाज को पूर्व पीढ़ियों से सामाजिक विरासत के रूप में प्राप्त होते हैं । जिनके आधार पर वे आकस्मिक आपत्तियों को सहन करने का सम्बल प्राप्त करते हैं ।

---

1. डॉ० राधा कृष्णन् - धर्म और समाज पृ- 45
2. तेजमल दक : भारतीय ग्रामीण समाज शास्त्र पृ- 48

ग्रामीण धर्म परिवर्तन की प्रक्रिया में है । विज्ञान शिक्षा तथा परिवर्तित सामाजिक व्यवस्था के कारण ग्रामीणों के दृष्टिकोणों एवं मनोभावों में परिवर्तन हो रहा है । धर्म का सामाजिकता में पर्यवसान हो रहा है । धर्म की केन्द्रीय सत्ता पर बौद्धिकता ने अधिकार कर लिया है । जिसके फलस्वरूप, कई धर्म, धार्मिक कट्टरता को तोड़कर धर्म-निरपेक्षता की ओर अग्रसर हो रहे हैं । यथार्थ रूप में यह संक्रमण की स्थिति है । डॉ राधा कृष्णन् ने कहा है -- "चारों ओर जब हमें वस्तुओं के टूटने-फूटने और सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक संस्थाओं में परिवर्तनों की, प्रमुख विश्वासों और विचारों में, मानव-मन की आधारभूत श्रेणियों में परिवर्तन की आवाज सुनाई पड़ रही है ।"[1]

धार्मिक मान्यताओं के आधार पर धार्मिक तथा अधार्मिक कार्यों का परीक्षण किया जाता था । लेकिन आज इसका निर्धारण समाज यथार्थ के द्वारा किया जाता है । पुजारी और पुरोहित आज जनता और ईश्वर के मध्यस्थ नहीं रह गये हैं । जीवन धार्मिक आदर्शों की अवैध घुसपैठ को बौद्धिकता ने रोक दी है ।

नागार्जुन के उपन्यासों में मानव-धर्म की प्रतिष्ठा का स्वर दिखाई देता है । ईश्वरीय आस्थाओं का केन्द्र देवी-देवताओं के साथ-साथ मानव भी हुआ है । कर्म और करुणा का नाम ही धर्म बन गया है । मानवीय सुख-दुखों को ही उपन्यासकार ने चित्रित किया है । "वर्तमान युग की ऐसी प्रवृत्ति है । जब मानसिक विश्लेषण के इस नग्न-रूप में मनुष्यता पहुंच जाती है, तब उन्हीं सामाजिक बन्धनों की बाधा घातक समझ पड़ती है । और इन बन्धनों को कृत्रिम और अवास्तविक माना जाने लगता है ।"[2]

---

1. डॉ० राधाकृष्णन् : धर्म और समाज पृ- 7
2. जयशंकर प्रसाद : काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध पृ- 120

साहित्य में यथार्थ की प्रवृत्ति एक विशेषता रही है। उसने मठाधीशों और उनकी शिष्य परम्पराओं को बुरी तरह ललकार कर, उनमें फैली गंदगी को साहित्य में स्थान दिया। ग्राम जीवन की विविध चिन्तन धाराओं को देख ए०आर०देसाई ने कहा —"वर्तमान ग्राम धर्म परिवर्तन की ओर अग्रसर है।"[1] ग्राम-जीवन में हो रहे परिवर्तन के मूल केन्द्र परम्पराएँ, मूढ़ विश्वास, मान्यताएँ हैं, जिन्होंने ग्राम: मानव को जकड़ रखा है।

नागार्जुन ने धर्म के परिवर्तित प्रतिमानों को जानने का प्रयास किया है। ग्राम जीवन में धार्मिक परिवर्तन मुख्यत: स्वतंत्रता के पश्चात् आया है। धर्म निरपेक्ष राष्ट्र ने ग्रामीण मानसिकता को नये विचार दिये। गाँव वालों ने धर्म-निरपेक्षता एवं पारस्परिक समानता की भावना को अनुभूत किया, जिसके कारण ग्रामीण महन्तों की धार्मिक गद्दियां हिल उठी।

5.1 ग्राम-जीवन में व्याप्त आस्तिकता

ग्राम-जीवन में आस्तिकता का अर्थ धार्मिक आस्था से है। धर्म के मुख्य उपादान आस्था और क्रिया है। दोनों के समन्वय के बिना धार्मिक साधना संभव नहीं। नागार्जुन के रतिनाथ की चाची उपन्यास में धर्म के दोनों उपादानों का उल्लेख मिलता है।

रतिनाथ, मजदूर कुल्ली राउत के साथ जाते समय मार्ग में पड़े तालाब में फुर्ती से संध्या-कर्म करता है। कुल्ली राउत रति के संध्या-

---

1. The ideology, the istitutions, the rituals, the ethics and the aesthetics of the rural religion are undergoing a change through gradual under the pressure of new material and cultural forces. A.R.Desai, Rural Sociology in India - P-64

कर्म की फुर्ती को देखकर आश्चर्य चकित होता है —"तुम तो नील माधव के वंशधर हो, तुम्हें इतनी जल्दी न करनी चाहिए ।"[1] इसके उत्तर में रतिनाथ कहता है, "अरे यहाँ कौन देखता है ? देखना, चलकर तरकुलवा में, घंटा भर नाक न दबाये रहा, तो जो कहो ।"[2] गाँव के इन दोनों व्यक्तियों की चिन्तन धाराएँ अलग-अलग है । एक आस्थावान है तो दूसरा आडम्बर प्रिय । रतिनाथ संध्या कर्म को धार्मिक कृत्य मानकर नहीं करता । लगता है एक परम्परा गले पड़ गई है और उसे जबरदस्ती से निभा रहा है । कुल्ली राउत संध्या कर्म न करके भी आस्तिक है और उसमें आस्तिकता के लक्षण विद्यमान है ।

स्वतंत्रता के बाद धार्मिक संस्था मठ और मंदिर भी धार्मिक अनैतिकता के केन्द्र बनकर रह गये हैं । नागार्जुन का "इमरतिया का बाबा" इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है ।

5.2 मठ

मठ का अत्यन्त प्राचीन रूप विद्यालय है । प्राचीन काल[3] में अध्यापन पुण्यकार्य माना जाता था । गृहस्थ ब्राह्मणों में पंच महा यज्ञों में ब्रह्म यज्ञ[4] का स्थान सर्वोच्च था । ब्रह्मयज्ञ अर्थात् गृहस्थों द्वारा विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करना है । आचार्य तथा अपने शिष्यों और पुत्रों के साथ रहकर ब्रह्मयज्ञ का अध्ययन अपने ही घर में किया करते थे । यही गृहस्थ-धर्म प्रतिष्ठित आचार्य विद्यालय के अधिपति होते थे । इस प्रकार से विद्यालय का निर्माण प्राचीन-भारत में ब्रह्मयज्ञ के कारण ही था । कालान्तर में इन विद्यालयों के रूप को आश्रमों ने

---

1. तथा 2 नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 54
3. मनु 3/70
4. छांदोग्य 51/1, 4/9/1 बृह्द. 3/7/1

ग्रहण कर लिया । महाभारत[1] में कण्व, व्यास, भरद्वाज आदि के आश्रमों का वर्णन मिलता है । रामायण में भरद्वाज के आश्रम का रम्य वर्णन है । चित्रकूट[2] में वाल्मीकि, दण्डकारण्य में अगस्त्य आदि का वर्णन है । इन आश्रमों में ब्रह्मा, अग्नि, विष्णु, महेन्द्र, विवस्वन (सूर्य), सोम, भग, कुबेर, धाता, विधाता, वायु, वरुण, गायत्री, वसुगण, नागराज, गरुड़, कार्तिकेय आदि धर्म संस्थापक निवास करते है ।

तक्षशिला के विश्वविद्यालय[3] में आचार्य धौम्य उनके शिष्य अभिमन्यु, आरुणी आदि ने शिक्षा प्राप्त की थी । गौतम बुद्ध के समकालीन सर्वोच्छ वैद्यराज जीवक ने भी यहीं से आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त की थी ।.......यहाँ पर भी अनुसंधान पारायण ब्राह्मण विद्या का उपार्जन किया करते थे, इन स्थानों को "गुरुकुल"[4] कहा जाता था । विद्यालय आश्रम, गुरुकुल आदि का रूपान्तर ही मठ है ।

दसवीं शताब्दी में मंदिर-अग्रहार आदि में अध्ययन तथा अध्यापन कार्य सम्पन्न होता था । अग्रहार की भाँति "टोल" नामक शिक्षण संस्थाएँ उत्तर बिहार, बंगाल आदि में प्रचलित थी । टोल के संदर्भ में उपन्यासकार नागार्जुन ने "रतिनाथ की चाची" में इसे "संस्कृत विद्यालय" का नाम दिया है । गाँव में -"छोटी-बड़ी दो पाठशालाएँ थी ।× × × × बड़ी पाठशाला का नाम था "श्री तारिणी संस्कृत टोल" शुभंकरपूर" × × बिहार जब बंगाल सरकार की मातहत था तब संस्कृत पाठशालाएँ टोल कहलाती थीं ।"[5]

---

1. महाभारत : आदि पर्व 64 अध्याय
2. रामायण : चित्रकुट 2/54, 2/90/8 दण्डकारण्य 11/57-80
3. पंच गुरुक जातक पृ- 132 , रामजी उपाध्याय : प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका पृ 164 से उध्दृत ।
4. महाभारत पृ- 2/1/1
5. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ-33

"टोल नागरिकों की आर्थिक सहायता और भूदान से चलतेथे तथा इनका सम्बन्ध ग्राम से था । वहीं के ग्रामीण आचार्य विद्यार्थियों के लिए भोजन तथा वस्त्र का प्रबन्ध किया करते थे । साधारण विद्यालय तथा टोल दोनों का रूप एक ही था ।

आचार्य शंकर ने सर्वप्रथम शिक्षा केन्द्र के रूप में "मठ" को स्थापित किया था । पुरी, काँची, द्वारका तथा बद्री में उच्च कोटीय मठ संस्थापित थे । हिरण्यमठ, कोटीय मठ, पंचमठ आदि इसी प्रकार के उच्च स्तरीय मठ है । मठों का एक विकसित रूप बीसवीं शताब्दी में दृष्टिगोचर होता है । भारतीय मठों के निर्माण में राजनीति का बहुत बड़ा हाथ रहा है । जमींदारी उन्मूलन प्रथा के प्रतिद्वंदिवता में जिन मठों का निर्माण हुआ है, वे सारे मठ राजनीति मठ है ।

उपन्यासकार इस बात से सहमत है, इसका प्रमाण है कि, मठ जिस गौरवशाली परम्परा की परिणति है, वह अब राजनीतिक एवं अन्य स्वार्थों के कारण बहुत बीभत्स रूप ग्रहण कर चुके हैं, उपन्यास "जमनिया का बाबा" की कथा-वस्तु इसी पर आधारित है । उपन्यासकार नागार्जुन जमनिया के मठ का परिचय देते हुए कहते हैं कि --"जमनिया का मठ कोई परम्परागत प्रामाणिक मठ नहीं है । आज से दस-बारह वर्ष पहले वहाँ कुछ नहीं था----------जमीन्दारी तालुकदारी प्रथा के उन्मूलन का कानून पास हुआ तो जमनिया और लखनौती के दो-तीन, भूस्वामियों ने ज्यादा से ज्यादा जमीन हड़पने के लिए रातोंरात "जमनिया मठ" की स्थापना कर डाली।"[1]

---

1. नागार्जुन : जमनिया का बाबा पृ- 103

प्राचीन भारत के आचार्यों ने जिन विद्यालयों, आश्रमों, मठों की स्थापना की थी, वहाँ उच्चस्तरीय अध्ययन और अध्यापन कार्य सम्पन्न होता था, परन्तु उपन्यासकार नागार्जुन के समय में वहाँ न अध्ययन कार्य सम्पन्न होता था न अध्यापन कार्य ही ।

5.2.1 मठ और भ्रष्टाचार

आधुनिक मठ जमींदारों द्वारा निर्मित है । जमींदार अपनी आस्था को बनाये रखने के लिए इस प्रकार के विविध मठों एवं महंतो की सृष्टि किया करते हैं । इनके मठ – "तस्कर व्यापार का छोटा-मोटा अड्डा ही था ।"[1] और महन्त जमींदार के कठपुतली । जिस तरह साधु संत सभी के काम आया करते थे, उसी तरह "जमनिया मठ" के महंत किसी-भी सत्यता में सहायक नहीं होते थे । फिर भी इनकी –"विष्ठा दुनियादारों के लिए चंदन होती है ।"[2]

प्रबंधक, महंत और मठ बीसवीं शती के बिगड़े प्रतिष्ठापक, धर्मदाता और धर्मालय है । इसका संकेत भी इसी उपन्यास में मिलता है ----"मठ का प्रबन्ध जिनके हाथों में है, स्वार्थ-साधन की अपनी सनक में भोली-भाली हिन्दू जनता को ----धोखा देते रहे ।"[3] उपन्यासकार ने मठ निर्माणार्थ कार्य में ऐसे ही भ्रष्ट व्यक्तियों के चरित्र को अंकित किया है "वहाँ ---"चार पाँच वर्ष पहले मठ के अन्दर दुर्गा की प्रतिमा के समक्ष एक अबोध शिशु की बलि चढ़ा दी गई थी । लक्ष्मी के बच्चे की बलि पड़ी तो ---"लोग डर गए ।"[4] फिर भी लोग वहाँ जाने से नहीं घबराते थे । वास्तव में ---"हिन्दू जाति सचमुच गाय होती है । बार-बार दुहते जाओ, बूँद-बूँद निचोड़ लो । फिर भी लात नहीं मारेगी ---

---

1. नागार्जुन : जमनिया का बाबा पृ- 104
2. " : " " पृ- 145
3. " : " " पृ- 104
4. " : " पृ- 90

--ढोंग नहीं चलाएगी ।"[1] केवल यही नहीं --"सदियों से मुस्लिम फकीरों और ईसाई संतों को अपनी श्रद्धा-भक्ति देते आए हैं, उनके हाथों का प्रसाद ग्रहण करके हमने अपने को धन्य माना है । हमारा समाज इतना क्षुद्र कभी नहीं होगा कि इस सिलसिले को खत्म कर दे ।"[2] इस तरह उपन्यासकार चारों ओर से क्रांति का संदेश देना चाहते हैं, यह चुनौती मठ महंत मठाधिपति और उनके कर्णधार के लिए है ।

मठ केवल तस्कर-रादि व्यापार के अड्डे न होकर व्यभिचार के "टोल" भी है । जब तक --"एक आध साधु-आइन न रहे तो मठ उदास लगता है । भक्तों की तबीयत उखड़ी-उखड़ी सी रहती है ।"[3] कहते हैं, दफ्तरों में इन दिनों औरतें काम करने लगी है ।" औरतों के बिना संसार सूना रहेगा ।

आधुनिक मठ सरकारी दफ्तर तथा सरकारी कार्यालय दोनों समान है । जिस तरह कार्यालयों में दिन-भर गुलछरें और मोचीपन रहता है, उसी तरह का मस्तीभरा वातावरण मठों में भी है । इमरतिया रोज शाम को --"इन समाधि-कुटीरों में गुग्गुल की धूप सुलगा जाती है ।"[4] एक योगी के लायक आराम और सुभीते की सारी व्यवस्था वहाँ यों भी रहती है । उपन्यासकार ने इन मठों की खिल्ली उड़ाई है । उसकी पोल खोलते हुए कहा --"जमनिया का महन्थी दरबार मर्दों और औरतों से गुलजार रहनेवाला चमन था । वह बैरागियों का सूखा अखाड़ा कभी नहीं रहा ।"[4क] वहाँ सुभीते की सभी वस्तुएँ विद्यमान थी । नारी प्रसाधन का वह केन्द्र था । इमरतिया को --"जमनियावाले दोनों बड़े-आईने दिन-रात याद आते थे ।"[5] इस तरह - बाबा के दरबार की हरियाली जिले भर में मशहूर हैं ।"[6]

---

1. नागार्जुन : जमनिया का बाबा पृ- 144
2. " " " पृ- 138
3. " " " पृ- 17
4. " " " पृ- 26
4क. " " " पृ- 56
5. " " " पृ- 80
6. नागार्जुन = जमनिया का बाबा पृ- 43

मठ की अपनी स्वतंत्र सत्ता है । मठ के अन्दर - "चार बड़े-बड़े कुएं हैं । एक में बिजली का इंजन फिट है । उस कुएँ की बदौलत पचासों एकड़ हरे भरे रहते हैं ।"[1] अतिरिक्त इसके सम्पत्ति बटोरने का व्यवसाय कुछ और ही है ।

5.2.2 मेला : आर्थिक शोषण का साधन

मठ को जमाने के लिए मेले-ठेले शुरू करवाए थे । कुल मिलाकर --"पचीस-तीस हजार की आमदनी मेला कमेटी को हो जाती थी, पन्द्रह हजार से कम तो कभी नहीं हुई ।"[2] यह धन-राशि मठ, मठाधीश तथा उसके संचालक के पास न जाकर अधिष्ठाता के पास चला जाता था । मेला कमेटी के हिसाब की असलियत के बारे में भगोति ने "कई बार अपना शक जाहिर किया था । वह इस बात पर भी कहाँ कभी सहमत हुआ कि कमेटी की बचत वाली धनराशि मठ के मैनेजर हर बार सेठजी की ही रोकड़ में जमा करते थे ।"[3] मठों की आर्थिक दशा उन्नतिशील होने पर भी मठ किस तरह विविध अन्याय तथा अत्याचारों के केन्द्र बने रहते थे । उसकी पोल नागार्जुन ने खोल दी । जमनिया का मठ इस अनास्था के लिए चरम सीमा है ।

5.2.3 मठ परिवर्तित संदर्भ

बदलते दिनों ने इन मठों को पवित्र बना दिया, "जमनिया का बाबा", "इमरतिया" आदि अपने कुविचार तथा कुकर्मों के कारण जेल की

---

1. नागार्जुन : जमनिया का बाबा पृ- 43
2. " " पृ- 120
3. " " पृ- 121

चार दीवारी में रहते रहे । भारत की आजादी में, क्रांति के दिन वापस आ गए । जिसके फलस्वरूप इन मठो में, फिर से एक बार जागृति उठेगी और मठ धार्मिक शिक्षा के केन्द्र न होकर राजनैतिक शिक्षा के शिविर होंगे । उनका प्रवेश द्वार दूर से ही चमक रहा है । "चन्द्रशेखर आजाद सैनिक शिक्षण शिविर । नजदीक से देखने पर छोटे अक्षरों में दिख रहा है --"मुख्य अधिष्ठाता : स्वामी श्री अभयानंद ।"[1] जिस तरह मठ क्रांति के शिविरों में बदल गए उसी तरह वहाँ के भक्त धर्म के पीछे पनपनेवाली गंदगी को देखकर नास्तिक हो गए --"राधा बाबू नास्तिक हो गए है । माँ के मरने पर न बाल कटाये न अशौच माना ।"[2] यह सब कुछ उन मठों का प्रभाव है जहाँ विविध दुराचार फैले हुए हैं ।

5.3 देवी - देवता

नागार्जुन के उपन्यासों में -- रतिनाथ की चाची, दुखमोचन, बाबा बटेसरनाथ, जमनिया का बाबा, उग्रतारा, हीरक जयन्ती, नई पौध उपन्यासों में निम्न देवी-देवताओं का उल्लेख हुआ है ।

5.3.1 देवता

उपन्यासों में उल्लेखित देवता के अन्तर्गत शालिग्राम, शीव, हनुमान, गणेश, वरूण, कार्तिकेय, चित्रगुप्त, राम तथा कृष्ण का उल्लेख हुआ है । नागार्जुन ने शालिग्राम[3] के लिए भगवान[4] शब्द का प्रयोग किया है ।

---

1. नागार्जुन : जमनिया का बाबा पृ- 126
2. " बलचनमा पृ- 103
3. " रतिनाथ की चाची पृ- 11
 दुखमोचन पृ- 151
4. " रतिनाथ की चाची पृ- 132

शिव के लिए शिवजी[1], शंकर[2], महादेव[3] बाबा बैद्यनाथ[4] के लिए बाबा[6क] का भी उल्लेख हुआ है। भोले नाथ[7], बम्भोले[8], बम्भोलेनाथ[9], बाबा विश्वनाथ[10], बाबा कपिलेश्वर[11], मुक्तिनाथ[12], नर्मदेश्वर[13], काल भैरव[14], शिवलिंग[15] के लिए "पिंडी"[16] का भी प्रयोग हुआ है।

- -

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 20, 30
2. " जमनिया का बाबा पृ- 5, 131
3. " रतिनाथ की चाची पृ- 64
   दुखमोचन पृ- 111
4. " रतिनाथ की चाची 9, 32, 39, 71

6क." रतिनाथ की चाची पृ- 132

7. " बाबा बटेसरनाथ पृ-21
8. " रतिनाथ की चाची पृ- 32
9. " बाबा बटेसरनाथ पृ- 20
10." रतिनाथ की चाची पृ- 17,32, 81, 105, दुखमोचन पृ-123
11." रतिनाथ की चाची पृ- 22
12." रतिनाथ की चाची पृ- 19
13." दुखमोचन पृ- 129
14." रतिनाथ की चाची पृ- 5
15." बाबा बटेसरनाथ पृ- 45, 58
16. " दुखमोचन पृ- 31, 100

गणेश के लिए गजानन लम्बोदर[2] शब्द का प्रयोग किया है। वरुण[2क], कार्तिकेय[3], चित्रगुप्त[4], राम[5], कृष्ण[6] इन देवताओं का उल्लेख हुआ। निम्न देवताओं का विवेचन नागार्जुन ने विस्तृत रूप से किया है।

5.3.1.1 शालिग्राम

विश्व-रूप ईश्वर का प्रतिरूप "शालिग्राम"[7] है। जिसका उल्लेख उपन्यासकार ने रतिनाथ की चाची तथा दुखमोचन उपन्यास में किया है। शालिग्राम के लिए भगवान्[8] शब्द का प्रयोग भी उपन्यास में मिलता है। यह गंडक नदी के उद्गम स्थान पर मिलता है, तथा इसे बनारस या जयपुर के कारीगर - काले पत्थर से तराशकर बनाते हैं "।[9] उन पर स्थित चक्रों के आधार पर उन्हें वासुदेव, प्रद्युम्न, संकर्षण, अनिरुद्ध कहा जाता है।"[10]

- -

1. नागार्जुन : जमनिया का बाबा पृ- 10, 11, 12
2. " जमनिया का बाबा पृ- 11

2क " बाबा बटेसरनाथ पृ- 45

3. " रतिनाथ की चाची पृ- 42
4. " " पृ- 42
5. " उग्रतारा पृ- 57, 61
6. " रतिनाथ की चाची पृ- 42
7. " " पृ- 11, दुखमोचन पृ- 151
8. " " पृ- 132
9. " " पृ- 19
10. " धर्मसिन्धु पृ- 627

रतिनाथ की चाची उपन्यास में रतिनाथ के घर में, देवता दो ही थे - "शालिग्राम और नर्मदेश्वर । चाँदी की सराँह शालिग्राम के लिए पीतलवाली नर्मदेश्वर के लिए ।"[1]

5.3.1.2 कुलदेवता

देवी-देवताओं का निर्देश भी परम्परा से मनुष्य को मिलता है। इसका उदाहरण कुल देवता और देवी के रूप में है। जिसके अनुसार किसी कुल में किसी विशेष देवता या देवी को अराध्य और अधिष्ठाता मानते चले आना। विशेष कर ग्रामीण संस्कृति में यह उल्लेख है। नागार्जुन ने दुखमोचन, नई पौध उपन्यासों में कुल देवता की पूजा बतायी है।

5.3.1.3 कुलदेवी - देवता

दुखमोचन उपन्यास में मामी ईश्वर में अटूट विश्वास रखती है। पूजा, जप और पाठ करना उसका नित्य कर्म है, वह बारह महीने प्रातः काल नहा लेती है और --"पिण्डी की शक्ल में स्थापित कुलदेव दुर्गा की पूजा करती।"[2] एक अन्य उपन्यास में कुल देवता के पूजा का उल्लेख मिलता है। खोंखा पंडित पूजा-पाठ परायण ब्राह्मण है --"कुलदेवता इन लोगों की भगवती उग्रतारा थी। इसलिए रंग-बिरंगे फूलों की आवश्यकता पड़ती ही रहती।"[3] उपन्यास में उल्लेखित उग्रतारा का रूप मातृका का एक रूप ही है। देवी की पूजा में फूलों की आवश्यकता को धर्म सिन्धुकार[4] भी स्वीकार करता है।

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 11
2. " दुखमोचन पृ- 31
3. " नई पौध पृ- 85
4. देवी की पूजा - "पुष्पों से --कुन्द, सिन्दुवार बन्धूक तथा अगस्त के फूलों से करे। - धर्म सिन्धु पृ - 664

5.3.1.4 इष्ट देवता

व्यक्तिगत विश्वास और आस्था से जिस देवता को अंगीकार किया जाय वह इष्ट देवता है । कुल देतवा जहाँ परम्परा अनुमोदित और अनिवार्य विश्वास तथा विद्यमान है, वहाँ इष्ट-देवता व्यक्तिगत विश्वास और स्वेच्छा की वस्तु है, उपन्यासकार ने दुखमोचन, बाबा बटेसरनाथ, हीरक जयन्ती उपन्यासों में कुलदेवता का उल्लेख किया है ।

अ. हनुमान

हनुमान[1] के लिए महावीर[2], बजरंगबली[3], संकट मोचन[4] शब्दों का प्रयोग नागार्जुन ने किया है । हीरक जयन्ती उपन्यास के संतानियाजी हनुमान जी को अपना --"इष्ट देव मानते है ।"[5]

5.3.2. देवी

उपन्यासों में वर्णित जिन देवियों का उल्लेख हुआ है वे निम्न है, काली[1क], तारा[2क] के लिए तारादेवी[3क] भगवती उग्रतारा[4क], देवी उग्रतारा[5क], तारा भगवती[6] शब्दों का प्रयोग किया है ।

- -

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 129, उग्रतारा पृ-7, 8,28, 57, 58, 61, 63, जमनिया का बाबा पृ- 39, हीरक जयन्ती पृ-106
2. " उग्रतारा पृ-8
3. " उग्रतारा पृ- 28,63
4. " जमनिया का बाबा पृ- 39
5. " हीरक जयन्ती पृ- 106

1क." रतिनाथ की चाची पृ-32, 42,102, दुखमोचन पृ- 31
2क." रतिनाथ की चाची पृ- 32
3क." जमनिया का बाबा पृ- 12
4क." दुखमोचन पृ- 161
5क." दुखमोचन पृ- 151 [6] नागार्जुन :रतिनाथ की चाची पृ-81

चंडी,[1] दुर्गा[2], जगदंबा[3], गौरी[4], सरस्वती[5], अन्नपूर्णा[6], सीता[7] का उल्लेख हुआ है। इनमें से प्रमुख देवियों का वर्णन निम्न है :–

5.3.2.1 इष्ट देवी

अ. उग्रतारा

दुखमोचन उपन्यास में लीलाधर की इष्ट देवता भगवती उग्रतारा[8] है।

आ. जगदम्बा

हीरक जयन्ती उपन्यास के गोपी बाबू की इष्ट देवता जगदम्बा[9] है। संकट निवारण के लिए उनके शरणों में जाते ही हैं और किसी कार्य में सफलता प्राप्त करते ही --"कालीघाट जाकर जगदम्बा भवानी को फूलमाला चढ़ा आते हैं।"[10]

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 67, 70 उग्रतारा पृ- 82
2. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 32, 42 दुखमोचन पृ- 31
3. " रतिनाथ की चाची पृ- 92
4. " " पृ- 72
5. " " पृ- 42, 49, 69
6. " दुखमोचन पृ- 113
7. " रतिनाथ की चाची पृ- 42
8. " दुखमोचन पृ- 161
9. " दुर्गा 413
10. " हीरक जयन्ती पृ- 43

इ. कंकाली माई

निम्नवर्गीय ग्रामीण जनता के अपने देवी-देवता है, जो "कंकाली माई" नाम से प्रसिद्ध है। बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में इस देवी का उल्लेख मिलता है। उपन्यास का एक पात्र "औघड़ बाबा" उसका भक्त है, जहाँ कहीं भी वह भूत-प्रेम उतारने जाता, वहाँ वह अपनी इष्टदेवी --"कंकाली माई" के लिए एक बकरा और पाँच बोतल-दारू तो वह पहले ही तलब कर लेता था।"[1] कुल देवता इष्ट देवता अधिदेवता, प्रत्याधी देवता, तत्वाभीमानी देवता आदि साधारण भक्तों के देवी-देवता है। कुल देव पूर्वजों द्वारा पूजित होता है और इष्ट देव व्यक्ति विशेष का। कुल देवी का एक रूप उग्रतारा है तो उसका दूसरा रूप इष्ट देवी तारा का भी है। उपन्यासकार विविध देवी-देवताओं की मान्यता के साथ उन ग्रामीण देवी-देवताओं को भी मानते है, -जिसे हम ("कंकाली माई" वाममार्गियों की इष्ट देवी है)। मीन-मैथुन-मुद्रादि पंच मकारो द्वारा पूजित, इस देवी की उपासना वाममार्गी भक्त तथा उग्र शाक्त करते है।

5.3.2.2 ग्रामदेवता

ग्रामीण देवी-देवताओं में "तुलसी" तथा हनुमानजी का महत्व अत्याधिक है। घर के आँगन में "तुलसी का पौधा" इस बात की ओर संकेत करता है कि वह घर अथवा कुटुम्ब भक्ति-श्रद्धा का आधार तथा नीति से सम्पन्न है।

---

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 63

हनुमानजी की पूजा के विभिन्न रूपों को उपन्यासकार ने बलचनमा, जमनिया का बाबा, बाबा बटेसरनाथ, उपन्यासों में अंकित किये है । लाल-पताका, लाल लंगूर, सेंदूर आदि "हनुमान बाबा" के सूचित चिह्न है । छोटे मालिक के आँगन में दच्छिन-पूरब कोने में तुलसी का चबूतरा था, वहीं हनुमानजी की धुजा गड़ी हुई थी – "लाल पताका पर लम्बी लंगूरवाले – महावीर जी सफेद कपड़े से सी दिये गये है । हाथ में टेढ़ी सी गदा थी[1] ।" यथा-घर, यथा जेल सभी जगह हनुमानजी की पूजा सम्पन्न हो रही है ।

अ. जेल मंदिर

जमनिया का बाबा उपन्यास में नागार्जुन ने जेल मंदिर का उल्लेख किया है । जेल में नीम के दरख्त से लगा हुआ----चबुतरा, जो कैदियों के लिए तीर्थस्थल का काम करता है --"पेड़ से लगे हुए दो बांस खड़े हैं जिनकी छोरों पर लाल पताकाएँ फहराती रहती हैं । शनिवार और मंगलवार को इन बाँसों पर कोई न कोई सिंदूर मसल जाता है, मालाएँ चढ़ा जाता है और अगरबत्तियाँ जला जाता है[2] ।" गाँव में जब कभी पोखर, ग्रामोप मार्ग तथा नये साधुओं द्वारा स्थापित कुटिया के भीतर हनुमान जी अवश्य रहा करते है । ऐसा ज्ञात होता है कि लाल रंग हनुमानजी का प्रतीक है, उस प्रतीक के समक्ष कीर्तन आदि का संचलन भी स्वाभाविक है । रूपउली गाँव में पुराना पोखर के उत्तरी मोहार पर पण्डित शशिनाथ ठाकुर ने आँवले का पेड़ लगाया था । जैनरायन के भानजे ने "आँवले के साथ एक ध्वजा गाड़ दी और हनुमानजी का फोटो उसमें चिपका दिया । तभी से सप्ताह में एक बार भजन, मंगल के

- -

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 21

2. " : जमनिया का बाबा पृ 39

संध्याकाल, वहाँ कीर्तन चालू हुआ तो अब तक जारी था ।"[1] कीर्तन करनेवाली यह मण्डली --"बजरंग-मण्डली"[2] के नाम से प्रसिद्ध है ।

जहाँ एक ओर हनुमानजी की फोटो, हनुमानजी की ध्वजा, लाल लंगुर-लाल सिंदुर-लाल फूल आदि की पूजा होती है, वह समाज तथा वह देवता निश्चित ही ग्रामीण देवता हनुमान है । यह देवता उन अर्ध-शिक्षित तथा अशिक्षित लोगों के मन में बसे हुए देवता है । शिक्षित जन समूह में हनुमानजी का जो रूप प्रतिष्ठित है वह हनुमान चालिसा[3] का है । यूं तो यह रूप साधारण जनता के लिए ग्राह्य है । इस साधारण जनता में दोनों विधाएँ प्रचलित हैं । हनुमान चालिसा का पाठ[4] तथा "प्रतीक" के रूप में उस देवता की उपासना जैसे - लाल ध्वजा - लाल लंगूर आदि ; बलचनमा, जमनिया का बाबा, बाबा बटेसरनाथ उपन्यासों में नागार्जुन ने व्यक्त किया है ।

ग्रामीण देवियों में, शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता, नवदुर्गा आदि की पूजा होती है । विशेष त्योहारों के समय इन देवियों की पूजा का उल्लेख हुआ है ।[5]

नागार्जुन के उपन्यासों में जिन देवी देवताओं का वर्णन आया है वे वैदिक देवता, लौकिक देवताओं के साथ-साथ ग्रामीण देवता भी है । वैदिक विराट कल्पना के साथ-साथ बलवीर आदि मुख्य ग्राम देवता का वर्णन भी हुआ है ।

---

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 129
2. " : बलचनमा के बेटे पृ- 104
3. " : अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं
   दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
   सकलगुण निधानं वानराणाम धीशं
   रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ॥ नागार्जुन : उग्रतारा पृ-62
4. " : उग्रतारा पृ- 42, 62
5. " : देखिए ग्राम-सांस्कृतिक संदर्भ में त्योहार पृ-

ग्रामीण देवताओं के रूप तथा उनकी आस्था के बारे में उपन्यास कार ने अवश्य कुछ विवेचना की है, परन्तु वह समाधान उस कोटि का नहीं जहाँ देवी-देवताओं के विकासशील अवस्था को देखते हैं। ग्रामीण छोटी जाती वालों की आस्था ब्रह्म में नहीं है उनके अपने देवताओं भुइयाँ महाराज, सलेस राजा और दीना भद्री आदि में है। वहाँ के लोक गीतों में इनकी गूंज-सर्वत्र प्रसिद्ध है। इन -नायक तथा नायिकाओं का वर्णन वीर-प्रशस्ति में हुआ है।

5.4 <u>धार्मिक कृत्य</u>

नागार्जुन के उपन्यासों में निम्न लिखित धार्मिक कृत्यों का वर्णन मिलता है - यज्ञ, जप, व्रत, तीर्थ यात्रा, दान एवं ब्राह्मण भोजन, कथा श्रवण तथा पूजा।

5.4.1 <u>यज्ञ</u>

अ. <u>भारतीय जीवन में यज्ञ का महत्व :</u>

भारतीय संस्कृति में यज्ञ सृष्टि तथा उसके निर्वहण प्रणाली का प्रतीक है। प्राचीन काल में यज्ञ का स्वरूप बहुत व्यापक था। "अनेक-सांस्कारिक तथा अनुष्ठानिक अवसरों पर एवं नित्य नैमित्तिक क्रियाओं के रूप में हवन करते समय मंत्र आदि का पाठ और देवताओं की स्तुतियां की जाती थीं। यही यज्ञ का प्रारम्भिक रूप माना जा सकता है।"[1]

---

1. हिन्दी शब्द सागर, चौथा भाग पृ- 2842

आगे चलकर यज्ञ सामाजिक जीवन के सभी महत्वपूर्ण कार्यों से सम्बन्धित हो गया । सम्पत्ति का बँटवारा तथा विवाह आदि महत्वपूर्ण कार्य यज्ञों द्वारा ही सम्पन्न होने लगे । बाद में विशिष्ट उद्देश्यों की सिद्धि के लिए पृथक्-पृथक् यज्ञों का विधान बना ।

5.4.1.1 उपन्यासों में वर्णित पंच महा यज्ञ

भारतीय जीवन में प्रसिद्ध पाँच महायज्ञ निम्न लिखित है --- 1. ब्रह्म यज्ञ 2. देवयज्ञ 3. पितृ यज्ञ 4. भूतयज्ञ तथा 5. मनुष्य यज्ञ[1]

अ. ब्रह्म यज्ञ

इसी को ऋषियज्ञ भी कहा जाता है । मनु के अनुसार ब्रह्म यज्ञ का अर्थ है - "अध्ययन तथा अध्यापन"।[2] रतिनाथ की चाची उपन्यास में संस्कृत पाठशाला के बहुत ही वृद्ध बकुअन मिश्र व्याकरण और धर्मशास्त्र के बहुत बड़े निष्णात थे --"उनके पास बड़ी उम्र के छात्र ही पढ़ा करते ।"[3] इसको ब्रह्म-यज्ञ का संकेत माना जा सकता है ।

आ. देवयज्ञ

देवों की संतुष्टि के निमित्त किया जानेवाला यज्ञ अथवा होम[4]- देवयज्ञ कहलाता है । रतिनाथ की चाची, नई पौध, तथा दुखमोचन उपन्यासों में इसके संकेत मिलते है । रतिनाथ की चाची उपन्यास में प्रतिदिन रतिनाथ का, -- "शालिग्राम" तथा "नर्मदेश्वर"[5] की पूजा करना । नई पौध उपन्यास में "पंचदेवता"[6] पूजा देवयज्ञ ही है।

---

1. भारतीय संस्कृति का विकास, प्रथम खण्ड पृ- 145 डॉ मंगलदेव शास्त्री
2. मनु० 3-70
3. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 34
4. मनु : 3-70 [5] नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 11
6. सूर्य, गणेश, दुर्गा, विष्णु और शिव - नई पौध पृ- 85

१ दैनिक पूजा

1 पार्थिव पूजा

निदान उपासना का एक लक्षण पार्थिव पूजा है । मिट्टी के बने शिवजी को कंकण रेखा पर स्थापित करके उसकी षोडशोपचार पूजा मंत्रोक्त विधी से करना पार्थिव पूजा है । इसका विसर्जन भी उसी समय तुरन्त हो जाता है। पार्थिव पूजा, पूजाओं में ऊपूजा है । इस पूजा का संकेत नागार्जुन ने दुखमोचन उपन्यास में किया है । अपर्णा "मिट्टी गूंधने लगी, बाबा की शामवाली पूजा के लिए महादेव बनाना था ।"[1]

पूजा के विभिन्न प्रकार, उनके देवी देवता, पूजा सामग्री आदि से नागार्जुन परिचित है । ब्राह्मण कुलोत्पन्नों के लिए इस प्रकार के संस्कार सहज रूप में आ जाते हैं । जिसकी छवी उपन्यासों में दिखाई देती है ।

2. विशिष्ट अवसरों की पूजा

1. सत्यनारायण पूजा

सत्यनारायण भगवान की पूजा प्रतिमास की पूर्णिमा पर, किसी विशिष्ट त्यौहारों पर, मनोवांछित फल प्राप्ति के लिए करने की प्रथा है । इस पूजा का उल्लेख बाबा बटेसरनाथ, दुखमोचन तथा रतिनाथ की चाची उपन्यासों में हुआ है । रूपउली गाँव में--"प्रतिमास संक्रांति के दिन,

1. नागार्जुन : दुखमोचन पृ- 111

सत्यनारायण की पूजा होती थी ।"[1] इस पूजा का समय भी नागार्जुन ने दुखमोचन उपन्यास में दिया है । मास्टर टेकनाथ ने सक्रांति के दिन "शाम को सत्यनारायण भगवान की पूजा की ।"[2] प्रसाद के लिए गरी-छुहाड़े और मुनक्के डालकर "पंजीरी"[3] करने का उल्लेख भी रतिनाथ की चाची उपन्यास में हुआ है ।

2 छठी पूजा

नवजात शिशु तथा माँ के आरोग्य के लिए, सम्पूर्ण अनिष्ट की शांति के लिए नवेद जीवन्ती और स्वस्त्रगर्भा भगवती की पूजा की जाती है ।"[4] वरुण के बेटे उपन्यास में इस पूजा का उल्लेख हुआ है । मंगल के घर लड़का पैदा हुआ - छठी धूमधाम से हुई ।[4क]

3. देवता "वृक्ष"

ग्रामीण देवी-देवताओं की पूजा के साथ-साथ वहाँ की जनता वीर-पुरुषों की वहाँ की नायिकाओं की, प्राकृतिक वृक्षों तथा नदियों की, अप्राकृतिक अग्नि की तथा विभिन्न पेड़-पत्थरों की पूजा भी करते है ।

4 वट वृक्ष

बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में "बटेश्वर" की स्थापना तथा उसकी पूजा दर्शनीय है । रूपउली गाँव की जनता के लिए बरगद बाबा "देवता"[5] ही तो है। वटवृक्ष के छोटे से बिरवे को जैकिसुन की परदादी ने अपने हाथों से घड़े भर दूध से नहलाया -- तने पर भिगाये चावलों की पीसी हुई पीठी की थापें पड़ी -- थापों पर --थोड़ा-थोड़ा सिंदुर भी

---

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 106 2. नागार्जुन : दुखमोचन पृ-107
3. " : रतिनाथ की चाची पृ- 59 4. धर्मसिन्धु पृ- 336
4क. " : नागार्जुन : वरुण के बेटे पृ- 5. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 10

लगा दिया । तब राउत ने हीरा और मधुरी के कटकीले फूलों की लम्बी माला मेरे गले-से लपेट दी ।"[1]

इस तरह रुपउली गाँव में बट की देवता के रूप में प्रतिष्ठा हुई ।

5 पीपल

पीपल के वृक्ष की पूजा का उल्लेख उपन्यासकार ने बलचनामा उपन्यास में किया है । गाँव के बूढ़े भगियार चाचा पोते का मुँह देखकर मरने इच्छा है - रोज सबेरे नहाकर उस बूढ़े पीपल की जड़ों में लोटा भर अभिषेक डालते थे ।"[2]

6. बरहम पूजा

नागार्जुन ने बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में ग्रामीण ब्रह्म की स्थापना का उल्लेख किया है । ग्रामीण ब्रह्म वह है, जो उत्तम पुरुष के रूप में वीर गति प्राप्त किया हो । बाबा बटेसरनाथ उपन्यास के चक्रपाणी पाठक नेपाल राजा के सेनापति थे । राजपूत सरदार के हमले से घबराकर राजा भाग गया और रानी सरदार के हाथ पड़ी और चक्रपानी पाठक वीर गति प्राप्त कर ब्रह्म हुए । बहुत दिनों तक चक्रपाणी पाठक ब्रह्म के रूप में किसी न किसी पेड़ पर विद्यमान थे —"दो सौ साल तक वह एक पीपल पर रहे पच्चीस वर्ष आँवले के पेड पर और पचहत्तर वर्ष एक पाकड़ पर ।"[3] जीवछ और कमला नदियों में बाढ़ आने से इलाके के बहुत सारे दरख्त सूख गये और "ब्रह्मबाबा" बे-घर हो गये । उनके भयंकर उत्पात से घबराकर जदू पाठक - मरते वक्त जैकिसुन के दादा से

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 22, 23
2. " : बलचनमा पृ- 143
3. " : बाबा बटेसरनाथ पृ- 56

कहा - "ध्वजा खड़ी करके बरगद बाबा की वेदी पर ब्रह्म बाबा की स्थापना करो ।"[1] एक दिन अधिक भाई ने "वट वृक्ष के जड़ों के चारों तरफ गोल चबूतरा बाँधा और धूम-धाम से ध्वजा गाड़कर ब्रह्म की स्थापना कर दी ।"[2]

इस तरह रूपउली गाँव में "ब्रह्मबाबा" देवता के रूप में प्रतिष्ठित हुए ।

औपनिषद ब्रह्म ज्ञानियों द्वारा स्थापित "ब्रह्म" है और "ग्रामीण ब्रह्म" ग्रामीण वीर पुरूष के सद्गीत से स्थापित ब्रह्म हैं । ब्रह्म का यह अन्तर उपन्यासों में अन्यत्र भी दिखाई देता है । ध्वजा के रूप में प्रतिष्ठित ब्रह्म की पूजा ग्रामीण समाज में प्रत्यक्ष तथा परोक्ष दोनों रूप में अंकित है । उसका भीतरी रूप मनोकामना की इच्छा रखना तथा बाह्य रूप पूजा आदि करना है । बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में ब्रह्म के पूजा का विधान बताया है --"सोमवार और बुधवार के प्रातः काल स्त्रियाँ आकर मेरी वेदी पर चावल की पीठी के घोड़े खड़े करती और मिंडियों पर दूध डालती, अच्छत और फूल चढ़ाती, परिवार की भलाई के लिए मिन्नतें मानती ।"[3]

ग्रामीण समाज में ब्रह्म देवता के पूजा के विधान से बाबा नागार्जुन पूर्ण रूपेण परिचित है । तथा शक्ति की उपासना[4] करना आदि से देवयज्ञ का संकेत किया है ।

5 पितृयज्ञ

पितृऋण चुकाने के लिए किया जानेवाला कार्य पितृयज्ञ कहलाता है । मनु के अनुसार तर्पण[5] पितृयज्ञ है । धार्मिक विश्वास के अनुसार

- -

1 तथा 2 नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 56
3. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 58
4. " नई पौध पृ- 58 5. मनु 3-70

प्राणी कुछ दिनों के लिए प्रेतयोनि प्राप्त करता है । शास्त्रोक्त विधि से जब उसका प्रेत-संस्कार दशगात्र-विधान, षोडश-श्राद्ध, सपिण्डन विधान किया जाता है तब वह प्रेत शरीर से छूट जाता है ।"[1] रतिनाथ की चाची उपन्यास में इसका उल्लेख मिलता है । इसका विस्तृत विवेचन "संस्कार" के अन्तर्गत किया गया है ।

ई. भूतयज्ञ

मनुष्येतर प्राणि वर्ग के यज्ञ को भूतयज्ञ कहा जाता है । मनु के अनुसार यह "भूतबलि"[2] है । अपने से निम्न प्राणियों को अन्न आदि का भाग देकर उनकी रक्षा करना इसके अन्तर्गत आता है । उपन्यासों में इसका उल्लेख नहीं हुआ है ।

उ. मनुष्य यज्ञ

अतिथि-सत्कार को मनुष्य यज्ञ कहा जाता है ।[3] नागार्जुन के उपन्यास, रतिनाथ की चाची में इसका उल्लेख मिलता है । चाची अपने सगे संबंधियों का अतिथि सत्कार तो करती ही थी, साथ ही - गाँव में भूला-भटका कोई आ जाता है, जो लोग उसे इस टोले में भेज देते हैं, कि उमानाथ की माँ दो मुट्ठी भात और कलछी भर दाल आगन्तुक को खिला ही देंगी । एक अन्य उपन्यास बलचनमा में अतिथि सत्कार का उल्लेख मिलता है --"कायदे के अनुसार मेहमानों के आगे खाने-पीने की चीजें अधिक ही रक्खी जाती थी ।"[4] मेहमानों की थाली में दुगना भात परोसना[5] नागार्जुन के दृष्टि में नयी बात नहीं है ।[6]

- -

1. कल्याण : हिन्दू-संस्कृति -अंक पृ- 591
2. मनु : 3- 70 3. मनु 3- 70
3क नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 98
4. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 20 5. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 27
6. मनुष्य यज्ञ का उल्लेख "सामाजिक संदर्भ" के अन्तर्गत भी किया गया है । देखिए पृष्ठ : 67-68

5.4.2 जप

आराध्य के नाम अथवा किसी मंत्र को बार-बार दुहराते रहने को जप कहा जाता है जिसका लक्ष्य भगवान की प्राप्ति ही होता है। नागार्जुन ने इसका उल्लेख दुखमोचन, तथा रतिनाथ की चाची उपन्यासों में किया है। दुखमोचन उपन्यास में मामी ईश्वर में अटूट विश्वास रखती है। वह प्रतिदिन देव-पूजा के पश्चात् - "हजार बार इष्ट देवता "काली" का एक अक्षरवाला बीज मन्त्र "क्रीं" जपती थी।"[1] एक अन्य उपन्यास, रतिनाथ की चाची में भी जप का उल्लेख हुआ है, जयनाथ वहं कई बार मल्लिक जी के यहाँ —"महामृत्युंजय का जप कर चुके थे।"[2] नाम संकीर्तन बाहरी वस्तु है और जप भीतरी वस्तु। नाम संकीर्तन जन समूह के लिए है, जप अपने आत्म निवेदन और व्यष्टि के लिए। श्रीवत्स गोत्रोत्पन्न वैद्यनाथ मिश्र, "जप विज्ञान" की महत्ता को दुखमोचन रतिनाथ की चाची उपन्यासों में मुक्ति के लिए प्रदीप्यमान मानकर उसकी प्रशंसा की है।

5.4.2.1 पारायण

अतिरिक्त पूजा के पारायण को भी नागार्जुन ने महत्वनीय माना है। बाबा बटेसरनाथ दुखमोचन तथा उग्रतारा उपन्यासों में विविध पुराणों के पारायणों का उल्लेख हुआ है। बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में पुराणपाठी महानुभाव राजमाता साहिबा को राधाकृष्ण की युगल-जोड़ी के सामने मीठी आवाज में "श्रीमद् भागवत की रास-पंचाध्यायी सुना रहे थे।"[3] इसी उपन्यास में भागवत का नौ दिनों तक पारायण करने का

---

1. नागार्जुन : दुखमोचन पृ- 31
2. " रतिनाथ की चाची पृ- 53
3. " बाबा बटेसरनाथ पृ- 42 - 43

भी उल्लेख मिलता है । पाठक की माँ वर्ष में एक बार "भागवत का परायण करवाती थी नौ दिनों तक" ।[1] एक अन्य उपन्यास दुखमोचन में "ब्रह्म वैवर्त-पुराण"[2] के पारायण का भी उल्लेख मिलता है ।

5.4.2.2 पाठ

पारायण के एक और विधान की ओर नागार्जुन ने संकेत किया है, वह है --"पाठ" । उग्रतारा उपन्यास में भभिखन सिंह द्वारा "हनुमान चालीसा"[3] का पाठ करने का उल्लेख मिलता है । पाठ के रूपान्तर का उल्लेख भी इसी उपन्यास में मिलता है । मठिया के बाबाजी ने "जलमाग्निन के प्राणों की शांति के लिए रामायण का नवाह पाठ किया था ।"[4]

पाठ नियमित रूप से किया जाता है, तथा किसी विशिष्ट उद्देश्य के प्राप्ति के लिए भी ।

5.4.3 मंत्र

"मन्त्र शास्त्र" में मन्त्र साधना के तीन मार्गों का --1"दक्षिण", "वाम" और "मिश्र" का उल्लेख मिलता है । सात्विक देवी-देवता की सात्विक उपासना सात्विक "मन्त्र" और सात्विक "सामग्री" द्वारा करने का मार्ग, "दक्षिण मार्ग" या "सात्विक मार्ग" कहलाता है ।2.पंच मकारों से युक्त भैरव-भैरवी आदि तामस प्रकृति के देवी-देवताओं की साधना और उपासना जिस मार्ग द्वारा हो, वह "वाम मार्ग" कहलाता है । 3.पंच

---

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 106
2. " : दुखमोचन पृ- 168
3. " : उग्रतारा पृ- 42
4. " : उग्रतारा पृ- 82

मकारों को प्रत्यक्ष रूप से न ग्रहण कर उनके प्रतिनिधियों से इष्ट की साधना करते है, उसे "मिश्रमार्ग" कहते हैं । पर वास्तव में "दक्षिण" और "वाम" यही दो मार्ग है ।

अ. सम्प्रदाय

मन्त्र शास्त्र में "केरल", "काश्मीर" और "गौड़" नामक तीन सम्प्रदाय प्रचलित है । वैदिक धर्मावलम्बी मान्त्रिकों में प्राय: "केरल-सम्प्रदाय" है, पैशियों में "काश्मीर-सम्प्रदाय" तथा बौद्धों में "गौड़" ।

आ. देवता

काश्मीर-सम्प्रदाय सरस्वती प्रभृति सात्त्विक देवताओं के उपासक और दक्षिण मार्गी होते है । गौड़ सम्प्रदाय तारा तथा काली आदि तामस प्रकृति के देवों के उपासक होते है । केरल सम्प्रदाय मिश्रमार्गी सम्प्रदाय है । इसमें प्रकट-रूप से दक्षिण और गुप्त रीति से वाम मार्ग का अवलम्बन किया जाता है । इस सम्प्रदाय के साधक महालक्ष्मी प्रभृति रजस् प्रकृति के देवताओं के उपासक होते हैं ।

इ. मन्त्र-पीठिका

मन्त्र सिद्धि के लिए पीठिका का होना आवश्यक है । मन्त्र शास्त्र में चार पीठिकाओं का, श्मशान पीठ, शवपीठ, अरण्यपीठ और श्यामा पीठ का वर्णन है ।

वाम मार्गियों की प्रधान पीठिका शव पीठिका[1] है । कर्ण-पिशाचिनी, उच्छिष्ट गणपति कर्णेश्वरी आदि देवताओं की साधना तथा अघोर पन्थवालों की साधनाएँ इसी पीठिका के द्वारा होती है।

---

1. किसी मृतक कलेवर के ऊपर बैठकर या उसके भीतर प्रवेशकर मन्त्रानुष्ठान करना शव पीठिका है । ले०डॉ० श्रीगोपाल प्रसाद जी "वंशी" मन्त्रशास्त्र और उपासना रहस्य पृ- 237

5.4.3.1 उपन्यासों में उल्लेखित मंत्र

नागार्जुन ने रतिनाथ की चाची तथा हीरक जयन्ती उपन्यासों में विभिन्न मंत्रों का - गायत्री, सहस्त्रशीर्षा पुरुष, एवं पिशाची मंत्रों का उल्लेख हुआ है।

अ. गायत्री

नागार्जुन ने रतिनाथ की चाची उपन्यास में "गायत्री मन्त्र" का उल्लेख किया है -- "गायत्री के लिए ब्राह्मण बटुकों का उपनयन संस्कार होता है और जो सिर्फ द्विजों की चीज है।"[1] गायत्री यह -"मंत्र भी है और प्रार्थना भी × × × × यह "छन्दसां माता" वेद जननी भी है।"[2]

उपनयन के पश्चात ही ब्राह्मण को गायत्री का उच्चारण करना चाहिए इस पर स्वयं उपन्यासकार का भी विश्वास है।

आ. सहस्त्रशीर्षा पुरुष:

"सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्र अक्षः सहस्त्रपाद[2क] यह सूक्त पुरुष सुक्त नाम से प्रसिद्ध है। विराट की कल्पना का यहाँ अंकन है। विराट सहस्त्र शीर्षा, सहस्त्र अक्षः और सहस्त्रपाद है, केवल यही नहीं, विराट इस ब्रह्माण्ड से अत्यनिष्ठ दशांगुलम् वाला पहा पुरुष है। सारा ब्रह्माण्ड विराट के लिए केवल एक पाद के समान है, अन्य तीनों पाद -"पादोस्य, विश्वाभूतानि त्रिपादस्य अमृतम दिवि है।

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 54
2. श्री श्रृंगेरी मठाधीश्वर जगद्गुरु श्री शंकराचार्य श्री स्वामी जी श्री अभिनव विद्यातीर्थजी महाराज का सदुपदेश कल्याण पृ-4

2क. ऋ.दशम् मण्डल पुरुष सुक्त मंत्र

दक्षिणमार्गी निर्माल्य के उपरान्त जब पूजा विधान में अभिषेक करते है, तब इस मंत्र का उच्चारण करते है । इसका उल्लेख नागार्जुन ने रतिनाथ की चाची उपन्यास में किया है, रतिनाथ ने - ॐ सहस्त्रशीर्ष-----" आदि मन्त्र पढ़कर शंख से शालिग्राम पर जल ढारा, फिर नर्मदेश्वर पर ।"[1]

यह ब्राह्मणों की अत्यन्त प्राचीन परिपाटी युक्त युक्त है । ऋग्वेद में इस विराट पुरुष की कल्पना के सम्बन्ध में विविध विचार प्रस्तुत है ।

नागार्जुन ने इस विराट पुरुष की कल्पना प्रमाण के अन्तर से दो प्रकार की कि है । --एक अभिषेक और दूसरा उसका आधुनिक रूप । आधुनिक रूप में उस विराट की कल्पना जनता जनार्दन के लिए हुई है -- "सभी पब्लिक है, अवाम, जन-साधारण ।"[2]------ यही जनता "कोटि शीर्ष", कोटि बाहु, कोटि चरण"[3] युक्त है । वास्तव में विराट का यह आधुनिक रूप राजनीतिज्ञों के लिए सहस्त्रशीर्ष तथा स भूमि विश्व तो वृत्त" ही है ।

मंत्र की अन्तरंग आलोचना विराट पुरुष की कल्पना है । बाह्य जनता जनार्दन रूप है । लेखक ने विराट की कल्पना का रूप जो अध्यात्मिक तत्व चिन्तन आधारित था, उसे भौतिक तत्व चिंतन पर लाकर खड़ा किया । यह देन उपन्यासकार की वाममार्गियों की नहीं, श्रम जीवियों की देन है ।

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- ।।
2. " : हीरक जयन्ती पृ- ।
3. " : हीरक जयन्ती पृ- 2

कर्णपिशाच - बाबा नागार्जुन के विचार।

6.4.82,

प्रिय अनुजवर,

आपका पिछला पत्र मिला था। आपको एक ही बात याद है कि आपने "कर्ण पिशाचो" के बारे में जानना चाहा था।

"कर्ण पिशाचो" लोक-विश्वास के अनुसार एक अलौकिक (लोकोत्तर) →

131, टैगोर पार्क
दिल्ली-9
Pin 110009

माया पिशाच (पिशाची) हुआ करती है, जिसकी कृपा से साधक ठीक समय पर सही बात कह देता है। कर्ण पिशाची कानों में कह जाती है कि "अमुक स्थान पर खुदाई करने पर स्वर्ण-राशि प्राप्त होगी" या "अमुक दिशा में सौ कदम चलने पर एक कुंड (पेड़) मिलेगा, उसकी सूखी डाल में एक पोटली बंधी दिखेगी। पोटली में हीरे-जवाहरात, मोती आदि होंगे..." आदि आदि... ये बातें कभी-कभी सच भी

पत्र आप हमारे दिल्ली वाले पते पर ही भेजें।

ना०

दक्षिण मार्ग वेदोक्त विधान है, वाम लौकिक, मंत्र, तंत्र, मंत्रादि प्रकरण की आस्था पर जब किसी "सिद्ध" को "सिद्धी" प्राप्त होती है, तो वह लौकिक विधानुकूल रीति से उससे वाम मार्गियों की तरह उपयोग में लाता है। गली-कुचो में, देश-विदेशों में, ग्राम-मौजे में अर्थात् हर जगह, हर कोने पर तांत्रिक, वाम मार्गियों तथा रूढ़िग्रस्त जनता का सम्मेलन पाया जाता है। उपन्यासकार ने इसका उल्लेख कुंभीपाक उपन्यास में किया है, -"पुनपुन नदी के किनारे --पर सन्तों की जमात टिकी हुई है। [redacted] सोमवार को वहां भारी-भीड़ तुटती है। मन्त्र पढ़ के भभूत चटा देते हैं और काम बन जाता है।"[1]

सिद्ध, मंत्र में भी है और उसके उपचार में भी। वाममार्गिय जितने इस कला में सिद्ध होते हैं उतने दक्षिण मार्गिय नहीं।

बाबा [redacted] नागार्जुन तथा उनकी कवि निश्चित ही वाममार्गावलम्बी है। वे उन सभी करामतों से परिचित है, जिसे वाममार्गिय "सिद्ध" करता है।

इ. <u>कर्णपिशाची</u>

बौद्ध तांत्रिकों द्वारा प्रचलित, कर्ण पिशाच की आस्था से बाबा नागार्जुन पूर्ण रूपेण परिचित है, इसलिए की वे स्वयं बौद्ध है, और कई दिनों तक उन्होंने भिक्षु का रूप धारण किया था। नागार्जुन ने हीरक जयन्ती उपन्यास में कर्ण पिशाची का वर्णन विचित्र रूप में किया है। बाबू रामप्यारे प्रसाद जो पहले अध्यापक थे, आजकल सामाजिक प्रवृत्तियों के

- -

1. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 124

कर्णपिशाचिनी – बाबा नागार्जुन के विचार।

होती है। फलित ज्योतिषकी
बातोंमें भी हम ऐसा ही
3) देखते हैं। आशीर्वाद को भी
एक चमत्कार है कि
हम कल्पना या संभावनाके
स्तरपर 'शुभ ही शुभ' और
'भला ही भला' देख लेते हैं,
कभी-कदाचित् पा भी लेते हैं।
इसीलिए कट्टर नास्तिक भी, अवचेतन
में, कभी-कभी मंदिर या चर्चमें अपने
बाल-रूपको, श्रद्धालुओंकी लाईनमें
खड़ा पाता है! प्रकट रूपमें, विकट
बौद्धिकताके घमंडके कारण, वह इस तथ्यको
खुले ही स्वीकार न करे।

आपका नागार्जुन

पहला मोड़ FIRST FOLD

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD

INDIA 25

आयुष्मती
शोभना शास्त्री
C/o डी॰पी॰ शास्त्री
House No. 3-4-468/1/B
नारायणगुडा
हैदराबाद (आं॰प्र॰)

पिन PIN

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

ना॰ कं॰

पटना

पिन PIN

केन्द्र बन गये हैं । उन्हें --"करन पिसाची सिद्ध है न । नम्बरी नोटों का बंडल आलमारी के अन्दर अपने आप आ जाता है ।"[1] बाबा नागार्जुन द्वारा प्राप्य पत्र में एक और संकेत मिला है -----

"कर्ण पिशाच" में जिस तरह आने वाली घटनाओं की तथा प्राप्त होनेवाली धनराशि की सूचना मिलती है,उसी तरह फलित ज्योतिष्य भी उस दिशा की ओर इंगित करता है । भविष्य में सुख मिलेगा यह आशावाद का प्रमुख लक्षण है । आशा, आस्तिकता की जननी है । कर्ण, पिशाच, फलित ज्योतिष्य, आशा और आस्तिकता इन चारों सीढ़ियों द्वारा मनुष्य अपने सुख की पहचान, अदृश्य कल्पना में कर लेता है ।

5.4.4 तंत्र

उपन्यासकार नागार्जुन ने तंत्र शब्द का प्रयोग उस विलक्षण प्रक्रिया के लिए स्वीकार किया है, जिससे सभी कार्य सम्पन्न होते है । भारतीय परम्परा के अनुसार - यूँ तो पीपल के पत्ते पर भी बीज मंत्र लिख देने से काम चल सकता है ।"[2] और वही मंत्र के रूप में परिणित होता है । प्रत्येक देवी-देवताओं का अपना-अलग "यंत्र","तंत्र" तथा "मंत्र" है । इसका उल्लेख नागार्जुन ने रतिनाथ की चाची उपन्यास में किया है, "भवानी त्रिपुरी सुन्दरी का एक पंचाक्षर मंत्र है, वह सभी अवांछित गर्भ गिराने में अनुपम है ।"[3]

इस प्रकार के कार्य कलापों के लिए यंत्र, "भोज पत्र" पर ही लिखा जाता है । उपन्यासकार नागार्जुन की सहमती पीपल के पत्ते पर

---

1. नागार्जुन : हीरक जयन्ती पृ- 23
2. " : रतिनाथ की चाची पृ- 43
3. " : रतिनाथ की चाची पृ- 43

लिखे जाने वाले "यंत्रो" से नहीं, भोज पत्र के "यंत्रों" से है । जिसका उल्लेख नागार्जुन ने रतिनाथ की चाची उपन्यास में किया है । चाची को मरणासन्न दशा में देखकर -- रतिनाथ दौड़कर - ताराबाबा से एक यंत्र बनवा लाया ।[1]

अ. <u>यन्त्र</u>

तन्त्र पूजा का विशिष्ट विषय यन्त्र, जो चक्र नाम से भी प्रसिद्ध है, धातु, पत्थर कागज या किसी अन्य वस्तु पर खोदा हुआ या लिखा या खींचा हुआ या रंगा हुआ होता है । इसका उपयोग किसी विशिष्ट देवता की पूजा या विशिष्ट उद्देश्य के लिए होता है ।

आ. <u>परिभाषा</u>

यन्त्र को मंत्र रूपी देवता कहा गया है -- जब मन्त्र का देवता प्रसन्न हो जाता है, तब प्रेम एवं क्रोध नामक दोषों से उत्पन्न क्लेशों को दूर करता है, अतः इसे यंत्र कहते हैं ।"[2] यन्त्र जिसके द्वारा-क्रोध-प्रेम आदि के कारण डोलायमान मन की गतियों पर नियन्त्रण किया जाता है और मन को उस चित्र या आकार पर लगाया जाता था जिसमें देवता को प्रतिष्ठापित किया गया हो ।

5. <u>शुचिता</u>

यंत्र की फल प्राप्ति उसकी शुचिता पर आधारित है । इसका उल्लेख नागार्जुन ने रतिनाथ की चाची उपन्यास में किया है -- जिसके

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 166
2. कुलार्णव तंत्र 6/85-86 , धर्मशास्त्र का इतिहास, पंचमभाग, पृ 40 से उद्धृत ।

में भेजने से यंत्र का प्रभाव घट जाता है, शुद्र के द्वारा उसे भेजा नहीं जा सकता ।"[1] -- नागार्जुन यंत्र की पवित्रता से अंशतः सहमत है । वह जादू, टोना आदि विलक्षण कार्यों से भी तुरन्त फल देने वाला है इसीलिए रतिनाथ ने चाची के --"वाम बाहुमूल में लाल धागे से उस यंत्र को अपने हाथ से ही बाँध दिया ।"[2]

यंत्र की महत्ता तथा फल प्राप्ति में भी नागार्जुन का विश्वास है । सभी तंत्रों में पाँच प्रकार समान रूप से पाये जाते हैं । उनमें धर्म, दर्शन, अन्ध विश्वासमय सिद्धान्त, क्रियाओं, रीतियों, ज्योतिष, फलित ज्योतिष, औषधि एवं शकुनों (निमित्तों) का समावेश होता है । हिन्दू तंत्र ग्रंथों के स्वरूप मिलते हैं - एक है दार्शनिक एवं अध्यात्मिक और दूसरा है प्रचलित, व्यावहारिक तथा ऐन्द्रजालिक जो मन्त्रों, मुद्राओं, मण्डलों, न्यासों एवं यन्त्रों पर निर्भर करता है । बहुत से तंत्र पंच मकारों को देवी की पूजा का साधन मानते हैं, जिनके द्वारा मनुष्य अलौकिक शक्तियों को पाता है और अन्त में मुक्ति का अधिकारी होता है ।

तंत्रों का साहित्य बहुत विशद् है । हिन्दू एवं बौद्ध लेखकों ने तन्त्र पर बहुत से ग्रन्थ लिखे । ये ग्रंथ तिब्बत-मंगोलिया, चीन-जापान एवं दक्षिण पूर्व एशिया में प्रचलित हैं । उपन्यासों का प्रदेश तिब्बत, मंगोलिया तथा चीन के समीप होने से नागार्जुन के उपन्यास में इस तंत्र का प्रयोग स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है ।

उपन्यासकार नागार्जुन ने रतिनाथ की चाची उपन्यास में तारा बाबा द्वारा प्रदर्शित यंत्र को भोज पत्र पर लिखा, त्रिपुर सुन्दरी के पंचाक्षरी मंत्र का उल्लेख किया है । मंत्र, देवी तथा वस्तु इन तीनों के समीकरण का रूप यंत्र है -- घोषित किया है ।

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 54
2. " : " पृ- 166

5.4.5 तान्त्रिक और ओझा

5.4.5.1 तान्त्रिक

तंत्रों से जिस प्रकार से विलक्षणता दृष्टिगोचर होती है, उसी तरह से तांत्रिकों की वेश-भूषा, श्रृंगार तथा खानपान में भी विलक्षणता का स्पष्टिकरण नागार्जुन ने रतिनाथ की चाची, दुखमोचन, बलचनमा, बाबा बटेसरनाथ उपन्यासों में किया है ।

अ. वेशभूषा

रतिनाथ की चाची उपन्यास में विश्वनाथ झा - तांत्रिक साधना में दिलचस्पी लेने के कारण आजीवन रक्ताम्बरधारी रहे । उनके श्रृंगार का वर्णन करते हुए "बाबा" कहते है -"बड़े बड़े बाल, बड़ी-बड़ी दाढ़ी । दीप्त और प्रशस्त ललाट, सिन्दूर का बड़ा ठोप । लाल-सुर्ख धोती, लाल जनेऊ ।हाथी के दाँत के तराशे हुए दानों की [illegible] [illegible] सुंदरमाला - विश्वनाथ का यह स्वरूप अब भी शुभंकरपुर में बहुतों को याद है । उन्हें लोग सिद्ध जी कहते थे ।"[1]

एक अन्य उपन्यास दुखमोचन में भी एक अन्य तांत्रिक लीलाधर के वेश-भूषा श्रृंगार का वर्णन मिलता है । लीलाधर ने लम्बी दाढ़ी और बाल कटवा लिए थे, साधारण नेपाली कर्माचार्य की तरह लग रहे थे ।-कपार पर गाढ़े सिन्दूर का अँगूठा जितना टीका ---- गले में रुद्राक्ष और मूँगे की माला --------" ।[2]

- -

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 68
2. " : दुखमोचन पृ-151

यह रूप तांत्रिक लीलाधर का देवी की आराधना के समय का है। उनकी वेश-भूषा का उल्लेख करते हुए उपन्यासकार कहते है - "मलमल की लाल-सुर्ख धोती, कुर्ता भी उसी तरह लाल। गले में हाथी के दाँत तराशकर बनाई गई मनकों की माला --------। पैरों में चमड़े के किरमिची जूते।"[1]

प्राचीन काल में तांत्रिक "सिद्ध" के नाम से प्रचलित है। सम्भवतः यह बौद्धमत के वज्रयानी सम्प्रदाय का रूप ही होगा। आधुनिक काल में तांत्रिकों की वेश-भूषा में अवश्य कुछ परिवर्तन आया है।

5.4.5.2 ओझा

तांत्रिकों की एक दिशा सैद्धान्तिक है, तो उनकी दूसरी दिशा भूत-प्रेम झाड़ने के व्यवहारिक पक्ष में। एक का स्वीकृत "सिद्ध रूप" था तो दूसरे का "विकृत "ओझा रूप"। नागार्जुन ने तांत्रिकों के विकृत "ओझा रूप" का वर्णन बलचनमा उपन्यास में किया है। दामो ठाकुर ओझा थे। झाड़-फूंक, पूजा-पाठ,टोना-टापर सब करना जानते थे।

अ. वेशभूषा

ओझा के श्रृंगार का वर्णन इसी उपन्यास में करते हुए बाबा कहते है --"कपार पर सिन्दूर का लाल टीका। चोटी के बाल बहुत बड़े थे। चोटी के आधे बाल हमेशा बँधे रहते।[2] गले में लाल रेशम से गुँथी हुई -"हाथी के दाँतों को तराश कर बनाये गये दानों की

- -
1. नागार्जुन : दुखमोचन पृ- 140
2. " : बलचनमा पृ- 28

माला थी -- छुमेर की जगह उसमें दो मुँह बाघ की तरह दाना था । दाँई बाँह पर काले धागे में गुंथा हुआ बड़ा सा मुँगा बँधा था । कान के छेद में --------रुद्राक्ष लटक रहे थे ।[1]

दोमो ठाकुर की वेश-भूषा का उल्लेख इसी उपन्यास में हुआ है - लाल रंग की धोती, लाल अंगोछा । पैरों में खड़ाऊ ।

5.4.5.3 औघड़ बाबा

बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में औघड़ बाबा का परिचय उपन्यासकार देते हुए कहते है कि ----"जहाँ कहीं भूत-प्रेम का उपद्रव उठ खड़ा होता, जहाँ कहीं देव-देवी उत्पात मचाते, जहाँ जहाँ कहीं ब्रह्म; वहीं पिशाची चुड़ैल आदि की खुराफाते उभरती है, वहाँ औघड़बाबा की गुहार होती ।"[2]

औघड़ बाबा वामाचार सम्प्रदाय के सिद्ध है, वह देवी देवताओं का नाम लेकर अर्थात - "कंकाल भाई का नाम लेकर - एक ही साँस में देशी ठर्रे का अद्धा चढ़ाता, महा प्रसाद जी भर उसे भी पा लिया । इत्मीनान से चरस का दम लगाया ।"[3]

ग्रामीण जनता सिद्धी तथा सिद्धो द्वारा प्रचलित प्रक्रिया पर अधिक विश्वास रखते है । तंत्र प्रकरण में विविध प्रक्रियाओं का वर्णन है, जिस तरह औषधादि जड़ी बुटियों द्वारा अनेक कार्य सम्पन्न होते हैं, उसी तरह विविध तांत्रिक प्रक्रियाओं द्वारा भी अनेक अनुपलब्ध तथ्यों का उपलब्धीकरण होता है । नागार्जुन ने इसका उल्लेख रतिनाथ की चाची उपन्यास में किया है । रतिनाथ के सहपाठी जानते है कि --"परसौनी

---

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 28
2. " : बाबा बटेसरनाथ पृ- 62
3. " : " " पृ- 63

का कुशल कामति कटोरा चलाना जानता है । जिस साले ने हमारी किताब ली होगी उस पर अगर कटोरा न चलवाया, तो--------"[1].

आदि प्रक्रियाएँ इसी प्रकार की है । रतिनाथ की चाची उपन्यास में इस तथ्य की विवेचना करके रूढ़िग्रस्त जनता किस प्रकार से मांत्रिक-तांत्रिकों की ओर आकर्षित होती है इसकी चर्चा नागार्जुन ने रतिनाथ की चाची उपन्यास में की है । केवल ग्रामीण जनता ही नहीं "मंत्री वर्ग" भी तांत्रिकों की प्रक्रिया में विश्वास रखते हैं, इसका उल्लेख नागार्जुन ने हीरक-जयन्ती उपन्यास में किया है । मान मन्त्री, बाबू नरपत नारायण सिंह की अनामिका उँगली में स्थित "-विशुद्ध गिनी गोल्ड की अँगूठी पूना का एक प्रख्यात कामाख्या के मशहूर तांत्रिक श्री 108 कालिंगाचार्य को पसन्द से आया था ।"[2]

5. 4.6 बाबा

मठो की दुर्व्यवस्था में वहाँ के ठेकेदार अर्थात् जमींदारों का हाथ रहा है, उसी तरह बाबा तथा महंत आदि का भी। मठ का ठेकेदार भगौती, --"साधुओं को इन्सान थोड़े ही समझ रहा --माटी मूरतें समझ रहा ।"[3] ये लोग विविध रूप से अनपढ़ जनता पर अपना प्रभाव बिठायेंगे । योग के कुछ प्रसाधन इनके अर्थात बाबाओं के हाथ में बिगड़े रूप में रहते हैं, जिनका वे प्रयोग करना अच्छी तरह जानते हैं ।

अ. समाधि

"कल से बाबा समाधि पर बैठेंगे । तीन दिन तीन रात ध्यान लगा रखेगा । कोई मिल नहीं सकेगा ।"[4] यह रूप है ढोंगी

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 50
2. नागार्जुन : हीरक जयन्ती पृ- 118
3. नागार्जुन : जमनिया का बाबा पृ- 135
4. " जमनिया का बाबा पृ- 44

बाबाओं का । समाधि में जाने से पहले बाबा का फर्माना निकलता है था ----"स्लेट की पाटी पर पत्थर की पेन्सिल से लिखा हुआ फर्माना ----- 15 रोज बाबा समाधि में रहेंगे । मिलना जुलना सब बंद ।"[1] इस बात से गाँव में सनसनी फैल गई, इन की "उलट बाँसी सिर्फ शब्दों में ही नहीं, अमल में भी कहीं दिखलाई पड़े तो, लोगों को अपनी ओर खींचती है ।"[2] बाबा इस बात से पूर्ण रूप से परिचित है, उन्होंने -"दोनों पुतलियों को ऊपर चढ़ा दिया था । पद्मासन लगाकर बैठा रहा । पीठ की हड्डी सीधी कर ली थी । साँसों को देर तक साधे रहा । प्राणायाम की पूरक कुम्भक और रेचक विधियों का अभ्यास वर्षों तक किया था ।"[3] समाधि के नाम पर बाबाओं ने अत्याचार करना सीख लिया है । ग्रामीण जनता को ही नहीं दूर-दूर तक के लोगों को भी असत्य चमत्कारों का जाल बिछाकर फँसाया जाता --"पिछड़ी जातियों की बहुएँ और बेटियाँ गुंडों की वासना का शिकार बनाकर छोड़ दी जाती है ।"[4] यह रूप है मठ का तथा वहाँ के बाबा का, केवल इतना ही नहीं "फरेबियों की मिली भगत का चस्का लग गया है बाबा को ।"[5]

आ. बाबा : वेश

बाबा के जिस रूप का बाह्याडम्बर प्रदान दर्शन जमनिया का बाबा उपन्यास में मिलता है, उसी तरह उनकी वेश-भूषा भी वास्तव में वास्तविक "बाबा ओं" की तरह न होकर उन बाबाओं की तरह है जो "ठग" और "बहुरूपिये" है । बाबा ने -"नागपुरी रेशम का पीताम्बर परिधान धारण किया था । ललाट पर चंदन और भस्म

- -

1. नागार्जुन : जमनिया का बाबा पृ- 4
2,3. " : " पृ- 15
4. " : " पृ- 104
5. " : " पृ- 139

का टीका । गले में छिदे हुए गुलाबों की माला । काले कम्बल का आसन ।"[1] इस प्रकार के आडम्बरपूर्ण वेशभूषा की तरफ सभी का ध्यान खिंचेगा । उपन्यासकार की मान्यता इस बात में है कि --"रंगे हुए भड़कदार कपड़े, लम्बी सुनहरी जटाएँ, मालाओं के मोटे दाने, पीछे चलनेवाले चेला, चाँटी"[2] इन सबका बहुत बड़ा महत्व है, साधुओं के जीवन में ।

बाह्याडम्बर प्रधान बाबाओं का रूप, उनके उल्टे कर्तृत्व, उनकी उलट बातियाँ और उनका विरोधात्मक व्यंग्य, जन साधारण के लिए आशीर्वाद न होकर अभिशाप है । जिसका उल्लेख नागार्जुन ने इमरतिया का बाबा उपन्यास में किया है । बाबा को जेल में देखकर बड़ा जमादार कहता है -- "बाबा, हम लोगों का भाग जगा है तभी आपके दर्शन हुए हैं, वर्ना इतने नामी सन्त यहाँ कहाँ मिलेंगे ?"[3] इसी नामी सन्त को इसी फागुन में तो बारहवाँ साल पूरा होने वाला था, "इस वर्ष आपके बारह वर्ष जमनिया में पूरे होंगे । आपका हुक्म हो तो उत्तरा-खंड में आपके लिए कोई जगह अभी से ले ली जाए ।"[4] यह विचार उनके अपने नहीं उनकी प्रेयसी गौरी के है । बाबाओं के साथ एक नहीं अनेक महिन्तिनियों का जमाव हर समय लगा रहता है ।

इ. <u>महंतिन</u>

नागार्जुन ने जमनिया का बाबा उपन्यास में ऐसे महंतिन की चर्चा की है, जो लोगों को डरा धमकाने के लिए कुछ ऐसे उटपटांग बातों की चर्चा करती है, जिससे साधारण मनुष्य पर धर्म के बाह्याडम्बर की छाप पड़ जाती है । इमरतिया के पास गुरु महाराज की दी हुई -

- -

1. नागार्जुन : जमनिया का बाबा पृ- 57
2. " : जमनिया का बाबा पृ- 3
3. " : " पृ- 3
4. " : जमनिया का बाबा पृ- 145

"चन्दन की माला है - सात साल से यह माला मेरे पास है। एक सौ आठ मनके है। ---- इसके अलावा पीतल का एक कमण्डल है। राम चरित मानस और गीता है। रेशम के पीले टुकड़े में लिपटा हुआ गुरु महाराज का एक फोटो है।"[1] यथार्थ यह की जीवन के सारे सौंदर्य प्रसाधन उनके पास है, परन्तु उनका दिखावा वे करने के लिए तैयार नहीं। सांसारिक सुख भोग से निर्लिप्त होने की चर्चा वे हर समय किया करते है। बाबा का अपना रूप, महंतियों का अपना रूप जिस तरह आडम्बर प्रधान होता है, उसी तरह उनका झंडा, उनके क्रिया कलाप, उनकी वेश-भूषा, उनकी चिंतन प्रणाली आदि विचित्र ढंग के होते हैं, जिसका उल्लेख नागार्जुन ने जमनिया का बाबा उपन्यास में किया है।

ई. झंडा

जमनिया मठ का --"शेर छाप गेरूआझंडा जमनिया के महन्थी दरबार का खास अपना झंडा है। शेर अपना काम कर रहा होगा। बाबा ने भी अपने साधना शुरू कर दी है।"[2]

उपन्यास में हर बाबा का झंडा अपना अलग है। हर बाबा की उपास्य देवी अलग है, तथा उनका नारा भी भिन्न है। इस प्रकार से बाबा उनकी वेश-भूषा, वहाँ की महंतिन और उनका झंडा विचित्र ही विचित्र है।

उ. आशिर्वाद

बाबाओं के विभिन्न क्रियाकलापों में आशिर्वाद प्रमुख है। नागार्जुन ने जमनिया का बाबा उपन्यास में आशिर्वाद देने की प्रथा का

---

1. नागार्जुन : जमनिया का बाबा पृ- 72
2. " : जमनिया का बाबा पृ- 47

उल्लेख किया है । बाबाओं द्वारा आशिर्वाद देने की प्रथा भी बड़ी विचित्र है, वे अपने हाथ से किसी को छुएँगे नहीं [केवल महंतिनों के अतिरिक्त] --"नीम की मामूली टहनी-जैसी हल्की-पतली एक बेंत से छुवेंगे । फूल के डंठल से या तिनके से जिस तरह चोट पहुँचायी जा सकती है उतनी ही चोट पहुँचेगी ।"[1] यह रहा बिना छुए अनपढ़ लोगों को आशिर्वाद देने की एक प्रथा ; शिक्षित लोगों को आशिर्वाद देने की प्रथा का विवरण उपन्यासकार ने जेल में प्रस्तुत किया है । मस्तराम के सामने -"साखू के ताजे पत्तों से बनी हुई तीन पत्तले हैं । एक पर फूल और मालाएँ, अच्छत रोली है । दूसरी पत्तल पर नैवेद्य की मिठाइयाँ और तराशे हुए फल रखे हैं । तीसरी पत्तल पर रेशम में लिपटी हुई वही आशीर्वादी छड़ी है ।"[2]

शिक्षित समाज में भी मूढ़ भक्तों की कमी नहीं है -- "बड़ा मंगलधार है, पाँच-जने अपनी-अपनी पीठ बेंत से छुआयेंगे । उनमें से दो जेल के दफ्तर में काम करनेवाले बाबू है । एक बड़ा जमादार खुद और एक उसका लड़का और एक राम सुभग सुकुल ।"[3]

परिणाम सर्व सिद्ध है । सिद्धो और बाबाओं के चुंगल में फसकर हर आदमी अपने भीतर के व्यक्तित्व को खो देता है । नागार्जुन ने हर किसी के व्यक्तित्व को जगाने के लिए जिन मुद्दों को अपने उपन्यास में उठाया है, उन मुद्दों का समाधान भी दिया है ।

एक नहीं ऐसे अनेक बाबाओं का निर्माण जमींदारों ने किया है --"नारायणी नदी जहाँ नेपाल की तराई से नीचे उतरती है, वहीं उत्तर प्रदेश और बिहार प्रान्त भी आपस में मिलता है, उस कछार

---

1. नागार्जुन : जमनिया का बाबा पृ- 37
2. " : जमनिया का बाबा पृ- 39
3. " : जमनिया का बाबा पृ- 37

भूमि से वे एक जटाधारी औघड़ बाबा को लिवा ले आए। जमींदारों ने उसी विचित्र व्यक्ति को अपने मठ का महन्त घोषित किया।"[1]

बाबाओं का जन्म, उनके मठों का निर्माण तथा वहाँ विद्यमान विभत्स दृश्यादि का वर्णन उपन्यासकार ने उस गंदगी के समान माना [redacted] जहाँ इन्सान बदबू में ठिठुर-ठिठुर कर मर जाता है। इनके उपदेशों से साधारण जनता को लाभ के अतिरिक्त हानी ही अधिक है।

उपन्यासकार ने उपन्यास का आरम्भ बाबाओं से प्रारम्भ करके उसे कबीर तथा रैदास को इस कीचड़ में घसीटा जहाँ मानव बेमौत मर जाता है। साधारण वस्तु से इन संतों की तुलना की जाए तो वे समाज सुधार में निरर्थक ठहरते है। उपन्यासकार का मत है कि — "फिनायल जैसी दुर्गन्धनाशक दवा से भंगियों-मेहतरों को जितना अधिक लाभ पहुँचा उतना कबीर और रैदास की ठंडी-मीठी वाणी से भी यदि पहुँचा होता।"[2]

बाबा, महन्तो आदि की तरह ब्राह्मणों का क्षेत्र भी धर्म की आस्था पर संकुचित हो गया है, उपन्यासकार ने — चाहे ब्राह्मण हो या बाबा; नारी हो या नर; पशु हो या पैशाच आदि की व्यवस्था धर्म भित्ती पर न होकर अधर्म की भित्ती पर खड़ा होने का संकेत किया है।

---

1. नागार्जुन : जमनिया का बाबा पृ- 103
2. " जमनिया का बाबा पृ- 53

5.4.7 साधु

उपन्यासकार ने अपने सभी उपन्यासों में साधु तथा बाबाओं का तांतासा लगा दिया है। बाबाओं की आगंतुक सूचना से कथा एक नई मोड़ की ओर पलट जाती है। बलचनमा उपन्यास का कोरी राउत जो जोगादास के नाम से प्रसिद्ध है " उपर [दर्जा चार] पास करके पहले कांग्रेस का भोलंटियर और बाद में रमता जोगी, बन गया था।-------- यादव महासभा का भी परचार करता था।"[1]

एक और आगंतुक साधु तथा ब्रह्मबाबा की सूचना दुखमोचन उपन्यास में मिलती है। लखनौली गाँव में एक कोइरी-भगत पर -"हर मंगलवार की रात को बरह्म देवता चढ़ता था।। पास-पड़ोस के इलाकों से लोग देवता से सवाल पूछने पहुँचते थे। भारी मेला जुटता था।"[2] इसी प्रकार का एक और मेला जागृत अवस्था में जमनिया का बाबा उपन्यास में महन्तिन इमरतिया भाई के समीप जुटता है - "मुहल्ले की श्रद्धालु महिलाएँ अभी थोड़ी देर में भाई से मिलने आएँगी।"[3]

साधु-साधुआइन, ब्रह्म बाबा तथा विविध पंथी संतों का मेला नागार्जुन के जमनिया का बाबा तथा दुखमोचन उपन्यासों में सर्वत्र दृष्टिगोचर है। ~~कबड~~ कबीर ने औरतों का जहाँ तिरस्कार किया है, कालान्तर में उसी पंथ के अखाड़े में स्त्रियों का महत्त्व अपनी पूर्णता से प्राप्त हुआ है, जिसका उल्लेख जमनिया का बाबा उपन्यास में प्राप्त होता है -- "हरद्वार में कबीर पंथी सधुआइन रहती है एक।"[4]

- -

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 144
2. " : दुखमोचन पृ- 78-79
3. " : जमनिया का बाबा पृ- 114
4. " " " पृ- 132

इस प्रकार से साधुआश्रम, साधु, जोगी, बाबा आदि सन्तों का एक महाकुंभ, नागार्जुन के जमनिया का बाबा तथा दुखमोचन उपन्यासों में बना है।

5.4.8. <u>सत्संग</u>

यह भक्ति का प्रथम साधन है। सत्संग भगवान के चरणों में भक्ति-प्राप्ति का साधन इसलिए है कि "उससे हरि कथा सुनने का सुअवसर प्राप्त होता है- "हरि कथा के प्रभाव से ही मोह आदि का नाश होता है, परिणाम-स्वरूप भगवान के चरणों में प्रेम अथवा भक्ति की उत्पत्ति होती है।" 1- भक्ति के इस साधन का उल्लेख नागार्जुन ने "जमनिया का बाबा" उपन्यास में किया है। "माई इमरितिया दास के घर, मुहल्ले की श्रद्धालु महिलाएँ मिलने आती है, जिससे "घंटे भर का सत्संग रहता है। "2

5.4.8.1 <u>कीर्तन</u>

नवधा भक्ति में, संकीर्तन की विधा, भक्ति विशेष के लिए विशिष्ट है। जिसका उल्लेख नागार्जुन ने बाबा बटेसरनाथ तथा बलचनमा उपन्यासों में किया है। रुपउली गाँव में, पुरानी पोखर के उत्तरी मोहार पर, आँवले के छतनार वृक्ष के नीचे, हनुमानजी के मूर्ति के समीप, प्रति मंगल के संध्याकाल कीर्तन होता है। (बाबा बटेसरनाथ, पृ. 129.) नौजवानों की गाने-मचलने और हँसने हँकनेवाली मौजी जमात "बजरंग मण्डली" के नाम से प्रसिद्ध है। (वरुण के बेटे पृ. 104) ~~के नाम से प्रसिद्ध~~ जहाँ कीर्तन करना होता है -" मृदंग, मंजीरा, ढोलकी, पोथी, आसनी समेत स्थानों पर पहुँच जाते। कीर्तन का एक रूप भजन भी है।

---

1. तुलसीदास रामचरितमानस बालकाण्ड पृ. 7-6।
2. नागार्जुन: जमनिया का बाबा पृ-114

5.4.8.2 भजन

नवधा भक्ति में, संकीर्तन की विधा भक्ति विशेष के लिए विशिष्ठ है। संकीर्तन अथवा "सामूहिक संकीर्तन" पूजा के अतिरिक्त कुछ और है। गाँधीजी की दार्शनिक-चेतना में पूजा का श्रेष्ठ विधान - "नाम संकीर्तन" ही है। समाज में विभिन्न वर्गों में विभाजित जनता को एक सूत्र में आबद्ध करने का विधान ही, "नाम संकीर्तन" है। जिसमें वाणि का सदुपयोग, मन की एकाग्रता दृष्टि में चेतन की आस्था, सभी का समीकरण हो जाता है। "नाम संकीर्तन", "भजन" है - गाँधी जी द्वारा संचालित "आश्रमों" में भजन नित्य उपासना का एक अंग विशेष है। नागार्जुन ने बलचनमा उपन्यास में इसका उल्लेख किया है। मलभूरा आश्रम में -"प्रतिदिन चौमुखी दालान में बाबू भैया लोग इकट्ठे होते हैं। खजूर के पत्तों की बनी बड़ी चटाई पर लोग बैठ थे, एक अधेड़ उमर का व्यक्ति श्लोक गाता था, सभी उसकी एक ही स्वर में पुनरावृत्ति करते थे, भजन भी इसी तरह गाये जाते थे।"[1] इसी को देखकर बलचनमा कहता है --"जानती कुछ न समझने पर भी इतना तो मैं समझ ही गया कि गाँधी महात्मा के पूजा-पाठ का यही ढंग है।--- फूल बाबू भी मगन होकर भजन गा रहे थे।"[2]

इस तरह भक्ति के विभिन्न रूपों का उल्लेख नागनिया का बाबा, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे, बलचनमा उपन्यासों में हुआ है।

5.4.9 व्रत-पर्व

धार्मिक कृत्यों अथवा अनुष्ठानों में व्रत और पर्वों का विशेष महत्वपूर्ण स्थान है। व्रत में सात्विक प्रधान और रज-तम अंशत:

- -

1. नागार्जुन : बलचनाम पृ- 98
2. " : बलचनमा पृ- 98

मिश्रित है । पर्व में राजस प्रधान और सत्व-तम अंशत: मिश्रित है ।"[1] नागार्जुन के उपन्यासों में किसी व्रत का विशेष वर्णन तो नहीं हुआ है । रतिनाथ की चाची उपन्यास में "व्रत"[2] शब्द का उल्लेख हुआ है ।

5.4.10 पर्व[3]

5.5.0. तीर्थ यात्रा

सभी धर्मों में कुछ विशिष्ट स्थलों की पवित्रता पर बल दिया गया है, उनकी तीर्थ यात्रा करने के विषय में प्रशंसा के वचन कहे हैं । व्यवहारिक धार्मिक कर्तव्यों में जीवन में कम-से-कम एक बार धार्मिक स्थलों को जाना अच्छा माना गया है ।[4] उपन्यासकार की मान्यता भी इसे स्वीकार करती है । दुखमोचन उपन्यास में "जनकपुर" की यात्रा का वर्णन है ।

टमका-कोइली गाँव के लोग प्रतिवर्ष —अगहन शुक्ल पंचमी"[5] को जनकपुर धाम की यात्रा करते हैं । जनकपुर धाम में हर साल धूम-धाम से रामजी का ब्याह होता । दूर-दूर से लोग वहाँ दर्शन के लिए एकत्रित होते हैं --"संतों की पल्टन भी अपनी छावनी डाल देती है — अयोध्या, चित्रकूट, काशी की टोली और भेख सुनने-देखने को मिलती है ।"[6] चारों धाम की यात्रा कर आने पर दान देने की प्रथा प्रचलित है । बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में बाबू साहब [illegible] देवीदत्तसिंह चारों धाम की यात्रा कर जब घूम-घाम कर वापस आ गये तो जानू राउत को -"मन-भर चावल, धोती, चादर और एक गाय मिली थी ।"[7]

---

1. कल्याण हिन्दू संस्कृति अंक पृ- 628, श्री हनुमानजी शर्मा कृत "व्रत पर्व और त्यौहार" नामक लेख
2. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 98
3. " : बाबा बटेसरनाथ पृ-37 विस्तार के लिए देखए ग्राम सांस्कृतिक संदर्भ पृ 197-198
4. महाभारत एवं पुराणों में तीर्थों को यज्ञों से बढ़कर माना है । महाभारत
5. नागार्जुन : दुखमोचन पृ-43
7. " बाबा बटेसरनाथ पृ- 53

5.5.1 ग्रामीण लोक विश्वास

ग्राम जीवन में दैनिक कार्यों के अन्तर्गत लोक विश्वास का महत्वपूर्ण स्थान रहता है। ग्रामीण जनता यात्राओं, विवाह मुहूर्त, विद्यारम्भ, गृह निर्माण आदि कार्य शुभ-अशुभ के विचारोपरान्त ही प्रारम्भ करते है। नागार्जुन ने नई पौध तथा रतिनाथ की चाची उपन्यास में जिन लोक विश्वास का उल्लेख किया है, जिसके अन्तर्गत विवाह मुहूर्त, तथा विद्यारम्भ है तथा कर्म एवं कर्मफल है।

अ. विवाह मुहूर्त

अगहन विवाहों के लिए सभी ढंग से उपयुक्त मास है। बसन्त पंचमी से विवाह कार्य सम्पन्न होते है। नई पौध उपन्यास में दिगम्बर ने दुर्गाचाचा की राय से बिसेसरी का -"अगहन सुदी दशमी के दिन लगन तक ठीक कर लिया।"[1] माघ आदि पंचम विवाह के लिए शुभमास[2] है। उपन्यासकार ने जेठ त्रयोदशी के दोनों मुहूर्तों में अर्द्ध रात्रि के मुहूर्त को अधिक प्रामाणिक माना है। जेठ सुदि तेरस- "ब्याह का लगन साढ़े दस बजे रात का था। ठीक उसी वक्त इस गाँव के भी दो ब्राह्मण युवकों की शादी कहीं होने वाली थी।"[3] दूसरा मुहूर्त -- "पौने एक बजे पड़ता था, जो कि साढ़े दस वाले से कहीं तगड़ा और महाशुभ है।"[4]

आ. विद्यारम्भ

रतिनाथ की चाची उपन्यास में जयनाथ की रूढ़िग्रस्त विश्वासों पर अटूट आस्था है। वे रतिनाथ को सलाह देते है कि -"बृहस्पति को

---

1. नागार्जुन : नई पौध पृ- 129. 2. मुहूर्तमार्तण्ड पृ- 43
3. " " पृ- 28 4. नागार्जुन : नई पौध पृ- 44

ही विद्या आरम्भ करनी चाहिए ।"[1] धर्मसिन्धु तथा मुहूर्त मार्तण्ड भी इसे स्वीकार करते हैं ।

इ. कर्म एवं कर्मफल

ऋग्वेद[2] में कर्म शब्द का प्रयोग कई अर्थों में आया है । कर्म का अर्थ "धार्मिक कृत्य" भी है । वहाँ अग्नि से प्रार्थना की गई है कि "वह मृत को उन लोगों के लोक में ले जाये जिन्होंने अच्छे कर्म किए ।"[3] मनुष्य अपने कर्मों एवं आचरण से अपना भविष्य बनाता है ।[4] पुराणों में भी अच्छे बुरे कर्मों की महत्ता पर बल दिया है । उनके कथनानुसार अच्छे बुरे कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है - जब तक फलों का नाश नहीं होता ।[5] बिना कर्म फल भोगे कर्म का नाश नहीं होता । अतीत जीवन के कर्म से उत्पन्न बन्धन को कोई छुटा नहीं सकता ।[6] मनुष्य कर्मों से देवता-मानव-पशु-पक्षी, क्षुद्र स्थावर जंगम आदि अस्तित्व को प्राप्त करता है।

1 कर्म : प्रकार

कर्म तीन प्रकार के सञ्चित, प्रारब्ध एवं क्रियमाण है । प्रथम कर्म अतीत अस्तित्वों के कर्मों का योगफल है, जिसके प्रतिफलों की अनुभूति अभी नहीं की जा सकती है । प्रारब्ध कर्म वह है, जो इस वर्तमान जीवन के आरम्भ होने के पूर्व स-ञ्चित कर्मों में सबसे प्रबल है । उसी के आधार पर वर्तमान जीवन निश्चित होता है । वर्तमान जीवन में व्यक्ति जो कुछ संगृहित करता है, वही क्रियामाण कर्म है । आगे आने वाला जीवन सञ्चित एवं क्रियमाण के सम्मिलित कर्मों में अत्यन्त प्रबल कर्म द्वारा नि-र्धारित एवं निश्चित होता है । विभिन्न प्रकार

- -

1. रतिनाथ की चाची - नागार्जुन पृ- 35
धर्म सिन्धु पृ- 385, मुहूर्त मार्तण्ड पृ- 22, 23
2. ऋग्वेद पृ- 1/148/2 3. ऋग्वेद पृ- 10/16/4
4. बृ० उप० पृ 4/4/5-7 5. नारदीय पुराण उत्तर भाग 29/1
6. पद्मपुराण 2/81/48 एवं 94/118

के कर्म उसी के अनुरूप फल उपस्थित करते है । इसी प्रकार अस्तित्व [जन्म] भी विभिन्न होते है । नागार्जुन ने रतिनाथ की चाची, बलचनमा, उग्रतारा, दुखमोचन, जमनिया का बाबा उपन्यासों में कर्म के विभिन्न प्रकारों की चर्चा की है ।

2 संचित कर्म

संचित कर्मों का विवेचन रतिनाथ की चाची, बलचनमा तथा उग्रतारा उपन्यासों में हुआ है । रतिनाथ की चाची उपन्यास में चाची कई बार आत्म हत्या करने का निश्चय करती है, लेकिन उसका विश्वास है कि --"जो औरतें किसी विषाद के कारण कुएँ में कूदकर या गले में फंदा डालकर अपने प्राणों का अन्त कर लेती हैं, अवश्य ही पुनः इस मानव योनि में उसका जीव नहीं आता ---"[1]

अर्थात् उसका अस्तित्व किसी और अस्तित्व में सम्मिलित हो जाता है । संचित कुकर्म अतिरिक्त योनी में जन्म लेने के लिए विवश करती है ।

3 भैंसा

बलचनमा उपन्यास में इस उल्लेख हुआ है । राधा बाबू के घर भैंसे की दुर अवस्था को देखकर बलचनमा सोचता है --"बहुत बड़ा कुकरम किया होगा तभी जमींदार के यहाँ भैंसा होकर जनम लिया होगा ।"[2] रूपान्तर अवस्था में उसकी बाह्य प्रकृति जड़त्वयुक्त होकर आन्तरिक मानस पटल पर उसकी अभिव्यक्ति प्रतिबिम्बित होते रहती है ।

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 256
2. " बलचनमा पृ- 125

4. मुक्ति

संचित तथा क्रियामाण कर्म से मुक्ति पाने का योग्यमार्ग तीर्थ पर्यटन, देव-दर्शन, पुण्यमय सरिताओं का नामजप तथा स्नान, साधु सत्संग आदि है। उपन्यासकार की मान्यता है, कि पुण्यमय नदी गंगा, यमुना आदि के स्नान से पाप कट जाते है --"भले ही गंगा यहाँ से पन्द्रह कोस पश्चिम बहती हो।"[1] उसमें स्नान करने से संचित सारे पाप धुल जाते हैं।

कामेश्वर तथा उगनी अपने किए हुए पूर्व संचित कर्मों से व्याधिग्रस्त होकर पीड़ित हो रहे थे, यह पीड़ा उनके मानसिक धरातल पर स्थित पीड़ा है। उगनी का यह कथन --"पिछले जनम में जाने कितने पाप किये थे -- हे गंगा मइया।"[2] गंगा मइया के नाम जप से कटने वाले इस पाप का विवेचन उपन्यासकार ने भली भाँति किया है।

5. वैधव्य

स्त्री के लिए वैधव्य [संचित] महापाप का [क्रियमाण] फल है। रतिनाथ की चाची उपन्यास में उमानाथ के माँ का वैधव्य जयनाथ को सोचने के लिए विवश कर देता है --"उमानाथ की माँ, तुम इतनी सुन्दर क्यों हुई? पूर्व-जन्म के किस अभिशाप से वैधव्य का यह दुर्वह भार ढोना पड़ रहा है।"[3] प्रत्येक स्त्री को प्राप्त हुआ

- -

1. नागार्जुन : उग्रतारा पृ- 11
2. " : " पृ- 10
3. " : रतिनाथ की चाची पृ. 45

एक विचारणीय प्रश्न है । इसका समाधान उपन्यासकार ने उग्रतारा उपन्यास में दिया है । उगनी बाल विधवा है --"पहले जनम में बेचारी ने जाने किसका क्या बिगाड़ा था । अब इस जनम में उसे इतना भुगतना पड़ रहा है ।"[1]

संचित दुष्कर्म फल प्राप्ति के कारण रतिनाथ की चाची, बलचनमा, उग्रतारा उपन्यासों में दिखाई देते हैं। उगनी, कामेश्वर, गौरी आदि इस तथ्य के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं । संचित तथा क्रियमाण दोनों कर्म जुड़वे शिशुओं की तरह हैं । क्रियमाण कर्म क्रमान्तर में संचित हो जाता है और संचित फल फल प्राप्ति के लिए क्रियमाण ।

नागार्जुन की दार्शनिक चेतना पूरक सिद्धान्त पर आधारित है । स्त्री-पुरुष की पूरक है, ज्ञान-विज्ञान का, तथा क्रियमाण संचित का । यह चेतना सभी उपन्यासों में स्पष्ट या अस्पष्ट रूप से दिखाई देती है ।

6. क्रियमाण

क्रियमाण एक पक्षीय तथा फल प्राप्ति का उन्नायक है । क्रियामण कर्म का विवेचन दुखमोचन तथा बलचनमा उपन्यास में नागार्जुन ने किया है । दुखमोचन उपन्यास में शिलाधर द्वारा कहा गया यह कथन --"चुप क्यों हो गई भाभी ? गले तक आई बात मुँह से नहीं निकालोगी तो अगले जन्म में जीभ सुन्न हो जायगी, समझी ?"[2] यह क्रियमाण द्वारा निर्धारित फल है । कर्म द्विपक्षीय है । फल एक पक्षीय, उपचार स्थानान्तरित है । नागार्जुन ने बलचनमा उपन्यास में इसकी विवेचना की है । छोटी मलिकाइन द्वारा कहा गया कथन - "छटाँक

- -

1. नागार्जुन : उग्रतारा पृ- 69
2. नागार्जुन : दुखमोचन पृ- 144

आधा छटाँक धान के लिए जो मैंने बट-खरा बदला हो तो मेरा सत्यनाश हो, नहीं तो झूठ मूठ का कलंक लगाने वाली इस राँड की माँग अगले जनम में भी खाली ही खाली रहे ------------"[1]

उपन्यासकार की दार्शनिक चेतना का प्रौढ़ रूप उपरोक्त संधियों में विद्यमान रहता है।

नागार्जुन क्रियमाण, संचित के साथ-साथ प्रारब्ध कर्म को भी मानते हैं। प्रारब्ध कर्म सृष्टि के प्रारम्भ से आरम्भ होकर प्रत्यक्ष जीव के साथ सन्निहित रहता है। जन्म तथा मृत्यु इसके विराम व स्थान है, जहाँ स्थानांतरित रूप में आवागमन के बंधन रहस्यात्मक रूप में विक्षुब्ध रहते हैं।

7. प्रारब्ध कर्म

प्रारब्ध कर्म का उल्लेख नागार्जुन ने जमनिया का बाबा उपन्यास में किया है। भगौती तथा लालता के ~~लक्ष्मी के~~ सम्मिलित साजिश ने लक्ष्मी के दुधमुँहे बच्चे की कुर्बानी का निश्चय किया, उनके विचारों से --"जनम का रोगी बच्चा आज नहीं तो कल यों ही मुँह बा देगा।"[2]

जन्मजात रोगी होना यह मनुष्य का प्रारब्ध कर्म है। मृत्यु से ही रोगी मुक्त होने की सम्भावना है।

संचित कर्मों की विवेचना नागार्जुन ने रतिनाथ की चाची, बलचनमा, उग्रतारा उपन्यासों में की है। क्रियमाण पाप स्थानांतरित होकर कैसे अशुभ लक्षणों द्वारा सम्पन्न है, उसकी विवेचना नागार्जुन ने

- -

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 24
2. " : जमनिया का बाबा पृ- 144

दुखमोचन, बलचनमा, उपन्यासों में किया है । वैधव्य आदि प्राप्ति के कारण क्या है, इसकी विवेचना भी रतिनाथ की चाची उपन्यासों में हुई है । कर्म का सिद्धान्त यह बताता है, कि प्रत्येक अच्छा या बुरा कर्म विशिष्ट प्रकार का परिणाम उपस्थित करता है, जिसे अपूर्व कहते है । इस भौतिक संसार में कार्य कारण का एक सार्वभौम नियम है । कर्म का सिद्धान्त इस नियम को मानसिक एवं नैतिक धरातल पर भी ला देता है । यह सिद्धान्त अस्तित्वों में किये गये कर्मों का फल मानता है, दुष्कर्मों का भोग तो मनुष्य को भोगना ही पड़ता है । दुष्कर्म के लिए व्यक्तिगत दंड होता है । उपन्यासकार की आस्था उपरोक्त सिद्धान्तों तथा तथ्यों पर आधारित है ।

5.5.2 ग्रामीण अंधविश्वास

नागार्जुन के उपन्यास, रतिनाथ की चाची, में शंकर बाबा शिवजी के वाहन बैलगाड़ी पर बैठना पाप समझते है। वे गाड़ी के साथ-साथ पैदल चलते हैं । रतिनाथ को बाबा की क्रिया को देखकर आश्चर्य होता है । वह उनसे न बैठने का कारण पूछता है । शंकर बाबा कहते है --"बच्चा अब कोई इन बातों का विचार नहीं करता । बैल ठहरे शिवजी के वाहन । इनके चारों पैर धर्म के ही चार चरण है। इसलिए ब्राह्मण न हल जोतते हैं, न गाड़ी चलाते हैं । चढ़ना भी मना है ।"[1] शंकर बाबा के उत्तर में प्राचीन परम्पराओं के प्रति पूर्वाग्रह है ।

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 60

अ. मनौती

ग्रामजीवन के अन्धविश्वासों में मनौती भी एक पक्ष है। "व्यक्ति का स्वार्थ जहाँ टकराता है, वह देवी-देवता के प्रति अधिक आस्थावान बन जाता है, और उसकी भक्ति मनौतियों के रूप में दिखाई देती है।"[1]

विविध देवी-देवताओं में आस्था रखनेवाले नागार्जुन के पात्र भौतिक संकट निवारण के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार की मनौतियाँ, संकट निवारण करनेवाले दुर्गा, बैद्यनाथ, कन्हैया, सत्यनारायण भगवान, भगवती, दिनकर, सरस्वती से माँगते हैं तथा मनौतियों में वही चढ़ाया जाता है, जो उन देवताओं को प्रिय है।

खोंखा पंडित के घर बिसेसरी का विवाह एक संकट बनकर उपस्थित हुआ ; छुटकारा पाने के लिए बिसेसरी की नानी ने "आँचल पसारकर और मत्था टेककर जोड़ा छागर कबूला था दुर्गामाई के आगे।"[2] और उसकी माँ-रामेसरी की मनउती थी —"गंगा जल भरकर पैदल पहुँचेगी और अपने हाथों से बाबा बैदनाथ को नहलाएगी।"[3] स्वयं बिसेसरी ने अपने योग्य अगहन तक कोई "बीस या बाईस साला दूल्हा उसके लिए मिल गया और उसकी शादी हो गई तो वह चाँदी की छोटी सी खूबसूरत बसुली गढ़वाएगी सुनार से, बाँके बिहारी कुँवर कन्हैया के हाथों में थमा देगी।"[4]

विवाह ब्राह्मणों के लिए एक समस्या है। वह शाप के रूप में कुटुम्ब पर मँडराता रहता है। विवाह योग्य कन्या के लिए नानी, दादी माँ और मौसी के अतिरिक्त मामा मामियों द्वारा भी मनौती माँगने की

---

1. डा० कमला गुप्ता : हिन्दी उपन्यास में सामन्तवाद पृ- 448
2, 3, तथा 4 नागार्जुन : नई पौध पृ- 92

प्रथा हमारे देश में विद्यमान है। बिसेसरी का मामा बच्चन ने "सत्यनारायण भगवान की पूजा का संकल्प लिया था। विश्वेश्वरी के विवाह के लिए।"[1]

मनोरथ पुरा होने पर लोग आकर धूमधाम से मनौतियाँ चढ़ाते है। ढोल पिपही की मंगलमय ध्वनियों के साथ वटवृक्ष की शाखाओं में "रेशम के फूलों, कोढिला के बने सिरमौर और मण्डप, जरी-गोटे की मालाएँ, पीतल काँसे की घंटियाँ, लाल-हरंगे का टुकड़ा --- धूप-दीप, फूल-फल अच्छत दूब, दूध और गंगाजल, बेल और तुलसी के पत्ते - फल फरहरी, मिठाइयाँ, पकवान पान मखान ---------"[2] व्यवहारिक मनौतियाँ अर्थात् शादी, विवाह, संतान उत्पत्ति, गरीबी निवारण आदि है। मानसिक मनौतियों के लिए अर्थात् अदृष्ट रूप में मिलनेवाली, टीस के उपचार के लिए भी हम देवी-देवताओं की पूजा,-तीर्थाटन,-देव-दर्शन, नदियों में स्नान आदि करके हम अपने मानसिक दुःख का निवारण कर लेते है।

बाँझ औरत सुखिया भूत बाधा से ग्रस्त हैं। उस भयानक दशा से छुटकारा पाने के लिए छोटी मलिकाइन ने भगवती से मनौती माँगी -- "दुहाई भगवती की, सुखिया का भूत भगा ले जाइए। दो कुँआरी लड़कियों को आपकी खातिर खीर पूड़ी खिलाऊँगी --"[3]

मानसिक दुख का एक कारण, उपन्यास दुखमोचन में विद्यमान के सामूहिक झोंपड़ियों का जलना है। उसमें पशु, पक्षियों का जो वीभत्स हत्याकांड प्रदर्शित है, उसके लिए भी मनौती माँग ली गयी है। यह प्रथा अत्यन्त प्राचीन तथा प्रचलित है इसे - "भूत दया" कहते है। कुत्ते के झुलसने पर मामी ने मनौती माँगी -- "दुहाई दीनानाथ की। करिया

- -

1. नागार्जुन : नई पौध पृ- 93 2. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 58
3. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 28

की पीठ पर धूप जरूर उगा देना दया निधान । छठ को अरघ के अवसर पर प्रतिवर्ष में आपको इस कुल्ले की तरफ से पक्वानों की एक डाली नवेद चढ़ाऊँगी हे (सूर्य भगवान्) ।" [1]

विवाह आदि धार्मिक कृत्यों में जिस तरह की मनौतियाँ माँगी जाती है, उसी तरह की मनौतियाँ अग्निकांड, सामूहिक दुःख निवारणादि में भी ।

मनौतियों का एक विचित्र रूप जादू टोना झाड़ फूंक, भूत-प्रेत, पिशाच आदि निवारण के लिए भी प्रचलित है । भूत बाधा निवारण के अतिरिक्त चोरी आदि कार्य में भी मनौति माँगने की प्रथा है । रतिनाथ ने पुस्तक की चोरी की, कटोरा चलाना आदि जादू से डरकर रतिले पुस्तकों को यथा-स्थान रख दिया । --

"किताबें मिलने की खुशी में परमा, उत्तिम, नित्या और रत्ती - पाँचों साथियों ने मिलकर सरस्वती मैया को पाँच पैसे की मिठाई अगले इतवार को चढ़ाना मंजूर किया ।" [2]

बिश्वेश्वरी के विवाह के लिए मामी, माँ और स्वयं विश्वेश्वरी ने मनौती माँगी । मानी ने दुर्गाभाई के लिए दो जोड़ा छागर बलि देने की मनौती माँगी है, तथा उसकी माँ ने बैधनाथ पर गंगा जल चढ़ाने की मिन्नत की है । स्वयं विश्वेश्वरी बाँके बिहारी कन्हैया की पूजा तथा मनौती चढ़ाने की मन्नत माँगी है । यह हुआ वैविह कार्य तथा उसकी मनौतियाँ । उसके मामा ने सत्यनारायण कथा के मनौती के रूप में स्वीकार किया था । भूत के उतर ने पर कुँवारी लड़कियों को भोजन-देना यह प्रान्तीय प्रचलन है ।

---

1. नागार्जुन : दुखमोचन पृ- 155
2. " रतिनाथ की चाची पृ- 5।

भूल-से बात फिर से उठ आए इस लिए भगवान दिनकर से प्रार्थना की है। भगवान दिनकर प्राकृतिक सभी वस्तुओं को जन्म देने वाले ब्रह्मा है। सिर्फ वैध न होकर अवैध कर्मों के लिए भी देवी देवताओं से मनौती माँगी जाती है। गौरी को गर्भवती देखकर, उसके संकट निवारण के लिए उसकी माँ ने दक्खिन की ओर मुँह करके दोनों हाथ उठा लिए और आर्त स्वर में गुन गुनाई -"दो हाई बाबा बैजनाथ की। इस मुसीबत से राजी खुशी मेरी लड़की निकल गई, तो गंगाजल भरकर मैं सुल्तानगंज से तुम्हारे धाम पहुँचूँगी।"[1]

इस प्रकार की मनौतियाँ उपन्यासकार ने स्वीकार की है।

5.5.3 पशु बलि

अ. ब्रह्म बाबा के लिए

प्राचीन काल से चली आ रही धार्मिक मान्यता प्राप्त प्रथा है। ऐसा विश्वास चला आ रहा है, कि बलि के जीव स्वर्ग में जाते है। ऋग्वेद[1क] तथा मनुस्मृतिकार[2] का कहना है कि देवी को प्रसन्न करने के लिए जो पशु बलि होते है वे स्वर्ग को चले जाते है, और जो उन्हें मारते है वे पापी नहीं है। नागार्जुन ने बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में इस तथ्य का उल्लेख किया है। ब्रह्म बाबा के निमित्त दिये जानेवाली पशु बली के पशु की पूजा, उसकी स्वीकृति लेने के पश्चात ही बलि लेने का संकेत है। पण्डित यजमान से पहले —"बकरे की पूजा करवाता, फिर

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 39
1क. ऋग्वेद 1/162/21
2. ऋग्वेद 5/42

हथियार की ---------- यजमान हाथ जोड़कर बकरे से कहता यज्ञ के निमित्त पशुओं की सृष्टि की विधाता ने, यज्ञ के निमित्त ही उन्हें मार गिराय जाता है, इसी कारण मैं तुम्हें मरवाऊंगा, यज्ञ की हिंसा हिंसा नहीं हुआ करती ।"[1]

इस बलि के लिए घेर-घारकर बकरे से उसकी मंजूरी ले ली जाती है । ------"जब तक उसके मुंह से मैं-मैं की आवाज नहीं निकलवाते, तब तक बकरे की गर्दन पर हथियार नहीं पड़ता ।"[2] बली के बाद मनौतीवंला निर्जीव पशु का घड़ ले जाता है,और कसाई मुण्डा । मनौतियाँ चढ़ानेवाले श्रद्धालु लोग पूजा प्रार्थना के बाद घर चले जाते-"दिन के समय कुत्ते और रात के वक्त गीदड़ ---बलिदानी लहू की भलाई चाटा करते । चींटियों और झींगुरों का भी इसमें साझा हुआ करता ।"[3]

बलि स्वार्थ और परमार्थ-कारक है ।

रूपउली गाँव अनावृष्टि से पीड़ित है । औरतें मेघराज को प्रसन्न करने के लिए "जल स्थल चर प्राणी" मेंढ़के की बलि देती है । जिसका उल्लेख बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में हुआ है । एक रात गाँव भर की औरतें --"दस पन्द्रह गुटों में बँट गयी । तालाब से मेंढ़क पकड़ लाये गये, उन्हें ओखलियों में मूसलों से कुचला गया ।"[4] उसी गाँव के "ग्वालों, अहीरों और धानुकों ने चार दिनों तक भुइया महाराज का पूजन किया दस भेड़े बली चढ़ायी ।"[5]

---

1. तथा 2 नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 59
3. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 58
4. तथा 5. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 45

लेकिन इन्द्र देवता प्रसन्न नहीं हुए । केवल नैसर्गिक वर्षा के प्राप्ति के लिए सामुहिक बलि प्रथा का उल्लेख ही उपन्यास में मिलता है, बल्कि व्यक्तिगत मनौति के रूप में भी बलि प्रथा का उल्लेख भी इसीमें मिलता है ।

आ. <u>नरबली</u>

नरबली का उल्लेख जमनिया का बाबा उपन्यास में मिलता है । धर्म की आड में ग्रामीण जनता को आतंकित करने के लिए "महाअष्टमी की महारात्रित में जमनिया वालों ने अपनी जिन्दगी में पहली बार नरबलि का नजारा देखा ।"[1] देवी की प्रतिमा के सामने –छै महीने का एक शिशु खड़ा किया गया । उसकी कमर में रेशमी वस्त्र का लाल टुकड़ा लपेटा हुआ था । गले में लाल फूलों की माला थी । माथे पर सिंदूर का टीका था ।"[2] हाथ में तलवार लिए पीले वस्त्रों में पुजारी खड़ा था कुछ ही समय बाद —"खून से सनी हुई तलवार पेट्रोमेक्स की रोशनी में चमक रही थी । वही पास में मुंडहीन शिशु-शरीर लहू में लथपथ पड़ा था ।"[3] पास खड़े भक्तों के —"माथों पर लहू के गीले टीके लगाये गये ।"[4] हवन कुंड में जलते हुए मांस की दुर्गन्ध को दबाने के लिए –"सेरो गुग्गल, कपूर, जौ, तिल, सुपारी आदि डाले ही गये, ऊपर से आधा टीन शुद्ध घी भी डाल दिया गया ।"[5] सभी भक्त गण स्तम्भित रह गये, "कोई कुछ नहीं बोला , सभी टुकुर-टुकुर ताकते रह गए ।"[6] इस तरह नजारा समाप्त हुआ ।

- -

1. नागार्जुन : जमनिया का बाबा पृ- 85
2. " : " पृ- 35
3. " : " पृ- 85
4. " : " पृ- 85
5. " : जमनिया का बाबा पृ- 85
6. " : " " पृ- 19

वामार्गीय देवता – भुइयाँ महाराज, ब्रह्मबाबा, काली, भैरवी आदि देवताओं को प्रसन्न करने के लिए विभिन्न अवसरों पर भिन्न-भिन्न प्रकार की बलि देने का उल्लेख हुआ है। कालिका [illegible] पुराण में दुर्गा एवं भैरव के सम्मान में बलि देने जाने वाले नर जीवों में पक्षी, कच्छप, ग्राह, मछली, मृग, भैंसा, गौधिप, बैल, बकरी, नेवला, शूक, खड्ग, कृष्णहरिण, शरभ, सिंह व्याघ्र, मानव, व्रती का रक्त है। सामान्यत: बकरे एवं भैंसे काटे जाते हैं। सम्भवत: उपन्यासकार बलि विधि तथा बलि में दिए जानेवाले पशुओं से पूर्ण रूप से परिचित हों।

षष्ठ अध्याय

ग्राम : राजनीतिक संदर्भ

ग्राम : राजनैतिक संदर्भ

नागार्जुन के उपन्यासों में राजनैतिक चेतना बहुत प्रबल दिखाई देती है । विशेषकर ग्रामीण जीवन के संदर्भ में राजनैतिक घटनाओं और उनके प्रभावों का चित्रण । स्वतंत्रता-आन्दोलन के समय उत्पन्न स्वस्थ राजनैतिक चेतना से लेकर स्वातंत्र्योत्तर भारत की भ्रष्ट राजनैतिक व्यवस्था -- चुनाव, चुनावों के लिए गुटबंदी, पार्टीबंदी और ग्रामीण जीवन के सहज क्रम में होनेवाली उथल-पुथल आदि का विस्तृत संदर्भ इनके उपन्यासों में प्राप्त होता है । इतना ही नहीं अपनी विचार-धारा के अनुरूप नागार्जुन समाजवादी-चेतना और उसके फलस्वरूप ग्रामीण मानसिकता में होनेवाले परिवर्तन आदि भी बतलाते हैं । वर्ग संघर्ष और वर्ग साम्य की सकल्पना को भी नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में स्थान दिया है । अतः राजनैतिक संदर्भ के अन्तर्गत हम सर्वप्रथम स्वातंत्र्यपूर्व भारत के घटना क्रम को दो उपशीर्षकों में विवेचित करेंगे :--

1917 - 1934 (प्रथमकाल खंड)
1935 - 1947 (द्वितीय काल खंड)

स्वातंत्र्योत्तर भारत की भ्रष्ट राजनीति का यथार्थ स्वरूप तथा नागार्जुन के कल्पित आदर्श का चित्रण भी साथ में लिया गया है ।

उपन्यासों में राजनीतिक चेतना 1917 से आरम्भ होकर 1960 तक व्याप्त है। अध्ययन की सुविधा के लिए इसे तीन कालखण्डों में विभक्त किया जाता है। प्रथमकाल खण्ड 1917 - 1934 तक, द्वितीय कालखण्ड 1935-1947 तक तथा तृतीय कालखण्ड 1947 - 1960 तक।

6·1 प्रथम कालखण्ड 1917 से 1934

उपरोक्त विभाग के अनुसार इस काल खण्ड में घटनेवाली घटनाओं के अन्तर्गत चम्पारन नील खेती, रालेट एक्ट, असहयोग आन्दोलन, आतंकवादी आन्दोलन, विभिन्न पार्टियों की स्थापना, सर्वदलीय सम्मेलन, नेहरु रिपोर्ट, नमक सत्याग्रह, द्वितीय गोलमेज कान्फ्रेन्स, कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन है।

6·1·1 चम्पारन - नील खेती

अंग्रेजों के शासनकाल में नील मुनाफा कमानेवाली सामग्री बन गई थी, विशेषकर बंगाल और बिहार में अनेकों नील की कोठियाँ स्थापित की गई -- "बंगाल प्रेसिडेंसी में लगभग 1000 नील की कोठियाँ थी। ..... शाहबाद, पूर्णिया, भागलपुर और संथाल परगना ज़िलों में भी खोली गई।"[1]

1· डॉ० काली किंकर दत्त : बिहार में स्वातंत्र्य आन्दोलन का इतिहास - खंड - 1 पृ·182

19 वी श॰के प्रारम्भ में गोरे खेतिहरों ने इस जिले में नील की खेती करना प्रारम्भ किया । धीरे-धीरे जमींदारों से सौदा करके भूमि के बड़े-बड़े भाग अपने हाथ में कर लिए । शीघ्र ही वहाँ के गाँवों के किसानों से अपने लिए नील की खेती करना प्रारम्भ कर दिया । जिसका उल्लेख नागार्जुन ने बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में किया है -- "दुमका की तरफ से मुसहडो के पचास परिवार अंग्रेज ले आया, कोठी के दक्खिन उनकी बस्ती आबाद हो गयी । उन्हीं लोगों से साहब नील की खेती करता था । वे उसके गिरमिटिया मजदूर थे ।"[1] आगे चलकर यह अनिवार्य हो गया कि "किसान 3/20 या 5/20 भूमि पर नील अवश्य बोये ।"[2] कुछ ही दिनों में बंगाल टेनेन्सी एक्ट में इस बात को कानून का रूप दिलवा दिया ।[3] "प्रति बीघा तीन कठा जमीन में नील की खेती करने के लिए किसान मजबूर किये जाते थे । यह दबाव जमींदारों और सरकारी अफसरों द्वारा डलवाया जाता था ।"[4] देहातों में -- एक तरफ जमींदारों का दबदबा था, दूसरी तरफ नील के कारखानेदार अंग्रेज जमे बैठे थे ।[5]

- -

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ॰ 70
2. पट्टाभी सीतारामैया : कांग्रेस का इतिहास - पृ॰ 212
3. डॉ॰ काली किंकर दत्त : बिहार में स्वातंत्र्य आन्दोलन का इतिहास - खंड-1 पृ॰ 182
4. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ - पृ॰ 71
5. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ - पृ॰ 48

6·1·2 तीन कठिया

नील पैदा करने की यह प्रथा आगे चलकर 'तीन कठिया'[1] के नाम से प्रसिद्ध हुई -- 'रसादीपुर, बम्भियापट्टी और लपहली के किसानों पर इस जैन साहब ने तीन कठिया लागू कर दिया था ।[2] इससे उनके अन्य खेती को नुकसान पहुँचता था और इसके लिए उन्हें मजदूरी नाम मात्र की ही मिलती थी । इसी नील खेती के कारण -- 'गोरे हकिमों ने उत्तर बिहार के इलाकों में अपने हाथ-पैर फैलाने शुरू कर दिए ।'[3] विशेषकर चम्पारन जिले में उनकी हुकूमत थी ।

6·1·3 विविध प्रकार के अत्याचार

(अ) पिटाई :

उन दिनों गोरों का आम लोगों पर भारी आतंक था, 'उच्च जाति के हिन्दुओं को पिटवाना काजी हौजों में उन्हें बन्द करा देना तथा कई ढंग से उन्हें तंग करना शामिल था ।'[4] एक बार जैकिसुन के दादा को -- 'जैन साहब के साले ने महज इसलिए पीट दिया कि वह सलाम करने से चूक गया था ।'[5]

1· नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ· 71।

2· यूरोपीय निलहे उत्तरी बिहार में 1· जीरात तथा 2· आसामी तरीकों से नील की खेती करते थे । आसामिवार व्यवस्था के अंतर्गत अधिक प्रचलित 'तीन कठिया' था । -- डॉ० कालिकिंकर दत्त बिहार में स्वातंत्र्य आंदोलन का इतिहास खंड-1 पृ· 183

3· नागार्जुन : उग्रतारा : पृ· 62

4· पट्टाभीसितारामैया : कांग्रेस का इतिहास -भाग-1 पृ· 213

5· नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ· 71।

(आ) बागीकरार देना

इतना ही नहीं ये लोग किसानों से जबरदस्ती अनुचित रूप से भांति -भांति के नजराने भी लिया करते थे। बेचारे किसान इस बात का साहस ही नहीं कर सकते थे कि इनके विरोध में मुकदमा चलाये। जो कोई भी इनके विरोध में आवाज उठाता -- "वह बागी करार दिया जाता ..... ठग, डाकू, चोर, बदमाश आदि भी गिरोह बनाकर घूमा करते थे और उनके अन्दर फिरंगियों के प्रति अपार घृणा सुलगा करती थी।[1] किसानों को मजबूर होकर इनके अत्याचारों को सहन करना पड़ता था।

किसानों की दुर्दशा को देखकर उनके कष्टों को दूर करने के, सार्वजनिक सेवकों के सारे प्रयत्न बेकार हो गए। इन किसानों के कुछ प्रतिनिधि गांधी के पास लखनऊ कांग्रेस (1916) के अवसर पर पहुँचे और चम्पारन के दुर्दशा का बखान किया, जिसे सुनकर उन्होंने चम्पारन आकर स्थिति का अध्ययन करने का वचन दिया।

6.1.4 गांधी जी की बिहार यात्रा

1917 को गांधी जी मोतिहारी पहुँचे, गांवों का अवलोकन करने ही वाले थे कि उन्हें गोरी सरकार की ओर से दफा 144 का नोटिस मिला। लेकिन उन्होंने गोरी सरकार का हुकूम नहीं

- -

1. नागार्जुन : उग्रतारा : पृ. 62

माना । बलचनमा के कथन के अनुसार -- "गांधी महतमा न बड़े लाट से डरते हैं, न छोटे लाट से, न सरकार से न अमला से । गरीबों का पच्छ लेते हैं ।"[1] उल्लंघन की इस प्रक्रिया में मैजिस्ट्रेट की अदालत में उन पर मुकदमा चलाया गया, अंत में सरकार को झुकना पड़ा और उन्हें जाँच करने दी । गांधी जी ने अपने साथियों की सहायता से -- "20 हजार किसानों के बयान कलम बद्ध किये ।"[2] जिसके आधार पर उन्होंने किसानों की मांगे पेश की ।

6.15 किसान कमीशन :

आखिरकार सरकार को एक कमीशन नियुक्त करना पड़ा । किसानों की ओर से गांधीजी को प्रतिनिधि रखा गया । जाँच के पश्चात कमीशन ने रिपोर्ट दी जिसमें किसानों की लगभग सभी शिकायतें जायज मानी गयी । उपन्यासकार नागार्जुन युगीन चेतना से अवगत थे, बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में बाबा बटेसर का कथन है कि -- "चम्पारन की भूमि पर गांधी जी के चरण पड़े थे । नील के कारखाने दार साहबों की तरफदारी में पहले तो सरकार तन गयी। परन्तु पीछे उसे झुकना पड़ा और इस प्रकार चम्पारन की जनता को नील के दानवों से छुटकारा मिला ।"[3] कुछ समय बाद उन्होंने

---

1. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 97
2. पट्टाभीसितारामैय्या : कांग्रेस का इतिहास भाग-1-पृ. 214
3. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. पृ. 79

खेड़ा में छोटे-छोटे आन्दोलन का संचालन किया । खेड़ा के किसानों की दशा खराब थी और वे लगान देने में असमर्थ थे । गांधी जी ने जबरदस्ती लगान वसूल करने के विरुद्ध लगान बंदी आन्दोलन आरंभ किया ।

6·1·6 रॉलेट एक्ट :

इसी बीच सन् 1917 को प्रथम विश्वयुद्ध के समाप्त होने पर गांधी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता अपने ~~अबक~~ "आत्मनिर्णय" की मांग को दुहराया, किन्तु उसे उसके बदले में "रोलेट बिल" मिला । इस कानून के अन्तर्गत सरकार ने पुलिस को अबाध अधिकार दिये.... सम्राट के प्रति विद्रोह फैलानेवाली किसी भी प्रकाशनीय और आपत्तिजनक सामग्री के प्रसार पर पाबन्दी लगा सकती थी । फिर भी सरकार के खिलाफ प्रचार होता ही था । लिखापढ़ी अखबारों का छपना कांग्रेस सरकार ने नामुमकिन कर दिया -- तो जाने कहाँ से और कैसे लिखापढ़ी छापे में "रणभेरी" निकलने लगी ।"[1] उसके दो ही तीन अंक क्रांतिकारी जीवनाथ के हाथ लगे थे । इन लिखित अखबारों के माध्यम से अंग्रेजी सरकार की कूटनीति का वास्तविक पता सर्वसाधारण जनता को लगता है ।

अ रॉलेट ऐक्ट का विरोध :

इस बिल का भारतीयों ने तीव्र विरोध किया । गांधीजी ने बिल स्वीकृत होने के पूर्व ही यह घोषणा कर दी थी कि --

1· नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ· 111

"रालेट कमीशन की सिफारिशों को यदि असली जामा पहनाया जायेगा तो सत्याग्रही युद्ध छेड़ देंगे।"[1] गांधीजी ने देश में घूम-घूम कर "रालेट ऐक्ट" का विरोध करने की प्रेरणा जगाई, सभी स्थानों पर उन्हें जनता का उत्साहवर्धक समर्थन मिला। 6 अप्रैल को देशव्यापी प्रदर्शन हुए।

6.1.7 रचनात्मक कार्य :

कांग्रेस ने गांधी जी के नेतृत्व में चलनेवाले आन्दोलन का जो कार्यक्रम निश्चित किया था उसका मुख्य लक्ष्य -- "ऐसा कुछ करना जिससे सरकार पंगु हो जाए।"[2] 1917 के कलकत्ता अधिवेशन में कांग्रेस ने रचनात्मक कार्यों के हेतु एक भावी कार्यक्रम की रूप रेखा प्रस्तुत की -- "गैर कानूनी नमक बनाना, शराब अफीम और विलायती कपड़ों की दुकानों पर पिकेटिंग करना, तकली और चरखे पर सूत कातना, ढेर का ढेर सूत कतवाना, छुआ छूत खतम करना, विदेशी कपड़े जलाना, स्कूल-कालेज का बहिष्कार, सरकारी नौकरी से इस्तिफा ..... । गांधी जी ने कहा था -- "ऐसा करने पर हम देखेंगे कि स्वराज्य हमारे दरवाजे पर क्यों खड़ा नहीं होगा ?"[3] गांधी जी के इस रचनात्मक काम का प्रसार गांव गांव में फैल गया।

---

1. पट्टाभी सीतारामैय्या : कांग्रेस का इतिहास - भाग-1 पृ. 165
2. - वही - पृ. 194
3. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 86

उन दिनों असहयोग की धूम मची हुई थी, -- कोई अपनी नौकरी से इस्तीफा दाखिल कर रहा था, कोई कालेज की पढ़ाई छोड़ रहा था और प्रोफेसरी और मास्टरी पर लात मार रहा था ।"[1] आन्दोलन का प्रचार-प्रसार देशभक्त विद्यार्थियों के माध्यम से हुआ जिन्होंने राष्ट्रसेवा का व्रत लेकर शिक्षा संस्थाओं का बहिष्कार किया था । विद्यार्थी असहयोग आन्दोलन के स्वयंसेवक बन गए । गाँव-गाँव घूम-घूमकर कांग्रेस का संगठन करते, उनका संदेश पहुँचाते ।

बलचनमा उपन्यास के फूलबाबू कांग्रेस पार्टी के स्वयंसेवक हैं । -- "गाँव घर जाने का तो नहीं, मगर दरभंगा जाकर कांग्रेस का काम करने का विचार करने लगे ।"[2] उनका कहना था कि वे -- "दरभंगा, समस्तीपुर, मधुबनी, मुजफ्फरपुर, पटना, जहाँ भी कांग्रेस भेज देगी, वहीं रहकर काम करूँगा । ..... मुझे नौकरी नहीं चाहिए ।"[3]

6.1.8 आतंकवादी आन्दोलन :

किन्तु उस समय कुछ उग्र एवं आतंकवादी क्रांतिकारी लोग भी स्वाधीनता प्राप्ति के लिए देश में अशांति फैलाकर अंग्रेजों को भगाने का प्रयास कर रहे थे । उनके अशांतमय कार्यों को देखकर ब्रिटिश सरकार -- "सौ सत्याग्रहियों से उतना नहीं घबराती थी,

- -

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 81
2 तथा
3. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 66

मिलना "बम पार्टी"[1] के एक अदना आदमी से ।"[2] ब्रिटिश सरकार इन आन्दोलनकारियों को कमजोर करने के लिए या आंदोलनों को समाप्त करने के लिए दमन नीति को अपनाने लगी थी । इतिहास प्रसिद्ध "जलियाँवाला हत्याकांड" इसका प्रत्यक्ष-प्रमाण है । आन्दोलन को उग्रवादी दिशा की ओर बढ़ता देखकर गांधीजी को सत्याग्रह आन्दोलन स्थगित करना पड़ा । 16 मार्च को गांधी जी गिरफ्तार कर लिये गये और उन्हें छः साल कारावास का दंड दिया गया । सत्याग्रह एकदम रोक दिये जाने से सभी नेताओं को क्षोभ हुआ था । जवाहरलाल, सुभाष, प० मोतिलाल तथा श्री चितरंजनदास सभी जेल में है और क्षुब्ध थे । उपन्यासकार नागार्जुन की दृष्टि से -- "जन-संग्राम के प्रति महात्माजी का यह खिलवाड़ देश के लिए बहुत बड़ी दुर्घटना थी ।"[3] इसका कारण यह है कि इस विराट आंदोलन का संचालन करनेवाले अकेले गांधी थे । जिसके परिणाम स्वरूप जब -- "कोई भी समूचा आंदोलन जब एक व्यक्ति के मातहत होता है तो इसी तरह के नतीजे बाहर आते हैं ।"[4]

नागार्जुन इस बात में विश्वास रखते हैं कि जन-आंदोलन जनता के ही नेतृत्व द्वारा संचालित होना चाहिए । एकाधिकार चाहे सत्ता का हो चाहे नेतृत्व का हर जगह वह घातक परिणाम लाता है । मार्क्सवादी विचारधारा जन नेतृत्व का ही समर्थक है,

- -

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 93
2. बमपार्टी का अर्थ उपन्यासकार की दृष्टि में क्रांतिकारी युवक ही है । उपन्यासकार से प्रत्यक्ष साक्षात्कार -§14-2-82§
3. तथा 4. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ.85

व्यक्तिगत नेतृत्व का नहीं । उपन्यासकार इसी विचारों से सहमत है ।

6.1.9 विभिन्न पार्टियों की स्थापना :

गांधी जी के असहयोग आन्दोलन की विफलता और स्वयं उनके जेल में रहने से देश में विभिन्न विचारों की पर्टियों ने, स्वराज्य दल, कांग्रेस परिवर्तनवादी वर्ग, हिन्दू महासभा, कम्युनिस्ट पार्टी ने जन्म लिया ।

[अ] स्वराज्य दल

देश बंधु चितरंजनदास के नेतृत्व में "स्वराज्य दल" को प्रभावशाली बनने का अवसर मिला ।

[आ] कांग्रेस परिवर्तनवादी वर्ग

कांग्रेस का परिवर्तनवादी वर्ग चरखा-करघा तक ही सीमित न रहकर क्रांति का झंडा लेकर अग्रसर हुआ । जिस समय राजनीतिक जीवन में जड़ता की स्थिति आई, उस समय देश में दो अन्य संस्थाएं उभरकर आयी, हिन्दू महासभा तथा भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ।

[इ] हिन्दू महासभा

हिन्दू हितों के संरक्षण के उद्देश्य से इस संस्था कि की स्थापना की गयी थी ।

(ई) भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी :

रूसी क्रांति के प्रचार के फलस्वरूप बनी ।

इन विभिन्न पार्टियों का प्रचार तथा प्रसार बड़े बड़े शहरों के साथ-साथ गांवों में भी फैलाता गया । बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में इस युग चेतना की झलक दिखाई देती है । रूपउली गांव के वीरभद्र को भारतीय जनता की मुक्ति का एक मात्र वही मार्ग उचित लगता है जो "रूस के किसानों, मजदूरों और सैनिकों ने अपनाया था ।"[1]

असहयोग आन्दोलन तथा सत्याग्रह को वापस लेने पर अथवा उसके टूटने पर जनता में कांग्रेस के प्रति श्रद्धा कम हुई जिसकी प्रतिक्रिया रूपउली गांव के दयानाथ के विचारों में दिखाई देती है। दयानाथ को -- "गांधी जी की अहिंसा में आस्था नहीं थी और अब तो बेचारी अहिंसा को खुद ही कांग्रेसवालों ने विनोबा के अनाथालय में भेज दिया..... ।"[2] इससे स्पष्ट है कि दयानाथ सशस्त्र क्रान्ति में विश्वास रखता था । झण्डा सत्याग्रह में शामिल होने के लिए कांग्रेस की अपील सुनकर ......" दयानाथ ने किसी को कुछ बतलाया नहीं ...... स्वयं सेवकों के जत्थे में नागपुर पहुंचा ।"[3] प्रान्तीय कांग्रेस-कमिटियों को आज्ञा हुई कि उस दिन जुलूस निकालकर जनता द्वारा झंडे फहराये । नागपुर के इस आन्दोलन में भाग लेने के

---

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 91
2. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 122
3. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 80

लिए देश के कोने-कोने से सत्याग्रही आकर गिरफ्तार होने लगे। रमहली गाँव का दयानाथ -- "बाईस रोज नागपुर जेल में रहा। छूटा तो सीधे रमउली आया।"[1] नागपुर झंडा का सत्याग्रह का संचालन श्री विठ्ठलभाई पटेल ने किया। जिसने शीघ्र ही अखिल भारतीय आन्दोलन का रूप धारण कर लिया। 1923-24 से ही देश में भीषण साम्प्रदायिक दंगों का प्रारम्भ हुआ। 1924 में गाँधीजी छोड़ दिये गये। उन्होंने साम्प्रदायिक एकता के लिए 21 दिन का अनशन किया। आंशिक रूप से उन्हें अस्थायी सफलता मिली। 1924-26 में दंगे और बढ़े। शासन विधान की जाँच करने के लिए "साइमन कमीशन" नियुक्त किया गया।

6.1.10 साइमन कमीशन

कांग्रेस तथा अन्य सभी पार्टियाँ भी साइमन कमिशन की नियुक्ति से नाराज हुई। 3 फरवरी 1928 को कमीशन बंबई उतरने पर काले झंडों से उसका स्वागत करने तथा देश में हड़ताल मनाने का निश्चय किया गया। साइमन कमीशन के प्रति अपनाए जानेवाले रवैये के सम्बन्ध में देश के निर्णय का बिहार में पूरे साहस, निष्ठा तथा भक्ति के साथ पालन हुआ।

ग. सर्व दलीय सम्मेलन : युवा संगठन

पटना में सरअली इमाम की अध्यक्षता में एक सम्मेलन हुआ। इसमें सभी पार्टियों के लोगों ने भाग लिया और यह निर्णय किया गया

---

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 80

गया कि कमीशन के बिहार आने पर उसका पूर्ण बहिष्कार किया जाय। इन्हीं की प्रेरणा से युवा संगठनों का निर्माण भी हुआ ।

6·1·11 नेहरु रिपोर्ट :

1928 के सर्वदलीय सम्मेलन में देश के लिए विधान बनाने के हेतु मोतीलाल नेहरु की अध्यक्षता में एक कमेटी नियुक्त की । जिसने औपनिवेशिक स्वराज्य के आधार पर एक विधान बनाया । दिसम्बर, 1928 की कलकत्ता कांग्रेस ने सरकार को चेतावनी दी कि -- "उसने एक वर्ष तक नेहरु रिपोर्ट को स्वीकार न किया तो कांग्रेस पूर्ण स्वराज्य के लिए असहयोग कर देगी ।"[1] 1929 की लाहौर कांग्रेस में अपना उद्देश्य "पूर्ण स्वराज्य" की प्राप्ति घोषित कर दिया । तथा प्रथम गोलमेज कान्फ्रेंस का बहिष्कार किया । किन्तु भिन्न-भिन्न स्वार्थों के स्वयंभू नेता सम्मेलन में उपस्थित हुए । जिसमें ब्रिटिश भारत और देशी रियासतों को मिलाकर भारतीय संघ बनाने का निर्णय किया गया । सरकार का दमनचक्र एक वर्ष पूर्व से ही देश में चल रहा था । देशभर में मजदूर नेता, तथा अन्य नेताओं की धर पकड़ चल रही थी ।

6·1·12 नमक सत्याग्रह :

6 अप्रैल 1930 को गांधीजी ने नमक कानून तोड़कर सत्याग्रह आरम्भ किया । नमक सत्याग्रह की शुरुआत वे अपने

1· पट्टभीसितारमैया : कांग्रेस का इतिहास : भाग-1 पृ·265-66

शिष्यों के एक दल के साथ शुरु करनेवाले थे, जिन्होंने आश्रम का अनुशासन स्वीकार कर लिया है। 78 चुन हुए शिष्यों के साथ समुद्र के किनार डांडी यात्रा शुरु की। 6 अप्रैल को जब गांधीजी ने समुद्र तट पर समारोह पूर्वक नमक बनाया तो देशभर में जन-आन्दोलन की लहर उठी। नागार्जुन के विचारों में इस तरह -- -- "राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम की धारा लोक चेतना के समतल मैदान में उतर आयी।"[1] और "आजादी के लिए जो समझदारी पहले थोड़े से पढ़े लिखे लोगों तक सीमित थी, उसे गांधीजी आम पब्लिक तक ले आये।"[2] देश भर में -- "उसर जमीन की मिट्टी घोलकर नमक बनाते-बनाते हमारे सत्याग्रही पुलिस की लाठियाँ खाते थे, विदेशी माल की खरीद-फरोख्त के खिलाफ दूकानों के समक्ष धरना देते थे।"[3] केवल पुरुष ही नहीं स्त्रियों ने भी राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश किया। हीरक जयन्ती की मुंझुमुखी देवी -- "गांधी जी की अपील पर 1930-32 में पर्दे से बाहर आई। शराब की दुकान पर धरना दिया था, पुलिसवाले पकड़ ले गए थे।"[4] देश प्रेम की भावना पुरुष, स्त्री तथा बच्चों के बीच में भी प्रवेश कर चुकी थी। वरुण के बेटे उपन्यास में -- "प्राइमरी स्कूल में पढ़नेवाला पड़ौस का एक लड़का ...... पिसी हल्दी में उंगली डुबोकर, अन्दर के द्वार की चौखट के माथे पर "जय हिंद" लिख गया।"[5] इस प्रकार गांधी जी की पुकार पर आजादी का नारा देश के

- -

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 83
2. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 85
3. नागार्जुन : कुंभीपाक : पृ. 76
4. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ. 21
5. नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ. 43

विभिन्न भागों में पहुंच चुका था । नमक-कानून तोड़ने का यत्न दरभंगा जिले में कहीं-कहीं आये दिन होता ही रहता था । रूपउली गाँव का दयानाथ -- "सावन की पूर्णिमा के दिन यही मेरी छाँह में नमक बनाना शुरू किया ।"[1] यह घटना थी रूपउली की, विधानानुसार दयानाथ ने -- "गड्ढा खोदकर तीन चूल्हे बना लिये गये थे । उनमें आँच जलायी गयी । तीन नयी हंडियों में नोनी मिट्टी और पानी घोलकर उन्हें चुल्हों पर चढ़ा दिया ।"[2] जानू राउत -- "आँच ठीक रखने की ड्यूटी पर था ।"[3] दयानाथ ने कहा -- यह नमक नहीं है, महात्माजी की प्रसादी है .... लीजिए दो आने में एक दोना मिलेगा ..... यह खाने का नमक नहीं, तावीज में डालने का नमक है ।"[4] सत्याग्रही एक ओर पूरे जोश के साथ नमक कानून तोड़ रहे थे, तो दूसरी ओर सरकारी पुलिस विभिन्न थानों के नेताओं को गिरफ्तार करने में लगी थी । जिन्हें विभिन्न अवधियों की कैद एवं अन्य सजाएं मिलीं । बाबा बटेसरनाथ कहते हैं -- "नमक-कानून तोड़ने के दिनों में बस्ती रूपउली के तीन आदमी गिरफ्तार हुए थे ..... जानु राउत, दयानाथ राय और वीरभद्र झा ...जानू राउत दो महीने जेल भी रह आया था ।"[5] नई पौध के उपन्यास के नील कंठ बाबू को -- "साल भर की सजा हुई थी ।"[6] नागार्जुन कहते हैं कि देश में असहयोग का वह जमाना अद्भुत था, -- "देश का हर हिस्सा नयी चेतना से स्पन्दित होकर

- -

1, 2, तथा
3. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 87
4. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 88
5. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 72
6. नागार्जुन : नई पौध : पृ. 66

अंगड़ाइयाँ ले रहा था ।"[1] घरवाले सत्याग्रह या पिकेटिंग के लिए जाते हुए अपने आदमी को -- "माला पहनाकर और टीका लगाकर विदा करते ।"[2] लोगों का कहना था कि -- "यह कोई चोरी छिनारी की गिरफ्तारी तो थी नहीं, स्वाधीनता संग्राम की गौरव मय परम्परा का एक सामान्य प्रदर्शन था ।"[3] इस तरह सत्याग्रह और पिकेटिंग त्योहार बन गये थे, -- "पुलिस एक को गिरफ्तार करती तो उस एक ही जगह दस आदमी आ डटते, दस गिरफ्तार कर लिये जाते तो उन दस की जगहों पर सौ जवान खड़े हो लेते ।"[4] यह उत्साह सर्व-व्यापी था, देश का प्रत्येक कोना कोना राष्ट्रीय गीत तथा नारों की आवाज से गुंजित होता था -- "विजयी विश्व तिरंगा प्यारा ।
झंडा ऊँचा रहे हमारा ।।

गीत की एक कड़ी दयानाथ गाता बाकी लड़के उस पद को जोर से दुहराते ।"[5] जिसे गाँववाले बड़े दिलचस्पी से देख सुन रहे थे । गीतों के अतिरिक्त नारों की बौछार सर्वत्र प्रचारित थी --

"अंग्रेजी राज .... नाश हो"[6]

"इन्कलाब ..... जिन्दाबाद ।" "जिन्दाबाद ....जिन्दाबाद"[7]

.....(महात्मा गाँधी की जय । भारतमाता की : जय ।"[8]

---

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 84
2 तथा 3 नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 97
4. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 91
5. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 88
6. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 89
7. नागार्जुन : बलचनमा का बाबा : पृ. 146
8. नागार्जुन : उर्मनिया का बाबा : पृ. 101

इस तरह से राजनीतिक धूप-दौड़ सर्वत्र प्रचलित थी । वास्तव में "नमक आन्दोलन" तथा असहयोग आन्दोलन ने "ब्रिटिश राज्य" की नींव को भारत से उखाड़ फेंकने का महत्वपूर्ण कार्य किया, तथा गोरों को अपनी जगह वापस चले जाने का भी । इस तरह यह आन्दोलन सर्वव्यापी हुआ । जिसमें अमीर से अमरी, गरीब से गरीब जनता स्वतंत्र संग्राम की आग में अपनी आहुती दे रहे थे । उपन्यासकार ने जिन विचारों को बाबा बटेसरनाथ के माध्यम से व्यक्त किया था उन विचारों में अभिजात वर्ग के प्रति सहिष्णुता तथा साधारण जनता के प्रति जिस विद्रोहात्मक भावना को जागृत किया है वह श्लाघनीय है । बलचनमा उपन्यास के फूलबाबू जमींदार के बेटा हैं उन्होंने पढ़ाई लिखाई छोड़कर महात्मा गांधी के सत्याग्रह आन्दोलन में सक्रिय सहयोग दिया । उनके इस कार्य को देखकर मोहन बाबू की माँ सोचने पर मजबूर हो जाती है कि -- फूल बाबू को भी यह क्या सनक सवार हुई थी ।"[1] इस प्रकार देशव्यापी आन्दोलन सभी ओर चल रहा था ।

5 मई 1930 को गांधी जी गिरफ्तार कर लिये गए । उनकी गिरफ्तारी पर -- "सारे देश में व्यापक हड़ताल, प्रदर्शन और कुछ हिंसात्मक कार्य भी हुए ।"[2]

देश व्यापी आन्दोलन से सरकार की नींव हिल गयी । नागपुर का झंडा सत्याग्रह प्रथम गोल मेज कान्फ्रेंस, असहयोग आन्दोलन,

- -

1. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 61

2. R.P. Dutt: India Today, P. 302-3

नमक सत्याग्रह आदि घटनाओं ने ब्रिटिश सरकार को खोखला बना दिया । ब्रिटिश सरकार मजबूर होकर कांग्रेस से हाथ मिलाना चाहा और द्वितीय गोलमेज कॉन्फ्रेन्स के लिए गांधीजी कोआमंत्रित करना अनिवार्य था । 4 मार्च 1931 को गांधी इरविन समझौता हुआ और सत्याग्रह स्थगित कर दिया गया ।

6.1.13 द्वितीय गोल मेज कान्फ्रेन्स

1931 में अंग्रेजी ने गोलमेज कान्फ्रेन्स का नाटक रचा । इन देश के पचासों प्रतिनिधि उसमें शामिल हुए -- गांधीजी, जिन्ना, अम्बेडकर और दूसरे बड़े-बड़े आदमी, सेठों के नुमाइंदे, रियासतों के नुमाइन्दे, जमींदारों के एजेंट, दीगर जमातों और जातियों के मुखिया[1] उपन्यासकार की दृष्टि से ..... "वह कान्फ्रेन्स क्या थी, पूरी शिवजी की बरात थी । जितने मुंह उतने बात । .... समझौते का फल यही हुआ कि कुछ नहीं हुआ । गांधी जी सद्भावनाओं के गुब्बारे लटकाये हुए विलायत से वापस आये खाली हाथ ।[2]

गोल मेज परिषद का आयोजन इस उद्देश्य से किया गया था कि -- "स्वराज्य की मांग को बातचीत और कानूनी दांव-पेंच की भूल भुलैया में भटकाकर गुमराह किया जा सके ।[3]

1. तथा 2. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 94

3. ब्रजभूषण सिंह "आदर्श" : हिंदी के राजनीतिक उपन्यासों का अनुशीलन" पृ. 58

6.1.14 गैर कानूनी पार्टी : कॉंग्रेस

गांधी इर्विन समझौते से लाभ उठाकर नौकरशाही ने विभिन्न प्रान्तों में संकटकालीन आर्डिनेन्स जारी कर दिये । जिसके फलस्वरूप देश का वातावरण अधिक तनावपूर्ण हो गया । गांधीजी स्वदेश लौटने पर उन्हें अन्य प्रमुख नेताओं के साथ गिरफ्तार कर कॉंग्रेस को "गैर कानूनी" घोषित कर दिया गया । सन् 1933 में आत्मशुद्धि के लिए गांधी जी ने इक्कीस दिन के उपवास की घोषणा की और जिस पर सरकार ने उन्हें जेल से रिहा कर दिया । उनकी रिहाई से देश में उत्तेजना न फैले इस ध्येय से गांधीजी ने डेढ़ माह के लिए सविनय अवज्ञा आन्दोलन को स्थगित कर दिया । गांधी जी के इस निर्णय से देश में कटु आलोचना हुई । देश के मजदूर और युवक वर्ग में असन्तोष की ज्वाला भड़क उठी । विट्ठल भाई पटेल और सुभाष चन्द्र बोस जैसे वरिष्ठ नेताओं ने अपने भाषण में कहा ------ "हमारा स्पष्ट मत है कि राजनीतिक नेता के रूप में गांधी जी असफल हो चुके हैं । समय आ गया है कि कॉंग्रेस का नवीन सिद्धान्त के आधार पर नए तरीकों से पुनर्गठन किया जाए, जिसके लिए नया नेतृत्व आवश्यक है ।"[1] केवल नेता ही नहीं, वीरभद्र जैसे ग्रामीण युवक भी बोखला उठे -- "वह खुले आम सत्य व अहिंसा का उपहास करता था और महात्मा को महाधूर्त एवं पूंजीपतियों का दलाल बतलाता था ।"[2] जिससे ग्रामीण जनता में भी गांधीजी के श्रद्धा व भक्ति पूर्ववत नहीं रही ।

---

1. रजनी पामदत्त : इण्डिया टुडे : पृ. 353
2. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 91

6.1.15 कांग्रेस - सोशलिस्ट पार्टी :

सन् 1934 में "युवा वामपंथी राष्ट्रवादी" तत्वों का एक ग्रुप, जो आंशिक रूप में मार्क्सवादी विचारधारा के प्रभाव में आ चुका था, -- "कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन किया। जिसके अध्यक्ष नेहरु चुने गये। अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने कहा -- "भारत की समस्याओं का समाधान समाजवाद में है ..... मैं चाहता हूँ कि कांग्रेस एक सोशलिस्ट संगठन बनकर दुनिया की उन शक्तियों का हाथ बटाये, जो नई सभ्यता का निर्माण करने में लगी है।"[1] इस पार्टी के सदस्य वे ही हो सकते थे जो कांग्रेस के सदस्य हैं।

गांधी जी के नेतृत्व में अहिंसात्मक आन्दोलन से "युवा पीढ़ी" चिढ़ चुकी थी। उपन्यासकार की दृष्टि से नायक वही सफल है, जो किसी भी तत्व में जीत जाय। जनता हारे हुये नायक की पूजा नहीं करती। गांधी जी की हार हुई इस नये युग की पीढ़ी से।

नागार्जुन के बलचनमा उपन्यास में इसका प्रभाव का बिम्ब स्पष्ट रूप से उभरकर आया है। रूपनाथ को मालूम हुआ कि -- "कांग्रेस के अंदर ही इन लोगों का एक अलग दल बन गया है। इस दल में बूढे लीडर नहीं है, सभी जवान हैं।"[2] उपन्यासकार सोशलिस्ट

---

1. नागार्जुन : ब्रजभूषण सिंह "आदर्श" : हिंदी के राजनीतिक उपन्यासों का अनुशीलन : पृ. 59
2. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 166

विचारधारा का प्रतिपादन इसी उपन्यास में करते हुए कहते हैं की सोशलिस्ट पार्टी ------ "कल कारखाने खड़ा कर देशको औद्योगिक उन्नतिशील बनाना चाहती है। सेठों - जमींदारों - राजाओं महाराजाओं से जमीन-जायदाद और धन-संपदा छीनकर उसे लोगों में बाँटकर वर्गहीन समाज की स्थापना करना चाहती है। समूची जनता संगठित होकर जब अंग्रेजों के विरुद्ध खड़ी होगी -- "तभी अंग्रेज भागेगा।"[1] कांग्रेसी राधाबाबू, पार्टी के नय विचार धारा से प्रेरित होकर -- "सोसलिस्ट हो गये।"[2]

इस प्रकार से नये पार्टियों का उद्भव तथा विकास हो रहा था। विचार धारा में परिवर्तन का एक नवीन रूप ही पार्टी का संगठन है। कांग्रेस, कांग्रेस के अहिंसात्मक आन्दोलन के प्रति जनता की श्रद्धा तब प्रदर्शित हुई जब वह गोलमेज कांफ्रेन्स में पराजित होकर वापस लौट आयी। नये विचारक नेहरू ने समाजवाद का निर्माण किया, उग्र कार्यकर्ताओं ने उनसे भी असहमति प्रकट की। संघर्ष में जिस नयी पार्टी है। (जो उसके उपरान्त भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी है।) कालान्तर में इसकी शृंखला रूस से मिल गयी।

उपन्यासकार ने इन्हीं विचारधाराओं को तत्कालीन परिस्थितियों से प्रभावित माना है। यह उपन्यासकार के लिए परिवर्तन की चरम सीमा नहीं, साधारण घटना है। उपन्यासकार के बलचनमा तथा बाबा बटेसरनाथ इसके उदाहरण है।

- -

1 तथा 2. नागार्जुन :
बलचनमा : पृ. 166

6·2 द्वितीय कालखण्ड [1935-1947] :

नागार्जुन के उपन्यासों में राजनीतिक चेतना का द्वितीय कालखण्ड ई· 1935 से आरम्भ होता है ।

6·2·1 चुनावों के लिए कांग्रेस तथा विभिन्न पार्टियों की तैयारी

देशभर में 1935-36 के ऐक्ट के अनुसार कौंसिलों के नये चुनाव होने वाले थे । कांग्रेस ने उसमें हिस्सा लेने का पुन: निश्चय किया ।

6·2·1·1 बिहार में चुनाव :

[अ] कांग्रेस तथा अन्य पार्टियां -- "पिछड़ा वर्ग संघ, इण्डीपेण्डेण्ट पार्टी, युनाइटेड पार्टी, अहरार पार्टी, इंडिपेंडेंट मोडरेट प्रोग्रेसिव, कस्टीट्यूशनल, किसान संघ"[1] चुनावों के लिए अत्यधिक सक्रिय हो गयी ।

[आ] पिछड़ा वर्ग संघ :

"पिछड़ा वर्ग संघ" नामक संगठन चुनावों में यह कांग्रेस का साथ था । मुस्लिम उम्मीदवार मतदाता कांग्रेसी उम्मीदवारों को छोड़कर - इण्डीपेण्डेण्ट पार्टी, युनाइटेड पार्टी और अहरार पार्टी में विभक्त हो गये ।

1· डॉ० कालि किंकरदत्त - बिहार में स्वातंत्र्य आन्दोलन का का इतिहास : भाग-2 पृ· 268

(घ) स्वतंत्र उम्मीदवार

आम और विशेष स्थानों के लिए गैर कांग्रेसी प्रत्याशी विभिन्न दलों तथा ..... स्वतंत्र प्रत्याशी के रूप में खड़े थे या विभिन्न पार्टियों का बिल्ला लगाकर -- इंडिपेंडेंट, मोडरेट, प्रोग्रेसिव, कंस्टीट्यूशनल आदि ।

(ङ) त्रिवेणी संघ :

ग्वाला, कुर्मी और कोइरी मतदाताओं के समर्थन पर यह पार्टी बनी ।

कांग्रेस पार्टी का प्रचार करने के लिए अन्य स्थानीय नेता चुनाव अभियान में व्यस्त रहते थे । वे विभिन्न स्थानों पर जाते, सभाएँ करते लोगों को कांग्रेस का संदेश देते तथा चुनाव-- "घोषणा पत्र"[1] का अर्थ समझाते ।

---

1. देश की आर्थिक दुर्दशा का उल्लेख करते हुए किसान तथा मजदूरों को शोषण से बचाना । 2. विधान सभाओं में जाकर ब्रिटिश साम्राज्यवाद व उसके कानूनों के खिलाफ संघर्ष करना. 3. सरकार और कृषकों के मध्यवर्ती लोगों को हटाना 4. खादी का प्रचार 5. ग्रामोद्योग को प्रोत्साहन देना आदि... ..... सत्यकेतु विद्यालंकार : भारत के राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास : पृ. 160

6.2.2 कांग्रेस का रचनात्मक कार्यक्रम :

कांग्रेस कार्य-कर्ता चुनावों के अतिरिक्त, विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रमों में व्यस्त थे । अनेक प्रान्तीय कार्यकर्ता "अखिल भारतीय ग्रामोद्योग" संघ तथा "अखिल भारतीय चर्खा संघ" में सम्मिलित होकर उनके विभिन्न केन्द्रों में काम करते थे ।

(अ) आश्रम-व्यवस्था :

कांग्रेस अपने संदेश को -- "सुदूर गांवों में फैलाने हेतु "आश्रम" खोलने की उपयोगिता पर बल दिया ।"[1] इन्हीं दिनों कुछ नये "कांग्रेस आश्रम" भी खोले गए और पुराने आश्रम को पुनरज्जीवित किया गया । कांग्रेस द्वारा संचालित आश्रम की महत्ता को नागार्जुन ने बलचनमा उपन्यास में प्रतिपादित किया है । यह आश्रम ------ "दस बीघा जमीन के हाते में फैला हुआ था । साकीन बरहमपुरा, थाना लेहरिया सराय, जिला दरभंगा।"[2] यह अन्य आश्रमों की तरह --- "गांव के बाहर ही था ।"[3] उपन्यासकार की दृष्टि में आश्रम - क्या था देहाती कुटिया थी । जिसकी बनावट का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि --- "यह कुटिया एक बहुत बड़े और लम्बे फूसदार का छोटा सा कमरा था ! बांस और झांखनों की पतली दीवारें एक कमरे को दूसरे कमरे से अलग किये हुए थीं ।

---

1. "द इण्डियन नेशनल : 15 नवंबर, 1935 'बिहार स्वातंत्र्य आन्दोलन का इतिहास - खंड-2 से उद्धृत पृ. 251
2. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 101
3. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 88

खंभे सीसम के थे। ..... ऊपर छप्पर घने चौकोर फूलों से छपाये गये थे। ..... आंगन की दीवार में चौकोर खिड़कियाँ बनाई हुई थीं। बरंडे को बांस की जालियों से बनी बढ़िया जाफरी से बीच-बीच में घेर दिया गया था।"[1] यह रहा आश्रम का अगला हिस्सा और

(आ) रसोई घर :

आश्रम का रसोई घर -- "दूसरे छोर पर पिछवारे की ओर था। दो कमरोंवाला छोटा सा घर। ..... पीछे की ओर धुआं निकालने के लिये जाफरीदार झरोखा था।"[2] आधुनिक घरों की तरह -- "रसोईवाली मड़इया में धुआं निकालने की खिड़की लगवाई। घड़े रखने के लिए लम्बोतरी चबूतरा बनवाया। पाखाना और नहाने की जगह, बर्तन-बासन मांजने की जगह, ईंधन और लकड़ी के लिए मचान।[3] इस प्रकार के आश्रमों का निर्माण उपन्यासकार के समय में हो रहा था इसकी सूचना वरुणके बेटे/बलचनमा उपन्यास के आधार पर प्राप्त होती है।

आश्रम निवासी, फूलबाबू के सामान का उल्लेख करते हुए नागार्जुन कहते हैं कि कमरे में आवश्यक सामान के अतिरिक्त -- "शीशा में मढ़े हुए तीन फोटो तीनों ओर झूल रहे थे।"[4] बलचनमा को उनका परिचय देते हुए कहते हैं -- "महात्मा गांधी हैं।"[5]

- -

1. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 91
2. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 94 3. नागार्जुन : बलचनमा :पृ.133
4 तथा 5. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 91
6. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 94

राजनीतिक दशा में जिस आश्रम का, उनमें विद्यमान वस्तुओं का निर्माण हो रहा था, वह निर्माण अतिरिक्त राजनीतिक चेतना के साथ-साथ सामाजिक चेतना भी है। उपन्यासकार ने इस राजनैतिक व्यवस्था को सामाजिक चेतना में बदलने का जो प्रयत्न किया है, निश्चय ही अद्वितीय है -- "खाने के लिए एक छप्परवाली लंबी एक चारी थी। ताड़ के पत्तों की छोटी-छोटी आसनियाँ वहाँ बिछी हुई थी।"[1] अतिरिक्त इसके कुछ नहीं था।

(ख) कांग्रेसी कार्यकर्ता :

आश्रम में सभी प्रकार के कांग्रेसी कार्यकर्ता थे। जिनके क्रिया कलापों की विवेचना नागार्जुन ने बलचनमा उपन्यास में किया है। आश्रम में -- "सभी राधाबाबू की तरह संत महात्मा थे नहीं। उनकी अपनी-अपनी आदत थी, अपना-अपना स्वभाव था, अपनी अपनी शान थी।"[2] उनमें सैकड़ों में नब्बे ऐसे ही मिले हैं -- "जिनको जी सरकार कहलाने में बड़ा निम्मन (अच्छा) बुझाता है। न कहो तो गुर्रा-गुर्रा कर ताकते रहेंगे।"[3] केवल यही नहीं -- "बिना छौंकी (बघारी) दाल की तरह बिना जी हुजूरी की बात उनको पसंद नहीं पड़ती।"[4] अपनी बात मनवाने के लिए सत्याग्रह का एक ढकोसला भी खड़ा करेंगे -- "न पानी पीयेंगे न खायेंगे।[5] बड़े मुश्किल से वे मोहजे पर आकर सत्याग्रह

- -

1. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 94
2 तथा 3 नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 121
4 तथा 5 नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 121

तोड़ने का नाटक करते हैं । श्रीमती बाबू का सत्याग्रह इसी तरह का नाटक है । वे सुबह शाम प्रार्थना के बाद पन्द्रह मिनट चरखा चलाते थे, संयोग वश बलचनमा उनका चरखा लाना भूल जाता है -- "बाबू मुंह फुलाकर बैठ गए न पानी पीयेंगे न खायेंगे ।"[1] बड़ी मुश्किल से बाबू को मनाया गया और -- "संतरा, बेदाना खाने को राजी हुए ।"[2] यह व्यवस्था भी स्वतंत्रता पूर्व आश्रमों की । आश्रमवासियों का रहन-सहन, खान-पान, आचार-विचार सभी भिन्न थे । इसी भिन्नत्व का अनुकरण आश्रमों में हो रहा था । भिन्नत्व में अभिन्नत्व का दर्शन गांधी जी का दर्शन है । अद्वैतवाद भी इसी श्रेणी से मानसिक उपचार करने में समर्थ है । नागार्जुन ने बलचनमा में इसका समर्थन किया ।

(ई) आश्रम में स्त्री व्यवस्था :

राजनीतिक में स्त्री तथा पुरुष को समान अधिकार दिया है, जिस तरह पुरुष आश्रम में रह सकता है उसी तरह स्त्रियों को भी वहां रहने की अनुमति गांधी जी द्वारा प्रदत्त थी । नागार्जुन ने बलचनमा उपन्यास में इसका उल्लेख किया है । कामेन्द्रबाबू के ससुर -- "नेता थे लड़की को गांधी जी के आश्रम में रखकर पढ़ा लिखा रहे थे । आगे चलकर उन्हें लीडरानी बनाना था ।"[3]

उपन्यासकार ने सामान्य तत्वों के अन्तर्गत आश्रम का निर्माण, आश्रमवासी, आश्रमवासिनियां, खान-पान, आचार-व्यवहार, धर्म-संघर्ष, मानसिक संतुलन-असंतुलन आदि विभिन्न दृष्टिकोण बलचनमा उपन्यास में दृष्टिगोचर होता है ।

- -

1. तथा 2. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 120
3. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 131

6.

6.2.3 किसान आन्दोलन

भारतीय किसानों के दयनीय अवस्था के अन्य कारणों में -- विदेशी शासन, जमींदारी प्रथा तथा विश्वव्यापक मंदी मुख्य है ।

(अ) विदेशीशासन व्यवस्था तथा जमींदारी प्रथा

देश में विदेशी शासन एक अभिशाप था, इसके अतिरिक्त जमींदारी व्यवस्था किसानों की घोर दुरवस्था का भी मूल कारण थे । किसान मूक पशुओं की तरह खेतों में कड़ी मेहनत कर अन्न उपजाते है, जिसका लाभ जमीन्दार उठाते थे । अधिकतर जमींदार ऐशो-आराम की जिन्दगी बिताते है । जिसका उल्लेख नागार्जुन ने बलचनमा उपन्यास में किया है ।

(आ) विश्वव्यापक मंदी

सन् 1929-30 की विश्व व्यापक मंदी के फलस्वरूप वस्तुओं के मूल्य में गिरावट शुरु हुई । जिसका गहरा प्रभाव किसानों

के जीवन पर पड़ना स्वाभाविक ही था । कृषक की क्रय शक्ति में भारी कमी हुई ।[1] भारत जैसे कृषि प्रधान देश पर इसका घातक प्रभाव पड़ना अनिवार्य था, किन्तु पहले वाली दर से मालगुजारी एवं अन्य कर चुकाने पड़ते थे । सम्भवत: उसकी ऋणग्रस्तता में हानि हुई । किसानों की समस्या को लेकर 1929 ई॰ के बाद उत्तर प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक तथा अन्य स्थानों पर किसान आन्दोलन खड़े हुए । यह आन्दोलन बकाश्त जमीन पर कब्जा करने के कार्य पर केन्द्रीभूत हो रहा था । बिहार में जमीन्दारों के अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाने के अतिरिक्त -- "नहर शुल्क की कमी करने, माल गुजारी भुगतान की पक्की रसीद देने और मालगुजारी वसूली बन्द करने या कमी करने की मांग की गई ।"[2]

- -

1· बर्मा, बंगाल, बिहार, उड़ीसा, युक्त प्रान्त, पंजाब बम्बई, मध्य प्रदेश, बेरार तथा मद्रास -- इन प्रान्तों में 1933 - 34 में 1928-29 की अपेक्षा कृषि उत्पादनों के मूल्य में 53% की गिरावट हुई थी । इसी अवधि में इन प्रान्तों की मुख्य फसलों के कुल उत्पादन का मूल्य 1021 करोड़ से घटकर 474 करोड़ हो गया था ।

प्रान्तीय बैंकिंग इनक्वायरी कमिटी के अनुसार 1929 तथा 1930 में बर्मा सहित भारत की कृषि ऋणग्रस्तता 850 करोड़ रुपया थी ।

--डॉ०कलिकिंकर दत्त : बिहार में स्वातंत्र्य आंदोलन का इतिहास - खंड-दो पृ॰ 224

2·· डॉ० कालिकिंकर दत्त : बिहार में स्वातंत्र्य आंदोलन का इतिहास - खंड-2 पृ॰ 226

(ड) किसान सभा

किसानों की दशा सुधारने उनके कष्टों को दूर करने तथा जनता को भुखमरी से बचाने के हेतु मुहम्मद ज्वेर की अध्यक्षता में किसान सभा की स्थापना मुंगेर जिले में की गई। नवम्बर 1929 में स्वामी सहजानन्द की अध्यक्षता में "प्रान्तीय किसान सभा" की स्थापना हुई। स्वामी सहजानन्द ने कई स्थानों पर किसान सभाएं स्थापित कर, किसान सभा का स्वतंत्र संगठन बनाने पर जोर दिया। उन्होंने -- "लाल झंडा" के अनुकूल, किसान सभा का समर्थन किया और बताया कि भारतीय किसानों के लिए दुनिया भर के किसानों एवं मजदूरों के साथ एक गुट होना उनके हित में होगा।"[1] धीरे-धीरे किसान सभाएं गया, पटना, शाहबाद, मधुबनी और कुछ अन्य जिलों में होने लगी।

नागार्जुन ने युगीन राजनैतिक गतिविधियों का चित्रण वरुण के बेटे, बाबा बटेसरनाथ, रतिनाथ की चाची में किया है। जाति-भेद के स्थान पर, मनुष्य मात्र की संगठित सत्ता को स्वीकार करने की ओर ग्रामीण जनता को अग्रसर करने का प्रयत्न मोहन मांझी कर रहा है। वह कहता है -- "जात-पात की पुरानी दिवारें ढह रही है, नये प्रकार की विशाल बिरादरी उनका स्थान लेने आ रही है। एकता का वह आलोक देहातों में भी प्रवेश कर चुका है।"[2] किसान संघ की व्याख्या मोहन मांझी ने भी की

- -

1. डॉ० कालिकिंकर दत्त : बिहार में स्वातंत्र्य आन्दोलन का इतिहास : खंड-2 पृ० 308

2. नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ० 36

है -- "किसान सभा देहातों में रहनेवाले कुछ मेहनतकश लोगों का एकमात्र मिला जुला सुदृढ संगठन है ।"[1] यह संगठन तभी दृढ़ हो सकेगा जब ग्रामीण जनता "किसान सभा" के सक्रिय सदस्य बनेंगे । मोहन मांझी इस संगठन को दृढ करने के लिए गांव-गांव प्रचार कार्य करता है । मलाही गोंढियारी गांव के भोला, सुरजुन, रंगलाल, नीरस, नरायण, छीतन, बसी, नथुनि, कल्लर "भीकर, नथुनी, नकछेदी, बौलट, भइयन, टुन्नी, जलधर, गंगा, बंदि.... वगैरह सारे के सारे इस सभा के मेंबर हैं ।"[2] धान के नारों की बिनी तीन-चार मोटी चटाइयों पर भाई लोग बैठ गए । मोहन मांझी ने -- "थैले से रसीदें निकाल लीं और किसान सभा का मेम्बर बन जाने की अपील की ।"[3] जिस पर किसान सभा के 56 मेम्बर बन चुके थे -- "मेम्बर होने की फीस एक आना थी ।"[4] पचास रसीदोंवाली मेम्बरी की एक छोटी बही मोहन मांझी से लेकर भोला ने मंगल को थमाया और कहा -- "घर-घर से इकन्नी वसूल करके रसीद काट देना ।"[5] अतिरिक्त इसके जीवनाथ -- "आसपास के पच्चीस गांवों में घूमकर किसान सभा के 1200 मेम्बर बना लिये थे ।"[6] केवल पुरुष ही नहीं स्त्रियाँ भी किसान सभा की सदस्या थी ।

- -

1. नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ. 36
2. नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ.31
3. नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ. 35
4. नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ. 126
5. नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ. 38
6. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 130

किसान सभा के नाम पर -- "रतिनाथ की चाची ने कई बार थोड़ा-थोड़ा करके चन्दा दिया था।"[1] ..... सभी मेम्बर बनने को तैयार थे लेकिन अब रसीद बही खतम हो चुकी थी।"[2]

मेम्बर बनने की यह प्रथा बिहार के आन्दोलन में केवल उग्र रूप ही नहीं अपनी चरम सीमा को पहुंचकर साधारण जनता के मन में घर कर गयी थी।

(ड) ग्राम कमेटी :

गांवों में बढ़ते हुए अन्याय तथा अशांति को दूर करने के उद्देश्य से उपन्यासकार ने "ग्राम कमेटी" की स्थापना का कार्य बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे उपन्यासों में बताया है। "ग्राम कमेटी" उसी स्थिति में स्थापित हो सकती है, जब "किसान-सभा" में सदस्यों की संख्या लगभग 135-150 के बीच में हो। बाबा बटेसरनाथ उपन्यास का किसान लीडर जीवनाथ पच्चीस गांवों में घूम घूमकर-कुल मिलाकर -- "नौ ग्राम-कमेटियां चालू करा दी थी।"[3] एक अन्य उपन्यास वरुण के बेटे में मलाही-गोंढियारी की संयुक्त बस्तियों के लिए -- "किसान सभा की एक ग्राम-कमेटी संगठित हो गयी थी।"[4]

- -

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ. 101
2. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 126
3. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 130
4. नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ. 107

§5§ ग्राम कमेटी के कार्य :

उपन्यासकार ने बाबा बटेसरनाथ तथा रतिनाथ की चाची उपन्यास में ग्राम कमेटी के कार्यों के अन्तर्गत ----- "ग्राम में न्याय तथा शांति की स्थापना करना, पुरानी पोखरों, सड़कों तथा ग्राम पुनर्निमाण करना ।"[1] अतिरिक्त इसके -- "उच्च वर्ग के स्वेच्छाचारियों से अपनी सुरक्षा के लिए तथा तानाशाह अधिकारियों से वाजिब हक हासिल करने के लिए संघर्ष करते ।"[2] निश्चय किया । तथा भोला ने "बैठक खाने की बाहरवाली छोटी कोठरी दफ्तर के लिए दे दी ।"[3]

§6§ किसान काउन्सिल :

ग्राम कमेटी के कार्यों की देख-रेख और सलाह मशविरा के लिए, -- "सात मेम्बरों की छोटी "किसान काउन्सिल" चुनी गयी । "हाजी करीम बक्श" सदर चुने गये, दयानाथ उप सभापति और जीव सेक्रेटरी ।"[4] मल्लाही गोंढियारी गांव में ----- "मकोदी प्रधान चुने गए और मंगल सेक्रेटरी । इस कोठी में भी मजूरी को समेट लिया गया ।"[5] इन मेम्बरों की राय से -- "हफ्ते में एक बार काउन्सिल की बैठक तय हुई और पन्द्रह दिन बाद ग्राम कमेटी की बड़ी मिटिंग ।"[6] पहली बैठक में -- "स्थायी फंड को एक निश्चित

- -

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ :पृ.130 2.नागार्जुन:बाबा बटेसरनाथ-पृ.131
3. नागार्जुन : वरुण के बेटे :पृ.107 4.नागार्जुन:बाबा बटेसरनाथ-पृ. 126
5. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 107
6. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 127

सीमा तक बढ़ाना था, पन्द्रह दिन के अन्दर ... पंद्रह मन धान और जमाना पड़ा।"[1] ग्रामीण जनता को देश की गतिविधियों से परिचित कराने के लिए -- "समय पर साप्ताहिक 'जन शक्ति' और दैनिक 'नवराष्ट्र' मंगा की गयी।[2] पुरानी पोखरों तथा सड़कों के पुनर्निमाण के लिए "लघ सिंचाई-योजना के अन्दर सरकारी मदद हासिल करने का प्रयत्न करना भी इसी कार्यक्रम का एकांग था।"[3] साथ ही "ग्राम कमेटी" द्वारा होनेवाली गतिविधियों की सूचना जिला तथा प्रदेश की किसान सभाओं तक पहुंचाना तथा आगामी कार्यों के लिए राय मांगना।"[4] भी इसी कमेटी के जिम्मे था। अतिरिक्त इसके गांव की जनता को संगठित कर -- "जमीन की बेदखली के खिलाफ संघर्ष करना तथा पास-पड़ोस के किसानों को भी "मदद पहुंचाना" आदि कार्य किसान कमेटी के ही थे।"[5]

(ए) महिला किसान सेविका :

किसान सभा के उद्देश्यों तथा कर्तव्यों का प्रचार करने के लिए -- "तीन महिला किसान सेविकाएं भी साथ आयी हुई थी।"[6] जिन्हें -- "पांच मन चावल, ढाई मन महुआ, तीन मन मकई, छै पसेरी अरहर, पांच पसेरी चने नकद रकम तिरासी रुपये नौ आने"[7] इस सभा के आयोजन से प्राप्त हुए। साथ ही रूपउली की बड़ी डेउढ़ी के छोटे बाबू साहब -- "मानिकजी" का मंझला बबुआ

---

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 136
2, 3 तथा 4. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 127
5. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 127
6. नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ. 106
7. नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ. 106

"हीराजी" ...... मोहन मांझी को अपनी साइकिल थमा गया ।"[1] केवल बिहार प्रान्त में ही नहीं, देश में, किसानों के हित के संरक्षण के लिए स्वतंत्र संस्था की स्थापना हुई जो आगे चलकर "अखिल भारतीय किसान-कांग्रेस" नाम से प्रसिद्ध हुई । जिसका प्रथम अधिवेशन लखनऊ में 1935 ई० में हुआ । इसे नेहरू जैसे समाजवादी विचार के सदस्यों का सहयोग भी प्राप्त हुआ ।

यह आन्दोलन देश-व्यापी आन्दोलन था । इसे कुछ जमींदारों का साथ न मिल पाया था । फिर भी जनता जनार्दन के हाथों से इस आंदोलन का सुचारु कार्य चल रहा था । स्त्री, पुरुष, धनीक-अधनीक, साहू-असाहू, संत-असंत, विद्यार्थी, नौकरी पेशेवाले, उद्योगपति शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों के संरक्षण में, यह आन्दोलन चल रहा था । भावी पीढ़ियों द्वारा इसे समर्थन भी प्राप्त हुआ है । उपन्यासकार के दृष्टिकोण में यह समर्थन कुछ और नहीं नये मोर्चे का निर्माण है । यह मोर्चा जमींदारों के खिलाफ मजदूरों का, शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों द्वारा संगठित है ।

6·2·3·1 सत्याग्रह :

स्वामी सहजानंद के परामर्श से किसान आन्दोलन बढ़ रहा था । । सितम्बर, 1938 को "अखिल भारतीय किसान दिवस" के सिलसिले में प्रदर्शन भी हुए, प्रांतीय किसान परिषद की बैठक हुई ।

1· नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ· 84

जिसमें स्वामी सहजानन्द और यदुनंदन शर्मा के नेतृत्व में जमींदारों के अत्याचारों का शान्तिपूर्ण ढंग से प्रतिरोध करने का भार सौंपा गया । श्री राम मनोहर लोहिया की अध्यक्षता में पटना जिलान्तर्गत मसौढी में 16, 17 नवम्बर 1938 को जिला किसान सम्मेलन हुआ । इस युगीन चेतना का उल्लेख "वरुण के बेटे," "रतिनाथ की चाची उपन्यास में नागार्जुन ने किया है । किसानों का नेता मोहन माँझी ने थाने भर के किसान प्रतिनिधियों का वार्षिक सम्मेलन -- "घुमडिया से दो मील उत्तर बस्ती कुसोथर के बाहरी मैदान में किया था । कान्फ्रेंस में मलाही गोंढियारी से सौ किसान मेम्बरों के पाँच प्रतिनिधि शामिल थे ।"[1] जिसमें प्रस्ताव द्वारा सरकार से अपील की थी कि -- "कम से कम पाँच वर्षों तक की मुहलत तकावी वसूली के लिए जरूर मिलनी चाहिए । ....गढ पोखर के जमींदारों को सम्मेलन में आगाह किया था कि .....मछुओं को गरोखर से मछलियाँ निकालने के पुश्तैनी हकों से वंचित करने की उनकी कोई भी साजिश कामयाब नहीं होगी ।"[2] किसान अपनी बात पर डटे रहे ।

6.2.3.2 आन्दोलन का उग्र रूप :

रूपउलपुर के जमींदार राजाबहादुर की -- "सूदखोरी और जमींदार शाही से सारा इलाका तंग आ गया था ।"[3] उनके खिलाफ भी किसान संगठित होने लगे । संगठन की यह हवा राजा बहादुर की भी जमींदारी में पहुँची ।

---

1. नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ. 106
2. नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ. 107
3. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ. 95

यह बात सन् 1930 की है जब कि उपन्यासकार की आयु 26 वर्ष की थी और उनके लेखन कला का प्रादुर्भाव 1947 के आसपास हुई है । निश्चित है थोकनता में प्रतिबिम्बित किसान आन्दोलन से वे पूर्ण रूप से परिचित थे । शंकर पुर के ग्वाले कई वर्षों से सत्तर-अस्सी बीघा खेत "मनछप" पर जोतते-बोते और फसल काटते आ रहे हैं । मालिक उसे पड़ोस के किसानों के हाथ बन्दोबस्त कर देना चाहता था, रैयत इसके खिलाफ हो गई और संघर्ष की चिनगारियाँ भयंकर ज्वाला का रूप धारण करने लगी । किसान जीवन का उत्सर्ग करने के लिए तैयार थे । इनके नारे ..... "कमानेवाला खायेगा .... इसके चलते जो कुछ हो । इन्किलाब ..... जिंदाबाद । जमीन किसकी ..... जोते बोये उसकी । अंग्रेजी राज नाश हो । जमींदारी प्रथा ..... नाश हो । किसान-सभा जिंदाबाद । लाल झंडा .. . जिंदाबाद ।"[1] उनमें गजब का जोश था । यह जोश भयंकर रोग की तरह एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त को फैलने लगा । उग्रतारा उपन्यास में इसका उल्लेख मिलता है -- "गया जिले में पुश्तैनी जमीन से किसान बे-दखल किए जाने लगे तो उन्होंने सामूहिक सत्याग्रह का रास्ता अपनाया ।"[2] यह आन्दोलन जमीन्दारों के खिलाफ तो था ही, सरकार के भी अनुकूल नहीं था । बात बढ़ गई, किसानों ने सत्याग्रह आरम्भ किया ।" मालिक को लठेत और पुलिसवाले मिल गये । ..... सत्याग्रही पृथ्वी पुत्र जब पिटने लगे, खून से तिरंगा लाल हो उठा ।"[3] अहिंसा हिंसा में बदल गयी । आन्दोलन ने उग्र रूप धारण किया -- "सभा, जुलूस, दफा एक सो चवालिस

---

1. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 161
2. नागार्जुन : कुंभीपाक : पृ. 87
3. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ. 110

गिरफ्तारी, सजा, जेल भूख हड़ताल, रिहाई -- यह सिलसिला किसानों को ठंडा नहीं कर सका ।"[1]

कांग्रेसी सरकार एक ओर परेशान थी तो दूसरी ओर कांग्रेसी नेता भी । वास्तव में जिस आन्दोलन का आरम्भ कांग्रेसियों द्वारा किया गया था, उसी ने जिस उग्र रूप को धारण किया उस पर मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव अवश्य ही था । ज़िला अधिकारियों ने किसानों को धमकाकर जबरदस्ती लगान वसूली शुरू करना चाहा ----- "तकावी की रकम वापस लौटाओ वरना खड़ी फसलें कुर्क कर ली जाएगी ।"[2] किसानों में सर्वत्र गुस्से की लहर दौड़ रही थी कई जगह "ज़िला अधिकारियों से इस प्रसंग में किसानों की झड़प हो गई ।"[3] बीच-बचाव के लिए नेताओं ने भरसक प्रयत्न किया परन्तु सब कुछ विफल रहा । आखिर ग्रामीण नेता ताराचरण ने बीच-बचाव करके नये जमींदार से यह मनवा लिया कि -- "खेत किसानों की ही जोत में रहेंगे । फी बीघा ग्यारह मन के हिसाब से अनाज इसके एवज में उसे साल-साल मिलता रहेगा ।"[4] ताराचरण का यह नेतृत्व किसान आन्दोलन में उसे आगे ले आया ।

1937 की इन चिनगारियों ने, जो प्रचण्ड रूप धारण कर चुकी थी, स्वातंत्र्योत्तर भारत में विनोबा ने इन समस्याओं का हल जिस अनोखे ढंग से किया है वह अनोखा ढंग "भूदान यज्ञ" है । नागार्जुन

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ. 95
2. तथा 3. नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ. 106
4. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ. 96

जमींदार के बदनियती का उल्लेख हीरक जयन्ती तथा उग्रतारा उपन्यास में करते हुए कहते हैं कि जमींदारी अपनी प्रतिष्ठा को बनाये रखने के लिए इस यज्ञ में सम्मिलित होकर उस भूमि को प्रदान करते, जो अनुपजाऊ होती थी । हीरक जयन्ती उपन्यास के राजा रेवतीरंजन प्रसाद ने -- "पानी के अन्दर सदा डूबी रहनेवाली पांच बीघा जमीन का दानपत्र राजा साहब ने संत के चरणों में अर्पित किया ।"[1] उग्रतारा उपन्यास का जीवन जिसने भूदान कमिटि से मिली ऊबड खाबड जंगली जमीन को खेती योग्य बना दिया था, जिसे देखकर पुराने भूदानी की लार टपकने लगी -- "फिर से कहीं अलग रद्दी जमीन देकर वे उससे अच्छी जमीन छीनना चाहते थे ।"[2] यह नीयत थी जमींदारों की । इस छिना-झपटी में -- भूदानी बाबू के आदमियों में से एक को गहरा घाव लगा ..... पहुँचते-पहुँचते बेचारे के प्राण-पखेरू उड गए ।"[3] मुकदमा चला और जीवन का -- "नौ वर्ष की सजा हुई ।"[4] इन काले करतूतों से जमींदार पल रहा था । केवल इतना ही नहीं, हर आन्दोलन में इस प्रकार की घटनाएं घटित हो रही थी । बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में बाबा कहते हैं --\ "पिछले किसान आन्दोलन में तीन किसान जीठर थोडी थोडी जमीनों के बदले हमेशा के लिए बैठा दिये गये थे ।"[5] इस मायावी नीति को जमींदारों ने अपनाया था । उपन्यासकार नागार्जुन ने जनता को संगठित होने के लिए उपन्यास द्वारा उपदेश दिया है । जब तक जन-बनिहार, कुली-मजदूर और बखिया खास लोग

- -

1. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ. 16

2. नागार्जुन : उग्रतारा : पृ. 22

3 तथा 4. नागार्जुन : उग्रतारा : पृ. 22

5. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 103

अपने हक के लिए बाबु भैया से लड़ने नहीं लगेंगे । तब तक उन्हें उनका हक प्राप्त नहीं होगा ।

आन्दोलन के विविध रूपों का संकलन नागार्जुन ने रतिनाथ की चाची, बलचनमा, कुंभीपाक, वरुण के बेटे, दुखमोचन, हीरक जयन्ती, बाबा बटेसरनाथ उपन्यासों में किया है ।

6.2.3.3 गवर्नर और जमींदारों की सांठ-गांठ :

कांग्रेस और किसान-सभा के कार्यकर्ताओं का घनिष्ठ सहयोग स्थापित हो चुका था । दोनों का किसानों पर बढ़ता हुआ प्रभाव देखकर सरकार और जमींदार घबरा उठे । उनके बढ़ते हुए प्रभाव को कम करने के लिए अंग्रेजों ने एक नई चाल को अपनाया । 1936 के अंत में बिहार के गवर्नर ने दक्षिण बिहार के कुछ प्रमुख जमींदारों को स्थिति पर बात-चीत करने के लिए बुलाया, तथा किसानों के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित करने की आवश्यकता बताई । जमींदारों ने उनकी इच्छानुसार -- "अमलों का वेतन बढ़ाना माल गुजारी में कुछ छूट देना, बकाश्त की बन्दोबस्ती पर स्वयं नजर रखने आदि के लिए अपनी सहमति व्यक्त की ।"[1] जिससे जनता में किसान सभा का प्रभाव कम हो जायेगा । लेकिन अंग्रेजी की यह नीति भी निष्फल सिद्ध हुई ।

---

1. डॉ० कालिकिंकरदत्त : बिहार स्वातंत्र्य आंदोलन का इतिहास - खंड - 2 पृ० 265

6·2·4 बिहार में चुनाव : कांग्रेस की विजय

कांग्रेस की विजय सन् 1937 के पहले सप्ताह में पण्डित जवाहरलाल नेहरू चुनाव अभियान के सिलसिले में बिहार की यात्रा की । जहाँ भी वे जाते बहुत बड़ी संख्या में लोग उनकी सभाओं में आते । वे कांग्रेस के आदर्शों तथा दलित-पीड़ित लोगों को विदेशी शोषण तथा अन्य देशी शक्तियों से मुक्त कराने के आश्वासन देते । उनके आश्वासन से, जनता ने चुनाव में अन्य पार्टियों के होते हुए कांग्रेस को बहुमत से विजयी किया । उपन्यासकार ने इस नवीन चेतना का चित्रण रतिनाथ की चाची, कुंभीपाक, बलचनमा तथा बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में किया है ।

कांग्रेसवालों की पहली मिनिस्ट्री का जमाना था । चुनावों में कांग्रेस की जीत हुई -- "कांग्रेस ने जब प्रान्तों के शासन में हाथ बटाना स्वीकार कर लिया तो जनता ने उस की ओर नई आशा से देखा । चुनाव के समय उन्होंने जनता से बड़े-बड़े वादे किये थे ।"[1] परन्तु एक भी कार्य सम्पन्न नहीं हुआ । कांग्रेस पार्टी के नीति से जमींदार बौखला उठे उन्होंने कांग्रेसी मंत्रियों को धमकी दी -- "आपकी खादी का कुर्ता पहले हम अपने खून से तर कर देंगे, उसके बाद आकर जमींदारी प्रथा उठा दीजियेगा ।"[2] इस तरह बुर्जुआ विचारधारा कांग्रेस शासन के खिलाफ हो उठी । जमींदार के उग्र विचारधारा से घबराकर कांग्रेसी शासक -- "बातें तो किसानों

- -

1 तथा 2· रतिनाथ की चाची : पृ· 94

के हित की करते थे, अमल में लेकिन जमींदारों को नब्बे प्रतिशत समर्थन हासिल था ।"[1] अपनी टेढ़ी चाल से जब -- "मंत्रियों ने अपनी पीठ कर दी किसानों की ओर, मुँह कर दिया जमींदारों की ओर । दुनिया भर में बदनामी फैल गई कि बिहार की कांग्रेस पर जमीन्दारों का असर है । जवाहर लाल तक ने यह खुल्लम-खुल्ला यह बात कही ।"[2] फिर भी चुने हुए नेता अपनी गंदगी से बाज नहीं आए, तो निश्चित था कि उग्रवादी विचार-धारा के समर्थक ही इस समस्या का हल कर सकते थे । जनता जनार्दन को मालूम हुआ कि --- "बाबू-भैया लोग वहीं तक हमारा पछ लेंगे जहाँ तक उनका अपना मतलब रहेगा ।"[3] भोली जनता को मालूम था कि जमींदार के बेटे, फूलबाबू जैसे कई हैं जो -- "सोराजी हो गए थे तो क्या, थे तो आखिर बाबू-भैया ही न । गरीब-गुरबा का दुख ये लोग क्या जाने ।"[4] इस प्रकार आस्था में भिन्नत्व की उपलब्धि होने लगी अर्थात् समाज में नेतागिरी तथा आम जनता में खाई बढ़ने लगी । उपन्यासकार की दृष्टि में केवल जमींदार ही नहीं, कुछ पढ़े लिखे तबकों के लोग - "सेठों और वकीलों बालिस्टरों की यह जमात खुली तौर पर जब भी कहाँ खेतिहरों को अपने संगठन में घुसने देती थी ? गरीब जनता चाहे गाँवों की रही हो, चाहे शहरों की उसे कांग्रेस ने कभी अपने संगठन की रीढ़ नहीं बनाया ।"[5] यह नीति थी उन दिनों के राजसी ठाट-बाट में पलनेवाले कांग्रेसी नेताओं की ।

---

1. नागार्जुन : कुंभीपाक : पृ. 87
2. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची / पृ. 94
3. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 100
4. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 100
5. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 122

कांग्रेस की इस नीति को देखकर बिहार कांग्रेस और किसानों में मत-भेद प्रकट हो चुका था । किसानों को वाम पंथियों का समर्थन तो प्राप्त था ही ।

6.2.5 प्रान्त के विभिन्न भागों में किसान सम्मेलन :

सत्याग्रह का निर्णय :

किसानों पर होते हुए अत्याचार को देखकर किसान संगठन ने शीघ्र ही सत्याग्रह करने का निर्णय किया । दिसम्बर 1938 को बिहार प्रांतीय किसान सम्मेलन का अधिवेशन "ओइनी"[1] में हुआ । सभी स्थानीय नेताओं के अतिरिक्त आचार्य नरेन्द्रदेव और मोहनलाल गौतम भी इसमें भाग लेने आये । श्री राहुल सांकृत्यायनने हर ज़िले में सत्याग्रह शुरु करने की प्रार्थना की ।

बख्वारा, मधुबनी, गया आदि स्थानों पर किसान सम्मेलन किये गये । जिसमें मंत्रि मण्डल की कृषि नीति की कठोर आलोचना की गयी । तथा जमींदारों के अत्याचार के विरुद्ध जनता को संघर्ष करने के लिए प्रोत्साहित किया गया ।

पंडित यदुनन्दन शर्मा ने 22 दिसम्बर को "नेउरा"[2] में विवादग्रस्त खेतों की फसल काट कर सत्याग्रह शुरु किया । जिसके फलस्वरूप तीन स्वयंसेवकों के साथ उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया । श्री राहुल सांकृत्यायन ने छपरा जिलान्तर्गत, ~~गया~~ । ~~श्री राहुल~~

---

1. डॉ॰कालिकिंकर दत्त : बिहार में स्वातंत्र्य आंदोलन का इतिहास खंड-2 - पृ॰ 307
2. डॉ॰कालिकिंकर दत्त : बिहार में स्वातंत्र्य आंदोलन का इतिहास खंड-2 - पृ॰ 311

अमवारी नामक स्थान पर काश्त सत्याग्रह शुरू किया और वे गिरफ्तार हुए । उन्होंने जेल में भूख हड़ताल शुरू की । इस तरह सत्याग्रह दिनों दिन उग्र होता गया ।

6·2·5·1 समाजवादियों द्वारा नौजवान संघ की स्थापना :

छात्रों को भी राजनीति से प्रेरित करने के लिए श्री नकी इमाम की अध्यक्षता में सन् 1937 को छात्र संघ की स्थापना की गयी । समाजवादी जगह जगह युथ लीग का संगठन कर रहे थे, इसके अतिरिक्त प्रत्येक गाँव में "तुफानी जत्था" का भी संगठन हो रहा था । कुछ दिनों बाद श्री जय प्रकाश नारायण "समाजवादी ग्रुप क्लब" की स्थापना में लगे । लगभग इन्हीं दिनों में "हजारी बाग" और "मंगल बाजार" पूर्णियाँ में "नौजवान संघ" स्थापित किए गए । उपन्यासकार पर भी इन संघों की स्थापना का प्रभाव पड़ा है । बाबा बटेसरनाथ उपन्यास के रुपउली गाँव में, जिस नौजवान संघ की स्थापना हुई थी, उसकी प्रेरणा श्याम-सुन्दर बाबू थे । श्याम सुन्दर बाबू वकील तो थे ही साथ ही -- "जनवादी नौजवान संघ" की जिला कमेटी (दरभंगा) के प्रेसिडेन्ट भी ।[1] उन्होंने, रुपउली में हुए कांड को सुनकर नौजवानों को संगठित होने की प्रेरणा दी । उनके कहने पर गाँव में "नौजवान संघ" की एक शाखा खुल गई और नौजवानों को संगठित होने का अवसर मिला । इस प्रकार से जनता में जागृति फैलाने का

1· नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ· 119

का कार्य संघों ने किया । इस युवा मोर्चा का निर्माण पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए गांव-गांव में होने लगा था । उपन्यासकार का दृष्टिकोण भी इसी पूर्ण स्वतंत्रता की ओर है । उन्होंने युवा संगठनों द्वारा भावी पीढ़ियों को भी पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने की प्रेरणा दी है । उनका विश्वास है कि -- "जमात में बड़ी ताकत होती है न ? और कहीं उस ताकत के पीछे पढ़े-लिखे समझदार लोगों की सूझ-बूझ भी हुई तो फिर क्या कहना ।"[1]

सन् 1938 में कांग्रेस का हरिपुरा अधिवेशन श्री सुभाषचन्द्र बसु की अध्यक्षता में हुआ, परन्तु 1939 में पुनः श्री सुभाषचंद्र बोस के कांग्रेस अध्यक्ष निर्वाचित होने से किसान नेताओं को प्रसन्नता हुई । लेकिन कांग्रेस -- "गांधी की उपेक्षा करके बसु का नेतृत्व स्वीकार न कर सकी"[2] साथ ही विश्व युद्ध की परिस्थितियों को, समीप देखकर तुरन्त "सविनय अवज्ञा आन्दोलन" छेड़ने का सुभाष चन्द्र बोस का विचार भी गांधी के इच्छा विरुद्ध था । विरुद्ध परिस्थितियों के समक्ष सुभाषचन्द्र को अध्यक्ष पद से त्यागपत्र देना पड़ा ।

इसी बीच 1938 में कांग्रेस में एक अग्रगामी दल की स्थापना की । जिसका मुख्य लक्ष्य साम्राज्य विरोधी आन्दोलन द्वारा पूर्ण राजनीतिक स्वतंत्रता व स्वतंत्र सोशलिस्ट सरकार की स्थापना करना ।

---

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 14
2. कृष्णबिहारी मिश्र : आधुनिक सामाजिक आंदोलन और आधुनिक हिन्दी साहित्य : पृ. 220

6·2·6 द्वितीय महायुद्ध का आरम्भ एवं कांग्रेसी मंत्री मंडल का त्यागपत्र :

कांग्रेस पार्टी का आपसी मतभेद चरम सीमा पर पहुंचा था कि सन् 1939 में द्वितीय महायुद्ध का आरम्भ हुआ। देश की राजनीति पर भी इसका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही था। युद्ध के प्रारम्भ होते ही वायसराय ने अपनी स्वेच्छा से भारत को भी युद्ध में शामिल कर लिया। परिणामतः दिसम्बर 1939 में कांग्रेस मंत्रिमंडलों ने इस्तीफा दे दिया और 1940 में रामगढ़ अधिवेशन में कांग्रेस ने गांधीजी के नेतृत्व में सविनय अवज्ञा आन्दोलन करने का निश्चय किया। सत्याग्रह प्रारम्भ होने के पूर्व ही 28 जनवरी 1941 को सुभाष बाबू भारत से फरार हो गये और जर्मनी जा पहुंचे।

6·2·6·1 युद्ध विरोधी आन्दोलन :

भारत रक्षा कानून के नाम पर ब्रिटिश सरकार ने कांग्रेस का दमन करना प्रारम्भ कर दिया। सरकार की दमन नीति को देखकर 17 अक्टूबर 1940 को विनोबाजी ने युद्ध विरोधी भाषण से "युद्ध विरोधी आन्दोलन" आरम्भ किया। जपान के युद्ध में शामिल हो जाने के कारण एक नई स्थिति उत्पन्न हुई। जपान ने ब्रिटिश सेना के मुख्य सेनापति "कर्नल हण्ट" को आत्म समर्पण के लिए विवश कर दिया और उसने 15 फरवरी 1942 को सेना के 70 हजार सिपाहियों को हथियार रख देने की आज्ञा दी, जिसमें 40 हजार हिन्दुस्तानी थे।

6·2·7 समाजवादी सम्मेलन :

देश में विभिन्न प्रांतों के वामपंथियों में कांग्रेस की अपेक्षा कहीं अधिक अतिवादी विचार फैल रहे थे। इनमें कांग्रेस, समाजवादी दल, अग्रगामीदल, किसान सभा और साम्यवादी भी थे। ये सभी साम्राज्यवाद के एक समान कट्टर विरोधी थे। ये तुरन्त आजादी की माँग करते थे, और एक नई समाज व्यवस्था का निर्माण करना चाहते थे जो सामन्तवादी, पूंजीवादी और साम्राज्यवादी शोषण से सर्वथा मुक्त हो।

श्री यूसुफ मेहर अली की अध्यक्षता में दिल्ली में 6-7 जुलाई 1940 को "बिहार प्रान्तीय समाजवादी सम्मेलन हुआ। अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने कहा -- "कांग्रेसियों को अपने कार्यक्रम एवं नीति की ओर खींच लाना है।"[1] पटना में 21 सितम्बर 1940 में "बिहार समाजवादी पार्टी" की संघर्ष समिति की बैठक हुई। जिसमें श्रमिक आन्दोलनों के विरुद्ध सरकार दमन नीति, नागरिक स्वतंत्रता का अपहरण तथा कृषि स्थिति की दुरवस्था और राजनीतिक बंदियों के साथ दुर्व्यवहार के लिए जयप्रकाश नारायण को 28 नवम्बर 1940 को हजारीबाग जेल से छूटने पर पार्टी को पुनः उनका नेतृत्व प्राप्त हुआ। श्री नारायण नरेन्द्रदेव, गांधी, सुभाष चंद्र बोस से मिलकर ब्रितानी सरकार के विरुद्ध एक संयुक्त मोर्चा गठित करना चाहते थे। कलकत्ता से लौटकर वे विभिन्न प्रान्तों की -- बिहार, उत्तर प्रदेश, गुजरात, बम्बई की यात्रा की वहीं उनको गिरफ्तार कर लिया गया और "देउली नजरबंदी शिविर में भेज दिया गया।

1· डॉ·कालिकिंकर दत्त : बिहार में स्वातंत्र्य आन्दोलन का इतिहास से उद्धृत - खंड-2 पृ· 389

6·2·8 किसान दिवस :

स्वामी सहजानंद के जेल चले जाने से किसान आन्दोलन को भारी क्षति हुई । फिर भी पटना, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, सरन, चम्पारन, पूर्णिया, पलामू, संथाल परगाना आदि कई जिलों में उनका काम बहुत कुछ चल रहा था । 1 सितम्बर 1940 को प्रान्त में कई स्थानों पर किसान दिवस मनाया गया । इसके लिए सभाएं की गई और अखिल भारतीय किसान सभा के अध्यक्ष, बाबा सोहन सिंह की गिरफ्तारी पर विरोध प्रकट किया गया ।

6·2·9 मई दिवस :

बिहार कांग्रेस समाजवादी पार्टी ने श्रमिक नेता शिवनाथ बनर्जी की अध्यक्षता में मई 1941 को मई दिवस मनाया गया । जिसमें मजदूर एवं किसानों की शिकायतों को दूर करने हेतु मालगुजारी माफ करना, मजदूरी, महंगाई भत्ता आदि की वृद्धि और अशक्त एवं बेकार, अस्वस्थ श्रमिकों की सहायता पर बल दिया गया ।

उपन्यासकार पर जिन तथ्यों का प्रभाव पड़ा है, वे सभी उपरोक्त घटनाएं हैं । मार्क्सवादी चिंतन तथा मार्क्सवादी विचार-धारा के प्रति नागार्जुन की सहमति जहां कहीं मिल पाती है, वे सभी उपरोक्त तथ्यों के आधार शिला पर ही स्थापित है ।

मार्च 1942 को ब्रिटिश युद्ध मंत्रिमंडल के सदस्य स्टैफर्ड क्रिप्स राजनीतिक गत्यारोध को दूर करने के लिए एक प्रस्ताव लेकर भारत आये, लेकिन देश के नेता तथा जनता में असंतोष की लहर फैल गई । फलत: क्रिप्स मिशन असफल हो गया और 11 अप्रैल को स्टैफर्ड क्रिप्स प्रस्तावों को वापस लेने की घोषणा कर इंग्लैंड चल पड़े ।

6.2.10 करो या मरो

कांग्रेस ने सन् 1942 में एक नया आंदोलन छेड़ने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया । 8 अगस्त 1942 को कांग्रेस महासमिति ने बम्बई में -- "भारत छोड़ो" का प्रस्ताव पास किया । गांधी जी ने भाषण में अंग्रेजों से भारत को छोड़कर चले जाने का आग्रह किया । उन्होंने जनता को स्पष्ट रूप से "खुला विद्रोह" का निर्देश देकर "करो या मरो" का क्रांतिकारी नारा दिया । जिसके फलस्वरूप अगस्त के प्रात: ही उन्हें और कांग्रेस कार्य समिति के सदस्यों के साथ गिरफ्तार कर लिया । कांग्रेस समितियाँ अवैध घोषित कर दी गई । जिसके कारण तीव्र आन्दोलन खड़ा हुआ और सरकार का दमन चक्र और भी तीव्र गति से चल पड़ा । सरकार के दमन चक्र के कारण आंदोलन ने गुप्त रूप धारण किया और गुप्त उपायों से उसे जीवित रखा गया ।

(ख) दिल्ली चलो :

जिन दिनों देश में गांधी जी का मंत्र करो या मरो गूंज रहा था । उन्हीं दिनों नेताजी के रूप में आई. ए. ए. की

"दिल्ली चलो" का नारा बुलन्द हुआ । ये दोनों क्रांती सेना के दो मोर्चे थे । देश को स्वाधीनता दिलाने में इन दोनों ने अपना-अपना योगदान दिया । यह जनक्रांति थी ।सरकार ने आंदोलन की हिंसा और उत्पात्त की जिम्मेदारी कांग्रेस पर डाली । जिसके फलस्वरूप जेल में ही गांधी जी ने 21 दिन का उपवास आरंभ किया ।

6.2.11 गांधीजी की जेल रिहाई :

जिसके फलस्वरूप गांधीजी ~~कि~~ की स्थिति अत्यंत चिंताजनक हो गयी और 6 मई 1944 को गांधीजी मुक्त कर दिये गये । इन्हीं दिनों सन् 1943 में बंगाल भीषण अकाल से ग्रस्त हो उठा । जून 1944 तक कांग्रेस कार्य समिति के सदस्य रिहा कर दिये गये । "लार्ड वेवल" समझौता करना चाहते थे लेकिन असफल रहे ।

अगस्त 1945 में संयुक्त राज्य अमेरिका ने अणुबम का प्रयोग जापान के हिरोशिमा और नागासाकी नगरों पर किया । जिसके फलस्वरूप विवश होकर जापान ने हथियार डाल दिए । इंग्लैंड से चर्चिल मंत्रिमंडल पतन हुआ और मजदूर दल विजयी हुआ । इस परिवर्तन से ~~इंग्लैण्ड~~ ब्रिटेन की भारत सम्बन्धी नीति में भी परिवर्तन आया । साथ ही अमरीका के राष्ट्रपति रूजवेल्ट के विशेष आग्रह से इंगलेण्ड को व्यवहार में कुछ नमी लाने के लिए बाध्य होना पड़ा ।

मजदूर दलीय सरकार ने फरवरी सन् 1946 में ब्रिटिश पार्लियामेंट का प्रतिनिधि मण्डल भारत भेजा और फिर मार्च में ब्रिटिश मंत्रिमण्डल का प्रतिनिधि मण्डल सदस्यों के साथ भारत मंत्री लार्ड पैथिक लारेंस, श्री क्रिप्स और ऐलेक्जेण्डर भारत आये। उन्होंने तुरन्त सत्ता हस्तांतरित करने के लिए नेताओं से वार्ता आरम्भ की और जून 1946 में नेहरू के प्रधान मंत्रित्व में अन्तर्कालीन सरकार की स्थापना हुई। कांग्रेस और मुस्लिम लीग का विरोध बना ही रहा ।

(आ) साम्प्रदायिक दंगे :

मुस्लिम लीग की साम्प्रदायिक नीति के फलस्वरूप कलकत्ता तथा बंगाल के नोआखाली में भीषण दंगे हुए । गांधी जी के प्रयास भी विफल सिद्ध हुए ।

(इ) नाविक विद्रोह :

भारतीय और अंग्रेज नाविकों के प्रति भेदभाव पूर्ण व्यवहार के फलस्वरूप 19 फरवरी 1946 में "रायल इण्डियन नेवी" के भारतीय नाविकों ने विद्रोह कर दिया ।

(ई) देश विभाजन :

देश में बढ़ते हुए साम्प्रदायिक दंगों को देखकर 3 जून, 1948 को लार्ड माउण्ट बेटेन ने कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग में समझौते

की एक नई योजना "देश का विभाजन" प्रस्तुत कर भारत तथा पाकिस्तान को औपनिवेशिक स्वराज्य की घोषणा की ।
15 अगस्त 1947 को भारत दो देशों के रूप में स्वतंत्र हो गया ।

6.2.12 भारतीय स्वतंत्रता विधेयक बिल :

जुलाई सन् 1947 में ब्रिटिश पार्लियामेंट ने इण्डियन इण्डिपेन्डेन्ट एक्ट पारित किया । इस ऐक्ट के अनुसार 15 अगस्त सन् 1947 को भारत को पूर्ण स्वतंत्रता देने की घोषणा की गयी । नागार्जुन ने बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में दियानाथ की तरह -- "हजारों और लाखों आदमी जेल गये । सैकड़ों फांसी पर झूले । हजारों परिवार टूटे ..... तब जाकर यह आजादी हासिल हुई है ।"[1]

जिन राजनैतिक घटनाओं का उल्लेख नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में नहीं किया है, वे घटनाएं निम्नलिखित हैं -- द्वितीय महायुद्ध, क्रिप्स कमीशन, बयालिस की क्रांति, दिल्ली चलो, साम्प्रदायिक दंगे, नाविक विद्रोह, देश विभाजन और इन्डिपेंडेन्ट एक्ट। उपरोक्त घटनाओं का संकेत उपन्यासों में न होने पर भी, उपन्यासों में विद्यमान राजनीतिक घटनाओं का अंकन विकृत नहीं गया है ।

उपरोक्त जिन घटनाओं का समावेश इतिहास के पृष्ठों में हुआ है, इन सबसे लाभान्वित होकर जिस संघर्ष की ओर नागार्जुन ने

---

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 110

ने कदम उठाया है, वह संघर्ष एक ओर भारतीय "गरम दल" से सम्बन्धित है, तो दूसरी ओर मार्क्सवादी विचार धारा से प्रभावित इस प्रकार से अनेकानेक घटनाओं का वर्णन उपन्यासकार ने प्रतीक के रूप में किया है ।

6·3 आधुनिक युग :

26 जनवरी सन् 1950 में नये संविधान के अनुसार भारतीय गणतंत्र का उदय हुआ है । संविधान के अनुसार भारत एक धर्म निरपेक्ष जनतंत्र है, जिसमें सभी नागरिकों को समान रुप से मौलिक अधिकार प्राप्त है । डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद देश के प्रथम राष्ट्रपति निर्वाचित हुए और पं0 जवाहर लाल नेहरु प्रधान मंत्री चुने गये थे । उपन्यासकार ने उपरोक्त मान्यता को मानते हुए इस युग का नाम रण "आधुनिक युग" किया है । बाबा बटेसरनाथ, उपन्यास में बाबा बटेसर कहते हैं -- "तू {जैकिसुन} जिस युग में पैदा हुआ है, वह राजाओं-जमींदारों और सेठों साहूकारों का युग नहीं, बल्कि तेरे जैसे आम नौजवानों का जमाना है ।"[1] ग्रामीण जनता को शोषण से मुक्त करने के लिए सरकार ने "जमींदारी उन्मूलन" आवश्यक समझा ।

6·3·1 जमींदारी उन्मूलन :

ग्रामीण जनता स्वतंत्रता पूर्व अंग्रेज, पूंजीपति और जमींदारों से शोषित होती थी । समय, समय पर इन तीनों से जनता विविध प्रकार से तथा तरीकों से संघर्ष करती थी, अंग्रेजों से राष्ट्रीय

1· नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ· 43

स्तर पर, पूंजीपतियों से शहरों में और जमींदारों से गांवों में । दीर्घकालीन राष्ट्रीय संघर्ष ने अन्तत: देश को स्वाधीनता दिला दी, जिसके फलस्वरूप सन् 1947 में देश को स्वाधीनता प्राप्त हुई । देश के नेताओं का ध्यान तुरन्त ही गांवों में पीड़ित जनता की ओर गया, और उन्होंने गांवों में इन सामन्तों को समाप्त करने की योजना बनायी जो -- "जमींदारी उन्मूलन" के नाम से प्रसिद्ध हुई । जिसके द्वारा कृषि और कृषकों को उन्नतिशील बनाने का राजनैतिक प्रयत्न था ; भारत में -- "जमींदारी उन्मूलन का मूल आधार आर्थिक कारण नहीं राजनीतिक कारण था और वह था जमींदार और जनता के बीच सदैव से चला आया संघर्ष । उसी के परिणाम स्वरूप "जमींदारी उन्मूलन" हुआ ।"[1] जो जनता के सामने आया । -- "30 मार्च, 1951" तारीख -- जमींदारी उन्मूलन बिल स्टेट असेम्बली में पास हो चुका था ।"[2]

नागार्जुन ने म युगीन चेतना का चित्रण बाबा बटेसरनाथ हीरक जयन्ती, जमनिया का बाबा उपन्यासों में किया ।

सरकार ने जमींदार उन्मूलन शुरु किया । जमींदार तो पहले ही से चौकस थे, उन्होंने सार्वजनिक उपयोग की भूमियों को ---- "पोखर, चरागाह, श्मशान, वगैरह चारों की तरह चुपके-चुपके बेच रहे हैं ।"[3] हीरक जयन्ती उपन्यास के बाबू जयपतनारायण सिंह जमींदारी उन्मूलन के आतंक से -- "अपनी जमीनें कौड़ी के भाव पर लुटा रहे हैं ।"[4] जमींदारों के विचारों में -- "भागते भूत की लंगोटी भली ।"[5] वाली बात आ गई । जमींदार और उनका दीवान

- -

1. रामबिहारी सिंह तोमर : ग्रामीण समाज शास्त्र : पृ. 413
2. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 131
3. नागार्जुन : बाबाबटेसरनाथ : पृ. 45
4. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ. 58
5. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 12

मल्लिक अब भी जालिमाना हरकतों से बाज नहीं आये तो आदमी आदमी को खाने लगेंगे। इतना बड़ा अन्याय अब ग्रामीण जनता के बर्दाश के बाहर था। जागृत जनता के -- "दो-तीन जवान थाना अदालत कचहरी से लेकर कांग्रेस कमेटी असेम्बली पार्लियामेंट के प्रभुओं तक दौड़ धूप करने लगे।"[1] फिर भी जमींदार टस से मस नहीं हुआ। जमींदार उन्मूलन प्रथा से उत्तेजित जमींदारों ने जिस चाल को अपनाया वह साधारण जनता तथा किसानों के लिए एक टेढी खीर हुई। राजनीतिक हार से जमींदार ने धार्मिक पलडे को अपने हाथ में लेकर उन मठों की स्थापना की जहाँ, एक ओर खुले आम अपने अनैतिक व्यवहार तथा विचारों को प्रकट कर सकते थे तो दूसरी ओर सामान्य जनता पर अपना अधिपत्य भी जमा सकते थे। जमनिया के मठ का निर्माण भी इन्हीं जमींदारों द्वारा हुआ था। उपन्यासकार के दृष्टि से "जमनिया का मठ भारतमाता की पीठ पर पक्षपात का जहरीला फोड़ा था।"[2]

ऐसे मठों का निर्माण अधिकतम जमींदार पोलिस से काफी दूर पर ही किया करते थे। जमनिया मठ के आस पास पोलिस का अड्डा समीप न था ----- "पश्चिम के तरफ पैंतालिस मील दूर था और पूरब तरफ नदी के उस पार बारह मील पर।"[3] एक तरफ पुलिस से दूर इन मठों का निर्माण हुआ था, तो दूसरी ओर मठाधीपति के सिद्धि के पहचान की जमींदार लेख ही दिया करते थे। जमनिया के बाबा के सिद्धि की इसी तरह -- "सारे संसार में मशहूर हो गई। लाखों दिलों पर उनका चमत्कार असर डाल गया।"[4]

---

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 7
2. नागार्जुन : जमनिया का बाबा : पृ. 104
3. नागार्जुन : जमनिया का बाबा : पृ. 9
4. नागार्जुन : जमनिया का बाबा : पृ. 85

फिर भी वे अपने करतूत से परे नहीं आया करते थे "मठ में लक्ष्मी के कलेजे का टुकड़ा कहाँ गया ? वह खुद मैया हुई ।"[1] इसका पता मठाधिपतियों, अधिकारियों को छोड़ कर किसी को न लग सका । केवल यही नहीं विविध प्रकार के अत्याचार भी मठों में हुआ करते थे, जिसकी ओर सरकारी अधिकारियों, नेताओं का ध्यान उसी समय केंद्रीत होता था जब चुनाव समीप रहते थे । उन्हें मठों तथा मठाधिकारियों से कोई संबंध नहीं था । सबसे बड़ी बात यह थी कि -- "नेता लोग पाँच साल बाद ही दिखाई पड़ते थे । पार्टियों के बड़े एलेक्शन के ही समय में नजर आते थे ।"[2] अतिरिक्त इसके उनका अपना सरोकार सामान्य जनता से कभी न था, न है । समय आने पर वही जमीनदार, जिनके हाथों इन मठों का निर्माण हुआ था और वे वहाँ के अत्याचारों से परिचित थे मुकरने में कभी विवश नहीं हुए । इसी उपन्यास के सेठ जी ने अपना आदमी भेज कर प्रदेश की राजधानी में बैठे हुए "श्रम मंत्री तक यह बात पहुँचा दी है कि जमनिया के बाबा से उनका कभी कोई वास्ता नहीं रहा.....।"[3] इस प्रकार मठों में फैले अत्याचार मठ निर्माण के अधिकारियों द्वारा ही संचालित होते थे और समय आने पर ये अधिकारी अपने अधिकारों से वंचित होने की कला में भी सिद्धहस्त थे ।

6.3.2 पंचायत राज्य :

"ग्राम" को पूर्ण स्वतंत्र करने के लिए देश में प्राचीन काल से चली आ रही ग्रामीण गणतंत्र की प्रतीक पंचायत, व्यवस्था ब्रिटिश शासन

---

1. नागार्जुन : जमनिया का बाबा : पृ. 85
2. नागार्जुन : जमनिया का बाबा : पृ. 9
3. नागार्जुन : जमनिया का बाबा : पृ. 120

काल में छिन्न-भिन्न हो गयी थी । स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात उसी उसी प्राचीन व्यवस्था द्वारा गांधी जी आदर्श गांव का निर्माण करना चाहते थे । उन्होंने देश की स्वतंत्रता "ग्राम" से ही माना, उनके विचारों से -- "स्वतंत्रता नीचे से आरम्भ होनी चाहिए । इस प्रकार प्रत्येक गांव एक गणराज्य अथवा पंचायत राज होगा । उसके पास पूरी सत्ता और ताकत होगी ।"[1]

स्वतंत्रता के पश्चात् देश में फिर से पंचायत राज्य की स्थापना की गयी । जिसमें नर और नारी को समानाधिकार दिया गया । 1959 की गांधी जयन्ती से, पंचायतें आरम्भ हुई । 21 मार्च सन् 1968 तक 2,93,598 पंचायतें देश के पांच लाख तेरसठ हजार गांवों में बन गई । नागार्जुन ने इस युगीन चेतना का उल्लेख नई पौध, बाबा बटेसरनाथ, बलचनमा, दुखमोचन, वरुण के बेटे उपन्यासों में किया है । नई-पौध उपन्यास में बिसेसरी युगीन राजनीति से परिचित है, वह बूलो को बताती है -- "यहां जो ग्राम-सरकार कायम हुई है, उसके एगारह ठो मेम्बर है । जनानी भी एक्को गो है ।"[2] उपन्यासकार की दृष्टि में ग्राम-सरकार तथा पंचायत एक ही है ।

(ब) मुखिया :

ग्रामीण जो अपनी ईमानदारी तथा पैनी सूझ-बूझ से प्रसिद्ध रहता है वह -- "गवई पंचायत का बेताज मुखिया समझा जाता है ।"[3]

---

1. विवेकी राय : स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा साहित्य और ग्राम जीवन : पृ० 75 से उद्धृत
2. नागार्जुन : नई पौध : पृ० 127
3. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ० 39

रूपउली गाँव का जीवनाथ गरीब जनता का साथी था । वह सैकड़ों आदमियों का विश्वासपात्र है -- "पाँच पंच इकट्ठे हो और जीवनाथ वहाँ न पहुँचे तो वह पंचायत अधूरी घोषित की जाती है .... गाँव का गरीब से गरीब आदमी जीवू को अपना समझता है ।"[1]

(आ) कार्य :

ग्राम पंचायत के मुख्य कार्यों के अन्तर्गत (1) न्याय, शिक्षा, स्वास्थ, विकास कार्य तथा ग्राम की गलियों और सड़कों को ठीक करना (2) निम्न वर्ग पर होनेवाले अत्याचारों को रोकना तथा (3) फसलों की रक्षा करना मुख्य है ।[2] नागार्जुन ने बाबा बटेसरनाथ दुखमोचन, वरुण के बेटे, उपन्यासों में विविध कार्यों का उल्लेख मिलता है ।

बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में रूपउली गाँव में अशांति का कारण पण्डित चन्द्रमणि का छोटा बेटा है।.वह गुण्डों का सरगाना भी है । गाँव के जीवन में हलचल मचाने के फलस्वरूप, पंचायत ने एक बार उसे मामूली सजा दी -- "दो रूपये का जुर्माना ठोक दिया ।"[3] फसलों को बरबाद करनेवाले अपराधियों को दण्डित कर उनसे बड़ी-बड़ी रकमें वसूल करने का कार्य भी पंचायत का है । टमकाकोइली गाँव में फसलों को बरबाद करने के फलस्वरूप -- "पचास रूपये का जुरमाना वसूल करके पंचों ने छोड़ दिया था ।"[4] ग्राम पंचायतन ने जुरमाने के तौर पर -- "पिछले साल सवा

---

1. नागार्जुन : नई पौध : पृ. 127
2. वागेश्वरी सिंह परिहार : भारतीय ग्रामीण समाज - पृ. 222
3. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 39
4. नागार्जुन : दुखमोचन : पृ. 61

दो सौ रुपये वसूल किए थे । रकम मुन्शी पुलकितदास के नाम डाकखाने में जमा थी । पन्द्रह मन अनाज दुखमोचन के जिम्मे था।"[1] इस रकम से वे कुओं की मरम्मत, गाँव में यूनि बेल का प्रबन्ध टूटी-फूटी कन्या पाठशाला का पुन: निर्माण आदि कार्यों में खर्च किया था । पंचायत के काम तो कहिए । -- "रास्ते की मरम्मत की ही बात होती तो क्या था ? चमारों का कुआँ धँस गया था, ... कन्या पाठशाला की दीवारें तो दुरुस्त थी, छप्पर दो साल से नहीं छवाये गए थे ।"[2] इतना ही नहीं हिन्द हितकारी समाजवालों ने -- "ग्राम-पंचायतों के जिम्मे यह भार सौंपा गया था कि वे मजदूरों से काम लें और उन्हें मेहनताना भी दे ।"[3]

[ह] सड़कों का निर्माण :

टमका कोइली से दक्षिण डेढ़-मील तक कच्ची सड़क गत वर्ष बाढ़ की चोपट में आ गयी थी । दुखमोचन ने कई बार अर्जियाँ भेजकर सरकारी मिशनरी का ध्यान आकर्षित करना चाहा । लेकिन लोकल बोर्ड और लघु-सिंचाई विभाग के दफ्तर में -- "और मामलों की तरह यह मामला भी लाल फीतों की गिरफ्त में रख दिया था । इस नीति से तंग आकर दुखमोचन ने -- "रास्ते पर मिट्टी डलवाने का काम शुरु कर दिया था ।"[4] गाँव के बुजुर्ग लोग तथा पुलकितदास आदि को अच्छा नहीं लगा ।

---

1. नागार्जुन : दुखमोचन : पृ. 116
2. नागार्जुन : दुखमोचन : पृ. 117
3. नागार्जुन : दुखमोचन : पृ. वरुण के बेटे : पृ. 39
4. नागार्जुन : दुखमोचन : पृ. 117

कारण "मजदूर आधी मजदूरी पर मिट्टी कोड़ने और ढोने पर राजी हो गए । खाते-पीते परिवारों से एक एक आदमी बिना मेहनताना के ही काम करने लगा ।" इतना ही नहीं दूसरे गाँव से -- ग्राम रक्षा समिति के जवान मदद के लिए आ पहुँचे ।"[1] गाँव के बुजुर्ग तथा पुलकित दास के जेब में जो पैसा जाता था, उपरोक्त श्रमदान से वह उन्हें मिलना नामुमकिन हुआ, अतः बुर्जुआ लोग इसके विपरित कार्य करने पर तुल गए थे । उपन्यासकार ने वर्ग संघर्ष के प्रतिष्ठा को यहाँ मान्यता दी है । -- "श्रमदान के भव्य रूप का उल्लेख करते हुए नागार्जुन कहते हैं कि-- "सड़क निर्माण के कार्य में सैकड़ो कुदाले कहते हैं कि मिट्टी खोदने में लगी थी । मिट्टी की टोकरी उठाकर एक दूसरे को थमाता, खाली टोकरा उससे वापस लेता । दूसरा मजदूर भरी टोकरी तीसरे को थमाता और खाली टोकरी उससे वापस लेता । तीसरा मजदूर मिट्टी रास्ते पर डाल देता और खाली टोकरी वापस लाता ।"[2] श्रम का यह व्यवस्थित रूप "श्रम कर्तव्य" के रूप में उपन्यासकार ने दर्शाया है । जिसे "सर्वोदयी भी स्वीकार करते हैं, -- "श्रम प्रति मूल्य के लिए नहीं होगा । श्रम, हमारा कर्तव्य होगा और श्रम का फल सारे समाज का होगा ।"[3] इसी तरह पंचायत के अंतर्गत -- "नेशनल कैडेट कोर" की निगरानी में बीसियों हजार स्कूली - कालेजी लड़के कोसी के पूर्वीय और पश्चिमीय -- दोनों तटबंधों का निर्माण करने आये थे, अधिकांश काम इन्हीं के हाथों हुआ था ।"[4]

- -

1. नागार्जुन : दुखमोचन : पृ. 117
2. नागार्जुन : दुखमोचन : पृ. 117
3. ब्रजभूषण सिंह आदर्श : हिंदी के राजनीतिक उपन्यासों का अनुशीलन : पृ. 439 से उद्धृत
4. नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ. 39

यही नहीं पंचायत ने कुछ जातिगत परम्पराओं में भी परिवर्तन किये, जैसे देहाती मजदूरों ने पंचायत में फैसला लिया था कि ऊँची जातवालों के ------ "अपमान जनक तरीकों से न कोई काम ही करेंगे, न कुछ इनाम अकराम ही लेंगे, जूठन में चाहे अमृत ही क्यों न रह गया है, उसे कोई नहीं उठाएगा --"।

इस तरह ग्राम पंचायत ने ग्राम-जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन किए ।

6·3·3 चुनाव तथा विभिन्न पार्टियाँ :

(अ) प्रथम आम चुनाव :

स्वातंत्र्योत्तर भारत में प्रथम आम चुनाव सन् 1852 ई0 में हुए । इस समय तक देश की राजनीति में पूँजीवादी प्रवृत्ति का प्रसार प्रसार हो चुका था । क्रय विक्रय का धंधा, चुनाव में भी आरम्भ हुआ । चुनाव के उम्मीदवार लाखो हजारों रुपये खर्च कर रहे थे । परन्तु चुनावों के परिणामों ने कांग्रेस की सर्वत्र विजय घोषित की और नेहरू की छत्रछाया में कांग्रेस का राज्य स्थापित हुआ । देश की अनगिनत विरोधी पार्टियाँ प्रजा समाजवादी, समाजवादी, हिन्दू महासभा मिलकर भी कांग्रेस का मुकाबला न कर सकी ।

~~नागार्जुन के~~ वरुण के बेटे, नई-पौध, दुखमोचन, रतिनाथ की चाची, बाबा बटेसरनाथ, जमनिया का बाबा उपन्यासों में विभिन्न राजनैतिक पार्टियों के प्रतिनिधियों का उल्लेख नागार्जुन ने किया है ।

1· दुखमोचन : पृ· 80-81

वरुण के बेटे उपन्यास में मोहन माझी स्वाधीनता संग्राम का एक अदना सा सिपाही था, वह 15 अगस्त, 1947 के पहले ही तीन बार जेल की सजाएँ भुगत आया था। ......"अब वह हसिया हथौड़ा-मार्का लाल झंडावाली किसान सभा का थाना सभापति था।"[1] नई पौध उपन्यास में वाचस्पति -- "सोशलिस्ट था।"[2] कांग्रेस, समाजवाद के साथ-साथ प्रजा समाजवाद पार्टी का संकेत भी नागार्जुन ने किया है। अस्त-व्यस्त पार्टियाँ, उनके डाँवाडोल नेता तथा कर्मठ सेवकों में किस तरह के संघर्ष होते हैं इसका विवेचन भी दुखमोचन उपन्यास में हुआ है। कपिल -- "प्रजा समाजवादी पार्टी की थाना कमेटी के दफ्तर में सिंहासन राय से मिलने गया।"[3] वहाँ अतिरिक्त "राय" के जिन पात्रों का चरित्र, उपन्यासकार ने किया है, उसमें चतुरी ठाकुर कर्मठ किसान सेवी भी थे, वे बड़ी देर तक दुखमोचन से बातें करते रहे। ग्राम तथा तालुका की कड़ियों को मिलाने का जो प्रयत्न उपन्यासकार ने किया वह उन दिनों के राजनीतिक अस्त व्यस्तता की ओर संकेत करता है। अतिरिक्त इसके पार्टी में उनके चरित्र पर किस तरह कीचड़ उछालते हैं, वह भी दृष्टव्य है, दुखमोचन उपन्यास के रामसागर को कभी-कभी -- "औरतों का लीडर" कह देते और यह बेचारे को बड़ा बुरा लगता .....पुरानी पीढ़ि के नेताओं का नेता-गीरी के लिए संघर्ष की अनेक घटनाएं, हमें दृष्टिगोचर होती हैं। रतिनाथ की चाची उपन्यास में शुभंकरपुर गाँव में -- "ताराचरण के रूप में नये नेतृत्व का उदय हुआ था। ..... बूढ़े सभाजपति पुराना

---

1. नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ. 30
2. नागार्जुन : नई पौध : पृ. 113
3. नागार्जुन : दुखमोचन : पृ. 90

अधिकार कायम रखने के लिए हाथापाई करके कई बार शिकस्त खा चुके थे।"[1] यह द्वन्द्व उपन्यासों की अन्तर्घटनाओं का अन्तर्द्वन्द्व है। उपन्यासकार की विशेषता एक ओर मानसिक अन्तर्द्वन्द्व में दृष्टिगोचर होती है, तो दूसरी ओर घटनाओं के मूल्यांकन के अन्तर्द्वन्द्व में दिखाई देती है। ताराचरण पात्र इस प्रकार के द्वन्द्व का प्रतीक है -- "ताराचरण आजकल सार्वजनिक प्रवृत्तियों में ज्यादा दिलचस्पी ले रहे थे।"[2] नागार्जुन इस द्वन्द्व दृष्टिकोण से हिन्दी साहित्य में अग्रणीय है। रूपउली जैसे छोटे ग्राम में मार्क्सवाद की पहुँच उपन्यासकार के मन की अपनी उपज है। रूपउली के पार्टी आफिस में जिन कार्यकर्ताओं का संगठन हुआ था, उनमें -- "छ: में दो किसान कम्युनिस्ट थे, एक विद्यार्थी कम्युनिस्ट था, तीनों साधारण किसान कार्यकर्ता। यह सम्पर्क था तो महीने भर का ही लेकिन पाँचों रूपउलीवाले हाजतियों के लिए वह "सत्संग" खूब चेतनाप्रद और स्फूर्तिकारक साबित हुआ।"[3] पार्टी का प्रभाव केवल कार्यकर्ताओं तक ही सीमित न होकर विद्यार्थियों तक तथा साधारण जनता में भी उसका प्रभाव फैला हुआ था। इस बातकी पुष्टि के लिए उपन्यासकार ने इस घटना को अंकित किया है।

कितने पार्टियाँ व कितने नेता, इसका विवेचन नागार्जुन ने बड़ी विचित्र ढंग से किया है। उपन्यासकार ने कुछ ऐसे पार्टियों की ओर संकेत किया है, उसका नामकरण "अनाम" है। लीडर बनने के लिए किसी भी योग्यता की आवश्यकता को उपन्यासकार ने स्वीकार नहीं किया

- -

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ. 168
2. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ. 167
3. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 124

है । बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में सुनरीजा और सतदेव -- "रुपउली के अनपढ़ नौजवानों के स्वयंभू नेता थे । सुबरी साहस का प्रतीक था तो सतदेव परिश्रम का पुतला ।"[1] साहस और परिश्रम के आधार पर भी ग्रामीण समाज में नेता का निर्माण होता है । एक अन्य उपन्यास जमनिया का बाबा में उपन्यासकार ने साधु हो या असाधु ज्ञानी हो या अज्ञानी, मूर्ख हो या पंडित, सत्वोगुणी हो या तमोगुणी सभी लीडर होते हैं । इस उपाधि से किसी को नागार्जुन ने वंचित नहीं किया जमनिया का बाबा उपन्यास में -- स्वामी अभयानन्द का जिस पार्टी से ताल्लुक बतलाते हैं, उसी पार्टी के असर में इधरवाली चीनी मिलों के मजदूर मुद्दत से रहे हैं ।"[2] पार्टी का नामकरण यहाँ नहीं दिया गया है । स्वामी लीडर होने के लिए विवश हुए, सम्भव था उन दिनों की राजनीति का दृष्टिकोण कुछ ऐसा ही था -- "मजदूरों के नेता लोग राजनीति के मंजे हुए खिलाड़ी हुआ करते हैं ।"[3] खिलाड़ियों के लिए हार-जीत का प्रश्न नहीं होता ।

कांग्रेस के प्रतिनिधि बाबू उग्रमोहनदास "वोटिंग से चार छ रोज पहले रुपउली भी आये थे, द्वार-द्वार पर हाथ जोड़कर लोगों से वोट भिक्षा माँगी थी ।"[4] कांग्रेस की टिकट पर पाँच उम्मीदवारों को हराकर रहुआ थाने की जनता के वे प्रतिनिधि थे । एक अन्य उपन्यास हीरक जयन्ती में पंडित शिवदयाल पाठक -- "1952 में विधान सभा के सदस्य चुने गये ।"[5]

- -

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 129
2. नागार्जुन : जमनिया का बाबा : पृ. 120
3. नागार्जुन : जमनिया का बाबा : पृ. 48
4. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 108
5. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ. 19

(आ) द्वितीय आम चुनाव :

सन् 1957 के दूसरे निर्वाचन में कांग्रेस को बहुमत मिला लेकिन विरोधी दल के रूप में "साम्यवादी दल" देश के विभिन्न प्रान्तों में विजयी हुये थे। केवल विधान सभा में साम्यवादी दल को बहुमत मिला तो दक्षिण पंथी जनसंघ को उत्तर भारत में कुछ स्थान मिले। समाजवादी मतभेद के कारण दो दलों में विभक्त हुए "प्रजा समाजवादी दल" और "संयुक्त समाजवादी दल"। सन् 1959 में दक्षिण पंथी स्वतंत्र दल का जन्म हुआ। साम्यवाद का प्रभाव धीरे-धीरे देश के विभिन्न प्रान्तों में पड़ने लगा। फिर भी कांग्रेस को इस चुनाव में भारी सफलता मिली। उपन्यासकार नागार्जुन इस युगीन राजनैतिक उथल-पुथल का चित्रण हीरक जयन्ती तथा जमनिया का बाबा उपन्यासों में किया है। हीरक जयन्ती उपन्यास में पंडित शिवदयाल पाठक कांग्रेस पार्टी के टिकट पर ------ "1957 में भी सवा सौ वोटों के मार्जिन से विधान सभा के सदस्य चुने गये। प्रतिद्वन्द्वी उम्मीदवार 'कम्युनिस्ट' था।"[1] राजस्थान का एडवोकेट -- "लोकसभा की उम्मीदवारी के लिए "स्वतंत्र पार्टी" का टिकट पा गया था। हार गया बेचारा।"[2] नारायण पट्टी के शर्दा मुन्ना महन्त को वहाँ का प्रभावशाली नेता परेशान किये हुए था -- "सोशलिस्ट उसका पक्ष ले रहे थे।"[3] राजनीति में इस प्रकार से काफी हेरा-फेरी हो रही थी औरतों ने भी चुनाव तथा चुनाव प्रचार में भाग लेना आरम्भ किया था। कम्युनिस्ट पार्टी, हरिजन औरतों में पार्टी के प्रचारार्थ तीन छोकरियों को भेजा उन्होंने हरिजन-औरतों में जमकर प्रचार किया, महीने भर

---

1. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ. 19
2. नागार्जुन : जमनिया का बाबा : पृ. 121
3. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ. 84

उन्हीं के बीच रही जिसके परिणाम स्वरूप -- "बाबूजी का अपना आदमी सात सौ वोटों से हार गया ।"[1] इसी उपन्यास में फूलचन्द भी नहीं हारता -- "उसे तो औरतों ने हरा दिया । हाँ, औरतों के वोट मिले होते तो नहीं हारता फूलचंद ।"[2] इस तरह "अखिल भारतीय राष्ट्रीय महासभा" की सदस्यता के लिए -- "पाठक जी को दासजी ने चित्त कर दिया, ... निश्चय ही दासजी की पीठ पर "विक्षुब्ध" राजनीतिज्ञों का हाथ था ।"[3] "विक्षुब्ध" राजनीति से उपन्यासकार की मान्यता मार्क्सिस्ट पार्टी से ही है । मार्क्सिस्ट विचारधारा को माननेवाले रामसागर राय को -- "सुभाष बाबू और स्वामी सहजानन्द से -- राजनीति की आरम्भिक दीक्षा मिली थी ।"[4]

इस प्रकार से उपन्यासकार ने हीरक जयन्ती तथा जमनिया का बाबा उपन्यास में देश में हो रही डावाडोल राजनीतिक स्थिति का वर्णन किया है, यहाँ तक की वयोवृद्ध राष्ट्रीय नेता राजगोपालाचारी -- "स्वतन्त्र पार्टी का शंख इतने जोरों से फूंकने लगे कि जनता पशोपेश में पड गई ।"[5] फिर भी नेहरु के नेतृत्व में कांग्रेस ने सभी पार्टियों को हराकर देश की बागडोर पुनः संभाली ।

6.3.4 गुटबंदी :

पिछड़ावर्गीय विधान सभा के सदस्य श्री बुझावनराम -- "बाबूजी के गुट में थे ।"[6] इसी गुट में सत्तारुढ राजनीतिक दल की

- -

1 तथा 2. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ.69
3. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ.20
4. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ. 142
5. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ. 16
6. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ. 27

अभिनेत्री मंजुमुखी देवी थी -- "उस गुट विशेष की, जिसमें अन्यतम हरो है बाबूजी ।"[1] इस दल में सभी स्वार्थी तथा ढोंगी व्यक्तियों का जमाव था -- "बाबूजी के आदमी एक ओर तो संत विनोबा के चरणों में भूमि का दानपत्र अर्पित करते हैं और दूसरी ओर हरिजन खेत-मजदूरों की झोंपड़ियाँ हाथियों से उजड़वाते हैं ।"[2] उपन्यासकार नागार्जुन इन भ्रष्ट चरित्रवाले नेताओं के प्रति कहते हैं -- "हरिजनों की सेवा के नाम पर ऊँची जाति के धूर्त लोग सरकार को ठग रहे हैं, करोड़ों की रकम खा पचा गए हैं[3] -- जब तक बाबू लोगों के पीछे नकली प्रतिनिधि दुम हिलाते रहेंगे -- "गरीब अछूतों की दुर्दशा में नाम-मात्र भी सुधार नहीं होगा ।"[4] चुनाव के समय नेता को केवल स्वयं के जीतने की ही चिंता नहीं रहती, बल्कि गुट के जीतने की भी । उसे जिताने का भरसक प्रयत्न भी पार्टी गुट करती है । हीरक जयन्ती उपन्यास में "बाबूजी का अपना आदमी था न ? जिताना जरूरी था ।"[5] जीतकर आने पर वरिष्ठ नेता तिकड़मबाजी से किसी की भी चलने नहीं देता, उसके पीछे दुम हिलाते रहने का ही कार्य इन विधायकों का रहता है, उनमें बुझावन राम जैसे स्वाभिमानी व्यक्ति सोचने पर मजबूर हो जाते हैं -- "मैं विधानसभा में आखिर किसका प्रतिनिधित्व कर रहा हूँ ? उन भूमिहीन अछूतों का"[6] नहीं नहीं, वे स्वयं अपना प्रतिनिधित्व आप कर रहे हैं । इनका सम्बन्ध पार्टी की एकनिष्ठता, जनता की सेवा से न होकर स्वार्थ से ही बना रहता है। दल-विशेष द्वारा खरीदे गये इन नेताओं

---

1. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ. 21
2. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ. 51
3. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ. 50
4. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ. 52
5. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ. 68
6. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ. 51

के जीवन का परम उद्देश्य -- "शोषक वर्ग की "जी हुजूरी ".[1] करना है ।

इस प्रकार नागार्जुन ने हीरक जयन्ती उपन्यास में देश में, प्रचलित राजनीतिक गुटबंदी तथा उसमें व्याप्त भ्रष्टाचार का यथार्थ-रूपेण से चित्रण किया है ।

6.3.5 व्यक्ति पूजा :

स्वतंत्रता के पश्चात सभी राजनैतिक दलों का एकमात्र उद्देश्य किसी भी तरह सत्ता में बने रहने का दिखाई देता है । वे इसके लिए -- "दलबदल भी करते हैं । सिद्धान्तों को तिलांजली भी देते हैं ।"[2] सत्ता का संबन्ध वैभव के साथ जुड़ने तथा वैभव का सम्बन्ध काला धन के साथ जुड़ने के लिए एक नया उपाय कांग्रेस पार्टी ने शुरू किया -- वह है व्यक्ति पूजा । जिसे उनके ही "गुट" के जमींदार, व्यापारी वर्ग, विधान सभा तथा राज्य सभा के प्रतिनिधि, पत्रकार तथा साहित्यकार किस तरह से करते हैं, इसका उल्लेख नागार्जुन ने हीरक जयन्ती उपन्यास में किया है । उक्त अवसर पर नेता का अभिनंदन, अभिनंदन ग्रन्थ[3] तथा हजारों रुपयों की "थैली"[4] भव्य समारोह में भेंट दी जाती है ।

उपन्यासकार ने अभिनंदन ग्रंथ की होड "हीरक जयन्ती" उपन्यास में लगा दी है । यह प्रणाली वास्तव में पाश्चात्य प्रणाली है । भारत में इसका सर्वप्रथम अनुमोदन पंडित नेहरू की साठवी वर्षगांठ

---

1. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ. 52
2. धर्मयुग : पृ. 51
3. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ. 3
4. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ. 134

से हुआ है, ः अज्ञेय ने अपनी अंग्रेजी कविताओं की भूमिका ही नेहरू से नहीं लिखवाई बल्कि 1951 में नेहरू की साठवीं वर्षगांठ के अवसर पर नेहरू अभिनन्दन ग्रंथ का सम्पादन भी किया ।[1] सम्भवतः नागार्जुन के मन में इस अभिनंदन चक्र की धुरी बहुत दिनों तक घूमती रही और अन्ततः उसने हीरक जयन्ती उपन्यास के रूप को ग्रथित किया । युगीन राजनीति को देखकर -- "अभिनन्दन का प्रसंग छिड़ते ही किस मिनिस्टर की जीभ लार नहीं टपकाती।"[2] केवल "नेहरू ही नहीं, देश के पचासों बड़े नेता धूर्तों की किन-पत्रिका के शिकार हैं ।"[3] विदेशों में इस प्रणाली का सम्बन्ध केवल राजा, महाराजा, तथा सामन्तों के साथ ही था, चुने हुए प्रतिनिधियों से इन अभिनंदनों का किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं -- "ब्रिटेन, अमेरिका और रूस में आज भी मिनिस्टर की न वर्षगांठ ही मनाई जाती है, न अभिनंदन ही होता है उनका ।"[4] लेकिन इस देश में यह नाटक -- "दस वर्ष और चलेगा ।"[5] क्योंकि "व्यापारी समाज को भी यह सब अच्छा ही लगता है ।"[6] कारण है - "क्योंकि पूजा" यह आठवां मिनिस्टर है जिसका अभिनंदन कर रहे हैं । यह समाज मनुष्य से लेकर प्राणी मात्र को जीवित रखने का दावा करता है । उनका कहना है -- "बन्दरों को चने हम खिलाएं, चींटियों को चीनी हम चटाएं, कबूतरों को दाना हम डालें"[7] तभी वे जीवित रहते हैं । विभिन्न राजनीतिक पार्टियां-कांग्रेसी, सोशलिस्ट, प्रजा-समाजवादी, कम्युनिस्ट, जनसंघी, स्वतंत्र पार्टीवाले सभी अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए -- "हमसे चन्दा ले जाता है ।"[8]

- -

1. नामवर सिंह : कविता के नये प्रतिमान : पृ. 96
2. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ. 1
3. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ. 118
4. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ. 104
5. तथा 6. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ. 104
7. तथा 8. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ. 105

इस तरह वैभवशाली सामंत धन के आधार पर चक्की चलाया करता है. जिस तरह राजनीतिक अखाड़े में "व्यक्ति पूजा" की महत्ता है, उसी तरह आर्थिक अखाड़े में धन वैभवशाली लोगों की -- "जय जहाँ इशारा किया, "अमने] दस-पाँच हजार डाल दिए ।"[1] इस तरह व्यापारी समाज राजनीतिक नेताओं का हितअस्तित्व बनाये रखने में सफल होता है उनकी नजरों में -- "व्यापारी समाज तो सर्वोदय को अपना आदर्श मानता है । सबका उदय होगा तो हम भी ऊपर उठेंगे न ? हम किसी को नाराज नहीं करते हैं ?"[2] इस तरह सामंतीपूजा का वर्णन भी उपन्यासकार ने किया है । अतिरिक्त इसके कुछ राजनैतिक नेता जिन्हें सर्वोच्च स्थान प्राप्त है, वे इस पूजा के विरुद्ध में भी दिखाई देते हैं -- "बाबू नरपतिसिंह बच गये थे । डा०-ना [illegible] पहले उनकी वरसगाँठ बनाई थी मित्रों ने । लेकिन वह न तो जयन्ती थी, न रजत था न स्वर्ण । .....यहीं [illegible] फूल कुसुम कनेर के ।"[3] उपन्यासकार ने इन तथ्यों के विभिन्न जिन स्थितियों का वर्णन किया है, वह भी अद्वितीय है । नई पौध के बौखा पंडित की राय से -- "अंग्रेज बहादुर ही अच्छे । इनसे तो हम भर पाये ...बिना राजा के कहीं कोई राज चला है ।"[4] विवशता की चरम सीमा का रूप नई पौध के [illegible] के वक्तव्य से स्पष्ट होता है -- "अंग्रेज बहुत पसरा था, ई लोग लूटी चलाते हैं पंडिजी ।"[5] स्वाधीनता पूर्व और स्वाधीनता पश्चात नेताओं के राजनीति में कदम रखने के दृष्टिकोण में आमूल परिवर्तन दिखाई देता है। स्वाधीनता के पहले राजनीति में कदम रखने का अर्थ होता था -- "त्याग के लिए तैयार होना । ..... जब कोई

---

1. तथा 2. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ. 105
3. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ. 5
4. नागार्जुन : नई पौध : पृ. 41
5. नागार्जुन : नई पौध : पृ. 41

वकील या डाक्टर आंदोलन से जुड़ता था, तो आर्थिक दृष्टि से उसका नुकसान होता पर सामाजिक दृष्टि से उसे प्रतिष्ठा प्राप्त होती थी ।[1] किन्तु देश के स्वतंत्रता के पश्चात राजनीति में प्रवेश करने का अर्थ -- "सत्ता के भोग का अधिकार स्थापित करना । ..... आजादी के पहले भी जेलों का संबंध आजादी के बाद मंत्रियों से जुड़ गई ।[2] इसलिए एक बार मंत्री बन जाने के उपरान्त उसे ही नहीं उसके परिवार के सभी व्यक्तियों को जिंदगीभर कमाने के लिए कहीं जाना नहीं पड़ता । स्थिति यहाँ तक खराब हुई थीकि -- "राजनेताओं के दोषों को ही गुणों के रूप में समाज स्वीकृति दे चुका था । अतः राजनेता होने का मतलब कुछ छोड़ना का न होकर बहुत कुछ जोड़ना का हो गया था ।[3] उपन्यासकार की सहमति भी इन्हीं विचारों के साथ है । तथा उपन्यासकार ने व्यक्तिपूजा, करचोरी, कालाबाजारी की ओर संकेत किया है ।

6.3.6 हत्या :

उच्च वर्गीय समाज अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए बड़े से बड़े कुकर्मों की रचना करता है । उनके उद्देश्य पूर्ति में आनेवाले कंटकों को दूर करने के लिए "हत्या" जैसे महापाप करने से भी इतराते नहीं है । रूपउनी गाँव में पाठक तथा जैनरायन के विरुद्ध युवकों का संगठित मोर्चा था, इनके संगठन की शक्ति को कम करने तथा अपना प्रभाव स्थायी रूप से बनाये रखने के लिए -- "डेढ़ सौ रुपये पर उन्होंने ग्रेसि की जान का सौदा किया और दो ही रोज बाद बेचारा बांसों की झुरमुट में बेजान

---

1. तथा 2. धर्मयुग : पृ. 31 : हरीन्द्र दवे का लेख

3. डॉ० म.तु.अष्टेकर : कटे घेरे का कवि धूमिल : पृ. 58

पाया गया ।"[1] इस हत्या की खबर गांव में हवा की तरह फैल गई और हत्या के अभियोग में पाठक, जैनरायन और दारोगा चाहते थे कि -- "जीवनाथ और जैकिसुन वगैरह को फंसा दें;"[2] अब उनके इच्छानुसार जीवनाथराम, सरजुग महतो, जैकिसुन यादव लछमनसिंह और गुलरी झा"[3] गिरफ्तार कर लिए गये। इतना ही नहीं इसी बीच, -- "जैनरायन को राह चलते सरेआम दो तरुणों ने पीट दिया ।"[4] एक अन्य उपन्यास हीरक जयन्ती में भी "हत्या" का उल्लेख मिलता है । चीनी मिल के मालिक जमींदार राजा रेवती रंजन प्रसाद सिंह के मैनेजर, मिल में मजदूर-नेताओं का बढ़ता हुआ प्रभाव देखकर -- "हमेशा के लिए लापता कर दिया ।"[5]

इसतरह उपन्यासकार ने उच्च वर्ग में फैली हुई स्वार्थ वृत्ति को यथार्थ रूप में प्रकट किया है । निम्न वर्ग इतना स्वार्थी नहीं है । रूपउली गांव के हत्याकांड में गिरफ्तार हुए युवकों को बचाने के लिए -- "दो चमारों ने अदालत में पहुंचकर उस कत्ल का भंडाफोड़ कर दिया । मुकदमा तो खारिज हुआ ही, उल्टे दनाई पाठक और जैनरायन के नाम वारण्ट निकल गये ।"[6]

उपन्यासकार की सहानुभूति निम्नवर्ग के प्रति दृष्टिगोचर होती है ।

---

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 106
2. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 100
3. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 107
4. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 123
5. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ. 16
6. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 139

6.3.7 नैसर्गिक प्रकोप : बनाम नेताओं की भ्रष्टनीति :

15 जनवरी, 1934 को बिहार में इतिहास प्रसिद्ध भीषण भूकम्प आया, जिसने प्रान्त के बहुत से भूभाग को, विशेषकर -- "चम्पारन, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, सारन, मुंगेर, भागलपुर और पूर्णिया आदि जिले तहस नहस कर दिया। बलचनमा तथा बाबा बटेसरनाथ उपन्यासों में इस प्राकृतिक प्रकोप का वर्णन मिलता है। बलचनमा उपन्यास का बलचनमा, भूकम्प का वर्णन करते हुए कहता है -- "माघ का महीना था, अढ़ाई पहर दिन बीतने पर गड़गड़ाहट सुनाई पड़ी। ..... एक एक छप्पर मच गया उठ, भीत समेत दालान हिलने लगी। पंद्रह-बीस मिनट के लगभग धरती उसी तरह डोलती रही।"[1]

इससे कम से कम-डेढ़ करोड़ की आबादी को नुकसान पहुँचा सैकड़ों जान-माल बर्बाद हुए, कोई 20,000 व्यक्तियों की मृत्यु हुई। पक्के मकानों की बस्तियाँ ढेर हो गईं। 10 लाख से अधिक घर टूट-फूट कर बर्बाद हो गये।"[2] अतिरिक्त-सरकारी कोठे, पोस्ट ऑफिस, थाना कचहरी, महल, अस्पताल, स्कूल बेकार हो गये। । लाखों के करीब कुँए व तालाब नष्ट-भ्रष्ट हुए, i- "देवी देवता के भी डल (मंदिर) तक नहीं बचे।"[3]

रेलें और सड़कें दूर दूर तक नष्ट हो गईं जिससे अनेक भागों में महीनों तक आना-जाना बहुत मुश्किल रहा, -- "जो जहाँ था सो वहीं कैद हो रहा।"[4] सीतामढ़ी और मुंगेर इन्हीं जगहों पर ज्यादती धक्का पड़ा।

---

1. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 160
2. डॉ. पट्टाभिसीता : कांग्रेस का इतिहास : पृ. 579
3. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 161
4. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 161

केवल मनुष्य तथा उसकी सम्पत्ति को ही इससे नुकसान नहीं पहुँचा, इस भूकम्प ने बरगद जैसे विशालकाय वृक्ष को भी टेढ़ा कर दिया आधी जड़ें धरती से बाहर हो गयी ।[1]

इस भूचाल से करोड़ों को नुकसान तो हुआ ही लेकिन भोला के पिता फौदार महनी का भाग जाग गया, "धरती डोली तो ढील का पाट उथला हो गया । उस उथलेपन ने पहले की कछारों को जरा ऊपर कर दिया और अब वे उपजाऊ खेत बन गईं ।[2]

इस तरह नैसर्गिक प्रकोप अधिकांश जनता के लिए शाप बनकर आयी तो दूसरी ओर वरदान भी ।

6.3.7.1 सहायता शिविर :

भूकम्प पीड़ित जनता की सहायता के लिए सरकारी तथा गैर सरकारी कमेटियाँ खोली. जिनमें, "बिहार सेन्ट्रल रीलिफ कमिटी" के प्रधान बाबू राजेन्द्र प्रसाद थे । उनके अपील पर 29 लाख के करीब तो नकद रुपया ही मिला, साथ ही बहुत बड़ी तादात में कम्बल, पहनने-ओढ़ने के कपड़े, चावल, आटा, बर्तन, दवाइयाँ, बाद .. मकान बनाने का सामान भी मिला । जो सब मिलाकर तीन लाख रुपये का होगा।[3] बिहार सेन्ट्रल रिलिफ कमेटी ने हर जिले में एजेन्ट नियुक्त करके सहायता केन्द्र खोले । सरकार और कांग्रेस की ओर से लाखों की रकम तकावी के रूप में बांटे गये । विशेषत: कांग्रेस रिलीफ फंड ने कुएं खुदवाने के लिए

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 6
2. नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ. 23
3. पट्टाभिसितारामैया : कांग्रेस का इतिहास : पृ. 572-भाग-1

लाखों की रकम बांटी । लेकिन यह रकम जनता तक ठीक रूप से पहुँच न सकी । अनपढ़ जनता को लूटने का अच्छा मौका देखकर सरकारी तथा गैर सरकारी मदद के नाम पर अधिकारियों और नेताओं ने खूब खाया । नागार्जुन ने बलचनमा उपन्यास में सरकारी भ्रष्टाचार के यथार्थरूप का वर्णन किया है । कांग्रेस के फूलबाबू गांव में तकावी बांटने के लिये दो ओवरसियर को लेकर पहुँचे, वे एक दिन रुककर चले गये, गरीब तथा अनपढ़ जनता की बस्ती में बल्ली बाबू तथा दास जी ने -- "जिसका जैसा मुँह, जिसकी जैसी आवाज, उसको उतनी ही रकम मिली ।"[1] जिसे देखकर मौसमात कुंती कहती है -- "बबुआ बालो, भुइँडोल क्या हुआ, बड़े लोगों के लिए आमदनी का एगो अउर रास्ता निकल आया "[2] बीस आदमियों के नाम पर सवा पांच सौ रुपये की खैरात मिली गयी लेकिन लोगों को सिर्फ दो सौ छः रुपये ।

भूकम्प का प्रकोप एक ओर नेताओं के लिए आमदनी का जरिया था, तो दूसरी ओर जनता के लिए संकटों का महाजाल । इस नैसर्गिक प्रकोप ने देश की आबोहवा बदल गई -- "नदियाँ, तालाब और पोखर उथले हो गये हैं । उपज कम होने लगी है । मलेरिया का प्रकोप बढ़ गया है, अकाल मृत्यु बढ़ गई है ..... बच्चे सींकिया नजर आते हैं । आम की फसलें .. साल-साल नहीं होतीं ।"[3] भूकम्प[4] बाढ़,[5] अग्निकांड[6] अकाल से किस तरह देश, जनता तथा सम्पत्ति तहस-नहस होती है इसका वर्णन उपन्यासों के अनेक पृष्ठों पर अंकित है ।

---

1. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 164 2. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 165
3. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ. 130
4. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 160-165
5. नागार्जुन : हीरक जयंती : पृ. 52, 117
6. दुखमोचन : पृ. 126-138

नैसर्गिक प्रकोप को नेताओं ने जीविका का साधन किस तरह बनाया इसकी विवेचना भी उपन्यासकार ने हीरक जयन्ती उपन्यास में की है। 1935 में उतरी इलाके में जोरों की बाढ आई। सैकड़ों गांव डूब गए,- "खेतोंवाले मैदान देखते-देखते जल-प्रलय के लीला निकेतन बन गए।"[1] सेवा कार्य के लिए केन्द्रीय रिलीफ कमेटी संगठित हुई। कमेटी का जनरल सेक्रेटरी होने के नाते नरपत बाबू ने लोकसेवा में नई परम्परा की शुरुआत की। कार्यकर्ताओं को इस बात का प्रशिक्षण मिला कि -- "अपढ़ देहातियों को पांच की रकम दो तो दसवाले रुक्के पर अंगूठे का निशान लो, तीस दो तो पचास का रुक्का बनाओ।"[2] उनके विचार से -- "जिनके जीवन का दीप हमेशा औरों के लिए जलता रहा, ऐसे कार्यकर्ता निर्लिप्त भाव से यदि सार्वजनिक निधि में से सौ-पचास ले चले तो इसमें बुराई कैसी"?[3] ऐसी नीति लोकसेवा के "प्रतिमों" की जो एक ओर लोक सेवा करने का ढोंग करता है तथा दूसरी ओर सार्वजनिक निधि का उपयोग अधिकार पूर्ण रीति से करते हैं।

स्वतंत्रता के पश्चात भी "लोक सेवियों" के नीति में बदलाव नहीं आया। आज के लोक सेवी स्वार्थी आफिसरों, नेताओं और व्यापारियों के गठबंधनमेंपल रहे हैं। वे सरकार तथा ग्रामीण जनता को धोखा देने में सिद्धहस्त हैं। अकाल तथा बाढ पीड़ित जनता के लिए भेजी हुई सरकारी सहायता को डाकुओं से लुटवाने की कला में सिद्धहस्त है। अकाल-पीड़ित जनता के लिए गेहूं और मक्का की

---

1. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ. 116
2. तथा 3 नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ. 117

हजारों बोरियाँ देहात की ओर रवाना होंगी उस दिन -- "अनाज की बोरियों से लदी गाड़ियों को अँधेरी रात में डाकू लूट लेंगे"[1] और लदी हुई नावें डूब जाएंगी"[2] डाकुओं के नाम पर हजारों रुपयों का माल -- "नेताओं, आफिसरों और व्यापारियों की जेब में चला जायेगा । "घायल गाड़ीवान" और डूबी नावें, सेक्रेटरियट के आफिसर को दिखाकर फिर से हजार मन अनाज अकाल पीड़ितों के लिए और सुरक्षित कर लेते हैं ।"[3] इस तरह लोक सेवक तथा नेताओं के लिए नैसर्गिक प्रकोप आमदनी का दीर्घकालीन जरिया बन जाता है, और नेतागिरी अभिशाप न होकर आशीर्वाद हो गयी है ।

6·3·8 संयमशील कार्यकर्ता :

उपन्यासकार के मत से हर पार्टी अथवा संगठन कांग्रेस, सोशलिस्ट, कम्युनिस्ट ही क्यों न हो जीवित है, उन कार्यकर्ताओं के आधार पर जो संयमशील हो, पार्टी के प्रति दृढ़ आस्थावान हो तथा पार्टी के लिए जीवन समर्पित करने के लिए तैयार हो, पार्टी इन्हीं के आधार पर जीवित रहती है । नागार्जुन, ने कुंभीपाक तथा उग्रतारा उपन्यास में इसका उल्लेख किया है । कुंभीपाक उपन्यास का नागेसर पढ़ा लिखा है, लेकिन गाँव नहीं छोड़ना चाहता है । वह तन, मन, धन से -- "पार्टी का काम करता है। घर में एक पैसा भी नहीं दिया है आज तक ।"[4] एक अन्य उपन्यास उग्रतारा में नर्मदेश्वर के भाभी के चाचा "पार्टी के अच्छे कार्यकर्ता थे ।"[5]

- -

1 तथा 2· नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ· 52
3· नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ· 53
4· नागार्जुन : कुंभीपाक : पृ· 46
5· नागार्जुन : उग्रतारा : पृ· 33

नागार्जुन के उपन्यासों में केवल पुरुष पात्र ही नहीं स्त्रियाँ भी अपनी सामाजिक और राजनीतिक प्रगति के लिए बिहार भर में मशहूर थी । नई पौध उपन्यास में वाचस्पति की माँ - "लहेरिया सराय के पश्चिम के, एक ऐसे गाँव कल लड़की थी जो अपनी सामाजिक और राजनीतिक प्रगति के लिए बिहार भर में मशहूर थी ।"[1] पार्टी के प्रति लगाव की अनेक घटनाओं का संकेत अन्य उपन्यासों में भी मिलता है । आफिस का पता नहीं फिर भी कार्यकर्ता वहाँ पहुँचने में तत्पर हैं, रूपउली गाँव का दयानाथ -- "किसान सभा के लीडरों से बातें करने जा रहा था । उसे मालूम था कि लंगरटोली में कहीं उनका दफ्तर है ।"[2] इस तरह पार्टी के प्रति कार्यकर्ताओं की अभिरुचि का परिचय उपन्यासों में मिलता है ।

6.3.9 वर्ग संघर्ष :

वर्ग संघर्ष विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है । किन्हीं दो अथवा दो से अधिक वर्गों में जब तक परस्पर स्वार्थों का टकराव न नहीं होता, तब तक नये समाज का निर्माण नहीं हो सकता । समाज में पुरुषों के शोषण से मुक्त होने के लिए स्त्री संघर्ष कर रही है, उच्च जातियों के शोषण से मुक्त होने के लिए अछूत । नागार्जुन के बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे, बलचनमा, रतिनाथ की चाची उपन्यासों में विभिन्न प्रकार के वर्ग का चित्रण हुआ है ।

---

1. नागार्जुन : नई पौध : पृ. 114
2. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 112

वर्ग संघर्ष का आरम्भ स्वतंत्रता के पूर्व हो गया था। किन्तु स्वराज्य के बाद जमींदारी उन्मूलन आदि से निम्न वर्ग में जो आत्म-विश्वास जाग उठा, उसने इस संघर्ष को "वर्ग-संघर्ष" का रूप देकर कहीं-कहीं राजनीति से जोड़ दिया। नागार्जुन के बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे, रतिनाथ की चाची, बलचनमा, उपन्यासों में वर्ग संघर्ष के विभिन्न रूपों का वर्णन किया है।

बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में वर्ग संघर्ष का कारण जमींदारों द्वारा सार्वजनिक भूमि को -- "बरगदवाली जमीन और पुरानी पोखर को चुपचाप बन्दोबस्त में ले लेना है।"[1] ग्रामीण जनता के कल्पना के परे था कि -- "कोई पुरानी पोखर को खरीद लेगा या बन्दोबस्त ले लेगा और उसमें धान उपजायेगा या किसी दूसरे व्यक्तिगत काम में उसका उपयोग करेगा।"[2] गाँववाले उनके इस नीति को सहन न कर सके पुरानी पोखर के कछार में एक दिन -- "तड़के दो हल चलने लगे। बस्ती भर में सनसनी दौड़ गयी। जैनरायन का छोटा भाई फन्नी मिंडे पर स्वयं मौजूद था।"[3] उसी की निगरानी में जुताई शुरू हुई। दयानाथ को पुरानी पोखर की कछार पर हल-बैल दिखाई पड़े साथ ही -- "दस-पन्द्रह जने एक ओर और तीन-चार आदमी दूसरी ओर .... हाथ उठा-उठाकर बातें कर रहे थे।"[4] धीरे-धीरे दयानाथ के पीछे पचास एक आदमी इकट्ठे हो गये हैं। "फणीन्द्रनाथ झा" के पीछे चार-पांच आदमी। अपने पक्ष में बढ़ती हुई संख्या को देखकर दयानाथ ने फणीन्द्रनाथ झा" को समझाया -- "नाहक झगड़ा-फसाद बढ़ेगा, तुम

- -

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 6
2. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 115
3. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 115
4. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 116

अपने हल-बैल वापस ले जाओ फनी । काफी धन-सम्पदा भगवान् ने तुम लोगों को दि है, पोखर की कछार पर समूची बस्ती का अधिकार है --"[1] लेकिन फणीन्द्रनाथ हल-बैल ले जाने के लिए तैयार नहीं हुआ, दूसरी ओर ग्रामीण जनता भी फणीन्द्रनाथ के विरोध में संगठित होने लगी । सभी एकमत थे --- "कछार में या भिण्ड पर हल नहीं चलेगा ।"[2] दयानाथ ने फिर पूछा -- "नहीं चलेगा"? नहीं-नहीं नहीं । जोरों की आवाज आये .. उसी भीड के के अन्दर से ।"[3] दयानाथ ने देखा सभी तरह के लोग हैं उनमें ..... खेतिहर हैं, बनिहार है, हलवाहे - चरवाहे हैं"[4] उपन्यासकार का संकेत इस ओर भी है, कि एक ओर यह वर्ग संघर्ष भूमि बुर्जुआ तथा सर्वहारा के बीच है तो दूसरी ओर ऊँची जाति तथा निम्न जाति में भी । निम्न जाति की बढ़ती हुई संख्या को देखकर "दूमना" में भी आत्माभिमान जागृत होता है । फणीन्द्रनाथ के गालि देने पर उसकी भौंं तन जाती है और वह कड़ककर बोलता है -- "मालिक, गाली मत दीजिए हमको । हाँ ।"[5] और संगठित शक्ति से घबराकर बैलों को हाँकता हुआ वह गाँव की ओर चला जाता है । फणीन्द्रनाथ संगठित शक्ति के सामने -- "थकता हुआ, कुम्हलाता हुआ, घर की ओर अपना रुख कर चुका तो हलवाहों ने हमें हलों को कन्धे पर उठा लिया और कछार से बाहर निकल गये ।"[6]

---

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ - पृ. 116
2. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ - पृ. 116
3. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ - पृ. 116
4. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ - पृ. 116
5. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ - पृ. 117
6. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ - पृ. 118

बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में नागार्जुन ने जिस वर्ग संघर्ष का प्रस्तुत किया है, वह संघर्ष क्रांतिकारी संघर्ष है, हिंसात्मक संघर्ष है, अहिंसात्मक नहीं । वर्ग संघर्ष की बुनियाद स्वेच्छाचारी उच्च वर्ग तथा तरुण नौजवानों के बीच है । यह संघर्ष जीबू भाई के नेतृत्व में -- "उच्च वर्ग के स्वेच्छा चरित्रों से अपनी हिफाजत के लिए तानाशाह अधिकारियों से वाजिब हक हासिल करने के लिए बीसों देहाती तरुण आगे निकल आये ।"[1]

इस प्रकार से जिन मोर्चों का संघटन हो रहा था, वे क्रांतिकारी मोर्चे थे । जीवनाथ और जैकिसुन आदि ने अच्छी तरह समझ लिया कि गाँव को -- "अदालत के भरोसे इन दुष्टों से छुटकारा नहीं मिलेगा ..... जनबल को अच्छी तरह संगठित कर लेना चाहिए । रूपउली के इस जन आन्दोलन को जन-संघर्ष की जिला और प्रदेश व्यापी धारा से मिला देना होगा ।"[2] सर्वव्यापी आंदोलन के इस रूप से ज्ञात होता है, कि देश किन परिस्थितियों से गुजर रहा है । नागार्जुन ने अपने मध्यकालीन उपन्यासों में इन्हीं विषयों का अनुमोदन किया है ।

6.3.10 वर्ग संघर्ष का उभरता रूप :

वर्ग संघर्ष का उभरता हुआ रूप "वरुण के बेटे" उपन्यास में मिलता है । गढ़पोखर के स्वामित्व को लेकर जमींदार के विरुद्ध मछुए

- -

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 131
2. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 123

जाग उठते हैं । उनके संघर्ष का स्थान "मलाही" गाँव है । मलधरा के जमींदार गढ़पोखर की नये सिरे से बंदोबस्ती देकर ज्यादा रकम बटोरना चाहते -- "उनमें से एक शासक दल का पुराना और प्रतिष्ठित नेता भी था ।"[1] किसान सभा का थाना सभापति मोहन माँझी के नेतृत्व में मछुए संगठित होने लगे ।

6·3·11 वर्ग संघर्ष का उग्र रूप :

वर्ग संघर्ष का उग्र रूप मलाही गोढ़ियारी गाँव में दिखाई देता है । पूँजी-पति तथा श्रमिक, वर्ग-संघर्ष को उस स्थान पर पहुँचा देते हैं -- जहाँ से क्रांति का उद्भव होता है । मछुए इस बात पर अड़े थे -- "गढ़पोखर पर हमेशा अपना अधिकार रहा है । जमींदार जलकर लेता था हम देते थे । नया खरीददार दूसरे तीसरे गाँव के मछुओं को मछलियाँ निकालने का ठेका देता चलेगा और हम अपने पुश्तैनी अधिकारों से वंचित होकर रूलते फिरेंगे ।"[2] इस तरह श्रमिक अपने अधिकारों से वंचित होने के लिए तैयार नहीं । सभी एक मत थे कि -- "यह पानी सदा से हमारा है, किसी भी हालत में हम इसे छोड़ नहीं सकते । ····· गरोखर का पानी ····· हमारे शरीर का लहू है । जिन्दगी का निचोड़ है ।"[3]

मोहन माँझी ने इन्हें अधिकारों के प्रति संकेत किया है । और उन्हें संगठित होने की प्रेरणा देते हुए आश्वासन देता है -- "रोजी-

---

1· नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ· 32
2· नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ· 32
3· नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ· 37

रोटी के साधनों की रक्षा के लिए संघर्ष करनेवाले मछुए असहाय नहीं है. उन्हें आम किसानों और खेत मजदूरों का सक्रिय समर्थन प्राप्त होगा .....।"[1] यह युगीन चेतना जनतंत्र का ही परिणाम है, जिसमें मनुष्यमात्र को समान अधिकार दिये है, और वर्गहीन समाज की स्थापना पर बल दिया है । जमींदारों को सचेत किया जा रहा है कि सामन्ती प्रथा का युग बीत चुका है । जमींदारों के अत्याचार एवं अनाचारों का अंतिम चरण है । साधारण मनुष्य भी उन पर होनेवाले अत्याचारों के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए तैयार है ।

6.3.12 वर्गसाम्य :

परिवर्तन की आवश्यकता तब नहीं, जब सर्व साधारण जनता समान हो । बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में बाबा बटेसरनाथ कहते हैं, उस बार -- "फसल अच्छी आयी थी किकिसानों के रोये-रोये से खुशी का फव्वारा छूटता था । ..... कम से कम साल भर तो लक्ष्मी महारनी का पदमासन इसी इलाके में रहेगा । राजा खुश था । जमींदार खुश थे । गृहस्थ खुश थे । बनिहार और मजदूर खुश था । अधिक भिक्षा की आशा से भिखमंगों की भी खुशियों का ठिकाना नहीं था । तीर्थों के पंडे और मंदिर के पुजारी उत्साह से भर उठे थे उनकी श्रद्धा भक्ति गहरी हो आयी थी"।[2] एक अन्य उपन्यास-'बलचनमा' में भी वर्ग समानता का वर्णन मिलता है ।[3]

उपन्यासकार के अनुसार यह तभी सम्भव है, जब खेती अच्छी होती है ।

---

1. नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ. 107
2. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 36
3. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 137

6·3·13 वर्ग चेतना :

रतिनाथ की चाची तथा बलचनमा उपन्यास में वर्ग-चेतना का उल्लेख मिलता है । धनिक समाज का दृष्टिकोण-संस्कृत अध्यापक, पाठशाला तथा विद्यार्थियों की ओर अत्यन्त हेय था । समाज में अपनी प्रतिष्ठा को बनाये रखने के लिए दान धर्म तो उन्हें करना ही पड़ता था, लेकिन वह दान -- "सड़े-सूखे आम, रद्दी चादरें, खुरदरे कम्बल, घुन-लगा अनाज, फटी-पुरानी किताबें -- "[1] होती थी । जिसका उपयोग किसी भी प्रकार से सम्भव नहीं था । जिसके फलस्वरूप धनिक समाज के प्रति क्रांतिवादी विचारधारा जन समूह में फैल रही थी ।

उपन्यासकार के दृष्टिकोण में बेगारी की दशा दुरदर्शनीय है । श्रमिक वर्ग का रक्त किस तरह खौलने लगता है, इसका उदाहरण बलचनमा उपन्यास में दिखाई देता है । बलचनमा की -- "सारी देह पसीने से तर हो होकर सूख चुकी होती । और इतने पर भी जब मालिक की गाड़ी प्लेटफारम छोड़कर खिसकने लगती तो दो पैसा मेरी ओर फेंककर वह कहते - ले, मुढ़ीया चना खरीद लेना, फांकते-फांकते घंटे भर में घर पहुँच जायगा ।"[2] यह दशा थी सामाजिक व्यवस्था की ।

सामाजिक व्यवस्था की तरह उन दिनों जन-जीवन के पहनावे में भी एक तरह से क्रांति का उद्भव कर रहा था । बलचनमा

- -

1· नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ· 125

2· नागार्जुन : बलचनमा : पृ· 12

को रामखेलोना के रूप -- "छँटे हुए बाल, आधी बाँह की कमीज, धारीदार नेकर, अनोखा लगता । इरखा [ईर्ष्या] होती कि मैं भी [बलचनमा] भी किन्हीं मलिक बाबू के साथ कुछ दिन किसी शहर में जाकर रह आता ।"[1] बुर्जुआ वेश पहनने के लिए श्रमिक हर समय लालायित रहता था ।

नागार्जुन, जीवन में परिवर्तन होना आवश्यक समझते हैं । सभी लोग -- "अपनी रुखी सुखी जिन्दगी में हेर-फेर चाहते हैं । बारहों महीना जाड़ा ही पड़ता रहे ..... । कभी रात न हो, सुबह शाम न हो, हर हमेशा दुपहरिया ही तपती रहे तो कैसा लगेगा ।"[2]

उपन्यासकार के दृष्टि से परिवर्तन के बिना जीवन एकांगी है अधूरा है । परिवर्तन केवल विचारों में ही नहीं, समाज में भी होना अवश्यम्भावी है । परिवर्तन की दिशा, परिवर्तन का रूप और स्वयं परिवर्तन ही एक प्रकार से चलना है ।

हिंसात्मक तथा अहिंसात्मक आन्दोलन की घटनाओं का समावेश नागार्जुन ने वहाँ उपस्थित किया -- बाढ, पीड़ित जनता जहाँ त्रस्त होकर माना के डिब्बों में पड़ाव डाले हुए है । सरकार तथा सरकारी अफसर के हिंसक व्यवहार को देखकर कामरेड रामदहिन बोखला उठता है ... "कामरेड, मैं आज दुमका ^ गया था स्टेशन में । ईंट से ईंट

---

1. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 36
2. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 115

बजा दूँगा । .... इन्होंने आखिर समझ क्या रखा है ? ... मुसीबतों की मारी जनता के साथ इनका यह सलूक । पिछले पाँच-सात दिनों के भीतर जिलाधीश (डी. एम.) को हमने चार बार तार किया है, दो बार चीफ मिनिस्टर को । पता, नहीं, किस जहन्नुम में जाकर गर्क हो गए वे तार ! ....[1]

मोहन माँझी के विचार, कामरेड के विचारों से सहमति न हो पाये । मोहन माँझी ने कामरेड के मुँह पर हाथ लगाकर खामोश रहने की ओर इंगित किया -- "कामरेड माँझी के हाथ का मजबूत पंजा उस क्षुब्ध-क्रुद्ध युवक के फड़कते होठों को अच्छी तरह अपने काबू में ला चुका था ।"[2] उपन्यासकार ने हिंसात्मक और अहिंसात्मक घटनाओं में जिस रेखा को निर्धारित किया है, वह केन्द्र बिन्दु अहिंसात्मक आन्दोलन की ओर है ।

रेलवे कर्मचारियों की ज्यादती से केवल मोहन माँझी और कामरेड रामदहिन जैसे राजनीतिक नेता ही नहीं खुरखुन, जो केवल कर्मचारी मात्र था, घटना से उद्वेलित हो उठा, उसकी जिह्वा तेज छुरी की तरह चल पड़ी -- "अरे ।" अब खुरखुन गरजा अपार रोष खौल उठा उसका -- "तुम लोगों की यह हिमाकत ! ..... तुम्हें रोकने-टोकनेवाले मर नहीं गए हैं..."[3] क्रोधित खुरखुन का खून खौल उठा, आत्मनिर्भर खुरखुन ने, रेलवे कर्मचारियों को चुनौती दी, "एक आध हममें से मरेगा तो मरेगा, हम भी मिलिटरी को मजा चखा देंगे ।"[4] यह व्यवहार था खुरखुन का । उपन्यासकार नागार्जुन ने विचारों के संतुलन को यहाँ उपस्थित किया है । घटना विशेष के आधार पर उपन्यासकार निर्भर होकर, उसका समाधान करने में तत्पर है ।

---

1. तथा 2. नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ. 91
3. नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ. 93
4. नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ. 96

एक ओर जिस विशेष घटना का उल्लेख राजनीतिक चेतना के सम्बन्ध में उपन्यासकार नागार्जुन ने किया है, वह संदर्भ है रिक्शेवाला तथा दिवाकर शास्त्री के रुप में अवतरित हुआ है। दुश्मनी के लिए रिक्शेवाला से सम्पादक दिवाकर शास्त्री की झड़प हो जाती है। रिक्शावाला नौजवान था। तैश में उभर पड़ आया। मगर दिवाकर शास्त्री पी॰ ए॰ वाले कमरे के अन्दर जा चुके थे। चपरासी हाथ पकड़कर उसे समझाने लगा ----- "मिनिस्टर की कोठी है, जोर-जबर्दस्ती नहीं चलेगा, जितना मिला, उसी में संतोष करो बेटा .... जाओ।"[1] रिक्शावाला गंभीर स्वर में बोला -- "मगर चाचा, यह तो भारी जुलुम है न ? मगर मिनिस्टर के यहाँ तो बेइन्साफी नहीं चलनी चाहिए।"[2] वर्ग साम्य तथा वर्ग हितैषी का रुप भी इसी घटना के अन्तर्गत हमें प्राप्त होता है। अधेड़ चपरासी के पूरी हमदर्दी थी रिक्शेवाले के प्रति। वह बात को खत्म करना चाहता है, उसने फुसफुसाकर कान में कहा -- "सड़क पर कहीं दिखाई पड़े तो पकड़ना, यहाँ देखते हो न, मिलिटरी का पहरा है ....."[3] इस तरह रिक्शेवाला तथा चपरासी के भीतर जिस समता का संतुलन उपन्यासकार ने किया, वह वर्ग साम्य चेतना की है। रिक्शेवाले को समझाता हुआ आगे कहता है -- "अरे इन्हीं कोठियों के अन्दर तो अन्याय पनाह लेता है आकर। सरकार अभी इन्हीं कोठियों और बंगलों में कैद है, उसे तुम तक पहुंचने में दस-बीस वर्ष लग जाएंगे अभी।"[4]

उपन्यासकार का निष्कर्ष तथा उनकी भविष्यवाणी वास्तव में ऐतिहासिक सत्य प्रतीत होती है।[5]

1॰, 2॰ तथा 3॰ नागार्जुन : कुंभीपाक :पृ॰35
4॰ नागार्जुन : कुंभीपाक : पृ॰ 36
5॰ इसी प्रकार "उग्रतारा का बाबा" में शहर के कारखाने की हड़ताल तथा "दुखमोचन" में घरेलू मजदूरनियों की हड़ताल निम्नवर्ग में फैलते आक्रोश की विस्फोटक स्थितियों को उद्घाटित करते हैं।उग्रतारा का बाबा : पृ॰14,49 दुखमोचन : पृ॰70,80, 126

सप्तम अध्याय

द्रव्य : आर्थिक सौंदर्य

7. नागार्जुन के उपन्यासों में ग्राम : आर्थिक संदर्भ

7. ग्राम के आर्थिक संदर्भ का विश्लेषण भी उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना इसके सामाजिक, राजनैतिक आयामों का । विशेषकर नागार्जुन के उपन्यासों में प्रस्तुत ग्राम कहीं भी भारतीय अर्थतंत्र और उससे उत्पन्न समस्याओं की उपेक्षा नहीं करता । ग्राम भारतीय अर्थ तंत्र के सामन्तवाद से पूंजीवाद में परिणती का सबसे बड़ा शिकार रहे ; और ग्रामीण जीवन की [redacted] विसंगतियों के लिए यह आर्थिक प्रश्न बहुत दूर तक उत्तरदायी रहे हैं । अंग्रेजों ने जिस ग्रामीण आर्थिक स्वाधीनता को छिन्न-भिन्न किया था, वह स्वातंत्र्योत्तर भारती की सुनियोजित नीति किन्तु उसके भ्रष्ट कार्यान्वयन के कारण उत्पन्न विसंगतियों का शिकार होती रही, और कभी अपने मूल स्वरूप को लौटने का प्रश्न भी नहीं उठा सकी । नागार्जुन ग्राम के संदर्भ में इस आर्थिक दुर्व्यवस्था का सविस्तार चित्रण करते हैं, और किसानों के दु:सह दारिद्रता के लिए जिम्मेदार भौतिक वे मानवीय कारणों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं । इस प्रक्रिया में उनका आर्थिक दृष्टिकोण भी स्पष्ट होता है । अध्ययन की सुविधा के लिए प्रस्तुत विवेचन को सातवर्गों में विभक्त कर सकते हैं :-

1. विभिन्न व्यवसाय 2. श्रमिक तथा उसकी मज़दूरी
3. आधुनिकीकरण : [redacted] स्वतंत्रतापूर्वक आर्थिक स्थिति
4. पंचवर्षीय योजना तथा आर्थिक संघर्ष
5. ग्रामीण आर्थिक व्यवस्था का असंतुलित रूप
6. [redacted] असन्तुलित अर्थ और समन्वय कार्य
7. साहित्य और उसका व्यावसायीकरण
8. नागार्जुन का आर्थिक दृष्टिकोण ।

7.1 विभिन्न व्यवसाय

ग्राम में प्रचलित विभिन्न व्यवसायों के अन्तर्गत उपन्यासकार ने कृषि व्यवसाय, मछली व्यवसाय, महाजनी व्यवसाय तथा ग्रामीण कोल्हू का विवेचन किया है ।

7.1.1 कृषि व्यवसाय

भारत कृषि प्रधान देश है, कृषक का जीवन पूर्णतया: उसके बैल और हल पर आधारित रहता है । जिसतरह आन्ध्र प्रदेश में "ओंगोल[1] (प्रकाशम्) के बैल संसार प्रसिद्ध है, उसीतरह "सीता मढ़ी" तथा "परगना-बछौर"[2] के बैलों की गिनती प्राय: संसार के श्रेष्ठ बैलों में की जाती है । उपन्यासकार ने मध्यवर्गीय तथा मध्य-उच्च वर्गीय सामाजिक अर्ध-संतुलन की अवस्था को कृषि तथा कृषक की अवस्था से समता प्रदान की है ।

भारतीय कृषि तथा कृषक अवस्था दयनीय स्थिति में विद्यमान है । जमीन के छोटे-छोटे टुकड़ों पर तो उनका अधिकार तो है, परन्तु वह पेट की आग को बुझाने के लिए पर्याप्त नहीं । ग्रामीण प्राय:कालीन वातावरण उस दिशा की ओर संकेत करता है कि कृषक सामूहिक रूप में उन छोटे छोटे भूमिखंडों को जोतने के लिए निकल पड़ते हैं ; "नौगछिया" ग्राम के कृषक --"बैलों को आगे किये कंधे पर हल संभाले अपनी-अपनी दिशा में जाते हैं ।"[3]

---

1. नागार्जुन : दुखमोचन पृ- 77
2. " " "
3. " नई पौध पृ- 62

नागार्जुन ने दुखमोचन उपन्यास में भी इस बात की ओर संकेत किया है। कृषक परिवार "पशुपालन" में भी अत्यन्त शोचनीय दशा से ओतप्रोत है। दुखमोचन के पास --"बैल बस दो थे -- तन्दुरुस्त और नाटे कद के। सूरत उनकी सँवलिया थी। हल खींचने में दोनों बहादुर थे।[1] × × × × × × × × × × × "परगना" - "बछौर" के तेज़-तर्रार बैल थे।" तथा- पाँच सौ पचास रुपये गिनकर सीतामढ़ी के मवेशी हाट से दुखमोचन और वैशाली माधव इन्हें लाए थे।"[2]

विभिन्न प्रान्तों से बैलों को लाकर उसे एकट्ठे रूप में हल में जोतकर काम लेना, यह प्रथा कृषक समाज की अत्यन्त प्राचीन प्रथा है। कृषक के लिए बैल जितने महत्वनीय है, भूमि भी उसी तरह महत्वनीय है। कड़क्ती धूप में वे ही बैल काम आते है, जो भारी-भरकम तथा स्वस्थ्य हो, कारण - भूमि का सूखापन है। उपन्यास कार के दृष्टिकोण से -"जिन खेतों में धान उपजता है, बैसाख-जेठ की पहली जुताई के समय उनकी मिट्टी बेहद कड़ी जाती है।"[3] हलवाहा हो, मजबूत बैल हों, तेज और नुकीलीफार, हो तभी ये खेत जाते जा सकते हैं।"[4] ऋतुपरिवर्तन का प्रभाव क्रम- कृषि, कृषक और उसके बैलों पर किस प्रकार से पड़ता है, इसकी विवेचना उपन्यासकार ने की है।

भारतीय कृषक की कृषि तथा उसके बैलों की दशा का वर्णन, हिन्दी साहित्य के उपन्यास क्षेत्र में सर्वत्र विद्यमान है। उपन्यास सम्राट प्रेमचंद ने इस दिशा की ओर विविध दृष्टियों से अपने विचार उपन्यासों विशेषकर [गोदान] में प्रगट किये हैं।

---

1. नागार्जुन : दुखमोचन पृ-77
2. " " "
3. " " "
4. " " "

कृषि ने जिस नये रूप को ग्रहण किया वह रूप उसका मशीन मया "औद्योगिकरण" रूप है। "ट्रैक्टर", कृषि के विविध यंत्रों ने जिस नये मोड़ को अपनाया, वह मोड़ "मानव शक्ति" पर"यांत्रिक शक्ति" का अधिकार ही है। इस आधुनिकीकरण ने बैलों को निरर्थक तथा अनावश्यक बना दिया है। वे एक मात्र यौन चेतना के रूपान्तरित होकर रह गये हैं। इन्हीं यंत्रों ने -"धरती का कलेजा फाड़कर मोती उगाने के लिए दो मशीनी वराह-अवतार [ट्रैक्टर] आ गए और धान-मूंग-मक्का जैसी फसलों का अम्बर लग गया — "[1]

आधुनिक कृषि का यह रूप एक ओर यांत्रिकरण पर निर्भर है, तो दूसरी ओर फर्टिलाइजर के विविध रूपों पर। नागार्जुन ने औद्योगीकरण की प्रक्रिया के अन्तर्गत कृषि के औद्योगीकरण पर विस्तार से प्रकाश डाला है।

अ. खेती के विविध प्रकार :-

उपन्यासकार नागार्जुन ने खेती के विविध प्रकारों को किस प्रकार से संजोया, इसका मूल्यांकन रतिनाथ की चाची, नई पौध तथा दुखमोचन उपन्यासों में दृष्टिगोचर है।

आ. घरेलू खेती :-

ग्राम के निम्न मध्यवर्गीय तथा मध्यवर्गीय परिवारों के अधिकांश लोग "अपनी-अपनी मड़ैया के पिछवाड़े या अलग-अलग झिंगनी, रामझिंगनी, ठरिया, गेनहरी, पोरा, घेरा, करैल, ओल, अरकौंछ, तेकुना, कम्बाउर, हल्दी, अदरख, मिरचाई, बैगन, कदीमा, कुम्हर, सजमन"[2] लगा लेते है। अतिरिक्त इसके सावन महीने के आरम्भ होते ही रामेसरी ने अपनी

---

1. नागार्जुन : हीरक जयन्ती पृ- 58
2. " बलचनमा पृ- 117

अपनी बाड़ी में तरकारियों के पौधे लगा रखे थे --"भिंडी, तरोई, बैगन, नेनुआ ।"[1] केवल यही नहीं प्राकृतिक उपज में - "अरुई और सूरन आप ही आप उग आये थे ।"[2] रतिनाथ की चाची उपन्यास में चाची भी अपने आँगन के [redacted] पश्चिमवाली डीह पर मौसम के मुताबिक --"भिंडी, बैगन, मिर्ची [3] वगैरह उपजाया करती है । केवल इतना ही नहीं कुएँ के आगे मचान पर --"सफेद और बैंगनी सेम की बेलें लतरी हुई थी । पत्तों, फूलों और फलियों से लता-वितान ढका पड़ा था । जरा हटकर क्यारियों में पात-गोभी के बीस-एक मुकुटनुमा पौधे इठला रहे थे ।"[4] तथा "बैगन के बौने झाड़ों पर बुढ़ापा उतर आया था । पके-पोढ़े दानेदार गुच्छों के वजन से भी सौंफ की डंठलें झुकी नहीं थी ।"[5]

मौसमी खेती से, बलचनमा, गौरी, रामेसरी, दुखमोचन और माहे जैसे परिवारों के --"रसोई में दाल का खर्च नहीं, नित्तह साग-सब्जी - नित्तह तीमन-तरकारी" ।[6] जिससे इन्हें "एक्का चीज नहा ।"[7] अतिरिक्त इसके घर का फुटफाल खर्च भी निकल जाता है ।

साग-सब्जी के अतिरिक्त सावनऋतु में खाली डीह पर केसर, तारा, मधुरी और गेंदा[8] के पौधे और दालान के आगे रंग-बिरंगे फूलों

- -

1 तथा 2. नागार्जुन : नई पौध पृ - 84
3. " रतिनाथ की चाची पृ- 31
4 तथा 5 " दुखमोचन पृ- 105
6 तथा 7 " नई पौध पृ- 88
8. " " पृ- 84

-""तगर, कुमुदनी [छोटा कचनार] श्वेतकमल, इन्द्रकमल, अड़हुल, कनेर, करबीर"[1] आदि फूलों तथा शरदऋतु में खिलनेवाले तीराके फूल जो -- "अगहन तक पूजा के काम आते हैं "[2] का भी उल्लेख उपन्यासकार ने किया है ।

-ड़. बागवानी

खेती के अतिरिक्त विविध प्रकार के फलों की बागवानी का भी उल्लेख उपन्यासकार ने किया है -- "खेती-गिरस्ती से जो समय बच जाता है उसका अधिकांश उपयोग "जुआ" बगिया की देखरेख में लगा देता ।" राधा साहब के बाग से --"कागजी नीबू का एक कलम ले आया था ।--- एक पेड़ अमरूद का लगाया था । बीजू आम के दो पेड़......थे । एक झाड़ गुलाब जामुन की भी लगायी थी ।"[3] दुखमोचन उपन्यास के ललित पंडित ने भी देवी-मंदिर से कुछ हटकर पश्चिम की ओर अपनी बगीया में --"लँगड़ा, किसुनु भोग, बम्बई, कलकतिया, जर्दालू, शाह-पसन्द, गुलाब-खास, सुकुल और सीपिया आमों के कलमी पौधे "[4] -- छाँट छाँट कर लगाये थे । रतिनाथ के नाना का पचास बीघों का बाग था --"कलमी ही कलमी आमो का । बंबई, मालदह, किसुनभोग, कलकतिया, फजली, दमड़ी, जर्दालु, साहपसिन [शाह पसन्द], सुकुल, सीपिया, कपुरिया, दुर्गालाल का केरवा, बछुआ, राढ़ी, भदई, मोहन ठाकुर की भदई ।"[5] पाँच पेड छोड़कर चुम्मनखा बाकी बाटकों के हाथ बेच देते थे, जिससे --"चार सौ, पाँच सौ और कभी छः सौ"[6] आमदनी होती थी ।

ग्रामीण जनता में अर्थोत्पत्ति के लिए आम और आम का बगीचा एक साधन था और आम के शौकिया लोगों के लिए --"एक अच्छी फसल थी ।"[7]

---

1. नागार्जुन : नई पौध पृ- 85 2. नागार्जुन : उग्रतारा पृ- 108
3. " : बाबा बटेसरनाथ पृ- 74 4. " दुखमोचन पृ- 168
5. " : रतिनाथ की चाची पृ- 151
6. तथा 7 " : " " " पृ- 21

7.1.2 मछली व्यवसाय

व्यवसायिक अर्थ का संतुलन नागार्जुन ने उग्रतारा, रतिनाथ की चाची, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे उपन्यासों में किया है। व्यवसायिक अर्थ संतुलन का एक महान कारण उस प्रदेश के पोखर तथा मछली व्यवसाय है। यह व्यवसाय "व्यष्टि" तथा "समष्टि" रूप से नागार्जुन ने दर्शाया है।

उग्रतारा उपन्यास के सुन्दरपुर मढ़िया में --"बड़े-बड़े दो पोखर हैं, जिनमें हर साल हजारों की मछलियां निकलती हैं।"[1] इन मछलियों का आदान प्रदान वहाँ एक मुख्य व्यवसाय तथा व्यापार हो गया है। शुभंकरपुर गाँव का बलुआहा पोखर इलाके भर में मशहूर था --"चौगावाँ के धनी मल्लाह इस पोखर की मछलियों का ठेका लिए हुए थे।"[2] पोखर पर अधिकार वहाँ के धनिक जमींदारों का था और मछली व्यवसाय साधारण जनता के हाथ में। जिन पोखरों ने पानी बारहो महीने रहता है उन्हें मल्लाह सरकार से बन्दोबस्त ले लेते हैं और मछलियाँ पालन के अतिरिक्त - "मखान उपजाते हैं, सिंघाड़े पैदा करते हैं।"[3] इस तरह पोखरों द्वारा केवल मछलियों का व्यवसाय न होकर सिंघाड़ा आदि का भी व्यवसाय होता है,जो अर्थ समानता की ओर संकेत करता है। पोखरों से मछलियाँ - इतनी अधिक निकलती थीं, कि --"कम से कम छः हजार रुपये बिक्री से आ जाते थे।"[4] और उसका बटवाड़ा उन सभी आसामियों में होता था, जो उस पोखर के ठेकेदार थे। केवल विशेषकाल में न होकर --"चौमासे में भी काफी मछलियाँ मारी जाती थीं। आश्विन कार्तिक की कड़वी दुपहरियों में काँटे डालकर मछलियाँ फँसाना देहाती जीवन का एक बड़ा रोमान्स है।"[5] "मछलीमार" एक प्रकार से आमोद-प्रमोद का साधन तथा खेल का अविनाभाव सम्बन्ध

---

1. नागार्जुन : उग्रतारा पृ- 31 2. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 40
3. " बाबा बटेसरनाथ पृ- 114
4. " रतिनाथ की चाची पृ- 40
5. " " पृ- 41

रखता है । प्राप्त मछलियों में --"चार-पाँच सेर वजन का एक रोहू, उससे दुगना एक भाकुर और डेढ़ गुनी मोदनी । बस तीन ही शिकार इस खेवे में हाथ आए ।"[1] जब कभी मछलियों की उपलब्धी बहुत कम हुआ करती थी, तब व्यवसायिक जीवन का संतुलन अव्यवस्थित होता था । बाजार में --"रोहू दो रूपये सेर । भाकुर मोदनी और कुआरी डेढ़ रूपये सेर"[2] बिकता था । उपन्यासकार ने उन सभी मछलियों का नाम गिनाया जिनसे सम्पत्ति प्राप्ती होती है -- "रोहू एक सौ पैंतीस । कुआरी नब्बे । भाकुर बहत्तर । मोदनी पन्द्रह । भुन्ना आठ । नैनी पैंतालीस ।"[3] जब कभी सामूहिक रूप में मछलियों का शिकार होता था तब उसका वजन --"दो सौ मन" से कम नहीं हुआ करता था । और प्राप्तव्य का बटवाड़ा किस तरह हुआ करता था । [illegible] इस का भी अनुशीलन उपन्यासकार ने किया है । सामूहिक शिकार का बटवाड़ा भी सामूहिक रूप से हुआ करता था परन्तु व्यवस्था में कुछ असंतुलन अवश्य था । भोला, नकछेदी और गंगा माल का सौदा कर चुके थे -- "बारह हजार की रकम - 200 मन बड़ी मछलियों का दाम हाथ आ चुकी थी ।"[4] अर्थ संतुलन की व्यवस्था ग्रामीण जनता के लिए एक ओर आशीर्वाद था, तो दूसरी ओर शाप भी । मछुए -"एक तेहाई, का हकदार होते थे ।"[5] मुखिया अपना माल बिहार प्रान्त में ही नहीं, आसपास के अन्यप्रान्तों में भी भेजते हैं --"एक आदमी उसका सिमरिया घाट और मुकामा घाट के बीच तैनात था, दूसरा बाढ़ा और आसनसोल के बीच । तीसरा हावड़ा में मुस्तैद रहता ।"[6] इस तरह मछली व्यवसाय बिहार प्रान्त का एक मुख्य व्यवसाय था ।

---

1. नागार्जुन : वरूण के बेटे पृ -8
2. नागार्जुन : वरूण के बेटे पृ- 13
3. " " " पृ- 65
4. " " पृ-66
5. " : रतिनाथ की चाची पृ- 67
6. " : " पृ- 142

उग्रतारा, रतिनाथ की चाची तथा बाबा बटेसरनाथ उपन्यासों में इस व्यवसाय की चरम सीमा प्राप्त न होकर वरुण के बेटे में प्राप्त होती है। उपन्यासकार ने सम्पूर्ण उपन्यास में इसी व्यवसाय की चर्चा की है। मलाही गोंढियारी में --"जितने भी पोखर थे, जितनी भी ताल-तलइयाँ थीं, जितनी भी नदियाँ और झीलें थीं, पानी का जहाँ भी जमाव टिकाव था - सारा का सारा उनका शिकार गाह था।"[1] वरुण के बेटे उपन्यास का वास्तविक स्वरूप मछली "आद्योगीकरण" से ही है। वहाँ के दो-दो, तीन-तीन परिवारों ने मिल-जुलकर थोड़ी-थोड़ी दूर का हिस्सा अपने अपने अधिकार में ले रखा था।"[2] इस तरह यह व्यवसाय सामाजिक जन-जीवन का केन्द्र बन गया। भोला, नन्छेदी और गंगा सहनी - "पिछले वर्ष तीन हजार रुपये नकद गिनकर दो साल के लिए "गरोखर" का पट्टा लिखवाया था।"[3] "गारोखर" इस प्रान्त का सबसे बड़ा पोखर है, जहाँ मछलियों का व्यवसाय अत्यधिक रूप में होता है। यहाँ की अर्थात् इस पोखर की मछलियाँ पटना, कलकत्ता आदि विविध शहरों में जाकर बिक जाती थीं। मछलियाँ निकाले जाने पर —"आधा हिस्सा उनमें मछुओं की मजदूरी होती थी बाकी आधा हिस्सा भोला, नक्छेदी और गंगा सहनी आपस में बराबर बराबर बांट लेते थे।"[4] मजदूरी का बटवाड़ा केवल अर्थ के आधार पर न होकर नागार्जुन ने वस्तु के आधार पर भी केन्द्रित किया है। पोखर से मछलियाँ ही नहीं --"सिंघाड़ा, तालम खाना, कमल और कुईं के फूल, कमल गट्टे, कमलनाल कसेरू, केसौर, सारुख जैसी चीजें भी --- हासिल करते थे। पुरइन पद्म के गोल-गोल, चिकने-चिकने पत्तों की भी बाजारों में काफी खपत थी।"[5]

- -

1. तथा 2. नागार्जुन : वरुण के बेटे पृ- 19
3 तथा 4. " : " पृ- 32
5. " : " पृ- 18

खादी चरखे की तरह मछली पकड़ना, पोखर ठेके पर लेना, विविध उमजों का संगठन करना ग्रामीण अर्थ संतुलन की एक मात्र व्यावसायिक चिह्न है ।

7. 1.3 <u>महाजनो व्यवसाय</u>

व्यक्तियों

महाजन से तात्पर्य ऐसे व्यक्तियों से है जिनका व्यापापूंजीवाद के लेन-देन में ही चलता है । धन से धन कमाने की प्रक्रिया पूंजीवाद को आश्रय देती है । पूंजीवाद, यह शहरी सभ्यता का लक्षण है लेकिन धीरे-धीरे गाँवों में भी इसका प्रभाव पड़ता जा रहा है । जिसके फलस्वरूप गरीब तथा लाचार जनता का शोषण हो रहा है । नागार्जुन में महाजन के शोषण का चित्रण बाबा बटेसरनाथ, रतिनाथ की चाची, ~~इमर्तिया~~ तथा बलचनमा आदि उपन्यासों में किया है ।

रूपउली गाँव में -"सुद पर कर्ज देने का व्यवसाय जमींदार ईमुकरपुर सुखी किसान भी करते हैं ।"[1] रतिनाथ की चाची उपन्यास में, ईमुकरपुर गाँव के रायबहादुर सिंह जमींदार तो थे ही —"साथ ही 'लहना-तगादा" का भारी कारोबार भी चलाते थे ।"[2] आसपास के इलाकों में दुसाद्य, मुसहर, चमार, खतबे, पासी, धुनिया, जुलाह आदि निम्न जाति के लोग समय कु समय पर "डेढ़ रूपये सैकड़ा ब्याज"[3] की दर से राजा बहादुर से ऋण लिया करते थे । राजा बहादुर - "पुराने अँगूठे को साल-साल नया करवाते जाते । सूद भी मूर बनता जाता । चक्र वृद्धि का यह क्रम राजा बहादुर की शरीर वृद्धि के लिए रसायन का काम कर रहा था ।"[4] और

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 48
2 तथा 3 " : रतिनाथ की चाची पृ- 93
4. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 93

कर्ज की रकम -"सूद-दर-सूद का पैसा अधन्ना पी-पीकर मोटी होती गयी ।"[1] सूद लेने वाले सूद देते-देते थक जाते, पीढ़ी दर पीढ़ी कर्ज चुकाने में ही समाप्त हो जाती लेकिन -"मूर ज्यों का त्यों खड़ा था" ।[2] सूद की लपेट में पड़कर गाँव की जनता तबाह हो गई थी -"एक रूपैया साल भर में डेढ़ पौने दो रूपैया और एक मन धान महीने-दो महीने बाद ही डेढ़ मन हो जाता था ।"[3] फूल बाबू के बाप -"इन्हीं गरीबों कीजमीन-जगाद हड़प-हड़प कर औकात वाले बने थे ।"[4] इन लोगों का यही पेशा था । उच्च वर्गीय इन महाजनों की सूदखोरी का परिणाम किसान तथा निम्नवर्ग के लोगों पर पड़ता था । भारतीय कृषक तथा श्रमिक जनता इस तरह शोषित हो रही थी ।

7.1.4 ग्रामीण कोल्हू :-

बिहार की भूमि अत्यन्त उपजाऊ है, जिस तरह भूमि उपजाऊ है, उसी तरह वहाँ के जमींदारों ने गरीबी को भी उपजाकर खड़ा किया है । नकदी फसल "गन्ना" जमींदारों के लिए अत्यन्त लाभदायक है, तो किसानों तथा मजदूरों के लिए डेढ़-दो महीने खान-पान तथा ठंडी से बचने का उपाय भी ।

हर साल गाँव के बाहर जाड़े के दिनों में मालिकों का कोल्हू गड़ता था । जहाँ पर बलचनमा जैसे निम्नवर्ग के अधिकांश बच्चे रात का समय छोटे भाई-बहनों को लेकर कोल्हूआड़ में ही बिताया करते - "गन्ना खा-खा कर पेट भर लेना और भट्ठी की आँच से गरमा कर सो जाना ।"[5] हर साल जाड़े के डेढ़-दो महीने ऐसा ही करते हैं ।

---

1 तथा 2. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 12
3. " : " पृ- 195
4. " : " पृ- 54
5. " : " पृ- 13

गन्ना, इस तरह अर्थ की मिठास से, जमींदारों के जीवन में रस भर रहा था, तो दूसरी ओर किसानों के जीवन को दरिद्रता की ठंड से सोख रहा था । ग्रामीण कोल्हू का एक अन्य रूप नई पौध उपन्यास में भी दिखाई देता है । सहुआइन के पास --"मजबूत कोल्हू और मुठिया सींगों वाले दो नाटे सिलेबिया बैल थे ।"[1] तेल निकालते समय सहुआइन आँखों पर पट्टर-बांधी बैलों को --"हिटकारती जाती - नाटा - संबलिया बैल अपनी द्रुत-विलंबित गति में अविराम चलता होता ।"[2] और कोल्हू चलने की आवाज --- टें ें ें ें च्चों ें ें ें ें ें चीं चीं चीं ें ें ें ें[3] चारों दिशाओं में गूंज उठती । तेल से जब टाढ़ा भर जाता तब सहुआइन --"भरा टाढ़ा हटा कर अलग रख देती और खाली टाढ़ा कोल्हू की ठोरी से लगा देती ।"[4] इस प्रकार तेल निकालने का क्रम चलता रहता । यह क्रम उस गाँव में ही नहीं, आस-पास के पड़ोस गाँवों में चलता रहता था । ब्राह्मण, ग्वाला, खवास, चमार, इनके व्यवसायों का उल्लेख इसी प्रबन्ध में अन्यत्र है । इनके अतिरिक्त महरी,[5], धाबी,[6] जुलाह[7], चाण्डाल[8], लुहार[9], जुलाह[10], कुम्हार[11], दर्जी[12], मोची[13], नाई[14], बढ़ई[15], रसोइया[16], सुनार[17] (स्वर्णशिल्पी[18] का प्रयोग किया है)

- -

1. नागार्जुन : नई पौध पृ- 80 , 2. नागार्जुन : नई पौध पृ- 80
3. " " पृ- 81 4. ग्रामीण सामाजिक संदर्भ पृ- 33, 41-43, 46
5. नागार्जुन : दुखमोचन पृ- 80, 79, हीरक जयन्ती पृ- 94, उग्रतारा पृ- 84, 105, 106
6. " दुखमोचन पृ- 61 नागार्जुन : हीरक जयन्ती पृ- 46
7. " रतिनाथ की चाची पृ- 113, 155, 160 दुखमोचन पृ- 38, 128
8. " रतिनाथ की चाची पृ- 13 उग्रतारा पृ- 31
9. " बाबा बटेसरनाथ पृ- 59
10." रतिनाथ की चाची पृ- 155, 160 बलचनमा पृ- 53 144 दुखमोचन पृ- 128, 135, 156
11." रतिनाथ की चाची पृ- 95 दुखमोचन पृ- 164
12." रतिनाथ की चाची पृ- 107 बलचनमा पृ-180, 185, 186
13." नई पौध पृ- 37 (14) नागार्जुन : बलचनमा पृ- 56
15." नई पौध पृ- 37 (16) नई पौध 76 (17) दुखमोचन पृ-5
18. नागार्जुन बाबा बटेसरनाथ पृ-33 बलचनमा - पृ नई पौध पृ- 92 हीरक जयन्ती पृ- 118

ग्राम[1], मल्लाह[2], चमाइन[3], चमारिन[4], मिसराइन[5], मोमिन[6], डोमिन[7] मेहतर[8], बनिया[9], हलवाई[10], जौहरी[11], ठठेरा[12], कहार[13], कसाई[14]

- -

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 91
बलचनमा पृ- 50
हीरक जयन्ती पृ-88
दुखमोचन पृ- 30

2. " : रतिनाथ की चाची पृ- 40, 114, 142

3. " : रतिनाथ की चाची पृ- 9, 24, 156

4. " : रतिनाथ की चाची पृ- 160
बलचनमा पृ- 183

5. " : बलचनमा पृ- 24, 189, 190, 191

6. " : बाबा बटेसरनाथ पृ- 15, 18

7. " : रतिनाथ की चाची पृ- 10, 113

8. " : हीरक जयन्ती पृ- 146

9. : रतिनाथ की चाची पृ- 113

10. " : नई पौध पृ- 101, बाबा बटेसरनाथ 48

11. " : बाबा बटेसरनाथ पृ- 33
हीरक जयन्ती पृ- 118

12. " : बाबा बटेसरनाथ पृ- 33
रतिनाथ की चाची पृ- 148

13. " : बलचनमा पृ- 145, 146, 147, 148, 152

14. " : बलचनमा पृ- 195
नई पौध पृ- 40
बाबा बटेसरनाथ पृ- 55
उग्रतारा पृ- 94

जमींदार[1], मुखिया[2], मुन्शी[3], गुमाश्ता[4], वकील[5], हकीम[6], वैदिक[7], नाइन[8], जज[9], सिपाही[10], जमादार[11], हवालदार[12], दारोगा[13], पुलिस[14], चपरासी[15], पुरोहित[16], मौलवी[17], महन्त[18] आदि का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त ग्रामीण व्यावसायिक कलायें भी हैं जैसे नौका-निर्माण, प्रतिमा निर्माण आदि जिन्हें प्रस्तुत प्रबन्ध के चौथे अध्याय के अन्तर्गत विस्तार से लिया है।[19]

- -

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 166, 193
2. " : बलचनमा पृ- 197, 198
   नई पौध पृ- 9
3. " : बलचनमा पृ- 163, 182, 192
   दुखमोचन पृ- 94
4. " : बलचनमा पृ-66
5. " : नई पौध पृ- 63, 93, 96
6. " : बलचनमा पृ- 193
7. " : रतिनाथ की चाची पृ- 60
   बलचनमा पृ- 112
8. " : बलचनमा पृ- 183
9. " : जमनिया का बाबा पृ- 15
10. " : उग्रतारा पृ- 19, 25, 53, 92
    बाबा बटेसरनाथ पृ- 86, बलचनमा पृ- 181
11. " : उग्रतारा पृ- 16, 18, 22
12. " : नई पौध पृ- 47
13. " : बलचनमा पृ- 173, 197, 198, 181
    दुखमोचन पृ- 171
14. " : बलचनमा पृ- 183, नई पौध 98
15. " : बलचनमा पृ- 109
16. " : रतिनाथ की चाची पृ- 57, बाबा बटेसरनाथ पृ-49
    दुखमोचन पृ- 169
17. " : बलचनाम पृ- 173
18. " : बलचनाम पृ- 89 हीरक जयन्ती पृ- 13, 35, 37, 45, 49, 86, 131
19. देखिये पृ- : 192-196

7.2 श्रमिक तथा उसका पारश्रमिक :-

उपन्यासकार ने श्रम के विविध रूपों का वर्णन - खेतिहर[1], भूमिहार[2], बनिहार[3], चरवाहे[4], कुली[5] कोचवान[6], रिक्षावाला[7] का अपने उपन्यासों में किया है। श्रमिक की मजदूरी का रूप "अर्थ" में, सूखे "अनाज" में, अथवा "रोटी" के रूप में उपलब्ध होता था।

श्रमिकों के विविध रूपों का उल्लेख नागार्जुन ने बलचनमा उपन्यास में किया है। श्रमिक वर्ग का प्रतिनिधि बलचनमा, मालिक को छोड़ने स्टेशन पहुँचता है। बोझ के मारे पसीने से तर देह को देखकर छोटे मालिक गाड़ी के प्लेटफार्म से खिसकते ही, उसकी ओर -"दो पैसा-- फेंककर कहते --- ले, मूढ़ी या चना खरीद लेना, फाँकते-फाँकते घंटे भर में घर पहुँच जायेगा।"[8] श्रमिक को मजदूरी के रूप में इस तरह अर्थ प्राप्त होता है।

---

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 138, बाबा बटेसरनाथ पृ-36, 116, 17
2. " : बलचनाम पृ- 140, 171, 172, 173
   बाबा बटेसरनाथ पृ- 49, 117
   नई पौध पृ- 48 हीरक जयन्ती पृ- 17, #55
3. " : रतिनाथ की चाची पृ- 109
   दुखमोचन पृ- 86, 135
4. " : रतिनाथ की चाची पृ- 41
   बलचनमा पृ- 4, 9, 112
   बाबा बटेसरनाथ पृ- 7, 28, 43
   नई पौध पृ- 110, दुखमोचन पृ- 148, 155
5. " : बलचनमा पृ- 12
6. " : बलचनमा पृ- 183
7. " : हीरक जयन्ती पृ-
8. " : नागार्जुन बलचनमा पृ- 12

जब इनकी मजदूरी का संग्रह तीन आना या चार आना हो जाती तब वह -"टेबुल कुर्सी पर बैठकर होटल से चाय पी आता --- इकन्नी की चाय, दुअन्नी के बिस्कुट, पैसे का पान और पैसे की पाँच बीड़ी" ।[1] इस तरह श्रमिक श्रम का आनंद उठाते हैं ।

मजदूरी का एक अन्य रूप "बनी"[2] भी है । जिसका उल्लेख इसी उपन्यास में हुआ है । मजिकाइन के यथा दिन भर काम करने वाले मजदूर को -"कच्ची तौल से तीन सेर खेसाड़ी या जौ या महुआ मिलता । दाने हल्के या कभी-कभी घुन लगे होते थे । कभी -कभी धान भी मिलता था ।"[3] डेढ़ पहर काम कर चुकने पर पिठान से बनी --"महुआ की रोटी पनपिआई [नाश्ता] मिलती"[4] थी । इस तरह श्रमिक को पूरे दिन काम करने पर रोटी तथा पहर, डेढ़ पहर काम करने पर नाश्ता मिलता था, जो उसकी मजदूरी होती थी ।

घरेलू श्रमिक के अतिरिक्त खेतीहर श्रमिक के श्रम का रूप भी इसी उपन्यास में उपलब्ध है ।

धान रोपनी के दिनों में दूर-दूर से मजदूर बुलवाये जाते हैं - "पूरी मजदूरी और एक जून का भर पेट खाना देकर सब अपनी-अपनी खेती करते हैं ।"[5] कई दिनों तक इनका खाना तैयार होता है, खेतों तक ले जाने के लिए --"बैलगाड़ी पर चटाई बिछा दी जाती । उस पर केले के पत्ते । फिर भात डाल दिया जाता । पीतल के घड़े ... में

---

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 51
2. अन्न के रूप में मिलने वाली मजदूरी पृ- 788 बृहत हिन्दी कोश
3 तथा 4. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 52
5. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 72

दाल, टोकरी में तरकारी और अचार ।"[1] इस तरह मालिक लोग श्रमिकों का श्रम बटोरते हैं । अधिकतर मजदूर -"मजूरी में धान के बदले महुआ को ही पसन्द करते हैं ।"[2] जिस समय मजदूरों को पूरी मजदूरी प्राप्त होती है, उस दिन अकेला वही नहीं उसके परिवार के सभी लोग खुशी से फूले नहीं समाते । बलचनमा को -"पच्चीतौल से पूरे चार सेर धान [मेरी] मजूरी में जिस रोज माँ को मिले उस रोज वह फूली न समाई । एक बुढ़िया भिखमंगनी को उसी खुशी में उसने आधा सेर धान दे दिया ।"[3] यह घटना बलचनमा उपन्यास की है । इस तरह अर्थ व्यवस्था का संतुलन उपन्यासकार ने दिखाया है ।

7.3 <u>आधुनिकीकरण</u> :- <u>एकोन्नतापूर्ण आर्थिक स्थिति</u>

फ्रान्स की राज्य क्रांति के उपरान्त, औद्योगिक क्रांति का प्रार्दुभाव सारे संसार के लिए एक महान परिवर्तन का केन्द्र है । आर्थिक असन्तुलन में, आद्योगिक क्रांति का जन्म विशेष घटना है । पाश्चात इस क्रांति का प्रभाव पूर्वीय प्रान्तों पर पड़ना अनिवार्य था ।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा संस्थापित औद्योगिक एकीकरण के विपरीत जिस औद्योगिक क्रांति का भारत में जन्म हुआ, वास्तव में वह भारतीय औद्योगिक क्रांति नहीं । औद्योगिक क्रांति का प्रार्दुभाव भारत में स्वतंत्रता के बाद ही प्रारम्भ हुआ है ।

भारतीय वस्तुओं का निर्यात पाश्चात्य देशों में, विशेषकर इंग्लैण्ड के लिए हो रहा था, और वहाँ से इन वस्तुओं का आयात भारत में विशेष "कर" के साथ प्रयुक्त होता था । ऐसी अनेक घटनाओं का वर्णन नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में किया है, उदाहरण के लिए महीन सूत को

---

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 26-27 2. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 77
3. " : " पृ- 70

ले सकते हैं -- ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासन से पूर्व -"घर घर तक्ली चलती थी । तक्ली के ये सुन्दर और महीन सूत मलमल बुनने के काम आते[1]- थे ।

जिस समय ईस्ट-इंडिया कम्पनी के हाथों से भारत छूटकर संवैधानिक रूप से इंग्लैण्ड के तत्वाधान में चला गया, तब यह सूत भारत में इंग्लैण्डजाकर अपने "रूप परिवर्तन" के साथ "महान-कर" को लेकर वापस आता था । तथा यह माल --"आ-आकर स्थानीय उद्योग-धन्धों का गला दबाने लगे ।"[2] जिसके फलस्वरूप - तेजी और मंदी के दो पाटो में पड़कर अनाज का एक-एक दाना कराह उठा । ----- दाना ही नहीं, गाँव का एक-एक आदमी कराह उठा[3]--- इस तरह जिस क्रांति का जन्म देश में स्वतंत्रता पूर्व हो रहा था, इसका विश्लेषण उपन्यासकार नागार्जुन ने किया है ।

महीन सूत एक ओर बाहर से लौटकर नये "कर" का रूप धारण करता था, तो दूसरी ओर उसकी संकुचित अवस्था के केवल चिह्न मात्र ब्राह्मणों के घर रह गये थे, जिसका उपयोग --"सिर्फ जनेऊ तक सीमित रह गया है ।"[4]

स्वतंत्रता के पश्चात, आन्दोलन ने जिस उग्र रूप को धारण किया, वह भारतीय रूप था । गांधीजी ने सर्व प्रथम जिस ग्रामीण औद्योगिकरण की ओर संकेत किया है, वह तक्ली, चर्खा, सूत के अतिरिक्त कुछ और नहीं है । इसका विकासशील रूप खादी तथा ग्रामोद्योग में

- -

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 13
2. तथा 3. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 82
4. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 13

हमें दिखाई देता है । सूत चाहे किसी रूप में ही क्यों न हो, उसका उपयोग भारत में ही होने के लिए तत्पर था ।

गांधी जी ने "कर" की बात को दूर तो कर दिया था, विशेषकर इस औद्योगिक प्रगति के लिए राजनैतिक नेताओं ने दर छूट की भी व्यवस्था कर दी थी । विशेष कर -"गांधी-जयन्ती" के अवसर पर अक्तूबर में फी रूपये इकत्तीस पैसे की छूट ध्यान को बरबस खादी की ओर खींचती थी ।"[1].... इस प्रकार से खादी का ग्रामोद्योगीकरण द्वारा अर्थ,व्यवस्था में संतुलन रखने का प्रयत्न है, यह गांधीजी की देन है।

7.4 पंचवर्षीय योजना तथा आर्थिक संघर्ष

मार्च सन् 1950 में प्रधान मंत्री पं० नेहरू की अध्यक्षता में योजना-आयोग का गठन हुआ और जुलाई 1951 में पहली पंचवर्षीय योजना की रूप रेखा प्रस्तुत हुई । पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा सरकार ने राष्ट्र का पुनः निर्माण करने का संकल्प किया ।

7.4.1 प्रथम पंचवर्षीय योजना

इस योजना में कृषि को प्राथमिकता दी गयी । कुल व्यय का लगभग एक तिहाई कृषि, सामुदायिक विकास, सिंचाई, बाढ़-नियन्त्रण आदि पर व्यय हुआ । कृषि और सिंचाई आदि के साथ पशुपालन, उद्यानवन, मत्स्य, सहकारिता, ग्रामीण उद्योग, चिकित्सालय, जन स्वास्थ्य, शिक्षा, परिवहन और परिवार नियोजन आदि के आयाम देश भर में उभर कर सामने आये ।

---

1. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 34

बलचनमा उपन्यास के मोहन बाबू ने यही कहा था कि - "सोराज होने पर सबके दिन लौटेंगे, सब का भाग चमकेगा । हमारा भी तुम्हारा भी ।"[1] इस तरह के विचार जनता में उभर आए थे ।

मत्स्य पालन व्यवसाय के प्रति भी उपन्यासकार जागरूक है । वरुण के बेटे उपन्यास के मोहन माँझी के स्वप्न थे --"गढ़पोखर का जीर्णोद्धार होगा, आगे चलकर और तब मलाही-गोंढियारी के ये ग्रामांचल मछली - पालन व्यवसाय का आधुनिकतम केन्द्र हो जायेंगे । वैज्ञानिक प्रणाली से यहाँ मछलियाँ पाली जाएगी ।-----एक एक सीजन में पचास-पचास हज़ार रुपयों तक की आय होगी । मलाही-गोंढियारी का एक-एक परिवार गरोखर की बदौलत सुखी-सम्पन्न हो जायेगा । ××× पच्छिम ऊँची भिंडों पर इक तल्ला सैनिटोरियम बनेगा, फिर दूर-पास के विद्यार्थी आ-आ कर यहाँ छुट्टियाँ मनाया करेंगे ।"[2] इतना ही नहीं -"आगे हम बांध तैयार करेंगे, पोखरों की मरम्मत करेंगे, कुओं की खुदाई होगी, गाँव के तरक्की के दसों काम होंगे ।"[3]

इस व्यवसाय के प्रोत्साहन में जमींदार उन्मूलन होना आवश्यक था --"30 मार्च, 1951" तारीख - जमींदारी-उन्मूलन-बिल स्टेट-असेम्बली में पास हो चुका था ।"[4]

7.4.2 जमीन्दारी उन्मूलन

जमींदारों का वर्चस्व जमींदारी प्रथा-उन्मूलन के साथ-साथ ढलान की ओर चल पड़ा, उनकी आर्थिक स्थिति भी शोचनीय दशा की ओर निकल पड़ी --"मामूली जमींदारी भी कई पट्टियों में बँट कर छोटी से छोटी हो

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 5 2. नागार्जुन : वरुण के बेटे पृ- 30
3. " : दुखमोचन पृ- 48 4. " बाबा बटेसरनाथ पृ-131

गई थी ।"[1] इस तरह --"सोलह आने की सरकार छोटी-बड़ी पट्टियों में बंटते-बंटते इकन्नी, अधन्नी, पैसा पाँच कौड़ी, दो कौड़ी और आधी कौड़ी तक भी हो गयी थी ।"[2] जमींदार अपनी पूर्व अवस्था में जिस शाही ठाट से रहा करते थे, उस दशा का वर्णन उपन्यासकार ने जैकिसुन के परदादा के शब्दों में कहा--"ढाका राजशाही की पीताम्बरी और नागपुर की रेशमी धोतियों का अम्बार लगा है ।"[3] जमींदार अपने सभी कारोबार इस सम्पत्ति के आधार पर कर लिया करते थे, लेकिन दौलत के नशे में ये - "निपट अंधे होते हैं, अपना-पराया कुछ नहीं सूझता" ।[4]

लगान तथा वसूली का अंश जब समाप्त प्राय: होने लगा तब जमींदारों ने अपना सब कुछ बेचना शुरू किया, जिससे --"मालिकों की जमींदारियाँ बहुत सारी बिक चुकी थी । दस ही पाँच हजार सालाना आमदानी के मौथे बच रहे थे ।"[5] आमदनी का अंश जब समाप्त होने आया, तब जमींदारों ने उस आमदनी की भरपाई के लिए जिन उपायों को अपनाया; उनमें - आम की बिक्री, सूद खोरी आदि उल्लेखनीय है ।

दरभंगा से महाराज के खास बाग के, खास आम ; दिखावे के रूप में --"दरबारियों और बड़े अफसरों के यहाँ सौगात की तौर पर पहुंचते थे ।"[6] लेकिन जमींदारी प्रथा उन्मूलन के आरम्भ होते न होते, महाराज दिखावे की परवाह न कर --"स्टेट की ज्यादा से ज्यादा चीज़-वस्त औने-पौने दाम पर बेचकर नगद रकम बना लेने की"[7] फिक्र में थे ।

- -

1. तथा 2. नागार्जुन : वरुणना पृ- 81
3. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ- 25
4. " वरुणना पृ- 68
5. " " पृ- 81
6. " बाबा बटेसरनाथ पृ- 32
7. " " " पृ- 32

जमींदार अपनी कमाई और बढ़ाने के लिए केवल उपरोक्त [illegible] तथ्यों को ही नहीं, पास-पड़ोस के गरीब जनता की भूमि को हड़पने के लिए विवश हो गये है। उन्हें "चौकोर हलमबाग के लिए — दो कट्ठा खेत चाहिए था।"[1] जमींदारों और गरीब जनता जनार्धन को —"चौकोर पेट के लिए मुट्ठीभर दाना।"[2] जिनके पास-कम भूमि थी, उन्होंने अपनी भूमि को बढ़ाकर जमींदारी रोग को कायम रखने केलिए भारतीय ग्रामीण जनता पर जिन अत्याचारों को दिखाया उसकी सम्पूर्ण विवेचना उपन्यासकार ने बलचनमा, बाबा बटेसरनाथ तथा वरुण के बेटे उपन्यास में की किया है।

जमींदारी उन्मूलन से जनता संतुलित तो न हो पायी, परन्तु विवश होकर ग्रामीण जनता को, विविध प्रकार के अत्याचारों सहन करना पड़ रहा था।

7.5 ग्रामीण आर्थिक व्यवस्था का असंतुलित क्रम

एक कृषक देश की दरिद्रता के लिए प्राकृतिक कारण - अतिवृष्टि, अनावृष्टि ही उत्तरदायी नहीं होते। जमींदारी प्रथा भी इसके लिए सहयोगी है।

7.5.1 गरीबी

—"चावल के चार दाने छींटकर बहेलिया जैसे चिड़ियों को फँसाता है उसी तरह ये दौलत वाले गरजमंद औरतों को फँसा मारते हैं।"[3] अर्थ-संघर्ष ने "काम" को भी व्यापार की वस्तु बना दिया। गरीबी बिकती

---

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 68
2. " : " पृ- 17
3. " : " पृ- 69

है, गरीब बिकता है और उसके खरीददार है धनिक । एक ओर गरीबी का यह हाल है कि न तो घर में दिया [redacted] जलता है और न घर में आग, तथा चूल्हा ही । तो दूसरी ओर सर्दी और बरसात के दिनों में जिन कठिनाइयों का सामना ग्रामीण जनता को करना पड़ता है, उसकी विवेचना का अधिकांश भाग "वरुण के बेटे", "बलचनमा" आदि उपन्यासों में दृष्टिगोचर होता है । खुरखुन के घर --"बरसात के मौसम में चूल्हा रूठता है,तो फिर फूस ही उसे मनाती है । मगर यह फूस आवे तो कहाँ से ? या तो घर के छप्परों से नोची जाए या पजानी से खींची जाए या फिर किराये की टट्टर से ।"[1] एक और संदर्भ दुखमोचन उपन्यास में प्राप्त होता है । माया की माँ का --"चूल्हों में भूसी और सूखे पत्ते झोंकते-झोंकते दाहिना हाथ काला पड़ गया था ।"[2] चूल्हों का रूठना दरीद्रता के लिए अभिशाप नहीं तो और क्या है । फिर भर "आँच नहीं थी, धुआँ ही धुआँ था । ------कड़वा धुआँ निगाहों को पानी-पानी कर रहा था ।"[3] गरीब गरीबी से लगातार संघर्ष कर रहा था । उपन्यासकार ने दरीद्रता के सभी दृश्यों को दर्शाया है ।

मछलियाँ भूनने के लिए आग की कमी यह ग्रामीण दरिद्रता का निकृष्ट रूप है । मलाही-गोंढ़ियारी के मछुए के लड़के बटे धानों की खूँटियाँ उखाड़ उखाड़ कर उस ढेर में आग लगा देते -- वहीं वे मछलियाँ भून रहे थे ।"[4] मछलियाँ किसी भी तरह भून तो गयी परन्तु प्रश्न पेट की आग बुझाना यों ही रह गया ।

---

1. नागार्जुन : वरुण के बेटे पृ- 76
2. " दुखमोचन पृ- 86
3. " वरुण के बेटे पृ-75
4. " वरुण के बेटे पृ- 20

उपन्यासकार ने गरीबी की इस दशा का चित्रण तथा उसकी चरम सीमा का अंकन बलचनमा उपन्यास में किया है । दिनभर मेहनत मजदूरी कर --"घर जाने पर माँ को जब कठौती में मडुआ का आटा गूँधते देखता तो अपनी गरीबी हल्की नोक बन कर कलेजे को फाड़ने लगती ।"[1] लेकिन ये गरीब फटे कलेजे की टीस को सहन करते हुए जीवन बिताते ही है ।

शारीरिक तापमान को संतुलन बनाये रखने के लिए ग्रामीण जनता को किन-किन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, इसका एक दृश्य वरुण के बेटे उपन्यास में अत्यन्त दयनीय दशा में नागार्जुन ने दर्शाया है । जाड़ा के की सर्दी में भोला को जब -"ठिठुरन मालूम हुई तो अंजलि में मुँह की भाफ भरकर अंगुलियों को आपस में मसल लिया ।"[2] इस तरह उपन्यासकार ने स्वयं ही समस्याओं का निर्माण तथा उसका समाधान सभी उपन्यासों में किया है । इस दरिद्रता से छुटकारा पाने के विविध उपायों को उपन्यासकार ने दिखाया है ।

शीतकालीन ठंडक को दूर करने के लिए बलचनमा की "दादी ने दो बकरियाँ पाल रक्खी थी, उनकी सूखी मींगनियाँ ताप ताप कर रातें काटते ।"[3]

बकरियों का पालन तथा रिक्शा चलाना इस गरीबी को दूर हटाने का समाधान तो है, परन्तु निश्चित समाधान नहीं । रिक्शों की तादाद --"पचास से ऊपर हो गई है । जो उन्हें खींचते हैं, उनकी फटी कमीजों के अन्दर से अब पीठों के अधिक हिस्से दिखाई दे रहे हैं ।"[4]

---

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 37
2. " : वरुण के बेटे पृ- 6
3. " : बलचनमा पृ- 13
4. " : हीरक जयन्ती पृ- 73

गरीबी, वर्षा तथा सर्दियों का अविनाभाव सम्बन्ध है । सर्दी से छुटकारा पाने के लिए जिन विश्वासयुक्त तथ्यों का निरूपण उपन्यासकार ने किया है वे द्रष्टव्य है ।

गर्मियों के दिन जैसे-तैसे कट जाते, लेकिन जाड़ा से निबटना बड़ा ही मुश्किल होता । इन्हें यदि - गुदड़ी-कथड़ी भी ओढ़ने को अगर काफी न हो तो पूस-माघ की ठंडी रात यमराज की बहन साबित होती ।"[1] एक और उदाहरण उग्रतारा उपन्यास में भी दिखाई देता है, उगनी मामूली हेडिहर की बेटी है उसके --- "वैसी-तैसी रज़ाई के साथ जाड़े कटे थे अब तक "।[1क] उनके पास साधारण से साधारण जीवन बिताने के लिए जिन कपड़ों की आवश्यकता होती है, वे भी नहीं । घाट पर नहाने के बाद रतिनाथ ने -- "अँगोछे के फटे-पुराने कपड़े से चेहरा पोंछा ।"[2]

गरीबी सामाजिक देन है, उन पर प्राकृतिक प्रकोप ने भी अपनी गहरा छाप डालकर, गरीबी को और भी विवश किया है - अस्पताल को जाते समय मधुरी की माँ के पास एक भी जूता ठीक ढंग का नहीं है --" तार-तार हो गया है, समूचा जूता [लुग्गा] अब और एक दिन भी पहनने लायक नहीं रह गया है, फिर भी उसे पहनने जा रही है ।"[3] गरीबी की गृहस्थी में यह सब होना स्वाभाविक ही है । इस गरीबी ने क्या-क्या तमाशे नहीं किये ?

दुखमुन की बड़ी लड़की मधुरी अपने ती-भाई-बहनों से उलझ रही थी कारण था --" झींगरी मछलियाँ " ।[4] रोटी तो नहीं, मछली का टुकड़ा, तेल की बूंद भी उनके नसीब में नहीं है । दस साल की साँवली-सलोनी देह वाली लड़की के --"सिर के बाल घोंसले की याद दिला रहे थे ।

---

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 13
1क " : उग्रतारा पृ- 101
2. " : रतिनाथ की चाची पृ- 51
3. " लुग्गा : वरुण के बेटे पृ- 78
4. " : वरुण के बेटे पृ- 78

जाने कब से उनमें तेल नहीं पड़ा था ।"[1] और उनका खान-पान वही सड़ा गला - जीवन दूभर हो जाता है । मधुरी झोंपड़ी में टंगी हांड़ी उतार लाई -- "बाहर खड़ी-खड़ी उसे नाक के पास लाकर सूंघा । बासीपन की दुहरी-तिहरी बास आ रही थी हांड़ी से ।"[2] फिर भी वे उस अन्न को खाने के लिए विवश थी ।

गरीबी, न तो मजदूरी से, न रिक्शा चलाने से, न खलिहान में काम करने से, किसी भी तरह छूटने के लिए तैयार नहीं है । फिर भी - "छोटी जाति की औरतें खेत-खलिहान में काम कर लेती हैं "[3]---- जिसे उन्हें कुछ प्राप्त होता है ।

उपन्यासकार ने सभी ओर से भारतीय दारिद्रता का चित्रण किया है । वास्तव में इनके सभी उपन्यास ग्रामीण है, और उन उपन्यासों में गरीबी की दयनीय दशा का चित्रण अत्यन्नत सहज रूप से निखर आया है ।

इसी दरिद्रता ने उन्हें अपने-आप को बिकने के लिए विवश किया है । उपन्यासकार इस बात से स्पष्ट: सहमत है कि इन गरीबों के पास बेचने बिकाने के लिए कुछ और नहीं --"कमाने खटने को ये दो हाथ, माँ-बहन, बेटी की इज्जत-आबरू, यही न हम लोगों की दौलत है ? ----- हम उनकी भी हिफाजत अगर न कर पावें तो यह जिन्दगानी किस काम की ।"[4]

गरीबी अवश्य बिकेगी लेकिन गरीब अपनी इज्जत बेचने के लिए तैयार नहीं । एक ओर गरीबी इनके जीवन को दूभर कर देती है, तो दूसरी ओर बिमारियाँ भी इन्हें अपने में समेट लेती है । कुंभकरपुर गाँव की जनता की कमर -- "गरीबी और मलेरिया ने -- तोड़ दी ।"[5]

---

1. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 69
2. " : वरुण के बेटे पृ- 21
3. " : [illegible] जमनिया का बाबा पृ- 52
4. " : बलचनमा पृ- 68
5. " : रतिनाथ की चाची पृ- 131

गरीबी उन्मूलन के लिए जिन तथ्यों को सरकार ने हाथ में लिया उनमें पंचवर्षीय योजना भी एक है । उपन्यासकार का विश्वास है कि —"तीसरी पंचवर्षीय योजना के सफल होते-होते हमारे देश की काया पलट हो जाएगी ।"[1] परन्तु पंचवर्षीय योजना के क्षर्णाधार, जिस असत्यता से इस गरीबी को दूर हटाने में तैयार थे, उससे गरीबी हटी तो नहीं अधिक हो पायी है —"ढोंग और अंधविश्वास के सहारे उपार्जित की हुई मठवालों की यह धनराशि श्मशान के भस्म की भाँति व्यर्थ साबित हुई ।"[2]

उपन्यासकार ने सरकार तथा उसकी योजनाओं को शव तथा भस्म की ढेरी से उपमा देकर इसका समापन किया है ।

7.5.2 नैसर्गिक प्रकोप

भारतीय कृषि का मुख्याधार वर्षा है । उपन्यासकार ने वर्षा को एक ओर आशिष के रूप में लेकर उपज की बढ़ोती की है तो दूसरी ओर अति वर्षा के कारण बाढ़ तथा दुर्भिक्ष का शिकार किस तरह किसान होते है ; इसकी विवेचना अपने सभी ग्रामीण उपन्यासों में की है।

खेती के मौसम में, हल्की बूंदा-बूंदी ने आसमान को खाली कर दिया — "खुशी के मारे लोगों के चेहरे दमकने लगे ।"[3] ग्रामीण जनता, चाहे वह जमींदार हो तथा साधारण कृषक, दोनों, भी इसी खुशी के अधिकारी थे । वास्तव में जमींदारों की खेती ने जिस नये मोड़ को अपनाया वह स्थिति उनके लिए निश्चित ही दयनीय दशा थी । ढाई-तीन सौ बीघा जमीन अखिल और कथित के अधिकार में अवश्य थी -"लेकिन उपज का हाल अच्छा नहीं था ।

---

1. नागार्जुन : [redacted] कुंभीपाक पृ- 38
2. " जमनिया का बाबा 121
3. " दुखमोचन पृ- 181

कभी बाढ़, कभी सूखा । दूसरे काश्तकारों की तरह ये लोग भी तबाह थे, इनकी भी पुश्तैनी जायदाद साल दर साल छीजती जा रही थी ।"[1] अतिवर्षा के प्रकोप ने सभी को चाहे वह जमींदार हो, चाहे कृषक अपने में समेट लिया है -- बर्बादी के विविध स्वरूपों को उपस्थित किया है ।

नदियाँ एक ओर अति वर्षा केकारण गर्वीली होकर जन समुदाय तथा उनकी कृषि को बर्बादी की चुनौती देती है, तो दूसरी ओर वही नदियाँ वर्षा की संतुलित अवस्था में अपने बहाव में बहते हुए मिट्टी को तथा उसके चिकनेपन की उर्वर परतों को भूमि पर बिछा देती है, जिससे भूमाता मोतियाँ उगलने पर विवश हो जाती है । वरुण के बेटे उपन्यास के मलारी गोढ़ियारी गाँव में -"कोसी जब पूरब की तरफ बीस-तीस कोस पर थी, उन दिनों धनहा चौर की चंदन-चिकनी माटी सोना उगलती थी ।"[2] जब कभी -"बाढ़ का दौर देर से आता तो महुआ, मकई और मूंग की भदई फसलें थोड़ी बहुत हो जाती ।"[3] तथा -"रोहनी नछत्तर [नक्षत्र] में कोसों फैले खेत धान के नये-नये पौधों से हरे समुंदर की तरह लहराते रहते है । आँखों को तर करने वाली ऐसी हरियाली और कहाँ कहाँ मिलेगी ?"[4] केवल इतना ही नहीं — "उत्तर बिहार के कई जिलों में धान की फसल काफी अच्छी होती है ।"[5] खेतों में कटी इन फसलों की -"खूंटियाँ मुलायम ही होती है । ---- गेहूँ - जौ, ज्वार-बाजरा-उनकी खूंटियाँ कड़ी होती हैं ।"[6] इस प्राकृतिक वातावरण में -"धान के पौधों की अपनी अलग शोभा होती है तो साँवलिया बिहारी मडुआलाल की अलग । महुआ, मकई, मूंग, धान, गेहूँ, ज्वार, बाजरा के अतिरिक्त खेती

- -

1. नागार्जुन : दुखमोचन पृ- 17।
2. तथा 3. नागार्जुन : वरुण के बेटे पृ- 18
4. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 26
5. " " पृ- 25
6. " " पृ- 140

में आलू और तमाकू की उपज भी खूब होती थी -"उन फसलों से दो-ढाई सौ की सालाना आमदनी थी ।"[1] जिससे मोहे के समान खेतिहर - खुशी में झूम उठता था ।"[2]

प्राकृतिक अवस्था भी खेतिहारों के लिए नये मोड़ पे पनपने के लिए विवश किया करती थी --" समय-समय पर बादल न बरसे और बाढ़ नहीं आवे तब तो ठीक है, नहीं तो खेती हुई चौपट और खेती चौपट हुई तो लोगों के गात-सुखट जाएँगे, आँखें धँस कर अनगढ़ दिया बन जाएँगी ।"[3]

आँधी, तूफान, अतिवर्षा, बाढ़ आदि के प्रकोप से केवल कृषि ही नहीं, मानव समाज भी दुर्भिक्षा ग्रस्त हो जाता है । उपन्यासकार बिहार प्रान्त के हैं । बिहार की भूमि एक ओर अत्यन्त उपजाऊ है, तो दूसरी ओर बाढ़ से ग्रस्त अति घातक भी । अतिवृष्टि-अनावृष्टि की दशा ही बिहार के अर्थ संतुलन के लिए घातक सिद्ध हो रही थी । भारत सरकार ने अतिवृष्टि, अनावृष्टि के रोक-थाम के लिए जिन बाँधों का निर्माण सम्पूर्ण देश में किया वह विशेष उल्लेखनीय है । स्वातंत्र्योत्तर भारत में चार पंच वर्षीय योजना का महत्व इसी घातक के लिए संतुलित है । पंचवर्षीय योजनाओं ने बाढ़ आदि को रोक कर, अनावृष्टि में सिंचाई की व्यवस्था करके, जिस आनंद की उद्भावना कृषक समाज में स्थापित की है, वही आनंद कृषक तथा जमींदारों को तब प्राप्त होता है, जब नियमित रूप से वर्षा हो, सिंचाई हो, बुआई हो तथा धान समय पर आ जाता हो ।

7.53 शोषित किसान

चाहे अकाल हो या सकाल, बाढ़ हो अथवा अतिवृष्टि या अनावृष्टि जमींदारों को अपने उपज की परवाह नहीं । वे अपनी सारी

1. तथा 2. नागार्जुन : नई पौध पृ- 88 3. नागार्जुन : बलचनमा पृ-138

जिम्मेदारी उस किसान पर थोप देना चाहते थे, जो इनके लिए एक-मात्र कठपुतली थे । उपन्यासकार ने इसका संकेत बलचनमा उपन्यास में किया है, खेतों में --"बड़े-बड़े मालिक खुद नहीं आते थे । बराहिल, गुमस्ता या कोई दूसरा नौकर-चाकर धनकटनी की देखभाल करता ।[2] यह दशा थी बड़े मालिक अर्थात् बड़े जमींदारों की । इसलिए जमींदारों पर किसी भी प्रकार के नैसर्गिक प्रकोप का दबाव नहीं पड़ता था ।

जमींदार का आनंद अच्छी फसल प्राप्त होने पर भी उस अवस्था को न प्राप्त कर सकेगा जिसे कृषक ने अपनाया है । आनंद और दुख की स्थितियाँ कृषक के लिए है, इसके दोनों छोर किसान से आलंगित है, परन्तु जमींदार के लिए यह उतना प्रभावशाली नहीं - कारण उसका संतुलित धन है ।

कृषक जीवन में, अपने आप को बादशाह तब समझता है, जब - उपज अच्छी हुई हो और घर-गिरस्ती का काम ठिकाने से चल रहा हो - उस स्थिति वह अपने आगे किसी को कुछ नहीं समझता ।"[3] केवल इतना ही नहीं --"गिरहथ, बनिहार, जन-बनि, कल्लर-भिखमंगा सभी के चेहरों पर आशा की रौनक[4] रहती है इसलिए की -"फसलें हुई है तो मजूरी भी मिलेगी, बनिहारी भी ।"[5] और फसल अच्छी दिखायी दी तो --"मिन्नत-मनौती में भी सुभीता रहता है । काली माई को छागर [बकरा] की जोड़ी, बरहम बाबा को फूल-छत्र, पित्तरों का गया का पिंड, बाबा कुसेसरनाथ को घी-दूध ।"[6] और धार्मिक कार्यों में भी उत्साह उभरकर आता है --"मूँड़न, छेदन और सुन्नत से लेकर सराध और चलीसा तक सब काम इन्हीं फसलों के भरोसे चलता है ।"[7] लछमी महरानी धान के रंग-बिरंगे शीशों [बालों] पर छाई हुई थीं । हाट बाजार में इसी से अनाज का भाव काफी नीचे उतर आया था ।

---

2. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 140   4. तथा 5. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 137

3. " : बाबा बटेसरनाथ पृ- 79

6. तथा 7. बलचनमा पृ- 138

दो रूपैया मन धान और तीन रूपैया मन चाउर था । मकई सवा रूपैये और महुआ डेढ़ रूपैया मन था ।"[1] फिर भी कृषक के मन पर, हृदय पटल पर, निराशा तथा दुःख के चिह्न विद्यमान थे । कारण --"वह रूपयों का जमाना तो था ही नहीं, जिन्सों और मालों का जमाना था ।"[2]

उपन्यासकार के उपन्यासों का समय 1947 से 1960 का है । अर्थात् द्वितीय पंचवर्षीय योजना के मध्य भाग तक भारत के जिन्सी मूल्यों में किसी प्रकार से कटौती न थी । इसके पश्चात राजनैतिक उथल-पुथल ने केवल बीस वर्षों में "प्राइस इन्डक्स" [मूल्य वृद्धि] को इतना बढ़ा दिया कि वह साधारण मानव के जीवन यापन के लिए घातक सिद्ध हुआ ।

उन्हीं दिनों अर्थात् उपन्यासकार के रचनाकाल में दरों का मूल्यांकन साधारण बाजारों द्वारा निर्धारित होता था । परन्तु इन दिनों सभी प्रकार की सुविधाओं के अतिरिक्त मूल्यों का संतुलन पूर्ण रूप से बिगड़ गया है । उपन्यासकार ने अर्थ असंतुलन की इस सीमा की ओर संकेत किया है और "दर" संतुलन के लिए सुझाव भी नई-पौध उपन्यास के खतिहर माहे के माध्यम से दिया है --"सिंचाई और निकासी का इंतिजाम यदि कांग्रेसी सरकार कर दे तो इन्हीं पालीस-कट्ठा खेतों में 125 मन धान उपजा कर दिखा दूं ।"[3] यह आत्म-विश्वास है माहे का और भारतीय सरकार ने भी पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा खाद्यान्नों के आत्मनिर्भरता की ओर ध्यान दिया है ।

7.5.4

जनसंख्या की निरन्तर वृद्धि

ग्राम जीवन में व्याप्त बेकारी और निर्धनता के मुख्य कारण है, जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि, भूमि की मात्रा सीमित होना, कृषि का प्राकृतिक साधनों पर निर्भर होना, परम्पराश्रित होना तथा प्राकृतिक प्रकोप ।

---

1. नागार्जुन : बलचनमा पृ- 138
2. " बाबा बटेसरनाथ पृ- 40
3. " : नई पौध पृ- 86

रतिनाथ की चाची उपन्यास में शुभंकरपुर गाँव की गरीबी का कारण अधिक जनसंख्या का होना है --"ढाई सौ परिवारों की आबादी, खानेवाले मुँह ग्यारह सौ । साफ है कि गरीब ही अधिक थे ।"[1] वरुण के बेटे उपन्यास में मलाही-गोंढियारी में -"मछुओं के तीस-पैंतीस परिवार थे । खाने वाले मुहों की तादाद तेजी से बढ़ रही थी ।"[2] आबादी उत्तरोत्तर बढ़ती आई थी, खाने वाले मुँह पचास गुना अधिक हो गए थे ।"[3]

बढ़ती हुई जन संख्या देश के लिए एक गंभीर समस्या है । सन्तानोत्पत्ति के विषय में ग्रामीण जनता की परम्परागत मान्यता, जन संख्या वृद्धि में सहायक है । इस विषय में ग्रामीण जनता का दृढ़ विश्वास है, कि संतान उत्पत्ति संयोग की बात है, जिसका कर्ता ईश्वर है, यह उसी की कृपा है । वे सन्तान पैदा होने का सम्बन्ध पूर्व जन्म के पुण्यों के उदय होने से लगाते है । इस प्रचलित धारणा के अनुसार पुत्रोत्पत्ति उनके वश की बात नहीं तो उनके भरण-पोषण के लिए क्यों चिंतित हों । नागार्जुन ने इस निश्चिंत दम्पत्ति का उल्लेख नई पौध तथा हीरक जयन्ती उपन्यासों में किया है ।

नई पौध उपन्यास के खोंखा पंडित पर प्रजापति विधाता की बड़ी दया है —"सात लड़कियों और पाँच लड़कों के "पूजनीय पिताजी" होने का सौभाग्य उन्हें प्राप्त है ।"[4] एक अन्य उपन्यास हीरक जयन्ती में पत्रकार श्री देवनन्दन प्रसाद [ललनजी] --"सात पुत्रियों और चार पुत्रों के पिता है ।"[5] जिन्हें रात-दिन पुत्रियों के विवाह की चिंता लगी रहती है । ललनजी - परसों लड़का देखा आए थे, वे अक्सर लड़का देखते रहते हैं ।"[6] और निर्धनता के

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 92
2. " वरुण के बेटे पृ- 18
3. " " पृ- 84
4. " नई पौध पृ- 3
5. तथा 6 नागार्जुन : हीरक जयन्ती पृ- 28

कारण मजबूर हो वे अपनी पुत्रियों का विवाह बूढ़े, लँगड़े, अपाहिजों से कर अपने कर्तव्य से मुक्त हो जाते हैं, और बेटियाँ जन्मकर -"माँ-बाप का सराप दिया करती है।"[1]

7.5.4.1 परिवार नियोजन

बढ़ती हुई जनसंख्या से उत्पन्न भयानक स्थिति को नियंत्रित करने, संख्या में स्थिरता लाने और समाज को देश की आर्थिक दशा के अनुरूप व्यवस्थित करने के निमित्त परिवार नियोजन को उत्तम साधन माना गया है। परिवार नियोजन केवल एक कार्यक्रम ही नहीं, अपितु एक देशव्यापी आन्दोलन है, जिसका मुख्य उद्देश्य जनसंख्या की स्थिरता है।

सन् 1956 ई० में केन्द्रीय परिवार नियोजन बोर्ड [illegible] का गठन हुआ। राज्य एवं जिला स्तर पर परिवार नियोजन बोर्ड एवं जिला समितियाँ क्रमशः बनचुकी हैं।

उपन्यासकार इस देश व्यापी युगीन चेतना से पहले से ही परिचित है, उन्होंने रतिनाथ की चाची [1947] बलचनमा, बाबा बटेसरनाथ, नई पौध, वरुण के बेटे, दुखमोचन उपन्यासों में नियोजित परिवारों की ओर संकेत किये हैं। रतिनाथ की चाची उपन्यास में मित माधव के छोटे परिवार में -"तीन लड़के थे। जय माधव वेणी माधव और श्रीमाधव। इनमें दो अपठित थे, उनके जिम्मे खेती-बाड़ी का काम था।"[2] अनपढ़ कमलनाथ के परिवार की संख्या भी तीन ही थी - " उनके तीन लड़के थे, तीनों मूर्ख। यह मूर्खता इन लोगों की चार-पाँच [illegible] पुश्त की विरासत थी।"[3] शिक्षित जय किशोर के परिवार में --"तीन बच्चे

---

1. नागार्जुन : नई पौध पृ- 6
2. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 30
3. " : " पृ- 30

थे, दो लड़के और एक लड़की ।"[1] एक अन्य उपन्यास बलचनमा में भी परिवार नियोजन का संकेत मिलता है । राधा बाबू के परिवार में बच्चे तीन थे -"एक लड़की, दो लड़के । लड़की नौ साल की । बच्चे सात और पाँच साल के ।"[2] नई पौध उपन्यास के खोंखा पंडित के बेटों का भी सीमित परिवार है । मझली बहू के जिम्मे काफी काम था - "अपने तीन बच्चों को सँभालना, बड़ी के दो बच्चे बड़े हो चुके थे, दो छोटे थे, छोटी के दो बच्चियाँ थी ।"[3] उच्च, मध्य वर्ग में ही नहीं निम्न वर्ग में भी युगीन चेतना का चित्रण प्राप्त होता है । वरुण के बेटे उपन्यास में भोला सहनी के दो लड़के है - मंगल बीस साल का, जंगल सोलह साल का ।"[4] तथा लड़कियाँ - जिलेबी और सिलेबी, बड़ी चौदह साल की, छोटी दस की ।"[5] इसके अतिरिक्त दुखमोचन उपन्यास के खेतीहर रामसागर का परिवार भी सीमित है --"पत्नी दो बच्चे । बस, घर में और कोई नहीं था ।"[6] परिवार नियोजन के आधुनिक साधनों से परिचित सदानंद और रंजना है, जो -- दो बच्चों के बाद तीसरी संतान न हो इसलिए दोनों ने संतति निरोध के तरीके अपना लिए हैं ।"[7] परिवार नियोजन के आधुनिक उपकरणों का प्रयोग नागार्जुन के सभी उपन्यासों में दृष्टिगोचर होता है ।

7.6 असंतुलित अर्थ और समन्वय कार्य

7.6.1 चर्चा

गांधी दर्शन तथा उनके विचार-धाराओं से प्रभावित देश में, इस औद्योगिकरण से केवल अर्थ संतुलन ही नहीं हुआ, बौद्धिक संतुलन भी जनता

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची 116 3. नागार्जुन : नई पौध पृ- 27
2. " : बलचनमा पृ- 228-229 4. " : वरुण के बेटे पृ- 38
5. " : [struck] वरुण के बेटे पृ- 38 6. " : दुखमोचन पृ- 5
7. " : कुंभीपाक पृ-55

को प्राप्त हो गया । जिसका उल्लेख नागार्जुन ने रतिनाथ की चाची, बलचनमा, नई पौध उपन्यासों में किया है । चर्खा चलाते रहने से चाची को बहुत लाभ पहुँचा है, उसकी -- "आर्थिक समस्या हल हो गई । मन नियंत्रित हो गया । दुर्भावनाओं से छुटकारा मिला ।"[1] इस तरह गांधीजी के विचारधारा से प्रभावित होकर जनता ने इस औद्योगीकरण को सहर्ष स्वीकार किया । केवल चाची ही नहीं -- "आसपास के इलाकों में हज़ारों चरखा चलने लगे, सैकड़ों जवान जगह-जगह कते हुए सूतों की लच्छियों का हिसाब लेते थे । बदले में कातने वाली औरतें [redacted] पैसा पाती थी ।"[2]

सामाजिक अर्थ व्यवस्था में गांधीजी के चिंतन में सहर्ष प्रवेश करके अर्थ के असंतुलित रूप को संतुलित कर दिया है । स्त्री और पुरुष दोनों की इस औद्योगीकरण के समान अधिकारी थे ।

रतिनाथ की चाची उपन्यास में चाची का जीवन विशेष प्रकार का हो गया था । जब से वह तरकुलवा से आई, तभी से चर्खा चला रही है -- "पचीस तीस रुपये हर महीने इससे निकल आते है । सूत बेहद बारीक कातती है ।"[3]

औद्योगीकरण में नई राजनीति ने जब प्रवेश किया, वह रूप - गांधी जी के चिंतन का रूप न होकर भ्रष्टाचार का एक रूप था ।

चर्खा-संघ वाले ने पहले कुछ दिनों तक --"महीन सूत कातने वाली के प्रति कुछ इन्साफ का अभिनय किया, सूतों के माकूल नम्बर दिए । बाद में धीरे-धीरे नम्बर घटाते गए झख-मारकर कतिनों को यह सब बर्दाश्त करना पड़ता

- -

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ- 99
2. " बलचनमा पृ- 119
3. " रतिनाथ की चाची पृ- 99
4. " " पृ- 99

जिसका परिणाम यह हुआ कि अखिल भारतीय सूत-प्रतियोगिता में सर्वप्रथम पदक पाने पर भी कतिने -"कम मजदूरी पाती हैं ।"[1] चर्खा संघवालों के इस भ्रष्टाचार को देखकर - "चाची की समझ में यह नहीं आ रहा था कि गाँधी जी के चेले इस प्रकार की बेईमानी क्यों करते हैं ।"[1]

उत्तरोत्तर दिशा में यह अर्थ संतुलन फिर विकृति की ओर बढ़ता ही गया जिसके फलस्वरूप औद्योगीकरण [illegible] के अर्थ संतुलन में बिगाड़ आया । अर्थ संतुलन और असंतुलन से खादी,ग्रामोद्योग तथा चरखा सूत का कोई सम्बन्ध नहीं । चर्खा कातना केवल अर्थ सम्पादन के लिए न होकर मानसिक संतुलन को, बौद्धिक विमर्श को, एकाग्र चित्त होकर स्थापित करना था । यह यज्ञ मनसा, वाचा, कर्मठा सभी ओर से संतुलन लाने के लिए था । रतिनाथ की चाची इस प्रथम [यथार्थ ज्ञान] के लिए प्रमाण थी । चाची का यह यज्ञ अखंड था, इस यज्ञ की फल प्राप्ति उसे --"बीस पच्चीस रूपये मासिक । कभी यह आमदनी तीस तक पहुँच जाती थी ।"[2]

आमदनी के अतिरिक्त उसका मानसिक संतुलन, स्थिरता की ओर अग्रसर हो गया था । चरखे ने इस संतुलन में कभी बिगाड़ होने नहीं दिया । वास्तव में इस एकाग्रता ने चाची को,जहाँ चाची के जीवन को बदल दिया था । उसके मानसिक क्रिया-कलापों में वह स्थिति प्रादुर्भूत हुई थी, जिसमें मानसिक तथा बौद्धिक असंतुलन का प्रश्न था ही नहीं । चाची की तटस्थता को देखकर रति कहता है --"तुम भी बहुत बदल गई हो । दिन-रात चर्खा चलाकर अपने लायक पैसा-कम लेती हो ।"[4]

1.2 नागार्जुन : रतिनाथ की चाची पृ-99
3. " : " पृ-157
4. " : " पृ- 98

जीवन की वास्तविक अनुभूति की प्रेरणा इस सम्भूति से चाची को मिल पाई थी । वह [चर्खा] एक मात्र अब साथी था - चाचीका ---"इसने पिछले पाँच साल से जीवन का साथ दिया है ।"[1]

एक अन्य उपन्यास नई पौध में भी चर्खे की तथा उसकी आमदानी से किस तरह संतुलन प्राप्त हो जाता है --- विचार किया है । पंडित की बड़ी पुत्री रामेश्वरी - "चर्खा चलाकर दस-बारह रूपये महीना - कमा लेती थी । × × × सूत बेचकर हासिल की गई यह रकम काफी थी ।"[2]

इसी उपन्यास में एक और जगह उपन्यासकार ने चर्खे के सम्बन्ध में उल्लेख किया है । "बुलो की भाभी बीच आँगन में कम्बल पर बैठी हुई थी - सामने पूनियों से भरी डलिया थी, कटोरा था, तकली थी ।"[3]

चर्खा व्यक्तिगत जीवन के साथ-साथ सामूहिक जीवन का भी साथी था । ग्रामीण विकासशील योजना के लिए चर्खा तथा जनता में अंग-आंगी सम्बन्ध स्थापित हो गया था । यह सामूहिक तथा समष्टि जीवन के लिए व्यापक रूप में प्रचार को प्राप्त हुआ था । ग्रामीण अर्थ संतुलन इस दिशा में ठोस कदम तो नहीं था, फिर भी वह उपकरण के रूप में उपस्थित हो रहा था ।

खादी, ग्रामोद्योग तकली और चर्खा एक ओर ग्रामीण जनता के लिए औद्योगीकरण का सहारा था, तो दूसरी ओर अर्थ संतुलन और आत्मविश्वास का सहारा भी ।

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची - पृ- 160
2. " नई पौध पृ- 103
3. " " पृ- 33

7.6.2 भूदान

आचार्य-विनोबा भावे द्वारा संचालित स्वेच्छा पूर्वक चलनेवाले इस आन्दोलन का प्रारम्भ सन् 18 अप्रैल, 1951 में पोचम्पल्ली [आन्ध्र प्रदेश] में हुआ था । जिसका मुख्य उद्देश्य सामाजिक न्याय एवं सर्व मंगल की भावना थी । आचार्य भावे इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए पैदल यात्रा करते और भूस्वामियों से भूमि का 1/4 भाग स्वेच्छा से मांगते । दान में मिली समस्त भूमि को गाँव के भूमिहीन वर्ग में वितरित कर दिया करते । इस आन्दोलन में भूमिदान के अलावा श्रम-दान, ग्राम-दान, सम्पत्ति-दान, गृह-दान, बुद्धि-दान, जीवन-दान भी होते है । उपन्यासकार नागार्जुन ने वरुण के बेटे तथा दुखमोचन उपन्यास में श्रमदान तथा भूमिदान का उल्लेखकर तथा उसके भ्रष्ट स्वरूप का चित्रण किया है ।

वरुण के बेटे उपन्यास में नागार्जुन ने श्रमदानियों की कृत्रिमता पर व्यंग्य किया है । कोसी नदी के किनारे हिन्द-किसकारी समाज के पदाधिकारी और प्रमुख कांग्रेसी जीपों में सवार होकर गाँव-गाँव में श्रमदान का प्रचार करते है। तथा उनके ग्रामवासियों को श्रमदान करने का आह्वान करते हैं । गाँव के सभी वर्गों के लोग अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठावान है लेकिन --"शौकिया श्रमदानी सज्जनों की बात ही और थी । उनकी सुविधा के अनेक साधन कोसी-किनारे जुट गए थे । चाय-कचौड़ी, चूड़ा-दही, रेडियो, सिनेमा, रिकार्ड, माइक - लाउड स्पीकर, अखबार और पत्रिकाएं - बिस्कुट, पान सिगरेट, शर्बत, मिठाई - पूड़ी -- कैमरावालों की भरमार भी है, -- पटना या दिल्ली से आए हुए ऊँचे पदाधिकारी के साथ भीड़ में खड़े हो जाते और फोटो खिंच जाती ।"[1]

---

1. नागार्जुन : वरुण के बेटे पृ - 39

इन लोगों का श्रमदान दूसरों के लिए मनोरंजन का अच्छा साधन था। उपन्यासकार की दृष्टि से इस प्रकार के श्रमदान में दान-भावना की पवित्रता दिखाई नहीं देती।

इसके विपरीत -"स्कूल-कालेज में पढ़नेवाले "नेशनल कैडेट कोर" की निगरानी में बीसियों हज़ार स्कूली-कालिजी लड़के कोसी के पूर्वीय और पश्चिमीय -दोनों तटबंधों का निर्माण करने आए थे, उन्होंने अलबत्ता काफी काम किए थे।"[1]

श्रमदान का भव्य रूप दुखमोचन उपन्यास में मिलता है। टमका-कोइली गाँव से "दक्षिण डेढ़ मील तक कच्ची सड़क गत वर्ष बाढ़ में चौपट हो गई थी।"[2] सरकारी विभाग के लाल फ़ीताशाही से तंग आकर दुखमोचन के नेतृत्व में टमका-कोइली गाँव के "मज़दूर आधी मज़दूरी पर मिट्टी कोड़ने और ढोने पर राजी हो गए। खाते-पीते परिवारों से कए एक आदमी बिना मेहनता के ही काम करने लगा।"[3] इसके अतिरिक्त पास-पड़ोस के गाँव -"किसौन और पुनाई चक से ग्राम रक्षा-समिति के जवान मदद के लिए आ पहुँचे थे।"[4] गाँव के प्रतिष्ठित वर्ग के प्रतिनिधि नवल किशोर और मास्टर टेकनाथ आदि भी सहयोग का स्वाँग भरते रहे। सही काम तो -"मज़दूर और मामूली ग्रामीण कर रहे थे।"[5] श्रमदान के भव्य रूप का वर्णन करते हुए उपन्यासकार कहते है --"सैकड़ों कुदाले मिट्टी कोड़ने में लगी थीं। मिट्टी की टोकरी उठाकर एक दूसरे को थमाता, खाली टोकरी उससे वापस लेता। दूसरा मज़दूर भरी [redacted] टोकरी तीसरे को थमाता और खाली टोकरी उससे वापस ले लेता, तीसरा मज़दूर

---

1. नागार्जुन : वरुण के बेटे पृ- 39
2, 3, 4, तथा 5 : नागार्जुन : दुखमोचन पृ - 117

मिट्टी रास्ते पर डाल देता और खाली टोकरी वापस लाता ।"[1] इस तरह से श्रमदान का एक शानदार रिकार्ड टमकाकोइली की ग्रामीण जनता ने स्थापित किया है । नागार्जुन ने भूदानियों के भ्रष्ट नीति का उल्लेख हीरक जयन्ती तथा उग्रतारा उपन्यास में किया है ।[2]

7.7 साहित्य और उसका व्यावसायीकरण

समस्याएँ सभी ओर है, राजनीति में, धर्म में, अर्थ में, साहित्य में तथा जीवन के विविध अंगों में, उनका परिवेश भिन्न है ।

साहित्यकार का रूप तटस्थ है । वह समाज का क्रांति दृष्टा है, फिर भी राजनीतिक समस्याओं ने उसकी अवहेलना की और इस दृष्टिकोण में साहित्यकार बना समस्या के रूप में ।

7. 7.1 नेता साहित्यकार

युवा मंत्री जानकीबाबू यह समझते हैं कि "राजनीति की तरह साहित्य की भी अपनी समस्याएँ होंगी और क्या समझूंगा ? लोग मुझे बोडम कहेंगे ।"[3] साहित्यकार समयानुकूल अपना परिवर्तन न कर सका तो वह निश्चित ही इस आधुनिक राजनीति में तिनके की तरह बाहर कर दिया जायेगा, उपन्यासकार ने इस अवस्था का चित्रण सम्पादक तथा मंत्री के मध्यस्थ रूप में किया है । मंत्री महोदय अपनी विवशता का उल्लेख करते हुए कहते है —" हमारी आँखें मुंदती तो नहीं लेकिन आँखों खुली रखकर भी बाज वक्त हम मजबूर होते हैं ।"[4] फिर भी साहित्यकार की मजबूरी है

---

1. नागार्जुन : दुखमोचन पृ- 117
2. देखिए शोध प्रबन्ध का ग्राम : राजनीति के संदर्भ पृ-
3. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 37
4. " : " पृ- 37

मंत्री के हाथों बिकने पर विवश किया और उस बिकावट का एक अंश साहित्यकार को धन के संकुचित रूप में मिला । तो दूसरी ओर मंत्री महोदय को उसका अधिकांश भाग राजनीतिक क्षेत्र में, साहित्य के क्षेत्र में, आर्थिक क्षेत्र में तथा जीवन के विविध अंगों में उसे मिल पाया है । मंत्री लोहा माना गया अपनी साहित्यिक रचना के आधार पर और साहित्य रचना का निर्माण हुआ साहित्यकार की मानसिक चेतना पर । जिसका संतुलन अर्थ ने किया ।

दिवाकर जी ने मंत्री महोदय को --"ठोंक पीट कर साहित्यकार बना दिया ।"[1] और उनकी रचनाएँ --"बिहार की सांस्कृतिक देन ; "बौद्ध धर्म और बिहार", भारतीय दर्शन के विकास में बिहार का स्थान", "संस्कृतियों का संगम स्थान बिहार"[2] आदि प्रकाशित हुए, और सारे देश को राज्य के एक शासक की विद्वता का लोहा मानना पड़ा - "कीर्तिर्यस्य जीवित ।"[3] कालिदास की तरह मंत्री महोदय भी जयन्ती ते सुकृतिन: रससिद्धा: कवीश्वरा: । हो गये । यह सारा कार्य दिवाकर जी के हाथों सिद्ध हुआ । मंत्री तथा साहित्यकार की समस्या का सम्बन्ध एक ओर अर्थ से है, तो दूसरी ओर समाज से भी ।

7.7.2 प्रकाशक और साहित्यकार :

साहित्यकार [redacted] और प्रकाशक की भी यही समस्या है । साहित्यकार को भी "ठीक इसी तरह प्रकाशकों से बड़ा डर लगता है । प्रकाशकों के प्रति उसकी भी सौ शिकायतें हैं "[4] केवल इतना ही नहीं प्रकाशक --" प्रतिभाशाली युवक साहित्यकारों की किताबें अव्वल तो वे लेते ही नहीं है

---

1. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 33
2. " : " पृ- 36
3. " : " पृ- 36
4. " : " पृ- 78

और यदि लेकर छाप भी लेते तो अंधेरे गुदामों में उन किताबों की रूह दस-दस साल तक घुटती रहती ।"[1] इस तरह साहित्यकार को बड़ा डर लगा रहता है --"जाने कितनों की एडवान्स रकम [redacted] पचाकर साहित्यकार "विशुद्ध साहित्यकार" बनता है ।"[2]

साहित्यकार, प्रकाशक और मंत्री महोदय अर्थ की असंतुलित व्यवस्था के लिए जिम्मेदार है । साहित्यकार की इस दयनीय अवस्था का चित्रण उपन्यासकार ने चित्रित किया है ।

7.7.3 सम्पादक और साहित्यकार

सम्पादन कला प्रवीण नागार्जुन की पैनी दृष्टि साधारण जनता के लिए अत्यन्त गहरी और तीखी है । कुंभीपाक का सम्पादक दिवाकर शास्त्री नागार्जुन के मुख से उपन्यासों में बोल रहा है - "संपादक लोग बड़े शैतान होते है । भूल कर के भी शैतानों से जान-पहचान नहीं करना चाहिए । पीछे लगेंगे तो खोद-खोद कर सारी बातों का पता लगा लेते "[3] ..... इस के वातावरण में पलने वाला चाहे सम्पादक हो चाहे व्यवसायिक कलाकार दोनों भी अपने काम साधने में शतरंज के उन सभी मोहरों को चलायेंगे, जहाँ दाव कभी खाली न जाता हो । प्रोप्राइटर तिलकधारी दास को ---"पुस्तकें मंजूर करने वाली कमेटी के सदस्यों की पोल -- अच्छी तरह मालूम थी । पाठ्य पुस्तकों का अवैध व्यापार - विभिन्न ज़िला बोर्ड के स्कूलों में "स्टेशनरी" के नाम पर रद्दी माल की सप्लाई xxxx ग्रामोद्योग के नाम घी, तेल और खादी का धंधा"[4] तिलकधारी दास को कितने ही कामो का तजुर्बा हासिल था ।

---

1. नागार्जुन : कुंभी पाक - पृ- 74 2. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 78
3. " : कुंभीपाक पृ- 20 4. " " पृ- 22

नेता, प्रकाशक आदि द्वारा किस प्रकार से अर्थ का संतुलन होता है, इसकी विवेचना नागार्जुन ने की ।

7.8 नागार्जुन का आर्थिक दृष्टिकोण :-

अर्थ, अर्थ संतुलन, आर्थिक व्यवस्था तथा अर्थ-आधारन्वित क्रिया-कलापों का सैवेत उपन्यासकार के दृष्टिकोण में अत्याधिक महत्वनीय है । सामाजिक परिवेश में अपनी सत्ता को स्थापित करने के लिए जिन उपायों को अपनाया जाता है, उसमें अर्थ का [redacted] अत्यधिक महत्व है ।

बाबू गोपीवल्लभ ठाकुर के लिए-"कौन ऐसा काम है जो चाँदी के ठीकरों से नहीं होगा ? है कोई ऐसा काम ?"[1]

संसार में निम्न से निम्न तथा श्रेष्ठ से श्रेष्ठ कार्य, इसी अर्थ व्यवस्था के आधार पर स्थिर है । तथा उसकी पूर्णता का अधिकांश भाग इसी पर अवलम्बित है । रोगी हो चाहे साहित्यकार, संयमी हो चाहे योगी, नेता हो या सम्पादक, सभी इस व्यवस्था के हाथों बिकने के लिए तैयार है ।

चाँदी की ठीकरे ही नहीं --"चाँदी और सोने का भस्म बड़े-बड़े रोगों की अचूक दवा है "[2] तथा ब्रह्म हत्या जैसे पाप निर्मूलन की भी । जमींदार बाबू बुच्चन पाठक के आदेशानुसार कमला नदी में स्नान किया तथा वहीं एक पीपल के नीचे साधारण सा प्रायश्चित भी --"प्रकट रूप से कुल दस-बारह रूप से खर्च पड़े । यह दूसरी बात है कि कर्म कांड केशरी महाशय को दस कट्ठा [redacted] बढ़िया जमीन इस सिलसिले में मिली ।"[3]

---

1. नागार्जुन : हीरक जयन्ती पृ - 81
2. " : रतिनाथ की चाची पृ- 110
3. " : रतिनाथ की चाची पृ- 110

साहित्यकार और उसके साहित्यका विक्रय केवल धन पर ही न होकर उस साहित्यकार का मन भी इस धन पर बिक जाता है। तत्काल नकद रकम पाने की संभावना से मन काबू में न रह सका, साहित्यकार झुका। उसका -"स्वाभिमान एक तरफ और लाभ की आशा में झूलने वाला हिसाबी विवेक दूसरी तरफ -- दोनों में खींच-तान होने लगी।"2

अर्थ व्यवस्था ने योगी के संयम को तोड़ दिया, वेदान्ती के बुद्धि को मोड़ दिया, नैयायिक के मन में तूफान मचा दिया, नास्तिक को अपनी ओर खींचा और मिमांसक को अपना पूरा बेचने के लिए विवश किया। दिवाकर शास्त्री का संयम अर्थ पर टूट रहा था, फिर भी उन्होंने -- संयम से काम लिया, हाँ या ना कुछ नहीं निकला उनके मुंह से "3 उनका स्वाभिमानी व्यक्तित्व झुक गया उस व्यवस्था के सामने जिससे उसे सहानुभूति मिली, साहित्यकार बिका कौड़ियों की मोल में।

प्रोप्राइटर दासजी बोले - "दो दो फर्मे की आधी दर्जन किताबें तैयार कर दीजिए -- आलू की खेती, आम का धंधा, बांस का व्यवसाय, बुनियादी तालीम, नदी नियंत्रण, जोनपुर का मेला"4 - क्यों कि बोर्ड की स्कूली लाइब्रेरियों में इन किताबों की खपत निश्चित है। लेखक के अतिरिक्त प्रशंसा रही प्रकाशनवालों के हाथ में।

देश की इस दयनीय दशा का चित्रण उपन्यासकार ने "कुंभीपाक" में भी किया है। सम्पादक, साहित्यकार, गरीब किसान, मजदूर, औरतें किस तरह इस अर्थ असंतुलन पर बिकती है इसके अनेक अंश उपन्यासों में दिखाई देते हैं।

---

2. नागार्जुन : कुंभीपाक पृ- 23
3. " " पृ- 23
4. " " पृ - 23

अष्टम अध्याय

ग्राम : गाथा संदर्भ

8. ग्राम : भाषा सन्दर्भ

उपन्यासों में प्रचलित भाषा खड़ी बोली है। जिसका एक ही शब्द विविध प्रान्तों में अलग अलग ध्वनियों को ग्रहण करता है। बिहार प्रान्त में, कुछ दूरी के अन्तर से भाषा की व्यंजना बदलती ह जाती है। इस तथ्य को उपन्यासकार स्वयं स्वीकार करते हैं -- "पटना के तरफ शहरपन की भी ज्यादा है। इधर जिसको रखना कहेंगे, उधर उसको हम धना कहेंगे। x x x बाबू लोगों के मुँह से किहिस निकलता है, तो उधर तुम लोगों के मुँह से किया-दिया सुनोगो।"[1]

8.1 हिंदी के विविध रूप :

भाषा की विविधता उनके उपन्यासों में सर्वत्र दिखाई देती है। उपन्यासकार वाचक के रूप में, वर्णन और विवरण देते हैं, तब उपन्यासों की भाषा -- (1) परिनिष्ठित हिन्दी (2) मैथली (3) संस्कृतनिष्ठ हिन्दी तथा (4) उर्दू मिश्रित हिन्दी होती है।

8.1.1 परिनिष्ठित हिन्दी :

परिनिष्ठित हिन्दी का प्रयोग रतिनाथ की चाची[2] दुखमोचन[3] तथा नई पौध[4] उपन्यासों में दिखाई देता है। शरद

---

1. नागार्जुन : बलचनमा : पृ.124-25
2. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ.40-41
3. नागार्जुन : दुखमोचन : पृ. 139, 148
4. नागार्जुन : नई पौध : पृ.70

मार्च 1, 82.

श्री मन,

नेत्रों के कारण अब तक पत्र नहीं डाल सका हूँ। क्षमा करें! आज ही आया हूँ — विस्तृत पत्र फिर लिखूंगा ही।

बादल छाये हैं। वर्षा हो जाती है बीच-बीच में। दिल्ली में शीतलहर चल रही है। मैं ठीक हूँ।

इला अपनी माताजी से मेरा नमस्कार कहें। परिवार के सभी सदस्यों को आशीर्वाद।

नागार्जुन

आपका

ऋतु की शुभ्र चाँदनी का आलोक सम्पूर्ण प्रकृति में व्याप्त हो जाता है, तो उस अद्भुत सौंदर्य को देखकर, केवल साहित्यकार ही नहीं -- "भिंड पर बैठे हुए निपट निरक्षर दुसाध मुसहड भी कवि की तरह उसासे भरा करते हैं ।"[1]

हेमंत ऋतु में -- "सिल्लियों और बनमुर्गियों का झुण्ड बलुआहा के निर्मल जल में घने सेवार पर इधर से उधर छप-छप करके दौडा करता है ।"[2] तो बसन्त में -- "बालक-बालिकाएं ..... जल विहार आरम्भ कर देते ।"[3] वैशाख और जेठ के महीने में -- "वरुण देवता का खजाना धनी-गरीब, बूढे-बच्चे औरत और मर्द सभी के लिए खुल जाता है ।"[4]

अग्निकांड में भस्म हुए टमका कोइली गाँव, ऐसा दिख रहा था जैसे -- "राख के समुद्र में बीस-पचीस खपरैल-मकान और पाँच सात कोठे टापुओं की तरह चमकते हैं ।"[5] तो कहीं -- "बिना भीत के जले घरों के नंग-धडंग खम्भे पुरानी नावों के बदरंग मस्तूलों की तरह चाँदनी के दूधिया समुद्र में ..... बेशरमी से इतरा रहे थे ।"[6]

वर्षा के उपरान्त, प्रकृति में हुई हलचल को देखकर उपन्यासकार कहते हैं -- "पेड अपनी अपनी पत्तियों से अब भी मोटी-मोटी बूंदें

- -

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ. 40
2., 3. तथा 4. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ. 41
5. नागार्जुन : दुखमोचन : पृ. 139
6. नागार्जुन : दुखमोचन : पृ. 148

टपका रहे थे । सूखी धरती ने दिल खोलकर वर्षा का स्वागत किया था । जहाँ-तहाँ मैं ढक पुलकित हो होकर ऋतु की रानी का जय-जयकार कर रहे थे ।"[1]

परिनिष्ठित हिन्दीका प्रयोग वर्णन, विवरण के अतिरिक्त उच्चस्तरीय भावों की अभिव्यक्ति में भी हुआ है -- किसी युग में स्त्री को अमृत पीने का सयोग नहीं मिला, पुरुष को अमृत पिलाकर वह स्वयं विषपान ही करती आयी हैं ।"[2] समाज के यथार्थ स्थिति का अंकन -- "समाज उन्हीं को दबाता है जो गरीब होते हैं । शास्त्रकारों को बलि के लिए बकरे ही नजर आए । बाघ और भालू का बलिदान किसी को नहीं सूझा ।"[3]

8·1·2 ठेठ मैथिली :

ठेठ मैथिली का प्रयोग उपन्यासकार ने बलचनमा[4] तथा नई पौध[5] उपन्यासों में किया है ।

8·1·3 संस्कृतनिष्ठ हिन्दी :

संस्कृत निष्ठ हिन्दी का प्रयोग उपन्यासों में प्राकृतिक सौंदर्य गम्भीर भावों की अभिव्यक्ति पात्रों का विवरण तथा बोलचाल के रूप में ब्राह्मणों द्वारा हुआ है ।

1. नागार्जुन : नई पौध : पृ· 70
2. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ· 100
3. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ· 58
4. नागार्जुन : बलचनमा : पृ· 117
5. नागार्जुन : नई पौध : पृ· 18

देखिए शोध प्रबंध का ग्राम सांधिक संबंध पृ·

रात्रि के वातावरण का वर्णन करते हुए उपन्यासकार कहते हैं -- "यों रात डेढ़ पहर से ज्यादा नहीं बीती होगी, परन्तु लगता ऐसा था, कि निशीथ के क्षण आ पहुंचे । स्निग्ध-शीतल एवं धवल-पाण्डुर आलोक धरती को दिग-दिगन्त तक उद्भासित कर रहा था । नीचे पृथ्वी ऊपर आकाश-दीप प्रकृति का उदार परिवेश वह क्या था, ग्रीष्मान्त की रजनी का सौभाग्य श्रृंगार था ।"[1] प्रातःकालीन सूर्य किरणों का, हिमालय पर्वत पर गिरने से उत्पन्न सौंदर्य का भी वर्णन उपन्यासकार ने किया है -- .. "सुदूर उत्तरी आकाश में हिमालय की पीली किरणों से उद्भासित होकर स्वर्ण श्रृंग सी लग रही थी ।"[2]

संस्कृत भाषा का प्रयोग उपन्यासों में बोलचाल की भाषा के रूप में पंडित तथा ब्राह्मण वर्ग द्वारा हुआ है ।

नई पौध उपन्यास का घटकराज पंडित जी के आगे नस फैलाते हुए बोले -- "सत्य श्रमाभ्यां सकलार्थ सिद्धि"[3] पात्रों की अस्तिकता को प्रकट करने के लिए संस्कृत श्लोकों का उच्चारण भी ब्राह्मण वर्ग द्वारा हुआ है । यह वर्ग प्रातःकाल के समय, दोपहर के अवकाश में तथा यात्रा के समय, श्लोकों का पाठ करते हैं ।

"फुरीकाका प्रातःकाल, स्नान आदि कर्म से निवृत्त हो, ईश्वर का नामस्मरण करते हुए -- प्रथमस्तु महादेवो द्वितीयस्तु महेश्वरः ।

तृतीय : शंकर: प्रोक्तश्चतुर्थो वृषभध्वजः।

पंचम : कृत्तिवासाश्च ..... ।"[4]

- -

1. नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ. 14-15
2. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ. 115
3. नागार्जुन : नई पौध : पृ.16
4. नागार्जुन : नई पौध : पृ. 17

तथा श्लोकों की कड़ी को फिर जोड़ते जाते ।

तो इसी उपन्यास के बाबू ~~मुकुन्दलालदास~~ रघुपतलालदास "ललित किशोर" अवकाश के समय श्लोकों का पाठ किया करते --

"कर्मण्येवाधिकारस्ते
मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफल हेतुर्भू :
मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ।।"[1]

यात्रा के समय श्लोकों का उच्चारण नई पौध[2] उपन्यास में ही हुआ है । तथा गंभीर भावों की अभिव्यक्ति में -- "आज उमानाथ का हृदय गर्मी की गंगोत्री बन गया था । ताप विगलित हिमानी प्रखर स्रोत की भूमिका बनकर जब वह निकलती है तो मैदान की गंगा अपने दोनों तटों को आप्लावित करती हुई बहती चली जाती है ।"[3] अतिरिक्त इसके उपन्यासकार जब स्वयं पात्रों का परिचय देते हैं, तब उनकी भाषा का रूप संस्कृतनिष्ठ होती है -- चेहरे पर वही सनातन प्रफुल्लता ..... धोती कुर्ते में लिपटी वही छरहरी देहयष्टि ..... प्रलम्बित ग्रीवावाले मुखमण्डल को आकर्षक बनानेवाली वही नुकीली नाक ।"[4]

8·14 उर्दू मिश्रित हिन्दी :

उर्दू मिश्रित हिन्दी का प्रयोग करने में भी नागार्जुन सिद्धहस्त हैं । उपन्यासकार जब स्वयं विवरण देते हैं, तब उनकी भाषा अनायास

- -

1· नागार्जुन : नई पौध : पृ· 111
2· नागार्जुन : नई पौध : पृ· 20
3· नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ· 79
4· नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ· 117

इस रूप को ग्रहण करती है, -- "पूरब की तरफ आसमान में दशमी का चांद काफी ऊपर उठ आया था । कोहरे ने चांदनी को फीका कर रखा था । फीका आसमान और फीके तारे ।"[1] भाषा की स्वाभाविकता के लिए जने, रोज, उम्र आदि सामान्य प्रचलित शब्दों का प्रयोग -- हीरक जयन्ती[2], उग्र तारा[3] उपन्यासों में हुआ है ।

ठेठ उर्दू भाषा का प्रयोग वहां दृष्टव्य है, जहां उपन्यासकार स्वयं प्रसंग को व्यक्त करते हैं -- "डर के मारे उसका कलेजा कांपने लगा, कांपने लगा जैसे कि केले का नया चिकना पत्ता बयार की हलकी से हलकी सिहकी पाकर कांप उठता है । थोड़ी देरके लिए बिचारी का होश गुम हो गये ।"[4] उर्दू भाषा का लहजा जिस समय हिन्दी के रूप को ग्रहण कर लेता है, तब भाषा में वह लचक पैदा होती है, जो अनायास भाषा के सौंदर्य प्रसाधन के लिए उपर्युक्त है -- "आंखें डबडबा आई .....भावावेग पर काबू पाने की कोशिश की ।"[5]

8·2 अन्य भाषा-प्रयोग :

नागार्जुन विविध भाषाविद् है, आंचलिक शब्द-कहावतें, मुहावरे तथा आंचलिक भाषा का प्रयोग जिस तरह उन्होंने किया है, वास्तव में भारतीय भाषाओं के लिए वे कीर्ति स्तम्भ है । उनके उपन्यासों में बंगाली, पंजाबी, भोजपुरी भाषा के भी प्रयोग भी दिखाई देते हैं ।

1· नागार्जुन : दुःखमोचन : पृ· 78
2· आज आठ ही जने एकत्र हो सके थे । हीरक जयन्ती : पृ·12
3· दो रोज बाद ... छोटी उम्र की नौकरानी थी । उग्रतारा-पृ·107
4· नागार्जुन : बलचनमा : पृ· 78
5· नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ· 127

8·21 बंगाली :

बंगाली भाषा का प्रयोग वरुण के बेटे उपन्यास में बंगाली बाबू द्वारा -- "धोधन, छोड़े दाओ" (छोड़ दो), हियां (यहां) आ जाओ ।"[1] हुआ है ।

8·22 पंजाबी :

पंजाबी भाषा का प्रयोग, पंजाबी फेरीवाला करता है -- "ऐसा माल पष्टण में भी नहीं मिलना भैणजी, ले ले जो मर्जी तुसी दे देणा .... आ बलाउज देखो ..... केवा सोहणा ।"[2]

8·23 भोजपुरी :

भोजपुरी भाषा उपन्यास नागार्जुन के लिए अपनी मातृभाषा की तरह है, भाषा में पूर्वीय छटा का संदर्भ सर्वत्र दिखाई देता है, "बाबा जिनगी भर रावुर गुलाम होके रहवा, क्वनो तरकीब भिडावल जाय, गरीब के उद्धार हो जाई ।"[3] आंचलिक शब्दों का प्रयोग करने में नागार्जुन सिद्ध हस्त है ही, ग्रामीण भाषा का उद्भव तथा विकास इन्हीं आंचलिक शब्दों के द्वारा ही होता है ।

8·24 मैथिली :

मैथिली नागार्जुन की मातृभाषा है । मैथिली भाषा के आंचलिक शब्दों

1· नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ· 94
2· नागार्जुन : दुखमोचन : पृ· 71
3. नागार्जुन : जमनिया का बाबा : पृ· 11

ठो[1], एगारह[2], के[3], गो[4], कादु[5], एकेस[6], के लेखे[7] अगे मइया[8]

- -

1\. राधा बाबू चार ठो डोंगी लेकर ..... बलचनमा : पृ. 103
मौसम में चार ठो पियाज और आठ ठो टमाटर खाते थे .....
बलचनमा - पृ. 122 - सिर्फ दो ठो.... उग्रतारा पृ. 63
... कैसी सुपारी आती है तुम्हारे यहाँ और के-के ठो देते
हो लोगों को ।.... नई पौध - पृ. 78

2\. उसके एगारह ठो मेम्बर हैं । नई पौध : पृ. 127
एक जाजगा एगारह आएगा । बलचनमा : पृ. 38

3\. उन्होंने मुझे के बार सरबत पिलाई, बलचनमा : पृ. 45
के बार आँखें डबडबाई ? बलचनमा पृ. 62
लहना-तगादा के हजार है ? नई पौध पृ. 15. के बार वह उन
पंक्तियों को आदि से अंत तक पढ गई, नई पौध - पृ. 38
के बन गए : नागार्जुन : उग्रतारा : पृ. 93
के बजा है बहादुर : उग्रतारा : पृ. 94

4\. तीन गो तकिया : नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 96
दू गो बेटा है, उ भी बेटा है : नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 123
एको गो दाँत नहीं होगा : नागार्जुन : नई पौध : पृ. 32

5\. आगे झुकना कादु कैसा-कैसा कुभाता था : पृ. 72

6\. एकेस पुरखा का उद्धार कर देंगे । नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 114

7\. भाई के लेखे दोनों छोटे हैं । नई पौध : पृ. 65

8\. "अगे मइया ! एको दाँत नहीं हामा .." नागार्जुन :
नई पौध : पृ. 32

अहि रे बा ।[1] गे मां गे[2] एौ[3], ऐ[4] ए गो[5] गे-मइयो[6] गे[7] गेकि[8] एक्को गो[9] का प्रयोग उपन्यासों में हुआ है । मैथिली के अतिरिक्त मराठी तथा गुजराती भाषा के शब्दों का प्रयोग भी उपन्यासों में हुआ है ।

- -

1· "[illegible] अहिरे बा । रोते हैं आप ?" पृ 72
2· नागार्जुन : बलचनमा : पृ· 77
3· "एौ । उगनी ने वाक्य" ··· नागार्जुन : उग्रतारा : पृ· 49
4· "ऐ फतुरी काका ? नागार्जु : नई पौध - पृ·30
5· ए गो मइया । नागार्जुन - पृ· 98
6· गे मइयो । तारा ? नागार्जुन : नई पौध : पृ·22
गे मइयो । नागार्जुन : नई पौध : पृ· 25, 78
7· सो तो हइए है, गे । नागार्जुन : नई पौध : पृ· 77
8· बिसेसरी गोकी पहले ही " पृ· 36
9· "नानी भी एक्को गो है खूलों "? नगार्जुन - नई पौध : पृ· 127

8·25 मराठी :

मराठी भाषा के अन्तर्गत

छीता[1], भरपूर[2], लालाबुन्द[3], झोली[4], भाड़ा[5], नगदी[6], तथा जास्ती[7] का प्रयोग निम्न उपन्यासों में हुआ है ।

8·26 गुजराती :

गुजराती भाषा के अन्तर्गत -- छोकरा[8], छोकरी[9], मुखड़ा[10] तथा पीछु[11] का प्रयोग निम्न उपन्यासों में हुआ है ।

1· "छीले निपोर निपोरकर हंसते हैं ।"-हीरक जयन्ती-पृ· 100
2· "घरवाले भरपूर मेहनताम करते" हीरक जयन्ती :पृ· 26
3· "आम खा खाकर लालबुन्द हो जाते ।" रतिनाथ की चाची:पृ· 52
4· "मन अपनी झोली में लोट-लोट जाता ।"बलचनमा:पृ·202
5· "एक रूपेया पक्के का भाड़ा" बलचनमा : पृ· 30
6· "नगदी का इन्तिजाम मैंने कर ही लिया ।" बलचनमा : पृ· 143
7· "बही जास्ती खट्टा और बदबूदार"·· बलचनमा पृ· 9
"रूपइया पइसा जास्ती था ।" ·· बलचनमा : पृ· 22
8· "पंखा झलनेवाला छोकरा कब का जा चुका था ।नई पौध-पृ·52
नटखटछोकरा ।" बाबा बटेसरनाथ : पृ· 5
9· छोकरे ने देर की चुप्पी और स्थिरता ले। "दुखमोचन पृ· 41
9· नई छोकरी आई है : उग्रतारा - पृ·25
छोकरी उस रोज जरूर पिट जाती । हीरक जयन्ती - पृ· 67
तीन छोकरियां गई थी 2। हीरक जयन्ती : पृ·69
10· गोल मुखड़ा । दुखमोचन : पृ· 24
मुखड़ा अच्छा हो । नई पौध : पृ· 95
याद है माँ का मुखड़ा । उग्रतारा : पृ·53
काश , यह मुखड़ा वही मुखड़ा होता ।"···हीरक जयन्ती : पृ· 86
11· महीना पीछु पांच-सात । बलचनमा : पृ· 159

8.3 विदेशी भाषा :

8.3.1 अँग्रेजी :

उपन्यासकार ने देशी भाषा के अन्तर्गत बंगाली, पंजाबी, भोजपुरी, मैथिली, मराठी तथा गुजराती के अतिरिक्त विदेशी भाषाओं में अँग्रेजी का प्रयोग भी उपन्यासों में किया है।

अँग्रेजी भाषा का बिगड़ा रूप, अन्य भाषा के बिगड़े रूप से किस तरह संतुलित रहता है, इस तथ्य को दर्शाने में नागार्जुन अपने आप में अद्वितीय है -- "हम डी टी एस को फोन करता है ...... मिलिटरी आयगा तब गाँव को लेसन देगा x x x मिलिटरी शैल रीच हीयर अर्ली इन द मोर्निंग"[1] अतिरिक्त इसके अँग्रेजी भाषा के विभिन्न शब्द, ध्वनि विकृतियों को लेकर उपन्यासों में प्रयुक्त हुए है वे वालंटियर[2], किरिस्तान[3], जक्सन[4], टीसन[5], पलेटफारम[6] पोसकाट[7] बालस्टर[8], बलिस्टर[9], भोलन्टियर[10], मलिस्टर[11],

1. नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ. 94
2. कहने को वोलंटियर कह लो, - बलचनमा : पृ. 109
3. बाप किरिस्तान है .... - रतिनाथ की चाची : पृ. 87
4. छठाही जक्सन एक है... बलचनमा : पृ. 43
5. टीसन पर ढोला टंगा रहता .. बलचनमा : पृ. 13
6. गाड़ी पलेटफारम छोड़कर ... बलचनमा : पृ. 12
8. खिसकने लगी
7. उसमें डाल आती पोसकाट : बलचनमा : पृ. 139
8. बालस्टर बनकर प्याज लहसन : रतिनाथ की चाची : पृ. 34
बालिस्टर बनोगे, विलायत जाओगे : बलचनमा : पृ. 66
9. बलिस्टर भी हो सकते हैं, बलचनमा : पृ. 108
10. यह मलिस्टर क्या होता है : बलचनमा : पृ. 193
11. यह मालिस्टर क्या होता है, बलचनमा : पृ. 193

मलेटरी[1], रेलबी[2], लंबर[3], लैन[4], विलेत[5] तथा सूटकेशी[6] है ।
भारतीयों द्वारा अँग्रेजी का प्रयोग, जिस तरह बिगड़े रूप में प्रयुक्त
होता है, उसी तरह अँग्रेजी द्वारा हिन्दी भाषा का प्रयोग
"भाई गाड हटने हथियार ।"[7]

8·4 मुहावरे तथा कहावतें :

भावों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भाषा है ।
बहु भाषीय विद्वान नागार्जुन का भाषा पर पूर्ण रूपेण अधिकार है
जिसके कारण उपन्यासों में हर प्रकार के भावों की अभिव्यक्ति सहज
रूप से हुई है । भाषा शैली में -- "गतिशीलता और सचित्रता ...
और यदा कदा उसमें चित्रमयता का समावेश" होने के लिए मुहावरों
तथा कहावतों का अत्याधिक सफल प्रयोग उपन्यासों में दृष्टव्य है ।
केवल हिन्दी, मैथिली के ही नहीं उर्दू भाषा के मुहावरों तथा कहावतों का
प्रयोग भी उपन्यासकार ने बड़े ही स्वाभाविकता से किया है ।
यहाँ पर उन सभी मुहावरों तथा कहावतों को देना असम्भव है,
इसलिए उदाहरण स्वरूप कुछ कहावतें और मुहावरें निम्न है ।

1· मलेटरी आई है : वरुण के बेटे : पृ· 109
2· बीच में रेलबी लैन : बलचनमा : पृ· 42
3· रात मेरा लंबर था : बलचनमा : पृ· 200
4· बीच में रेलबी लैन : बलचनमा : पृ· 42
5· विलेत भी जा सकते थे : बलचनमा : पृ· 108
6· नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ· 92
7· नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ पृ· 92

8·4·1 हिन्दी मुहावरें :

उपन्यासों में प्रयुक्त हिन्दी मुहावरें -- अल्लम-गल्लम बकना[1] आँखें डबडबाना[2] आगरे के गोल गप्पा बनना[3] गरिबों का उद्धार[4] होना बाकरछें दुही[5] जहाँ धड़ तहाँ धर[6] दूसरों के सामने हाथ फैलाना[7] नाम पर काला कुत्ता पोसना[8] ना भी की नार काटना[9]

1· यों ही अल्लम-गल्लम बकता रहता है" : नई पौध : पृ· 25

2· शब्द अटक-अटक कर निकलने लगे और आँखें डबडबा आईं।"
हीरक जयन्ती पृ· 127

3· गालों को आगरे के गोल गप्पे बनाकर मुँह फेर लेता:नईपौध:पृ·114

4· बाबा···तरकीब निकाल जाय, गरीब के उद्धार हो जाई।"
जमनिया का बाबा : पृ· 11

5 कोई सुराग पा गए है उनके गोरस दुही की। कुंभीपाक:पृ·16

6· तुम्हारा क्या है। जहाँ धड़ तहाँ धर। रतिनाथ की चाची:पृ·132

7· हर दो रोटी के लिए दूसरों के सामने हाथ फैलाना पड़ता था।"
वरुण के बेटे : पृ· 96

8· "गाँव से बाहर न करूँ तो आप मेरे नाम पर काला कुत्ता पोस लीजिएगा"? नई पौध : पृ· 73

9· अभि तो कुल जमा चार रोज के होवे किये हो और नाभी की नार तक नहीं कटी है अभी। नई पौध : पृ· 51

पागल कुत्ते की तरह भौंकना[1] पानी में आगाना[2], बत्तिसों दांत दर्शाना[3], सिर-कंधे पर न रखना[4] स्मृतियों की अपार भीड हृदय पर हमला करना[5]

8.42 हिंदी कहावतें :

हिंदी कहावतों के अन्तर्गत -- आग लगते झोपडी जो निकले सो लाभ[6], आप बिती जग बीति है,[7] आप भला तो जहान भला[8], खग ही जाने खग की भाषा,[9] पारस से लोहा

---

1. "पागल और ध्वहा कुत्ते की तरह वह भौंकने लगा" - ~~[illegible]~~ नई पौध - पृ. 25
2. सुन लिया तो पानी में आग लग जायगी -नई पौध-- पृ. 25
3. खुशी के मारे बत्तीसों दांत दर्शनीय हो गये । बाबा बटेसरनाथ-पृ. 112
4. कितना भी भारी होगा तो सिर कंधे पर नहीं लगे-बलचनमा-पृ. 48
5. स्मृतियों की अपार भीड़ ने हृदय पर हमला कर रखा था ।- वरुण के बेटे - पृ. 53
6. "पोखरों और चरागाहों तक को वे चुपके-चुपके बेचने लगे । आग लगते झोपडी जो निकले सो लाभ।" वरुण के बेटे : पृ. 29
7. अब मैं तुझे अपनी कहानी सुनाऊंगा । आप बीती भी सब जग बीती का ही एक अंश होता है। बाबा बटेसरनाथ : पृ. 17
8. कोई नहीं काम आवेगा । आप भला तो जहान भला ।" बलचनमा - पृ. 139
9. चुन्नी ने मुस्कराकर नजर मारी । खग ही जाने खग की भाषा बलचनमा : पृ. 152

सोना बनना! फूल की संगति पाकर कीड़ा सर पर बैठना[2], रांड सांड सीढ़ी सन्यासी उनसे बचे तो सेवे काशी[3], इनका प्रयोग हुआ है ।

8·43 मैथिली मुहावरे :

मैथिली भाषा में प्रयुक्त मुहावरों के अन्तर्गत -- भिगोये पर पानी उलीचना[4], रने-बने भटकना,[5] ।

8·44 मैथिली कहावतें :

मैथिली कहावतों के अन्तर्गत आन गामक पोखरि अपना गामक गाछी[6], सावन जनमा गिदड़ और भादो आई बाढ़ और गिदड़वा चिल्लाया बाप रे । ऐसी बाढ़ कभी न देखी,[7] शेर शेर है - गीदड़ गीदड़ है[8], ठूंठ ठूंठ है बिरवा बिरवा है[9], उड़ती चिड़िया की पूंछ में हल्दी लगाना[10] इनका उल्लेख हुआ है ।

- -

1· बापू का जादूभरा सम्पर्क मुझे नहीं मिलता । पारस का सम्पर्क मामूली से मामूली लोहे को सोना बना डालता है"- हीरक जयन्ती - पृ· 128

2· कीटोपि सुमनस्संगाद् आरोहित सतां शिरः । हीरक जयंती-पृ128

3· रतिनाथ की चाची : पृ·82

4 जिनको भिगोये पर पानी उलीचने में मजा आता है - बलचनमा : पृ· 152

5· पढ़ाई लिखाई रने-बने भटकता फिरता है"-नई पौध-पृ·116

6· अपने गाँव का बाग और दूसरे गाँव का पोखर डरावना होता है ।" नागार्जुन : बलचनमा : पृ·104

7· नागार्जुन : नई पौध : पृ· 58

8· नागार्जुन : नई पौध : पृ· 56

9· नागार्जुन : नई पौध : पृ· 135

10· नागार्जुन : कुंभीपाक : पृ· 18

8·45 उर्दू मुहावरे :

उर्दू मुहावरों के अन्तर्गत काबिलियत झाड़ना[1], खुशी की उबाल छूटना[2], चेहरा जगमगा उठना[3], चेहरा चमकना[4], शरमाये को और शर्माना[5], सुराख पाना[6], चाँद पर चप्पल मारना[7], चेहरा स्याह पड़ना[8], इनका उल्लेख हुआ है ।

8·4·6 उर्दू कहावतें :

उर्दू कहावतों के अन्तर्गत बड़े मियाँ तो बड़े मियाँ, छोटे मियाँ सुभान अल्ला[9], बातों के लहजे शहरी नफासत टपकना[10], इनका उल्लेख हुआ है ।

1· "सारी काबिलियत झाड़ दूंगा।" नई पौध : पृ· 58
2· "खुशी की उबाल को वह मुँह के अंदर दबाये हुए था- ···
नई पौध - पृ· 116
3· "छुट्टी का अहलान होते ही ·· चेहरा जगमगा उठा।"
बाबा बटेसरनाथ - पृ· 112
4· "धवल पांडुर आलोक में सेठजी का चेहरा चमक रहा था।"
हीरक जयन्ती : पृ· 138
5· "शरमाये को और शरमाकर क्या फायदा ।"बलचनमा : पृ· 152
6· "यह औरत कोई सुराख पा गई है" कुंभीपाक : पृ· 16
7· "लोगों की चांद पर चप्पल मारोगे" 9 कुंभीपाक :नई पौध-पृ·58
8· "गम के मारे बेचारी का चेहरा स्याह पड़ गया था ।"
बलचनमा : पृ· 24
9· नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ· 91
10· नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ· 55

8·5 गालियों का प्रयोग :

भाषा में अपेक्षित संदर्भ को मूर्तित करने के लिए रचनाकार को अनेक स्तरों पर चलना पड़ता है, और पात्र एवं प्रसंग के अनुसार गालियों और भोंडे शब्द प्रयोगों को भी लेना पड़ता है । इस संदर्भ में कई स्तरों और प्रलोभनों से उपन्यासकार जुड़ता है, और विशेषकर ग्रामीण तथा आंचलिक कथा वस्तु को लेकर चलनेवाले उपन्यासकारों के लिए यह समस्या हो जाती है, कि एक ओर वे पात्र तथा क्षेत्र विशेष के आंतरिक संस्कारों को व्यंजित करने में भद्दे और वर्जित गालियों तथा विवरणों को देने से पीछे न हटें, और दूसरी ओर श्लीलता और मर्यादा का भी निर्वहण हो ।

8·51 अश्लील गालियाँ : प्रयोग :

अश्लील गालियों का प्रयोग उपन्यासकार ने रतिनाथ की चाची[1], नई पौध[2] तथा जमनिया का बाबा[3] उपन्यासों में किया है । अश्लील गालियों का ही नहीं अश्लील प्रसंगों का भी ब्योरेवार चित्रण करने में भी नागार्जुन सिद्ध हस्त है । रतिनाथ की चाची उपन्यास में सुखदेव द्वारा अप्राकृतिक व्यभिचार[4] का कोण भोला पंडित द्वारा बच्चा उतारकर अश्लील संकेत[5], दुखिया का, बलचनमा

- -

1· "बैठी चोद ! फिर कभी भाग हुन थी । रतिनाथ की चाची–पृ·75

2· "केला लेगा केला? अपनी माँ के ··" नई पौध : पृ· 49

3· "सिर्फ का वेसा चुतियापा" जमनिया का बाबा : पृ· 145

4· नागार्जुन : रतिनाथ की चाची / पृ· 123

5· नागार्जुन : रतिनाथ की चाची / पृ· 90

को गाली देना[1] तथा खोंखा पंडित का मुष्टि मुद्रा बना-बनाकर और बाया हाथ से उसकी हत्थड पकड-पकड के[2] अश्लील संकेतों की पराकाष्ठा है ।

उपर्युक्त विवरण सामाजिकता की दृष्टि से कई महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठाते हैं । क्या ऐसे विवरण पात्रों के चरित्र को उभारने के क्रम में वीभत्स रस की सृष्टि नहीं करते ? और क्या पाठक समुदाय के एक अपेक्षाकृत कम विकसित और अवयस्क वर्ग पर इसका प्रभाव विपरीत नहीं पड़ता ? क्या ऐसे स्थलों पर आकर उपन्यास का समग्र प्रभाव खंडित नहीं हो जाता ? इन प्रश्नों को लेकर पाठकों और आलोचकों की आपत्ति काफी तीखी रही है । संभवतः इसी पर ध्यान देकर नागार्जुन ने अपने बाद के लेखन और प्रकाशित पुस्तकों के संस्करणों में काफी काट छांट की है ।[3] अपने अश्लीलता के कारण एक समय हिन्दी आलोचना में काफी चर्चा पा गई थी अब अपने द्वितीय संस्करण में काफी "शुद्ध" होकर आ गई है ।

8.52 क्षेत्रीय गालि : प्रयोग :

ग्रामीण संस्कृति को प्रस्तुत करने में उस क्षेत्र विशेष की गालियों का प्रयोग रतिनाथ की चाची, बलचनमा तथा नई पौध उपन्यासों में हुआ है । रतिनाथ की चाची उपन्यास में चाची के

---

1. "गांड फटेगी तो मालूम होगा " बलचनमा : पृ- 34
2. नागार्जुन : नई पौध : पृ- 49
3. देखिए "रतिनाथ की चाची" उपन्यास की भूमिका

लिए -- कुलबोरनी[1] का प्रयोग किया है, तो बलचनमा उपन्यास में फूदन मिसर की विधवा औरत को -- "फूकयोंडाही[2] (पति को जलाकर खाक करनेवाली) कहा गया है । नई पौध उपन्यास में रामेसरी के बालविधवा ननद के लिए "मुहझौसी"[3] (मुंहजल) का उल्लेख मिलता है । चोरी करते रंगे हाथ पकड़े जाने पर बलचनमा को "बदमसवा"[4] तथा "मुहडा"[5] (मुर्दा) गाली का प्रयोग हुआ है । कामचोर के लिए "सुगर खोंदा"[6] (सुअर खानेवाला) गाली का उल्लेख भी इसी उपन्यास में हुआ है ।

इसके अतिरिक्त औरतों में प्रचलित गालियों के अंतर्गत चुड़ैल,[7] छिनाल[8] तथा रांड[9] का प्रयोग भी हुआ है ।

- -

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ. 78
2. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 23
3. नागार्जुन : नई पौध : पृ. 22
4. " : बलचनमा : पृ. 34
5. " : " : पृ. 190
6. " : " : पृ. 25
7. नागार्जुन : चुड़ैल, तू स्थाना ही स्थाना जानती है ?" वरुण के बेटे : पृ. 78

भारती पाजी है चुड़ैल ।" हीरक जयन्ती : पृ. 67

8. छिनाल कहीं की । वरुण के बेटे : पृ.79
छिनाल ... सती सावित्री का नाटक कर रही है ।
उग्रतारा : पृ. 67

(महन्तजी, भारी छिनार हैं । हीरक जयन्ती : पृ. 88
छिनाल कहीं की ।" - कुंभीपाक : पृ. 19

9. "रांड, यहाँ नहीं चाहिए ।" जमनिया का बाबा- पृ. 62

"..रांड को कुंभ में छोड आए" जमनिया का बाबा : पृ. पृ.88

"... रांड सुन लेती है ।" उग्रतारा : पृ.67

(अ) पशुओं से सम्बोधित गालियाँ :

पशुओं को लेकर दी जानेवाली गालियों के अन्तर्गत उल्लू[1], कुत्ता[2], कुतिया[3], बैल[4], गधा[5], गधी[6] सुअर[7], सम्बर[8] इनका प्रयोग उपन्यासकार ने किया है ।

(आ) सम्बन्ध जोड़नेवाली गालियाँ

सम्बन्ध जोड़नेवाले गालियों के अन्तर्गत -- साला[9] साली[10], ससुर[11], ससुरा[12], नवाब का नाती[13] का उल्लेख हुआ है ।

- -

1. नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 8
2. " "घुघरल कुतिया" : बलचनमा : पृ. 14
3. "पानी रे बैल" : नई पौध : पृ. 54
4. "गधा है, × : बलचनमा : पृ. 159
5. "गधा नहीं है । जमनिया का बाबा : पृ. 50
6. गधी यों ही धक्के खाती फिरेगी : हीरक जयन्ती : पृ. 68
7. सुअर की तरह मोटी हो गई है : बलचनमा : पृ. 27
8. सम्बर कहीं के । बलचनमा : पृ. 146
9. "साला मेला भी जल्दी होता है।" : बलचनमा : पृ. 122
   "साला पेड़ । : बलचनमा : पृ. 150
   साले की खाल उधेड़ दूँगा : बलचनमा : पृ. 136
   साला हमारी पाकिस्तानी एजेन्ट । जमनिया का बाबा :पृ.125
10. "साली को पकड़ लाओ। दुखमोचन :पृ.74, जल तो साली"-जमनिया का बाबा :पृ.43 तबीयत झूलेगी साली "जमनिया का बाबा पृ.102
   साली सरकार :पृ.142
11. माफी माँगता ससुर..।बलचनमा पृ.204
12. ससुरा अपराधी को । उग्रतारा : पृ. 25
13. मामूली खेतिहर था.. कौन सा : बलचनमा :पृ.146
   नवाब का नाती था " " पृ. 91

अतिरिक्त इसके आवारा[1], कमीनी[2], दलिद्दर,[3] नमक हराम[4], बदतमीज[5], बदमाश[6], बेटीचोद[7], बेहया[8], बेवकूफ[9], हरामी[10], हरामजादी[11], तथा हेवान[12] का भी प्रयोग उपन्यासों में हुआ है ।

हिंदी, मैथली उर्दू के अतिरिक्त संस्कृत गालि -- "राहु एवं पवित्र हूं ।"[13] का प्रयोग पंडित जी द्वारा हुआ है ।

- -

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ.132,115,
   बलचनमा : पृ.186, उग्रतारा : पृ.12, दुखमोचन : पृ. 13,155
2. नागार्जुन : दुखमोचन : पृ. 43
3. " : बलचनमा : पृ. 22
4. " : " : पृ. 36
5. " : हीरक जयन्ती : पृ. 67,जमनिया का बाबा, पृ. 91
6. " : बलचनमा : पृ. 68
7. " : रतिनाथ की चाची : पृ. 75
8. " : बलचनमा : पृ.35, नई पौध : पृ. 61
   बाबा बटेसरनाथ :पृ.48, उग्रतारा : पृ. 40
9. " : जमनिया का बाबा : पृ. 77
10. " : जमनिया का बाबा : पृ. 125
11. " : नागार्जुन : बलचनमा : पृ. 27
12. " : जमनिया का बाबा : पृ. 50
13. " : "छोटी जात के लोग लात खाकर ही पवित्र होते हैं ।" नागार्जुन : बलचनमा : पृ.14

8.6 हास्य और व्यंग्यपूर्ण भाषा :

8.61 व्यंग्य :

यह ऐसी साहित्यिक अभिव्यक्ति या रचना है -- जिसमें व्यक्ति तथा समाज की कमजोरियों, दुर्बलताओं, करनी एवं कथनी के अन्तरों की समीक्षा अथवा निंदा भाषा की टेढ़ी भंगिमा देकर, अथवा कभी-कभी पूर्णतः सपाट शब्दों में प्रहार करते हुए भी की जाती है।"[1] यह "अगम्भीर होते हुए गंभीर हो सकती है, निर्दय लगते हुए दयालु हो सकती है, प्रहारात्मक होते हुए तटस्थ हो सकती है। मखौल करती हुई बौद्धिक हो सकती है। अतिशयोक्ति एवं अतिरंजना का आभास देने के बावजूद पूर्णतः सत्य हो सकती है व्यंग्य में आक्रमकता की स्थिति अनिवार्य है।"[2]

नागार्जुन सफल व्यंग्यकार भी हैं उपन्यासों में व्यंग्य के विविध प्रकारों को देखा जा सकता है। रतिनाथ की चाची उपन्यास में जयनाथ तथा सुशीला के कथोपकथन से व्यंग्य की झलक दिखाई देती है। काशी में जयनाथ का परिचय पर सोने की रहनेवाली वेश्या सुशीला से होता है। शंकर और परसोनी पड़ोसी है, यह जानकर जयनाथ की उत्कट इच्छा उनसे मिलने की रहती है, उनके स्वागतार्थ सुशीला कहती है -- "ऊपर चलिए हमारी कोठरी को अपनी चरण धूलों से ...जयनाथ ने टोका -- "प्रतिदिन भोरे-भोरे यहाँ की गलियाँ झाड़-बुहार कर साफ करली जाती है, कहाँ भला चरण-धूलि ?"[3]

---

1 तथा 2. शेरजंग गर्ग : स्वातन्त्र्योत्तर हिंदी कविता में व्यंग्य : पृ. 30

3. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ. 83

ब्राह्मणों की भोजन प्रियता पर व्यंग्य नागार्जुन ने इसी उपन्यास में किया है । भोला पंडित सन्ध्या पूजन करते समय भी अपने मतलब की बात -- हूं-हां या उं आं जैसी अव्यक्त ध्वनियों का सहारा लेकर करते हैं ।"[1]

गांधीजी के चेलों पर व्यंग्य का तीक्ष्ण रूप कुंभीपाक उपन्यास में दिखाई देता है । मंत्री जी के बंगले में -- "बुकशेल्फ पर अपनी क्लासिकल मुद्राओं में "तीन बंदर" मानों इधर ही रूख किए हुए थे । दिवाकर शास्त्री अभी कुछ देर और बैठते लेकिन उन बंदरों ने ही उन्हें शायद मना किया । मंत्री जी को नमस्कार करके निकल आए ।"[2] बंदरों की प्रतिमा रखकर उनके द्वारा दी गयी शिक्षा --"बुरा मत देखो, बुरा मत कहो, बुरा मत सुनो"[3] का कांग्रेसियों द्वारा पालन न करने पर लेखक ने सूक्ष्म व्यंग्य किया है। सर्वोदयी आदर्श पर चलनेवाले कांग्रेसी शुभंकरबाबू, "दहेज" शब्द के उच्चारण से ही विद्रोह करनेवालों में थे, सपूत के ब्याह में --"कन्या पक्षवालों ने काफी कुछ खर्चा कर डाला ....तीस जने हम जोगियाड़ा से सहरसा गये थे, आना-जाना सेकेण्ड क्लास में ही हुआ है।"[4] थानेदार रामफलसिंह के बैठने की अश्लील मुद्रा[5] नाथ तथा आधुनिक एम.एल.ए.बाबू उग्र मोहनदास पर करारा व्यंग्य बाबा बटेसरनाथ में अब परसों लौटूंगा ... आज भी एक स्पीच देनी है

---

1. नागार्जुन : रतिनाथ की चाची : पृ. 70
2. नागार्जुन : कुंभीपाक : पृ. 38
3. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 102
4. नागार्जुन : दुखमोचन : पृ. 91
5. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ. 102

और कल सोनपुर में आभा साहित्य परिषद का कोई फंक्शन है और परसों हाजीपुर का किरन- मण्डल कौमुदी महोत्सव मनायेगा ही • ही• ही• …… मैं परसों रात लौटूंगा, नहीं तो उससे अगली सुबह ••"[1] जो जनता जनता जनार्दन की सेवा स्पीचों, उद्घाटनों के माध्यम से करते हैं ।

व्यंग्य को सहज रूप से प्रकट करना नागार्जुन का स्वाभाविक गुण है । साहित्यकारों पर व्यंग्य करने के लिए भी वे नहीं चूके -- "जाने कितनों की एडवान्स रकम पचाकर साहित्यकार" विशुद्ध साहित्यकार" बना है ।"[2]

प्रोप्राइटर तिलकधारी दास के काले करतूतों को चित्रित करने के बाद उपन्यासकार उसके कारनामों पर व्यंग्य करते हुए लिखते हैं -- "नेपाल से गांजा कभी आ सके थे कि नहीं, पता नहीं ।"[3] अल्प शब्दों में व्यंग्य को व्यक्त करने में नागार्जुन सिद्धहस्त है । अंचलाधिकारी को सतघरा के जमींदार के भगिना (भांजा) बाबू का परिचय लेते हुए, उनका यह कथन -- "और शिकार की हॉबी ?"[4] जमींदारों के ऐयाशी जीवन पर किया गया पैना व्यंग्य है । जमींदार के आचरण तथा व्यवहार पर तीखा व्यंग्य बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में दिखाई देता है। जमींदार का शत्रुमर्दन राय पर अमानुषिक अत्याचार तथा -- "महलों में राधाकृष्ण की युगल जोड़ी

- -

1• नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ•109
2• नागार्जुन : कुंभीपाक : पृ• 78
3• नागार्जुन : कुंभीपाक : पृ• 22
4• नागार्जुन : वरुण के बेटे : पृ• 70
5• नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ• 42
6• नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ• 17

के सामने मीठी आवाजवाले एक पुराण पाठी महानुभाव राजमाता साहिबा को श्रीमद्भागवत की रास-पंचाध्यायी सुना रहे थे।"[1]

व्यंग्य का विस्तृत रूप हीरक जयन्ती उपन्यास में प्राप्त होता है। सम्पूर्ण उपन्यास साहित्यकारों, प्रकाशकों, नेताओं तथा व्यापारियों के षड्यंत्रों पर व्यंग्यात्मक ढंग से लिखा है।

सीताशरणदास महन्त का परिचय -- "... किसानों और खेतिहरों के पक्ष में जो भी दो बात बोला महन्तजी ने उसकी मरम्मत करवा दी।"[2] विधानसभा की महिला प्रतिनिधियों के चरित्र पर करारा व्यंग्य मंजुश्री देवी के माध्यम से उपन्यासकार ने किया है "देवी जी का विकास अभिनेत्री के रूप में होने लगा -- अभिनेत्री ? जी हाँ, अभिनेत्री। लेकिन फिल्म लोक की नहीं, सत्ता रूढ़, राजनीतिक दल की अभिनेत्री ..... उसके भी गुट-विशेष की, जिसके अन्यतम हीरो थे बाबूजी।"[3] कांग्रेसी विधायकों की पोल व्यंग्य बाणों से प्रगट करते हुए कहते हैं -- "शासकीय गुट के जितने भी एम० एल० ए० आदि हैं, योग माया देवी को सबका स्नेह मिलता है।"[4]

ग्यारह बच्चों के पिता सींखा पंडित पर व्यंग्य करते हुए नागार्जुन लिखते हैं -- "सात लड़कियों और पाँच लड़कों के पूजनीय

---

1. नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ : पृ० 42
2. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ० 17
3. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ० 21
4. नागार्जुन : हीरक जयन्ती : पृ०

पिताजी" होने का सौभाग्य उन्हें प्राप्त था ।"[1] सोखा पंडित के चरित्र को मार्मिक व्यंग्य द्वारा प्रगट किया है -- "आपका हृदय बड़ा ही पवित्र है सोखाई बाबू । शुद्ध चित्त से आप यहाँ आये थे ।"[2]

8·62 हास्य और व्यंग्य :

हास्य और व्यंग्य का एक सम्मिलित उदाहरण छटकराज के चरित्रांकन में दिखाई देता है -- "बाप रे बाप, किसकी मजाल है जो फलां बाबू के बारे में इतनी बातों का पता लगावे । लेकिन नहीं, हैं एक बहादुर । छटकराज मटुकधारी पाठक । अह हा हा हा हा ।"[3]

हास्य और व्यंग्य से युक्त भाषा शैली ने भाषा की प्रभावोत्पादकता, स्वाभाविकता तथा रोचकता में वृद्धि की है । कथोपकथन स्वाभाविक, संक्षिप्त और विषयानुकूल बने हैं । भाषातत्वज्ञानियों द्वारा निर्धारित तथ्यों द्वारा इस अध्याय का अनुशीलन नहीं हुआ है । केवल भाषा के विविध प्रयोग किस प्रकार से उपन्यासों में उपलब्ध होते हैं, इस की विवेचना की है । विविध भाषाओं द्वारा जिन शब्दों का रूप बिगड़कर उपन्यासों में प्रादुर्भाव हुआ है इसकी विवेचना भी व्यावहारिक दृष्टिकोण से की है, भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से नहीं । संस्कृत शब्द, उसका बिगड़ा हुआ रूप, भोजपुरी, मैथली, पंजाबी का व्यवहारिक प्रयोग भी किस तरह

1· नागार्जुन : नई पौध : पृ· 3

2· नागार्जुन : नई पौध : पृ· 16

3· " : " : पृ· 16

नागार्जुन ने किया है । इसकी विवेचना यहां प्रस्तुत की है, अंग्रेजी तथा उसका बिगड़ा हुआ रूप भी यहां दृष्टव्य है । नागार्जुन के आगे अपना कथ्य प्रमुख है और उसके लिये वे भाषा को ढालते हैं । ग्रामीण वातावरण, पात्रांकन और प्रसंग निर्वहण में भाषा के जो विविध रूप और रंग सामने आते हैं उन्हीं पर यहां ध्यान केन्द्रित किया गया है ।

उपसंहार

उपसंहार

साहित्यिक दृष्टिकोण से जहाँ बाबा नागार्जुन "यात्री" (आवागमन) तथा बाबा (मुक्ति) के रूप में जनता के समक्ष प्रत्यक्ष है, वहाँ साहित्यकार के रूप में उनकी प्रतिभा "जन-कवि" तथा जन-साधु के रूप में उभर आयी है। उनका साहित्यिक जीवन, साधारण जनता के साथ जुड़ा हुआ है। कला के दृष्टिकोण से कला-कला के लिए का प्रदर्शन नागार्जुन ने निश्चित ही किया है, परन्तु उनका दृष्टिकोण सामान्य जनता के लिए है - विशिष्ट प्रकृति की ओर नहीं। "स्त्री " तथा पुरुष दोनों इस कला के पूरक हैं। बाबा की साहित्यिक चेतना जन साधारण के जीवन से ओत-प्रोत है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का सम्बन्ध साहित्यकार नागार्जुन तथा उनके उपन्यासों में विद्यमान ग्रामीण जनता किस तरह समाज, संस्कृति-धर्म, राजनीति तथा अर्थ में पलती है, उसकी पूर्ण विवेचना इस शोध प्रबन्ध में हुई है।

ग्राम, सामाजिक संदर्भ में जन साधारण की चेतना के रूप को ग्रहण करते हुए इसके विविध अंकुरों को नागार्जुन ने दर्शाया है। उपन्यासकार द्वारा निर्मित श्रम-जाति उन दिनों, समाज का एक आवश्यक अंग बन गया था। श्रम-जाति के निर्माता, बाबा नागार्जुन ने इस जाति का निर्माण अर्थ के आधार पर किया। उच्च, मध्य तथा निम्न वर्ग अपने में सम्पूर्ण तब तक न होगा, जब तक नागार्जुन द्वारा निर्मित श्रम-जाति का सहयोग उसे प्राप्त न होगा। कुलीन सामंतों के प्रत्येक निर्माणार्थ कार्य में इसी श्रम-जाति का योगदान रहा है। मध्य वर्ग के साथ श्रम जाति का सम्बन्ध अंग-अंगी है। निम्न वर्ग इस श्रम-जाति को अपना सहोदर ही नहीं, आत्म शुभ चिन्तक के रूप में स्वीकार करता है।

बाबा द्वारा जिस श्रम वास्तिका निर्माण हुआ वह आज हर क्षेत्र में, चाहे राजनीति हो, चाहे धर्म हो, चाहे अर्थ हो, अथवा किसी और दिशा में हो, सम्पूर्ण तथा सम्पुष्ट रूप में उभर आया है।

संस्कृति जहाँ रूढ़ि-ग्रस्त इनके उपन्यासों में दृष्टिगोचर होता है वहाँ इसी संस्कृति के नवीन, उभरते हुए रूप- ग्रामीण कलाओं के माध्यम से दिखलाई देते हैं। काव्य कला का उभरता हुआ रूप लोक गीत भी है, प्रान्तीय लोक-गीतों की प्रशस्ति इनकी अपनी विशेष देन है। वीर गाथाओं का निर्माण प्रान्तीय आचार तथा क्षेत्रीय विधान के लिए अत्यन्त उपयोगी है- इस दिशा में भी और नागार्जुन ने संकेत किया है।

उपन्यासों में धर्म का सजीव चित्रण हुआ है। धर्म के जिन नये तथ्यों को नागार्जुन ने सुलझाया, वह निश्चित ही अद्वितीय है। "वरुण बाबा" गुत्थी को सुलझाने में नागार्जुन ने जिस दिशा की ओर संकेत किया है वह दिशा सूक्ष्म से सूक्ष्म जीव की ओर तथा उसके ब्रह्म रूप को अंगीकृत करने की ओर स्पष्ट संकेत है - पोखा- वीर गति को प्राप्त हुआ, निरन्तर पाँच-छह पीढ़ियों के बाद वह वृक्ष के ऊपर अंडे के रूप में उसने वरुण बाबा रूप को स्वीकार किया। इन संदर्भों से भारतीय ब्रह्मवाद का दर्शन हमें होता है।

राजनीति स्वतंत्रता पूर्व जहाँ एक ओर धनिक समाज की देन है, तो दूसरी ओर स्वातंत्र्योत्तर भारत में उस राजनीति ने किस तरह पलटा खाया, तथा जन साधारण में उद्वेलित हुई, इसकी विशिष्ट गाथा उनके उपन्यासों में है। राजनीति ने जिन मोर्चों को ग्रहण किया वह विशिष्ट व्यक्तियों का साथ अथवा पेय न हो कर जन साधारण के लिए श्रम तथा पसीने के रूप में उभर कर आया है। साधारण जनता ने राजनीति से अलगाव नहीं रखा। जबकि सामंती युग में यह अलगाव दृष्टिगोचर होता था।

इस तरह राजनीति के क्षेत्र में नागार्जुन ने जनसाधारणमें विविध अंकुर बोये ।

अर्थ के जिस नवीन चेतना का उद्भव तथा विकास नागार्जुन ने बताया, उसका रूप संतुलित रूप है, राजनीति तथा भ्रष्टाचार का संतुलन किस तरह डिग सकता है, इसकी सरस विवेचना उपन्यासों में की गयी है । स्वतंत्रता पूर्व तथा स्वातंत्र्योत्तर भारत में उस संतुलन की आवश्यकता है ।

भाषा की कसौटी पर ये मस्तमौला हैं । बन गया तो ठीक, वरना "दरोरे " दे कर भाषा को बिठाया गया है । भाषा के प्रति फक्कड़पन तथा मस्ती ग्रामीण उपन्यासों में दिखलाई देती है । उक्तियां भी इनकी सजीव हैं, प्रान्तीय उक्तियों का प्रयोग राष्ट्रीय उक्तियों के साथ करने में नागार्जुन सफल हुए हैं ।

हर दृष्टिकोण से नागार्जुन अपने सानी-आप ही हैं । उनकी हर व्यवस्था, हर बातचीत और उनका हर दृष्टिकोण, अपने आप में बहुत महत्वशील है ।

प्रस्तुत प्रबन्ध में जिन नये तथ्यों का समावेश किया गया है उनमें विशेष कर श्रम क्रांति, ग्रामीण कलाएं, लोक गीत, बरहम बाबा, आदि विशेष उल्लेखनीय हैं । नागार्जुन ने जिन विशिष्ट तत्वों का समीकरण अपने उपन्यासों में किया वह प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का मुख्य विषय है ।

–

ग्रंथ-सूची

हिन्दी ग्रंथ:

१.	डा.ग.तु.अष्टेकर	कटघरे का कवि धूमिल	पंचशील प्रकाशन	१९७९ प्रथम संस्करण
२.	श्री अमृतलाल नागर	महाकाल		
३.	डा.अरविन्द जोशी	गांधी विचारधारा का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव	जवाहर पुस्तकालय मथुरा	१९७३ "
४.	डा.आशा बागड़ी	प्रेमचन्द परवर्ती उपन्यास साहित्य में पारिवारिक जीवन	शोध प्रबन्ध प्रकाशन दिल्ली	१९७४
५.	श्री अत्रिदेव विद्यालंकार	प्राचीन भारत के प्रसाधन	भारतीय ज्ञानपीठ काशी	१९५२ "
६.	श्री इन्द्रनाथ मदान	प्रेमचन्द एक विवेचन	राजकमल प्रकाशन	१९५० "
७.	" "	आज का हिन्दी उपन्यास	राजकमल प्रकाशन दिल्ली. पटना	१९६६ "
८.	डा.इंदिरा जोशी	भारतीय उपन्यासों में वर्णनकला का तुलनात्मक मूल्यांकन	विनोद पुस्तक मंदिर आगरा	१९७३ "
९.	इरावती कर्वे	भारत में विश्व बंधुत्व की स्थापना.		
१०.	डा.ईश्वरप्रसाद वर्मा	प्रगति के बढ़ते चरण	साहित्य केन्द्र प्रकाशन	१९७६ "
११.		उपनिषद अंक-कल्याण	गीताप्रेस,गोरखपुर	वर्ष २३ अंक १
१२.	श्री ओमप्रकाश केला	भारतीय संविधान और उनका नागरिक जीवन	भारतीय ग्रंथमाला	१९५३ चतुर्थ संस्करण

१३. डा.उषा सक्सेना	हिन्दी उपन्यासों का शिल्पगत विकास	शोध साहित्य प्रकाशन	१९७२ प्रथम संस्करण
१४. डा.कमला गुप्ता	हिन्दी उपन्यासों में सामन्तवाद	अभिनव प्रकाशन	१९७९ "
१५. श्री कमला भट्ट	निर्णय सिन्धु	सत्यभामा बाई	१९४० चतुर्थ संस्करण
१६. डा.ह.के.कडवे	हिन्दी उपन्यासों में आंचलिकता की प्रवृत्ति	अन्नपूर्णा प्रकाशन	१९७८ प्रथम संस्करण
१७. डा.कान्ति वर्मा	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास	रामचन्द्र एण्ड कं. दिल्ली.	१९६६ प्रथम संस्करण
१८. डा.कालि किंकरदत्त	बिहारवासियों का जीवन और उनकी चिन्तनधारा	बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना	१९७० प्रथम संस्करण
१८. " " अनु.डा.विष्णु अनुग्रह नारायण	बिहार में स्वातंत्र्य आन्दोलन का इतिहास	बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना	१९७४ "
१९. डा.कालिकिंकरदत्त अनु: डा.विष्णु अनुग्रह नारायण	"	" "	१९७४ द्वितीय संस्करण
२०. डा.कालि किंकरदत्त अनु: डा.विष्णु अनुग्रह नारायण	"	" "	१९७५ तृतीय संस्करण
२१. श्री काशीनाथ उपाध्याय	धर्मसिन्धु	चौखम्भा संस्कृत सिरीज, बनारस	१९६८ प्रथम संस्करण

२२.	डा.कुलदीप	लोक गीतों का विकासात्मक अध्ययन	प्रगति प्रकाशन	१९७२	प्रथम संस्करण
२३.	श्रीकृष्णबिहारी मिश्र	आधुनिक सामाजिक आंदोलन और आधुनिक हिन्दी साहित्य	आर्य बुक डिपो	१९७२	"
२४.	डा.कृष्णदेव शारी	प्रेमचन्द की उपन्यास कला का उत्कर्ष गोदान	शारदा प्रकाशन	१९७५	"
२५.	केशवदास सं.आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र	कविप्रिया	हिन्दुस्तानी अकादमी,उ.प्र. इलाहाबाद	१९५४	"
२६.	डा.कैलाश जोशी	आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में स्वप्न मनोविज्ञान	शैवी प्रकाशन उदयपुर	१९७६	"
२७.	श्री गणेशशंकर विद्यार्थी	क्रान्ति का उद्‌घोष (द्वितीय खण्ड)	गणेशशंकर विद्यार्थी स्मारक शिक्षा समिति,कानपुर	१९७८	
२८.	डा.गणेशन	हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन	राजपाल एण्ड संस, दिल्ली.	१९६२	"
२९.	श्री गुरूदत्त	द्वितीय विश्व युद्ध	भारतीय साहित्य सदन	१९६८	"
३०.	डा.गोपाल राय	हिन्दी कथा साहित्य और उसके विकास पर पाठकों की रूचि का प्रभाव	ग्रंथ निकेतन	१९६५	"
३१.	श्री गोविन्द झा	मैथिली भाषा का विकास	बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी,पटना	१९७४	"

३२.	डा.गोविन्द सदाशिव धुर्ये	जाति,वर्ग और व्यवसाय	राजपाल एण्ड संस		
३३.	डा. गोविन्द जी	हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यासों में इतिहास प्रयोग	कल्पना प्रकाशन मेरठ	१९७४	प्रथम संस्क.
३४.	डा.घनश्याम मधुप	हिन्दी के लघु उपन्यास	राधाकृष्ण,दिल्ली	१९७१	"
३५.	श्री चण्डीप्रसाद जोशी	हिन्दी उपन्यास:समाज शास्त्रीय विवेचन	अनुसंधान प्रकाशन कानपुर	१९६२	
३६.	डा.चन्द्रभान रावत	शोध:प्रविधि और प्रक्रिया	जवाहर पुस्तकालय मथुरा	१९७९	"
३७.	डा.चन्द्रबली पाण्डेय	स्वप्न सिद्धान्त	परितोष प्रकाशन आजमगढ़.	१९७८	"
३८.	डा.चन्द्रेश्वर कर्ण	आंचलिक हिन्दी कहानी	चित्रलेखा प्रकाशन	१९७७	"
३९.	श्री जयशंकर प्रसाद	तितली	प्रसाद प्रकाशन, वाराणसी		
४०.	" "	काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध	भारतीय भंडार लीडर प्रेस, इलाहाबाद	सं.२०१५	"
४१.	डा.जनेश्वर वर्मा	हिन्दी काव्य में मार्क्सवादी चेतना	ग्रंथम,कानपुर	१९७४	"
४२.	श्री जे.एस.मैकेंजी अनु: डा.अजितकुमार सिन्हा	समाज दर्शन की रूपरेखा	राजकमल प्रकाशन दिल्ली	१९६९	तृतीय "
४३.	श्री तेजमल दरक	भारतीय ग्रामीण समाज-शास्त्र	किताब महल प्रा.लि.	१९६३	प्रथम "
४४.	डा.एन.एस.दक्षिणा-मूर्ति	हिन्दी और तेलुगु कहावतों का तुलनात्मक अध्ययन	विजयनिवास (मैजनगुड) मैसूर	१९६६	"

४५. डा.द्विजेन्द्रनाथ शुक्ल	भारतीय स्थापत्य	हिन्दी समिति, सूचना विभाग, उ.प्र.	१९६८	प्रथमसंस्क.
४६. डा.देवेन्द्रकुमार जैन	हिन्दी शब्दों की विकास कथा	नीलाभ प्रकाशन इलाहाबाद.	१९७८	"
४७. श्री द्रोणवीर कोहली	टप्परगाड़ी	राजकमल प्रकाशन	१९७९	"
४८. श्री धीरेन्द्र मजुमदार अनु:चन्द्रभान त्रिपाठी	शोर का एक गांव	एशिया पब्लिशिंग हाउस	१९६०	
४९. डा.नवलकिशोर	कृति और संदर्भ	स्टूडेंट ब्रदर्स एण्ड कं. भरतपुर	१९७४	"
५०. डा.नगीना जैन	आंचलिकता और हिन्दी उपन्यास	अक्षर प्रकाशन	१९७६	"
५१. श्री नागार्जुन	रतिनाथ की चाची	किताब महल	१९४८	"
५२. "	बलचनमा	"	१९५२	"
५३. "	नई पौध	"	१९५७	
५४. "	दुखमोचन	राजकमल प्रकाशन	१९५७	"
५५. "	हीरक जयन्ती	आत्माराम एण्ड संस	१९६२	"
५६. "	जमनिया का बाबा	किताब महल इलाहाबाद.	१९६८	"
५७. "	वरुण के बेटे	राजपाल एण्ड संस	१९७५	द्वितीय"
५८. "	उग्रतारा	"	१९७७	चौथा "
५९. "	बाबा बटेसरनाथ	राजकमल प्रकाशन	१९७८	चतुर्थ "
६०. "	कुंभीपाक	राजपाल एण्ड संस	१९७८	तृतीय "
६१. "	पारो	सैमायना प्रकाशन	१९७८	द्वितीय"
६२. "	खिचड़ी विप्लव देखा हमने	" "	१९८०	प्रथम "
६३. "	तीन अहदी	वाणी प्रकाशन	१९७९	"

६४. श्री नागार्जुन	सयानी कोयल	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	१९७८ प्रथम संस्क.
६५. "	इमरतिया	राजपाल एण्ड संस "	१९६८ "
६६. डा.प्रकाशचन्द्र भट्ट	नागार्जुन जीवन और साहित्य	सेवासदन प्रकाशन म.प्र.	१९७४ "
६७. श्री नागार्जुन	तुमने कहा था (कवितासंग्रह)	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	१९८० "
६८. "	भस्मांकुर	राजकमल प्रकाशन "	१९७८ सातवाँ "
६९. "	एक व्यक्ति एक युग(१) निराला	यात्री प्रकाशन, पटना	१९७८
७०. श्री जयदेव अनु: नागार्जुन	गीत गोविन्द	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	१९७९ प्रथम "
७१. श्री नागार्जुन	विद्यापति के गीत	" "	१९७९
७२. "	मेघदूत	" "	१९७९
७३. श्री नामवर सिंह	कविता के नये प्रतिमान	राजकमल प्रकाशन	१९६८ "
७४. श्री नागेन्द्रमोहन प्रसाद श्रीवास्तव	बिहार में राष्ट्रीयता का विकास	बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना	१९७४ "
७५. श्री निराला	अलका	गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ	सं.२००१ चतुर्थ "
७६. डा.बी.पट्टाभिसीतारामय्या	कांग्रेस का इतिहास (१९३५-४२)	सस्ता साहित्य मंडल	१९४८ प्र.द्वितीय
७७. " " अनु:हरिभाऊ उपाध्याय	कांग्रेस का इतिहास (१८८५-१९३५)	" "	१९३५ प्रथम संस्करण
७८. श्री प्रकाशचन्द्र भट्ट	नागार्जुन जीवन और साहित्य	सेवा सदन प्रकाशन	१९७४ "

७९. श्री प्रकाश वाजपेयी	हिन्दी के आंचलिक उपन्यास	नन्दकिशोर एण्ड संस	१९६४	प्रथम संस्क:
८०. भारत रत्न, महा-महोपाध्याय डा. पाण्डुरंग वामन काणे	धर्मशास्त्र का इतिहास तृतीय भाग (अध्याय १ से १९) तथा पंचम भाग	हिन्दी समिति उ.प्र. शासन, लखनऊ	१९७५	द्वितीय "
८१. " " अनु: अर्जुन चौबे कश्यप	वही—चतुर्थ भाग अध्याय १ से २५	" "	१९७३	प्रथम संस्क
८२. डा. प्रभाकर माचवे	नागार्जुन (आज के लोक-प्रिय हिन्दी कवि १४)	राजपाल एण्ड संस. दिल्ली.	१९७७	"
८३. डा. प्रभाशंकर मिश्र	राहुल सांकृत्यायन का कथा साहित्य	अशोक प्रकाशन, दिल्ली	१९६७	"
८४. श्री प्रतापनारायण टंडन	हिन्दी उपन्यास में कथाशिल्प का विकास	हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ	१९६४	
८५. डा. पूर्णसिंह डबास	हिन्दी में देशज शब्द	नालंदा प्रकाशन	१९८०	"
८६. श्री प्रेमचन्द	कर्मभूमि	हंसप्रकाशन, इलाहाबाद	१९६५	
८७. "	रंगभूमि	सरस्वती प्रेस (प्रयाग)	१९७६	
८८. "	प्रेमाश्रम	हंस प्रकाशन "	१९७७	
८९. "	सेवासदन	सरस्वती प्रेस "	१९६२	
९०. "	गोदान	" दिल्ली	१९७९	
९१. "	कायाकल्प	"	१९७३	
९२. फणीश्वरनाथ रेणु	मैला आंचल	राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली	१९७९	दसवीं आवृत्ति
१००. "	परती परिकथा	" "	१९५७	पंचम"
१०१. "	दीर्घतपा	बिहार ग्रंथ कुटीर		द्वितीय
१०२. "	जुलूस	भारतीय ज्ञानपीठ	१९८०	पंचम

१०३. अनु:देवेन्द्रकुमार	फ्रायड मनोविज्ञान	राजपाल एण्ड संस दिल्ली.		द्वितीय संस्करण	
१०४. डा.ब्रजभूषण सिंह आदर्श	हिन्दी के राजनीतिक उपन्यासों का अनुशासन	रचना प्रकाशन	१९७०	प्रथम	"
१०५. वागीश्वरी सिंह परिहार	भारतीय ग्रामीण समाज	साहित्य भवन प्रा.लि.	१९६८	प्रथम	"
१०६. डा.बालकृष्ण गुप्त	हिन्दी उपन्यास सामाजिक संदर्भ	अभिलाषा प्रकाशन	१९७८		"
१०७. सत्यनारायण सिन्हा	बिहार	राजपाल एण्ड संस	१९७०		"
१०८. डा.बिन्दु अग्रवाल	हिन्दी उपन्यासों में नारी	राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली.	१९६८		
१०९. डा.बी.एम.शर्मा और डा.बी.पी.गौतम	भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन और संविधान	साहित्य निकेतन कानपुर.	१९७२		"
११०. डा.बेचन	आधुनिक हिन्दी उपन्यास उद्भव और विकास	सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली.	१९७२		"
१११. भगवतीचरण वर्मा	आखिरी दांव	प्रयाग	वि.२००७		
११२. "	भूले बिसरे चित्र	राजकमल प्रकाशन	१९५९		"
११३. भारत भूषण अग्रवाल	हिन्दी उपन्यासों पर पाश्चात्य प्रभाव	दिग्दर्शन चरण जैन दरियागंज दिल्ली.			"
११४. मन्मथनाथ गुप्त	क्रान्तिकारी आन्दोलन का वैचारिक इतिहास	निधिप्रकाशन, दिल्ली	१९५०		"

११५. श्री मन्मथनाथ गुप्त	भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास	आत्माराम एण्ड संस दिल्ली.	१९६६	छठा परिवर्द्धित संस्क.
११६. " महेन्द्र चतुर्वेदी	हिन्दी उपन्यास एक सर्वेक्षण	नेशनल पब्लिशिंग हाउस	१९६२	
११७. महर्षि व्यास	महाभारत			
११८. महेन्द्रकुमार जैन	हिन्दी उपन्यासों में पारिवारिक चित्रण			
११९. मुकुटधारी सिंह	स्वातंत्र्य संग्राम भूली बिसरी कड़ियाँ भाग - १	समता प्रकाशन, पटना	१९७७	प्रथम संस्क.
१२०. मुकुटधारी सिंह	स्वातंत्र्य संग्राम भूली बिसरी कड़ियाँ-भाग-दो	" "	१९७८	"
१२१. मोहन राकेश	आइने के सामने	अक्षर प्रकाशन	१९६५	"
१२२. डा.मोतीचन्द्र	प्राचीन भारतीय वेशभूषा	भारती भंडार	सं.२००७	"
१२३. डा.मंगलदेव शास्त्री	भारतीय संस्कृति का विकास (प्रथम खण्ड)	समाज विज्ञान परिषद ,काशी	१९५६	
१२४. श्री यशपाल	गांधीवाद की शव परीक्षा	लोकभारती प्रकाशन	१९७२	सातवां "
१२५. "	सिंहावलोकन भाग १ सशस्त्र क्रांति की कहानी	विप्लव प्रकाशन, लखनऊ	१९७३	तीसरा "
१२६. "	सिंहावलोकन, भारत में सशस्त्र क्रांति की कहानी	लोकभारती प्रकाशन	१९७७	चतुर्थ "

१२७.	डा.एन.रवीन्द्रनाथ	मार्क्सवाद और हिन्दी उपन्यास	वाणी प्रकाशन	१९७९	प्रथम संस्क.
१२८.	रजनी पामदत्त अनु: आनंदस्वरूप वर्मा	आज का भारत	भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद दिल्ली.	१९७७	"
१२९.	डा.रांगेय राघव	कब तक पुकारूँ	राजपाल एण्ड संस	१९७६	पाँचवाँ"
१३०.	"	सीधा सादा रास्ता	किताबमहल,इलाहा.	१९६७	
१३१.	"	विषाद मठ	राजपाल एण्ड संस दिल्ली.	१९७६	दूसरा "
१३२.	"	उबाल			
१३३.	"	घरौंदे			
१३४.	डा.राधाकृष्णन	धर्म और समाज	"	"	
१३५.	डा.रविन्द्र पाण्डेय	भारत का सांस्कृतिक इतिहास	उ.प्र.हिन्दी ग्रंथ अकादमी,लखनऊ	१९७६	प्रथम "
१३६.		रामचरित मानस			
१३७.	डा.रामपाल वर्मा	मनोविज्ञान के संप्रदाय	विनोद पुस्तक मंदिर	१९७७	चतुर्थ "
१३८.	रामवृक्ष बेनीपुरी	जयप्रकाश	उषा प्रकाशन,मुंगेर	१९७५	
१३९.	डा.रामपाल सिंह वर्मा	मनोविज्ञान के संप्रदाय	विनोद पुस्तक मंदिर	१९७७	चतुर्थ "
१४०.	राममनोहर लोहिया	समाजवादी आन्दोलन का इतिहास	राममनोहरलोहिया प्रकाशन	१९६९	प्रथम "
१४१.	श्री रामदरश मिश्र	हिन्दी उपन्यास एक अन्तर्यात्रा	राजकमल प्रकाशन	१९६८	प्रथम"
१४२.	श्रीरामधारीसिंह दिनकर	संस्कृति के चार अध्याय	राजपाल एण्ड संस दिल्ली.	१९५६	द्वितीय "

१४३.	राहुल सांकृत्यायन	बौद्ध दर्शन	किताब महल	१९७७	चतुर्थ संस्क.
१४४.	डा.लक्ष्मीकान्त सिन्हा	हिन्दी उपन्यास साहित्य का उद्भव और विकास	प्रेम भारती	१९६६	प्रथम "
१४५.	लीलाधर शर्मा पर्वतीय	स्वतंत्रता की पूर्व संध्या (१९३९-४७)	वाणी प्रकाशन लखनऊ.	१९७२	
१४६.	लैरी कालिन्स दामिनिक लैपियर	आधी रात को आजादी	गाइड प्रकाशन	१९७६	प्रथम "
१४७.	डा.वासुदेवशरण अग्रवाल	कला और संस्कृति	साहित्य भवन प्रा.लि.	१९५८	
१४८.	वृन्दावनलाल वर्मा	अमर बेल	मयूर प्रकाशन	१९७४	छठवां "
१४९.	विवेकीराय	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य और ग्राम जीवन	लोकभारती प्रका. इलाहाबाद.	१९७४	प्रथम
१५०.	विजयबहादुर सिंह	नागार्जुन का रचना संसार	संभावना प्रका.	१९८२	प्रथम "
१५१.	पं.विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक	भिखारिणी	विनोद पुस्तक मंदिर	१९४८	द्वितीय
१५२.	वृन्दावनलाल वर्मा	प्रेम की भेंट	झांसी	१९५१	
१५३.	"	अमरबेल	झांसी	१९५३	
१५४.	तोमर,रामबिहारी सिंह	समाजशास्त्र की रूपरेखा भाग१,२	अजमेर	१९५६	
१५५.	डा.त्रिभुवन	हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद	हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय	सं.२०१२	चतुर्थ "
१५६.	डा.शंकरप्रसाद	सामाजिक उपन्यास और नारी मनोविज्ञान	अनुपम प्रकाशन पटना	१९७८	प्रथम

१५७.	शम्भुरत्न त्रिपाठी	गांधी की सामाजिक संरचना का सिद्धान्त	साहित्य भारती दिल्ली.		
१५८.	शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय अनु:नागार्जुन	पाँच कहानियाँ			
१५९.	डा.शीलकुमारी अग्रवाल	हिन्दी उपन्यासों में कल्पना के बदलते हुए प्रतिरूप	अभिव्यक्ति प्रका.	१९६९	प्रथम संस्क.
१६०.	डा.शेरजंग गर्ग	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में व्यंग्य	साहित्य भारती	१९७३	"
१६१.	डा.शैल रस्तोगी	हिन्दी उपन्यासों में नारी	विभू प्रकाशन साहिबाबाद	१९७७	"
१६२.	शैलेश मटियानी	डेरे वाले	सरस्वती विहार	१९८०	"
१६३.	डा.सत्यपाल चुघ	प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासों की शिल्प विधि	लोकभारती प्रकाशन	१९६८	"
१६४.	डा.सच्चिदानंद राय	हिन्दी उपन्यास सांस्कृतिक एवं मानवतावादी चेतना	राजीव प्रकाशन	१९७९	"
१६५.	डा.एस.एस.माथुर	समाज मनोविज्ञान	विनोद पुस्तक मंदिर,आगरा	१९७६	चतुर्थ "
१६६.	सत्यकेतु विद्यालंकार	भारत के राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास			
१६७.	सियाराम शरणगुप्त	अंतिम आकांक्षा	साहित्य सदन	वि.२००७	तृतीय "
१६८.	" "	नारी			
१६९.	" "	गोद			
१७०.	डा.सुभद्रा	प्रेमचन्द के साहित्य में ग्राम जीवन	अलंकार प्रकाशन	१९७२	

१७१. डा.सुषमा धवन	हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन	राजपाल एण्ड संस, दिल्ली	१९६२	प्रथम संस्क.
१७२. डा.सुरेश सिन्हा	हिन्दी उपन्यासों में नायिका की परिभाषा	अशोकप्रकाशन	१९६४	
१७३. "	हिन्दी उपन्यास उद्भव और विकास	अशोक प्रकाशन	१९६४	
१७४. हंसराज रहबर	तिलक से आज तक	निधि प्रकाशन दिल्ली.	१९८०	प्रथम संस्क.
१७५. हंसराज भाटिया	समाज मनोविज्ञान	राजकमल प्रकाशन दिल्ली.	१९६६	"
१७६. आ.हजारीप्रसाद द्विवेदी	प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद	हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय	१९५२	
१७७. डा.हरिकृष्ण	आधुनिक हिन्दी साहित्य की विचारधारा पर पाश्चात्य प्रभाव	उपमा प्रकाशन जयपुर.	१९७०	
१७८. चौ.हरिहर सिंह	हमारे पर्व और त्योहार	सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली	१९७४	"
१७९. प्रो.हरिदत्त वेदालंकार	हिन्दू विवाह का संक्षिप्त इतिहास	हिन्दी समिति लखनऊ.	१९७०	"
१८०. डा.हेमराज निर्मम	हिन्दी उपन्यासों में मध्यवर्ग	विभूप्रकाशन साहिबाबाद.	१९७८	"
१८१. डा.ज्ञानचन्द्र गुप्त	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास और ग्राम चेतना.	अभिनव प्रकाशन दिल्ली	१९७४	"
१८२. डा.ज्ञान अस्थाना	हिन्दी उपन्यासों में ग्राम समस्याएँ	जवाहर पुस्तकालय	१९७५	"

१८३.		हिन्दी कोश		
१८४.	सं. श्री नवल जी	विशाल शब्द सागर	आदीशकुमार जैन	१९७८ प्रथम संस्क.
१८५.	सं.धीरेन्द्र वर्मा	हिन्दी साहित्य कोश भाग-१	ज्ञानमंडल लि. वाराणसी.	२०२० द्वितीय "
१८६.	सं.श्यामसुन्दरदास	हिन्दी शब्द सागर	काशीनागरी प्रचारिणी सभा	१९६८ चतुर्थ "
१८७.	" बी.ए.	" "	"	१९६७ नवीन संस्क.
१८८.	ले.तथा सं.शैमुरत्न त्रिपाठी	समाजशास्त्रीय विश्वकोष	किताबघर कानपुर.	१९६०
१८९.	" "	समाजशास्त्रीय विश्व कोष(ईसाइक्लोपीडिया आफ सोशियालजी)	" "	१९६०

<u>हिन्दी पत्रिकाएं</u>:

१.	सं.हनुमानप्रसाद पोद्दार	कल्याण,सूर उपासना अंक	गीताप्रेस गोरखपुर.	१९४२
२.	सं.धर्मवीर भारती	धर्मयुग	बम्बई	२४-३० मई १९८१
३.	"	धर्मयुग	"	८-१४ अगस्त १९८२
४.		नागार्जुन अंक वर्ष २	इलाहाबाद प्रेस रानी मण्डी	
५.		प्रतिमान,प्रतिमान	शाहपुर ,	अगस्त १९७९ अंक पांचवां
६.		सारिका(पाक्षिक)		मई - १९८२ अंक ३०८

७४ साप्ताहिक दिनमान - नागार्जुन लेख- मई १९८१

७५.

<u>संस्कृत ग्रंथ</u> :

१. चार्वाक मुनि	चार्वाक दर्शन की शास्त्रीय समीक्षा	चौखम्भा विद्याभवन वाराणसी	वि.२०२१	प्रथम सं.
२. अभिनवगुप्त अनु:आ.उदयवीर शास्त्री	पातंजल योगदर्शनम्	श्रीस्वामी विज्ञानानंद सरस्वती उ.प्र.	१९७८	"
३. जे.आे.सार	कौटिल्य अर्थशास्त्र	मद्रास	१९३०	चतुर्थ "
४. श्री पं.जयदेव शर्मा	ऋग्वेद संहिता सप्तम	आ.साहित्य मंडल	१९७८	"
५.	खण्ड	अजमेर.		
५. पं.रामनारायण दत्त शास्त्री "राम"	श्रीमद् वाल्मीकीय रामायण	गीता प्रेस- गोरखपुर	२०१७	
६. महर्षि वाल्मीकि प्रणीत	श्रीमद् वाल्मीकीय "	"	" २०१७	प्रथम
७.	महाभारत		वाल्यूम	१६
८. वी.बी.एन.मांडलिक	पद्मपुराण	आनंदाश्रम संस्कृत सीरीज पूना	१८९३-९४	चौथा खण्ड
९.	नारदीय पुराण			
१०. श्री नारायण दैवज्ञ	मुहूर्त मार्तण्ड	चौखम्भा संस्कृत संस्थान.	१९७८	
११. ब्रह्मानन्द गिरी	तारा रहस्यम्	चौखम्भा प्रकाशन	सं.२०२६	

संस्कृत कोश

१. श्री वी.एस.आप्टे संस्कृत हिन्दी कोश मोतीलाल बनारसी दास १९६६ प्रथम

२.

BIBLIOGRAPHY

ENGLISH

1. Aiyar Dr. C.P. Ramaswamy .. Phase of Religion and Culture, Hindi Kitabs Ltd., Bombay, 1949.

2. Apte V.S. .. The practical Sanskrit english dictionary, Motilal Banarasidas, Delhi, Varanasi, Patna, 1978, Edition 3. (Three)

3. Bennett Arnold .. Author Cropt.

4. Benton William .. Encyclopedia Britanica (Inc.,) William Benton, 1961.

5. Boxe N.S. .. Indian National Movement, An Outline, Calcutta, Firm K.L. Mukhopadhyaya, 1965.

6. Desai A.R. .. Rural Sociology in India, Popular Prakash, Bombay.

7. Encyclopedia of Social Sciencies .. The Macmillan Co., New York, 1957, Edition; Twelfth Printing, Volume IV.

8. Gillin Dr. John Leiois .. and John Phillip .. Cultural Sociology, The Macmillan Co., New York, 1948, (Revised Edition)

9. James Henery .. The House of Fiction.

10. New English Dictionary on Historical Principles .. Edition 4. (Four)

11. Patwardhan R.P. .. Element of Civics, Oxford University Press, 1955, Third Edition.

12. Pillay Swami Cany .. Indian Afimerics, 1923.

13. Seligman R.A. Edwin .. Encyclopedia of the Social Sciences, The Macmillan Co., New York, 1933, 11th Edition, Volume IXX combined, November 1937, Reprinted 1935.

14. Sethna M.J. Jahangir .. Society and the Criminal, N.M. Tripath Private Limited, 1980, 4th Edition.

15. The Cultural Heritage of India .. Sri Ramakrishna Centenary Committee, Belur Math, Calcutta, 1937, Volume I & III.

16. With Short Notes .. Bare Act as amended upto-date, The Hindu Marriage Act. 1955, Allahabad Law Agency.

PERIODICAL

17. Caraban .. November, 1962, New Delhi.

बलचनमा-मराठी अनु०

30. अप्रै. 80.

शोभन अनुपमते,

तुम्हारे पत्र चि० शोभाकान्त ने मुझे दिखलाए। मैं बीमार था, इसी से देरकर के पत्र डाल रहा हूँ।

आपकी जिज्ञासाओं का समाधान (यथाशक्ति) शोभाकान्त से होगा। अपनी सामर्थ्य के अनुसार मैं भी — शोभाकान्त को बताता रहूँगा।

शेष, फिर फिलहाल... शुभा।
पत्र मिलते रहें।

— नागार्जुन
तुम्हारा

पुनश्च :—

औरंगाबाद (देगलूर-आन्ध्र) के श्री [illegible] महोदय जी ने 'बलचनमा' का तेलगू में अनुवाद प्रकाशित कराया था, आठ-दस वर्ष हो गए। संभवतः उनको मालूम होगा कि "बलचनमा" का प्रथम संस्करण कहाँ, कहीं न कहीं, किसी प्रकाशक के यहाँ प्राप्य है अथवा नहीं...

नागार्जुन

परिशिष्ट

परिशिष्ट में कुछ पत्रों का उल्लेख तथा बाबा नागार्जुन के हैदराबाद आगमन पर रिकार्ड किये हुए कुछ टेपों का समावेश है । पत्र जिनमें बाबा नागार्जुन ने "कर्म पिशाच", साहित्यकार की अभिरुचि आदि पर जो विशेष ध्यान आकर्षित कराया है,उसके सम्बन्ध में तथा कुछ ऐसे प्रश्न छूट गये हैं, जिसका समाधान बाबा नागार्जुन ने स्वयंमेव किया है -यथा कथित उद्धृत है -

कर्मपिशाच-

कर्मपिशाच मादा पिशाच है । प्रबन्ध में इसका उल्लेख है । बाबा द्वारा प्रतिपादित कर्म पिशाच की विशेषता का मूल्यांकन भी इसी प्रबन्ध में हुआ है । धार्मिक अध्याय के अन्तर्गत इसकी विवेचना तथा स्पष्टीकरण भी उपलब्ध है ।

भावप्रवणता -

साहित्यकार की अभिरुचि, अनुभूति की भाव प्रवणता में उपलब्ध होती है । इसी अनुभूति की भावप्रवणता में डूब कर मान्य श्री दण्डमूडि महीधर जी ने (आल इंडिया रेडियो) "बलचनमा" का अनुवाद दस वर्ष पूर्व तेलुगु में किया था । इसी भाव प्रवणता में प्रस्तुत प्रबन्ध की शोधकर्त्री मराठी में "बलचनमा" का अनुवाद करने में तत्पर है । शोध प्रबन्ध के उपरान्त इस योजना को कार्यान्वित करने में वह अवश्य ही सफल हो जाएगी ।

प्रयोगात्मक रुप-

महिला पात्रों का प्रयोगात्मक रुप हिन्दी साहित्य में विशेष कर नागार्जुन के समकालीन साहित्यकारों में नहीं के बराबर है । "कुम्भीपाक" तथा बिसेसरी का यह रुप प्रयोगात्मक रुप ही है । इस प्रयोगात्मक रुप

ही है । इस प्रयोगात्मक रूप में बाबा नागार्जुन ने पात्रों का निर्माण खंडित चित्रों की तरह न करके उसके सम्पूर्ण रूप की विवेचना की है । नारी का प्रयोगात्मक रूप बाह्य सौन्दर्य प्रसाधन भी है । उपन्यासों में सर्वत्र यह उपलब्धि हमें प्राप्त होती है ।

उग्रतारा-

देवी के रूप में उग्रतारा - इनकी हृदय मूर्ति है , आगम ग्रंथों में वर्णित उग्रतारा तथा महायान बौद्धों की उग्रतारा में विशेष अन्तर है । आगम ग्रंथों में उग्रतारा का रूप १० महाविद्याओं के अन्तर्गत ही महायान बौद्ध तथा व्रजयान सम्प्रदाय की उग्रतारा रूप अवश्य ही कुछ कठोर है । फिर भी साम्प्रदायिक समावेश में उग्रतारा का रूप विस्मरणीय है ।

सन्तान राष्ट्रीय सम्पत्ति-

मेकारिन तथा मैक्सिम गोर्की ने जिस नये शिलान्यास को इतिहास डालने का प्रयत्न किया, उसी शिलान्यास की भित्ति को खड़ा किया बाबा नागार्जुन ने । संतान राष्ट्रीय सम्पत्ति के रूप में, जिस तरह "जीवन की ओर" में मान लिया गया है, उसी तरह तथा उन विचारों से बाबा नागार्जुन ओत-प्रोत हैं ।

सुविधा-

बाबा पारम्परिक विधा के अनुयायी हैं । सुस्थिर विचार, सुविधा, आदर्श आदि सभी तथ्यों की स्वीकृति आचार्यों द्वारा प्राप्त करने की विशालता को इन्होंने अंगीकृत किया है । पारम्परिक विद्या अर्थात् प्रवरों से अवरों तक की विधा द्वारा जिन तत्वों को मनुष्य ग्रहण करता है उसे ही नागार्जुन ने सांसारिक सुविधा के रूप में स्वीकृत किया है । " पाली " तथा "प्राकृत " व्याकरण पर इसी पारम्परिक विधा, अनुदान है बाबा के लिए ।

<u>पक्की बोली-</u>

बोली इनकी अपनी पक्की बोली है । उपन्यासों में "मठों" के अन्तर्गत इसका प्रयोग हुआ है । आंचलिक, साहित्यिक तथा पक्की बोली का प्रयोग इनके हर उपन्यास में उपलब्ध होता है । कथा की और इनकी दृष्टि नहीं, उपन्यास वर्णन प्रधान होने से पक्की बोली को अपनाने में वे विवश हुए हैं ।

नागार्जुन ने उपरोक्त सभी तथ्यों का समाधान पत्रों तथा टेप द्वारा किया है । जिसके लिए मैं अत्यन्त आभारी हूं । प्राप्त पत्रों को शोध प्रबन्ध में यथाकथित स्थान पर अंकित किया गया है ।

-